

The Belton Estate eBook

The Belton Estate by Anthony Trollope

The following sections of this BookRags Literature Study Guide is offprint from Gale's For Students Series: Presenting Analysis, Context, and Criticism on Commonly Studied Works: Introduction, Author Biography, Plot Summary, Characters, Themes, Style, Historical Context, Critical Overview, Criticism and Critical Essays, Media Adaptations, Topics for Further Study, Compare & Contrast, What Do I Read Next?, For Further Study, and Sources.

(c)1998-2002; (c)2002 by Gale. Gale is an imprint of The Gale Group, Inc., a division of Thomson Learning, Inc. Gale and Design and Thomson Learning are trademarks used herein under license.

The following sections, if they exist, are offprint from Beacham's Encyclopedia of Popular Fiction: "Social Concerns", "Thematic Overview", "Techniques", "Literary Precedents", "Key Questions", "Related Titles", "Adaptations", "Related Web Sites". (c)1994-2005, by Walton Beacham.

The following sections, if they exist, are offprint from Beacham's Guide to Literature for Young Adults: "About the Author", "Overview", "Setting", "Literary Qualities", "Social Sensitivity", "Topics for Discussion", "Ideas for Reports and Papers". (c)1994-2005, by Walton Beacham.

All other sections in this Literature Study Guide are owned and copyrighted by BookRags, Inc.

Contents

| | |
|--|--------------------|
| The Belton Estate eBook..... | 1 |
| Contents..... | 2 |
| Table of Contents..... | 14 |
| Page 1..... | 15 |
| Page 2..... | 17 |
| Page 3..... | 18 |
| Page 4..... | 19 |
| Page 5..... | 20 |
| Page 6..... | 22 |
| Page 7..... | 23 |
| Page 8..... | 24 |
| Page 9..... | 25 |
| Page 10..... | 26 |
| Page 11..... | 27 |
| Page 12..... | 28 |
| Page 13..... | 30 |
| Page 14..... | 32 |
| Page 15..... | 34 |
| Page 16..... | 36 |
| Page 17..... | 38 |
| Page 18..... | 40 |
| Page 19..... | 42 |
| Page 20..... | 44 |
| Page 21..... | 46 |
| Page 22..... | 48 |

| | |
|--------------|----|
| Page 23..... | 50 |
| Page 24..... | 52 |
| Page 25..... | 54 |
| Page 26..... | 56 |
| Page 27..... | 58 |
| Page 28..... | 60 |
| Page 29..... | 62 |
| Page 30..... | 63 |
| Page 31..... | 64 |
| Page 32..... | 66 |
| Page 33..... | 68 |
| Page 34..... | 70 |
| Page 35..... | 72 |
| Page 36..... | 73 |
| Page 37..... | 75 |
| Page 38..... | 77 |
| Page 39..... | 79 |
| Page 40..... | 81 |
| Page 41..... | 83 |
| Page 42..... | 85 |
| Page 43..... | 87 |
| Page 44..... | 89 |
| Page 45..... | 91 |
| Page 46..... | 93 |
| Page 47..... | 94 |
| Page 48..... | 96 |

| | |
|------------------------------|---------------------|
| Page 49..... | 98 |
| Page 50..... | 100 |
| Page 51..... | 101 |
| Page 52..... | 103 |
| Page 53..... | 105 |
| Page 54..... | 106 |
| Page 55..... | 107 |
| Page 56..... | 109 |
| Page 57..... | 111 |
| Page 58..... | 113 |
| Page 59..... | 114 |
| Page 60..... | 115 |
| Page 61..... | 116 |
| Page 62..... | 118 |
| Page 63..... | 120 |
| Page 64..... | 122 |
| Page 65..... | 124 |
| Page 66..... | 125 |
| Page 67..... | 127 |
| Page 68..... | 129 |
| Page 69..... | 131 |
| Page 70..... | 133 |
| Page 71..... | 134 |
| Page 72..... | 135 |
| Page 73..... | 136 |
| Page 74..... | 138 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 75..... | 140 |
| Page 76..... | 142 |
| Page 77..... | 143 |
| Page 78..... | 145 |
| Page 79..... | 146 |
| Page 80..... | 147 |
| Page 81..... | 149 |
| Page 82..... | 151 |
| Page 83..... | 153 |
| Page 84..... | 154 |
| Page 85..... | 155 |
| Page 86..... | 156 |
| Page 87..... | 157 |
| Page 88..... | 158 |
| Page 89..... | 159 |
| Page 90..... | 161 |
| Page 91..... | 163 |
| Page 92..... | 165 |
| Page 93..... | 167 |
| Page 94..... | 169 |
| Page 95..... | 171 |
| Page 96..... | 173 |
| Page 97..... | 175 |
| Page 98..... | 177 |
| Page 99..... | 179 |
| Page 100..... | 181 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 101..... | 182 |
| Page 102..... | 184 |
| Page 103..... | 186 |
| Page 104..... | 187 |
| Page 105..... | 188 |
| Page 106..... | 190 |
| Page 107..... | 192 |
| Page 108..... | 194 |
| Page 109..... | 196 |
| Page 110..... | 198 |
| Page 111..... | 200 |
| Page 112..... | 202 |
| Page 113..... | 204 |
| Page 114..... | 206 |
| Page 115..... | 208 |
| Page 116..... | 210 |
| Page 117..... | 212 |
| Page 118..... | 214 |
| Page 119..... | 215 |
| Page 120..... | 216 |
| Page 121..... | 218 |
| Page 122..... | 220 |
| Page 123..... | 222 |
| Page 124..... | 224 |
| Page 125..... | 226 |
| Page 126..... | 228 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 127..... | 230 |
| Page 128..... | 232 |
| Page 129..... | 234 |
| Page 130..... | 236 |
| Page 131..... | 238 |
| Page 132..... | 240 |
| Page 133..... | 242 |
| Page 134..... | 244 |
| Page 135..... | 246 |
| Page 136..... | 247 |
| Page 137..... | 248 |
| Page 138..... | 250 |
| Page 139..... | 251 |
| Page 140..... | 252 |
| Page 141..... | 253 |
| Page 142..... | 254 |
| Page 143..... | 256 |
| Page 144..... | 258 |
| Page 145..... | 260 |
| Page 146..... | 261 |
| Page 147..... | 263 |
| Page 148..... | 265 |
| Page 149..... | 266 |
| Page 150..... | 267 |
| Page 151..... | 269 |
| Page 152..... | 271 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 153..... | 273 |
| Page 154..... | 275 |
| Page 155..... | 277 |
| Page 156..... | 279 |
| Page 157..... | 280 |
| Page 158..... | 282 |
| Page 159..... | 284 |
| Page 160..... | 286 |
| Page 161..... | 287 |
| Page 162..... | 288 |
| Page 163..... | 290 |
| Page 164..... | 291 |
| Page 165..... | 293 |
| Page 166..... | 294 |
| Page 167..... | 296 |
| Page 168..... | 298 |
| Page 169..... | 300 |
| Page 170..... | 302 |
| Page 171..... | 303 |
| Page 172..... | 305 |
| Page 173..... | 307 |
| Page 174..... | 309 |
| Page 175..... | 310 |
| Page 176..... | 311 |
| Page 177..... | 313 |
| Page 178..... | 315 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 179..... | 316 |
| Page 180..... | 317 |
| Page 181..... | 319 |
| Page 182..... | 321 |
| Page 183..... | 322 |
| Page 184..... | 323 |
| Page 185..... | 325 |
| Page 186..... | 327 |
| Page 187..... | 329 |
| Page 188..... | 331 |
| Page 189..... | 333 |
| Page 190..... | 334 |
| Page 191..... | 336 |
| Page 192..... | 337 |
| Page 193..... | 339 |
| Page 194..... | 341 |
| Page 195..... | 343 |
| Page 196..... | 345 |
| Page 197..... | 347 |
| Page 198..... | 349 |
| Page 199..... | 351 |
| Page 200..... | 353 |
| Page 201..... | 355 |
| Page 202..... | 357 |
| Page 203..... | 359 |
| Page 204..... | 361 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 205..... | 363 |
| Page 206..... | 365 |
| Page 207..... | 367 |
| Page 208..... | 369 |
| Page 209..... | 371 |
| Page 210..... | 372 |
| Page 211..... | 374 |
| Page 212..... | 376 |
| Page 213..... | 378 |
| Page 214..... | 379 |
| Page 215..... | 380 |
| Page 216..... | 382 |
| Page 217..... | 384 |
| Page 218..... | 386 |
| Page 219..... | 388 |
| Page 220..... | 390 |
| Page 221..... | 391 |
| Page 222..... | 393 |
| Page 223..... | 395 |
| Page 224..... | 396 |
| Page 225..... | 398 |
| Page 226..... | 400 |
| Page 227..... | 402 |
| Page 228..... | 404 |
| Page 229..... | 406 |
| Page 230..... | 408 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 231..... | 409 |
| Page 232..... | 411 |
| Page 233..... | 413 |
| Page 234..... | 414 |
| Page 235..... | 415 |
| Page 236..... | 417 |
| Page 237..... | 418 |
| Page 238..... | 420 |
| Page 239..... | 422 |
| Page 240..... | 424 |
| Page 241..... | 425 |
| Page 242..... | 427 |
| Page 243..... | 428 |
| Page 244..... | 430 |
| Page 245..... | 432 |
| Page 246..... | 434 |
| Page 247..... | 436 |
| Page 248..... | 438 |
| Page 249..... | 440 |
| Page 250..... | 441 |
| Page 251..... | 442 |
| Page 252..... | 444 |
| Page 253..... | 446 |
| Page 254..... | 447 |
| Page 255..... | 449 |
| Page 256..... | 451 |

| | |
|-------------------------------|---------------------|
| Page 257..... | 453 |
| Page 258..... | 455 |
| Page 259..... | 456 |
| Page 260..... | 458 |
| Page 261..... | 460 |
| Page 262..... | 462 |
| Page 263..... | 464 |
| Page 264..... | 466 |
| Page 265..... | 468 |
| Page 266..... | 470 |
| Page 267..... | 472 |
| Page 268..... | 474 |
| Page 269..... | 475 |
| Page 270..... | 477 |
| Page 271..... | 479 |
| Page 272..... | 481 |
| Page 273..... | 483 |
| Page 274..... | 485 |
| Page 275..... | 486 |
| Page 276..... | 488 |
| Page 277..... | 489 |
| Page 278..... | 491 |
| Page 279..... | 493 |
| Page 280..... | 495 |
| Page 281..... | 497 |
| Page 282..... | 499 |

[Page 283.....501](#)

[Page 284.....502](#)

[Page 285.....503](#)

Table of Contents

| Section | Page |
|-------------------------------------|------|
| Start of eBook | 1 |
| Title: The Belton Estate | 1 |
| THE BELTON ESTATE | 1 |
| CHAPTER I | 1 |
| CHAPTER II | 12 |
| CHAPTER III | 18 |
| CHAPTER IV | 28 |
| CHAPTER V | 34 |
| CHAPTER VI | 43 |
| CHAPTER VII | 51 |
| CHAPTER VIII | 60 |
| CHAPTER IX | 68 |
| CHAPTER X | 76 |
| CHAPTER XI | 84 |
| CHAPTER XII | 93 |
| CHAPTER XIII | 102 |
| CHAPTER XIV | 110 |
| 'Mount Street, December, 186 | 115 |
| CHAPTER XV | 120 |
| CHAPTER XVI | 129 |
| CHAPTER XVII | 138 |
| CHAPTER XVIII | 147 |
| CHAPTER XI | 157 |
| CHAPTER XX | 163 |
| CHAPTER XXI | 175 |
| CHAPTER XXII | 182 |
| CHAPTER XXIII | 192 |
| CHAPTER XXIV | 202 |
| CHAPTER XXV | 210 |
| CHAPTER XXVI | 219 |
| CHAPTER XXVII | 228 |
| CHAPTER XXVIII | 238 |
| CHAPTER XXIX | 246 |
| CHAPTER XXX | 255 |
| CHAPTER XXXI | 263 |
| CHAPTER XXXII | 274 |
| CONCLUSION | 274 |
| Information about Project Gutenberg | 281 |
| (one page) | |
| (Three Pages) | 282 |

Page 1

Title: The Belton Estate

Author: Anthony Trollope

Release Date: January, 2004 [EBook #4969] [Yes, we are more than one year ahead of schedule] [This file was first posted on April 7, 2002] [Most recently updated November 30, 2002]

Edition: 10

Language: English

Character set encoding: ASCII

*** Start of the project gutenberg EBOOK, the Belton estate ***

This eBook was produced by Andrew Turek.

THE BELTON ESTATE

by Anthony Trollope

CHAPTER I

Mrs Amedroz, the wife of Bernard Amedroz, Esq, of Belton Castle, and mother of Charles and Clara Amedroz, died when those children were only eight and six years old, thereby subjecting them to the greatest misfortune which children born in that sphere of life can be made to suffer. And, in the case of this boy and girl, the misfortune was aggravated greatly by the peculiarities of the father's character. Mr Amedroz was not a bad man as men are held to be bad in the world's esteem. He was not vicious was not a gambler or a drunkard was not self-indulgent to a degree that brought upon him any reproach; nor was he regardless of his children. But he was an idle, thriftless man, who, at the age of sixty-seven, when the reader will first make his acquaintance, had as yet done no good in the world whatever. Indeed he had done terrible evil; for his son Charles was now dead had perished by his own hand and the state of things which had brought about this woeful event had been chiefly due to the father's neglect.

Belton Castle is a pretty country seat, standing in a small but beautifully wooded park, close under the Quantock hills in Somersetshire; and the little town of Belton clusters round the park gates. Few Englishmen know the scenery of England well, and the prettinesses of Somersetshire are among those which are the least known. But the Quantock hills are very lovely, with their rich valleys lying close among them, and their

outlying moorlands running off towards Dulverton and the borders of Devonshire moorlands which are not flat, like Salisbury Plain, but are broken into ravines and deep watercourses and rugged dells hither and thither; where old oaks are standing, in which life seems to have dwindled down to the last spark; but the last spark is still there, and the old oaks give forth their scanty leaves from year to year.

Page 2

In among the hills, somewhat off the high road from Minehead to Taunton, and about five miles from the sea, stands the little town, or village, of Belton, and the modern house of Mr Amedroz, which is called Belton Castle. The village for it is in truth no more, though it still maintains a charter for a market, and there still exists on Tuesdays some pretence of an open sale of grain and butcher's meat in the square before the church-gate contains about two thousand persons. That and the whole parish of Belton did once and that not long ago belong to the Amedroz family. They had inherited it from the Beltons of old, an Amedroz having married the heiress of the family. And as the parish is large, stretching away to Exmoor on one side and almost to the sea on the other, containing the hamlet of Redicote, lying on the Taunton high road Redicote, where the post-office is placed, a town almost in itself, and one which is now much more prosperous than Belton as the property when it came to the first Amedroz had limits such as these, the family had been considerable in the county. But these limits had been straitened in the days of the grandfather and the father of Bernard Amedroz; and he, when he married a Miss Winterfield of Taunton, was thought to have done very well, in that mortgages were paid off the property with his wife's money to such an extent as to leave him in clear possession of an estate that gave him two thousand a year. As Mr Amedroz had no grand neighbours near him, as the place is remote and the living therefore cheap, and as with this income there was no question of annual visits to London, Mr and Mrs Amedroz might have done very well with such of the good things of the world as had fallen to their lot. And had the wife lived, such would probably have been the case; for the Winterfields were known to be prudent people. But Mrs Amedroz had died young, and things with Bernard Amedroz had gone badly.

And yet the evil had not been so much with him as with that terrible boy of his. The father had been nearly forty when he married. He had then never done any good; but as neither had he done much harm, the friends of the family had argued well of his future career. After him, unless he should leave a son behind him, there would be no Amedroz left among the Quantock hills; and by some arrangement in respect to that Winterfield money which came to him on his marriage the Winterfields having a long-dated connexion with the Beltons of old the Amedroz property was, at Bernard's marriage, entailed back upon a distant Belton cousin, one Will Belton, whom no one had seen for many years, but who was by blood nearer the squire in default of children of his own than any other of his relatives. And now Will Belton was the heir to Belton Castle; for Charles Amedroz, at the age of twenty-seven, had found the miseries of the world to be too many for him, and had put an end to them and to himself.

Page 3

Charles had been a clever fellow a very clever fellow in the eyes of his father. Bernard Amedroz knew that he himself was not a clever fellow, and admired his son accordingly; and when Charles had been expelled from Harrow for some boyish freak in his vengeance against a neighbouring farmer, who had reported to the school authorities the doings of a few beagles upon his land, Charles had cut off the heads of all the trees in a young fir plantation his father was proud of the exploit. When he was rusticated a second time from Trinity, and when the father received an intimation that his son's name had better be taken from the College books, the squire was not so well pleased; but even then he found some delight in the stories which reached him of his son's vagaries; and when the young man commenced Bohemian life in London, his father did nothing to restrain him. Then there came the old story debts, endless debts; and lies, endless lies. During the two years before his death, his father paid for him, or undertook to pay, nearly ten thousand pounds, sacrificing the life assurances which were to have made provision for his daughter; sacrificing, to a great extent, his own life income sacrificing everything, so that the property might not be utterly ruined at his death. That Charles Amedroz should be a brighter, greater man than any other Amedroz, had still been the father's pride. At the last visit which Charles had paid to Belton his father had called upon him to pledge himself solemnly that his sister should not be made to suffer by what had been done for him. Within a month of that time he had blown his brains out in his London lodgings, thus making over the entire property to Will Belton at his father's death. At that last pretended settlement with his father and his father's lawyer, he had kept back the mention of debts as heavy nearly as those to which he had owned; and there were debts of honour, too, of which he had not spoken, trusting to the next event at Newmarket to set him right. The next event at Newmarket had set him more wrong than ever, and so there had come an end to everything with Charles Amedroz.

This had happened in the spring, and the afflicted father afflicted with the double sorrow of his son's terrible death and his daughter's ruin had declared that he would turn his face to the wall and die. But the old squire's health, though far from strong, was stronger than he had deemed it, and his feelings, sharp enough, were less sharp than he thought them; and when a month had passed by, he had discovered that it would be better that he should live, in order that his daughter might still have bread to eat and a house of her own over her head. Though he was now an impoverished man, there was still left to him the means of keeping up the old home; and he told himself that it must, if possible, be so kept that a few pounds annually might be put by for Clara. The old carriage-horses were sold, and the park was let to a farmer, up to the hall door of the castle. So much the squire could do; but as to the putting by of the few pounds, any dependence on such exertion as that on his part would, we may say, be very precarious.

Page 4

Belton Castle was not in truth a castle. Immediately before the front door, so near to the house as merely to allow of a broad road running between it and the entrance porch, there stood an old tower, which gave its name to the residence an old square tower, up which the Amedroz boys for three generations had been able to climb by means of the ivy and broken stones in one of the inner corners and this tower was a remnant of a real castle that had once protected the village of Belton. The house itself was an ugly residence, three stories high, built in the time of George II, with low rooms and long passages, and an immense number of doors. It was a large unattractive house unattractive that is, as regarded its own attributes but made interesting by the beauty of the small park in which it stood. Belton Park did not, perhaps, contain much above a hundred acres, but the land was so broken into knolls and valleys, in so many places was the rock seen to be cropping up through the verdure, there were in it so many stunted old oaks, so many points of vantage for the lover of scenery, that no one would believe it to be other than a considerable domain. The farmer who took it, and who would not under any circumstances undertake to pay more than seventeen shillings an acre for it, could not be made to think that it was in any way considerable. But Belton Park, since first it was made a park, had never before been regarded in this fashion. Farmer Stovey, of the Grange, was the first man of that class who had ever assumed the right to pasture his sheep in Belton chase as the people around were still accustomed to call the woodlands of the estate.

It was full summer at Belton, and four months had now passed since the dreadful tidings had reached the castle. It was full summer, and the people of the village were again going about their ordinary business; and the shop-girls with their lovers from Redicote were again to be seen walking among the oaks in the park on a Sunday evening; and the world in that district of Somersetshire was getting itself back into its grooves. The fate of the young heir had disturbed the grooves greatly, and had taught many in those parts to feel that the world was coming to an end. They had not loved young Amedroz, for he had been haughty when among them, and there had been wrongs committed by the dissolute young squire, and grief had come from his misdoings upon more than one household; but to think that he should have destroyed himself with his own hand! And then, to think that Miss Clara would become a beggar when the old squire should die! All the neighbours around understood the whole history of the entail, and knew that the property was to go to Will Belton. Now Will Belton was not a gentleman! So, at least, said the Belton folk, who had heard that the heir had been brought up as a farmer somewhere in Norfolk. Will Belton had once been at the Castle as a boy, now some fifteen years ago, and then there had sprung

Page 5

up a great quarrel between him and his distant cousin Charles and Will, who was rough and large of stature, had thrashed the smaller boy severely; and the thing had grown to have dimensions larger than those which generally attend the quarrels of boys; and Will had said something which had shown how well he understood his position in reference to the estate and Charles had hated him. So Will had gone, and had been no more seen among the oaks whose name he bore. And the people, in spite of his name, regarded him as an interloper. To them, with their short memories and scanty knowledge of the past, Amedroz was more honourable than Belton, and they looked upon the coming man as an intruder. Why should not Miss Clara have the property? Miss Clara had never done harm to any one!

Things got back into their old grooves, and at the end of the third month the squire was once more seen in the old family pew at church. He was a large man, who had been very handsome, and who now, in his yellow leaf, was not without a certain beauty of manliness. He wore his hair and his beard long; before his son's death they were grey, but now they were very white. And though he stooped, there was still a dignity in his slow step a dignity that came to him from nature rather than from any effort. He was a man who, in fact, did little or nothing in the world whose life had been very useless; but he had been gifted with such a presence that he looked as though he were one of God's nobler creatures. Though always dignified he was ever affable, and the poor liked him better than they might have done had he passed his time in searching out their wants and supplying them. They were proud of their squire, though he had done nothing for them. It was something to them to have a man who could so carry himself sitting in the family pew in their parish church. They knew that he was poor, but they all declared that he was never mean. He was a real gentleman was this last Amedroz of the family; therefore they curtsied low, and bowed on his reappearance among them, and made all those signs of reverential awe which are common to the poor when they feel reverence for the presence of a superior.

Clara was there with him, but she had shown herself in the pew for four or five weeks before this. She had not been at home when the fearful news had reached Belton, being at that time with a certain lady who lived on the farther side of the county, at Perivale a certain Mrs Winterfield, born a Folliot, a widow, who stood to Miss Amedroz in the place of an aunt. Mrs Winterfield was, in truth, the sister of a gentleman who had married Clara's aunt there having been marriages and intermarriages between the Winterfields and the Folliots and the Belton-Amedroz families. With this lady in Perivale, which I maintain to be the dullest little town in England, Miss Amedroz was staying when the news reached her father, and when it was brought direct from London to herself. Instantly she had hurried home, taking the journey with all imaginable speed though her heart was all but broken within her bosom. She had found her father stricken to the ground, and it was the more necessary, therefore, that she should exert

herself. It would not do that she also should yield to that longing for death which terrible calamities often produce for a season.

Page 6

Clara Amedroz, when she first heard the news of her brother's fate, had felt that she was forever crushed to the ground. She had known too well what had been the nature of her brother's life, but she had not expected or feared any such termination to his career as this which had now come upon him to the terrible affliction of all belonging to him. She felt at first, as did also her father, that she and he were annihilated as regards this world, not only by an enduring grief, but also by a disgrace which would never allow her again to hold up her head. And for many a long year much of this feeling clung to her clung to her much more strongly than to her father. But strength was hers to perceive, even before she had reached her home, that it was her duty to repress both the feeling of shame and the sorrow, as far as they were capable of repression. Her brother had been weak, and in his weakness had sought a coward's escape from the ills of the world around him. She must not also be a coward! Bad as life might be to her henceforth, she must endure it with such fortitude as she could muster. So resolving she returned to her father, and was able to listen to his railings with a fortitude that was essentially serviceable both to him and to herself.

'Both of you! Both of you!' the unhappy father had said in his woe. 'The wretched boy has destroyed you as much as himself!' 'No, sir,' she had answered, with a forbearance in her misery, which, terrible as was the effort, she forced herself to accomplish for his sake. 'It is not so. No thought of that need add to your grief. My poor brother has not hurt me not in the way you mean.' 'He has ruined us all,' said the father; 'root and branch, man and woman, old and young, house and land. He has brought the family to an end ah me, to such an end!' After that the name of him who had taken himself from among them was not mentioned between the father and daughter, and Clara settled herself to the duties of her new life, striving to live as though there was no great sorrow around her as though no cloud-storm had burst over her head.

The family lawyer, who lived at Taunton, had communicated the fact of Charles's death to Mr Belton, and Belton had acknowledged the letter with the ordinary expressions of regret. The lawyer had alluded to the entail, saying that it was improbable that Mr Amedroz would have another son. To this Belton had replied that for his cousin Clara's sake he hoped that the squire's life might be long spared. The lawyer smiled as he read the wish, thinking to himself that luckily no wish on the part of Will Belton could influence his old client either for good or evil. What man, let alone what lawyer, will ever believe in the sincerity of such a wish as that expressed by the heir to a property? And yet where is the man who will not declare to himself that such, under such circumstances, would be his own wish?

Page 7

Clara Amedroz at this time was not a very young lady. She had already passed her twenty-fifth birthday, and in manners, appearance, and habits was, at any rate, as old as her age. She made no pretence to youth, speaking of herself always as one whom circumstances required to take upon herself age in advance of her years. She did not dress young, or live much with young people, or correspond with other girls by means of crossed letters; nor expect that, for her, young pleasures should be provided. Life had always been serious with her; but now, we may say, since the terrible tragedy lit the family, it must be solemn as well as serious. The memory of her brother must always be upon her; and the memory also of the fact that her father was now an impoverished man, on whose behalf it was her duty to care that every shilling spent in the house did its full twelve pennies' worth of work. There was a mixture in this of deep tragedy and of little cares, which seemed to destroy for her the poetry as well as the pleasure of life. The poetry and tragedy might have gone hand in hand together; and so might the cares and pleasures of life have done, had there been no black sorrow of which she must be ever mindful. But it was her lot to have to scrutinize the butcher's bill as she was thinking of her brother's fate; and to work daily among small household things while the spectre of her brother's corpse was ever before her eyes.

A word must be said to explain how it had come to pass that the life led by Miss Amedroz had been more than commonly serious before that tragedy had befallen the family. The name of the lady who stood to Clara in the place of an aunt has been already mentioned. When a girl has a mother, her aunt may be little or nothing to her. But when the mother is gone, if there be an aunt unimpeded with other family duties, then the family duties of that aunt begin and are assumed sometimes with great vigour. Such had been the case with Mrs Winterfield. No woman ever lived, perhaps, with more conscientious ideas of her duty as a woman than Mrs Winterfield of Prospect Place, Perivale. And this, as I say it, is intended to convey no scoff against that excellent lady. She was an excellent lady unselfish, given to self-restraint, generous, pious, looking to find in her religion a safe path through life a path as safe as the facts of Adam's fall would allow her feet to find. She was a woman fearing much for others, but fearing also much for herself, striving to maintain her house in godliness, hating sin, and struggling with the weakness of her humanity so that she might not allow herself to hate the sinners. But her hatred for the sin she found herself bound at all times to pronounce to show it by some act at all seasons. To fight the devil was her work was the appointed work of every living soul, if only living souls could be made to acknowledge the necessity of the task. Now an aunt of that kind, when she assumes her duties towards a motherless niece, is apt to make life serious.

Page 8

But, it will be said, Clara Amedroz could have rebelled; and Clara's father was hardly made of such stuff that obedience to the aunt would be enforced on her by parental authority. Doubtless Clara could have rebelled against her aunt. Indeed, I do not know that she had hitherto been very obedient. But there were family facts about these Winterfield connexions which would have made it difficult for her to ignore her so-called aunt, even had she wished to do so. Mrs Winterfield had twelve hundred a year at her own disposal, and she was the only person related to the Amedroz family from whom Mr Amedroz had a right to have expectations on his daughter's behalf. Clara had, in a measure, been claimed by the lady, and the father had made good the lady's claim, and Clara had acknowledged that a portion of her life was due to the demands of Perivale. These demands had undoubtedly made her life serious.

Life at Perivale was a very serious thing. As regards amusement, ordinarily so called, the need of any such institution was not acknowledged at Prospect House. Food, drink, and raiment were acknowledged to be necessary to humanity, and, in accordance with the rules of that house, they were supplied in plenty, and good of their kind. Such ladies as Mrs Winterfield generally keep good tables, thinking no doubt that the eatables should do honour to the grace that is said for them. And Mrs Winterfield herself always wore a thick black silk dress not rusty or dowdy with age but with some gloss of the silk on it; giving away, with secret, underhand, undiscovered charity, her old dresses to another lady of her own sort, on whom fortune had not bestowed twelve hundred a year. And Mrs Winterfield kept a low, four-wheeled, one-horsed phaeton, in which she made her pilgrimages among the poor of Perivale, driven by the most solemn of stable-boys, dressed up in a great white coat, the most priggish of hats, and white cotton gloves. At the rate of five miles an hour was she driven about, and this driving was to her the amusement of life. But such an occupation to Clara Amedroz assisted to make life serious.

In person Mrs Winterfield was tall and thin, wearing on her brow thin braids of false hair. She had suffered much from acute ill health, and her jaws were sunken, and her eyes were hollow, and there was a look of woe about her which seemed ever to be telling of her own sorrows in this world and of the sorrows of others in the world to come. Ill-nature was written on her face, but in this her face was a false face. She had the manners of a cross, peevish woman; but her manners also were false, and gave no proper idea of her character. But still, such as she was, she made life very serious to those who were called upon to dwell with her.

Page 9

I need, I hope, hardly say that a young lady such as Miss Amedroz, even though she had reached the age of twenty-five for at the time to which I am now alluding she had nearly done so and was not young of her age, had formed for herself no plan of life in which her aunt's money figured as a motive power. She had gone to Perivale when she was very young, because she had been told to do so, and had continued to go, partly from obedience, partly from habit, and partly from affection. An aunt's dominion, when once well established in early years, cannot easily be thrown altogether aside even though a young lady have a will of her own. Now Clara Amedroz had a strong will of her own, and did not at all at any rate in these latter days belong to that school of divinity in which her aunt shone almost as a professor. And this circumstance, also, added to the seriousness of her life. But in regard to her aunt's money she had entertained no established hopes; and when her aunt opened her mind to her, on that subject, a few days before the arrival of the fatal news at Perivale, Clara, though she was somewhat surprised, was by no means disappointed. Now there was a certain Captain Aylmer in the question, of whom in this opening chapter it will be necessary to say a few words.

Captain Frederic Folliott Aylmer was, in truth, the nephew of Mrs Winterfield, whereas Clara Amedroz was not, in truth, her niece. And Captain Aylmer was also Member of Parliament for the little borough of Perivale, returned altogether on the Low Church interest for a devotion to which, and for that alone, Perivale was noted among boroughs. These facts together added not a little to Mrs Winterfield's influence and professorial power in the place, and gave a dignity to the one-horse chaise which it might not otherwise have possessed. But Captain Aylmer was only the second son of his father, Sir Anthony Aylmer, who had married a Miss Folliott, sister of our Mrs Winterfield. On Frederic Aylmer his mother's estate was settled. That and Mrs Winterfield's property lay in the neighbourhood of Perivale; and now, on the occasion to which I am alluding, Mrs Winterfield thought it necessary to tell Clara that the property must all go together. She had thought about it, and had doubted about it, and had prayed about it, and now she found that such a disposition of it was her duty.

'I am quite sure you're right, aunt,' Clara had said. She knew very well what had come of that provision which her father had attempted to make for her, and knew also how great were her father's expectations in regard to Mrs Winterfield's money.

'I hope I am; but I have thought it right to tell you. I shall feel myself bound to tell Frederic. I have had many doubts, but I think I am right.'

'I am sure you are, aunt. What would he think of me if, at some future time, he should have to find that I had been in his way?'

'The future time will not be long now, my dear.'

Page 10

'I hope it may; but long or short, it is better so.'

'I think it is, my dear; I think it is. I think it is my duty.'

It must be understood that Captain Aylmer was member for Perivale on the Low Church interest, and that, therefore, when at Perivale he was decidedly a Low Churchman. I am not aware that the peculiarity stuck to him very closely at Aylmer Castle, in Yorkshire, or among his friends in London; but there was no hypocrisy in this, as the world goes. Women in such matters are absolutely false if they be not sincere; but men, with political views, and with much of their future prospects in jeopardy also, are allowed to dress themselves differently for different scenes. Whatever be the peculiar interest on which a man goes into Parliament, of course he has to live up to that in his own borough. Whether malt, the franchise, or teetotalism be his rallying point, of course he is full of it when among his constituents. But it is not desirable that he should be full of it also at his club. Had Captain Aylmer become Prime Minister, he would no doubt have made Low Church bishops. It was the side to which he had taken himself in that matter not without good reasons. And he could say a sharp word or two in season about vestments; he was strong against candles, and fought for his side fairly well. No one had good right to complain of Captain Aylmer as being insincere; but had his aunt known the whole history of her nephew's life, I doubt whether she would have made him her heir thinking that in doing so she was doing the best for the good cause.

The whole history of her niece's life she did know, and she knew that Clara was not with her, heart and soul. Had Clara left the old woman in doubt on this subject, she would have been a hypocrite. Captain Aylmer did not often spend a Sunday at Perivale, but when he did, he went to church three times, and submitted himself to the yoke. He was thinking of the borough votes quite as much as of his aunt's money, and was carrying on his business after the fashion of men. But Clara found herself compelled to maintain some sort of a fight, though she also went to church three times on Sunday. And there was another reason why Mrs Winterfield thought it right to mention Captain Aylmer's name to her niece on this occasion.

'I had hoped', she said, 'that it might make no difference in what way my money was left.'

Clara well understood what this meant, as will, probably, the reader also. 'I can't say but what it will make a difference,' she answered, smiling; 'but I shall always think that you have done right. Why should I stand in Captain Aylmer's way?'

'I had hoped your ways might have been the same,' said the old lady, fretfully.

'But they cannot be the same.'

Page 11

'No; you do not see things as he sees them. Things that are serious to him are, I fear, only light to you. Dear Clara, would I could see you more in earnest as to the only matter that is worth our earnestness.' Miss Amedroz said nothing as to the Captain's earnestness, though, perhaps, her ideas as to his ideas about religion were more correct than those held by Mrs Winterfield. But it would not have suited her to raise any argument on that subject. 'I pray for you, Clara,' continued the old lady, 'and will do so as long as the power of prayer is left to me. I hope I hope you do not cease to pray for yourself?'

'I endeavour, aunt.'

'It is an endeavour which, if really made, never fails.' Clara said nothing more, and her aunt also remained silent. Soon afterwards, the four-wheeled carriage, with the demure stable-boy, came to the door, and Clara was driven up and down through the streets of Perivale in a manner which was an injury to her. She knew that she was suffering an injustice, but it was one of which she could not make complaint. She submitted to her aunt, enduring the penances that were required of her; and, therefore, her aunt had opportunity enough to see her shortcomings. Mrs Winterfield did see them, and judged her accordingly. Captain Aylmer, being a man and a Member of Parliament, was called upon to bear no such penances, and, therefore, his shortcomings were not suspected.

But, after all, what title had she ever possessed to entertain expectations from Mrs Winterfield? When she thought of it all in her room that night, she told herself that it was strange that her aunt should have spoken to her in such a way on such a subject. But, then, so much had been said to her on the matter by her father, so much, no doubt, had reached her aunt's ears also, the hope that her position with reference to the rich widow at Perivale might be beneficial to her had been so often discussed at Belton as a make-weight against the extravagances of the heir, there had already been so much of this mistake, that she taught herself to perceive that the communication was needed. 'In her honesty 'she has not chosen to leave me with false hopes,' said Clara to herself. And at that moment she loved her aunt for her honesty.

Then, on the day but one following this conversation as to the destiny of her aunt's property, came the terrible tidings of her brother's death. Captain Aylmer, who had been in London at the time, hurried down to Perivale, and had been the first to tell Miss Amedroz what had happened. The words spoken between them had not been many, but Clara knew that Captain Aylmer had been kind to her; and when he had offered to accompany her to Belton, she had thanked him with a degree of gratitude which had almost seemed to imply more of regard between them than Clara would have acknowledged to exist. But in moments such as those, soft words may be spoken and hands may be pressed without any of that meaning which soft words and the grasping of hands generally carry with them. As far as Taunton Captain Aylmer did go with Miss Amedroz, and there they parted, he on his journey up to town, and she for her father's desolate house at Belton.

Page 12

CHAPTER II

THE HEIR PROPOSES TO VISIT HIS COUSIN

It was full summer at Belton, and the sweet scene of the new hay filled the porch of the old house with fragrance, as Clara sat there alone with her work. Immediately before the house door, between that and the old tower, there stood one of Farmer Stovey's hay-carts, now empty, with an old horse between the shafts looking as though he were asleep in the sun. Immediately beyond the tower the men were loading another cart, and the women and children were chattering as they raked the scattered remnants up to the rows. Under the shadow of the old tower, but in sight of Clara as she sat in the porch, there lay the small beer-barrels of the hay-makers, and three or four rakes were standing erect against the old grey wall. It was now eleven o'clock, and Clara was waiting for her father, who was not yet out of his room. She had taken his breakfast to him in bed, as was her custom; for he had fallen into idle ways, and the luxury of his bed was, of all his remaining luxuries, the one that he liked the best. After a while he came down to her, having an open letter in his hand. Clara saw that he intended either to show it to her or to speak of it, and asked him therefore, with some tone of interest in her voice, from whom it had come. But Mr Amedroz was fretful at the moment, and instead of answering her began to complain of his tenant's ill-usage of him.

'What has he got his cart there for? I haven't let him the road up to the hall door. I suppose he will bring his things into the parlour next.'

'I rather like it, papa.'

'Do you? I can only say that you're lucky in your tastes. I don't like it, I can tell you.'

'Mr Stovey is out there. Shall I ask him to have the things moved farther off?'

'No, my dear no. I must bear it, as I do all the rest of it. What does it matter? There'll be an end of it soon. He pays his rent, and I suppose he is right to do as he pleases. But I can't say that I like it.'

'Am I to see the letter, papa?' she asked, wishing to turn his mind from the subject of the hay-cart.

'Well, yes. I brought it for you to see; though perhaps I should be doing better if I burned it, and said nothing more about it. It is a most impudent production; and heartless very heartless.'

Clara was accustomed to such complaints as these from her father. Everything that everybody did around him he would call heartless. The man pitied himself so much in his own misery, that he expected to live in an atmosphere of pity from others; and

though the pity doubtless was there, he misdoubted it. He thought that Farmer Stovey was cruel in that he had left the hay-cart near the house, to wound his eyes by reminding him that he was no longer master of the ground before his own hall door. He thought that the women and children were cruel to chatter so near his ears. He almost accused his daughter of cruelty, because she had told him that she liked the contiguity of the hay-making. Under such circumstances as those which enveloped him and her, was it not heartless in her to like anything? It seemed to him that the whole world of Belton should be drowned in woe because of his misery.

Page 13

'Where is it from, papa?' she asked.

'There, you may read it. Perhaps it is better that you should know that it has been written.' Then she read the letter, which was as follows

'Plaistow Hall

July, 186'

Though she had never before seen the handwriting, she knew at once from whence came the letter, for she had often heard of Plaistow Hall. It was the name of the farm at which her distant cousin, Will Belton, lived, and her father had more than once been at the trouble of explaining to her, that though the place was called a hall, the house was no more than a farmhouse. He had never seen Plaistow Hall, and had never been in Norfolk; but so much he could take upon himself to say, 'They call all the farms halls down there.' It was not wonderful that he should dislike his heir; and perhaps not unnatural that he should show his dislike after this fashion. Clara, when she read the address, looked up into her father's face. 'You know who it is now,' he said. And then she read the letter.

'Plaistow Hall

July, 186

I have not written to you before since your bereavement, thinking it better to wait awhile; but I hope you have not taken me to be unkind in this, or have supposed me to be unmindful of your sorrow. Now I take up my pen, hoping that I may make you understand how greatly I was distressed by what has occurred. I believe I am now the nearest male relative that you have, and as such I am very anxious to be of service to you if it may be possible. Considering the closeness of our connexion, and my position in reference to the property, it seems bad that we should never meet. I can assure you that you would find me very friendly if we could manage to come together.

I should think nothing of running across to Belton, if you would receive me at your house. I could come very well before harvest, if that would suit you, and would stay with you for a week. Pray give my kindest regards to my cousin Clara, whom I can only just remember as a very little girl. She was with her aunt at Perivale when I was at Belton as a boy. She shall find a friend in me if she wants a friend.

Your affectionate cousin,

W. Belton.'

Clara read the letter very slowly, so that she might make herself sure of its tone and bearing before she was called upon by her father to express her feeling respecting it.

She knew that she would be expected to abuse it violently, and to accuse the writer of vulgarity, insolence, and cruelty, but she had already learned that she must not allow herself to accede to all her father's fantasies. For his sake, and for his protection, it was necessary that she should differ from him, and even contradict him. Were she not to do so, he would fall into a state of wailing and complaining that would exaggerate itself almost to idiotcy. And it was imperative that she herself should exercise her own opinion on many points, almost

Page 14

without reference to him. She alone knew how utterly destitute she would be when he should die. He, in the first days of his agony, had sobbed forth his remorse as to her ruin; but, even when doing so, he had comforted himself with the remembrance of Miss Winterfield's money and Mrs Winterfield's affection for his daughter. And the aunt, when she had declared her purpose to Clara, had told herself that the provision made for Clara by her father was sufficient. To neither of them had Clara told her own position. She could not inform her aunt that her father had given up to the poor reprobate who had destroyed himself all that had been intended for her. Had she done so she would have been asking her aunt for charity. Nor would she bring herself to add to her father's misery, by destroying the hopes which still supported him. She never spoke of her own position in regard to money, but she knew that it had become her duty to live a wary, watchful life, taking much upon herself in their impoverished household, and holding her own opinion against her father's when her doing so became expedient. So she finished the letter in silence, and did not speak at the moment when the movement of her eyes declared that she had completed the task.

'Well?' said he.

'I do not think my cousin means badly.'

'You don't! I do, then. I think he means very badly. What business has he to write to me, talking of his position?'

'I can't see anything amiss in his doing so, papa. I think he wishes to be friendly. The property will be his some day, and I don't see why that should not be mentioned, when there is occasion.'

'Upon my word, Clara, you surprise me. But women never understood delicacy in regard to money. They have so little to do with it, and think so little about it, that they have no occasion for such delicacy.'

Clara could not help the thought that to her mind the subject was present with sufficient frequency to make delicacy very desirable, if only it were practicable. But of this she said nothing. 'And what answer will you send to him, papa?' she asked.

'None at all. Why should I trouble myself to write to him?'

'I will take the trouble off your hands.'

'And what will you say to him?'

'I will ask him to come here, as he proposes.'

‘Clara!’

‘Why not, papa? He is the heir to the property, and why should he not be permitted to see it? There are many things in which his co-operation with you might be a comfort to you. I can’t tell you whether the tenants and people are treating you well, but he can do so; and, moreover, I think he means to be kind. I do not see why we should quarrel with our cousin because he is the heir to your property. It is not through any doing of his own that he is so.’

Page 15

This reasoning had no effect upon Mr Amedroz, but his daughter's resolution carried the point against him in spite of his want of reason. No letter was written that day, or on the next; but on the day following a formal note was sent off by Clara, in which Mr Belton was told that Mr Amedroz would be happy to receive him at Belton Castle. The letter was written by the daughter, but the father was responsible for the formality. He sat over her while she wrote it, and nearly drove her distracted by discussing every word and phrase. At last, Clara was so annoyed with her own production, that she was almost tempted to write another letter unknown to her father; but the formal note went.

'My Dear Sir

'I am desired by my father to say that he will be happy to receive you at Belton Castle, at the time fixed by yourself.

Yours truly,

Clara Amedroz.'

There was no more than that, but that had the desired effect; and by return of post there came a rejoinder saying that Will Belton would be at the Castle on the fifteenth of August. 'They can do without me for about ten days,' he said in his postscript, writing in a familiar tone, which did not seem to have been at all checked by the coldness of his cousin's note 'as our harvest will be late; but I must be back for a week's work before the partridges.'

'Heartless! quite heartless!' Mr Amedroz said as he read this. 'Partridges! to talk of partridges at such a time as this!'

Clara, however, would not acknowledge that she agreed with her father; but she could not altogether restrain a feeling on her own part that her cousin's good humour towards her and Mr Amedroz should have been repressed by the tone of her letter to him. The man was to come, however, and she would not judge of him until he was there.

In one house in the neighbourhood, and in only one, had Miss Amedroz a friend with whom she was intimate; and as regarded even this single friend, the intimacy was the effect rather of circumstances than of real affection. She liked Mrs Askerton, and saw her almost daily; but she could hardly tell herself that she loved her neighbour.

In the little town of Belton, close to the church, there stood a pretty, small house, called Belton Cottage. It was so near the church that strangers always supposed it to be the parsonage; but the rectory stood away out in the country, half a mile from the town, on the road to Redicote, and was a large house, three stories high, with grounds of its own, and very ugly. Here lived the old bachelor rector, seventy years of age, given much to long absences when he could achieve them, and never on good terms with his bishop.

His two curates lived at Redicote, where there was a second church. Belton Cottage, which was occupied by Colonel Askerton and Mrs Askerton, was on the Amedroz property, and had been hired some two years since by the Colonel, who was then a stranger in the country

Page 16

and altogether unknown to the Belton people. But he had come there for shooting, and therefore his coming had been understood. Even as long ago as two years since, there had been neither use nor propriety in keeping the shooting for the squire's son, and it had been let with the cottage to Colonel Askerton. So Colonel Askerton had come there with his wife, and no one in the neighbourhood had known anything about them. Mr Amedroz, with his daughter, had called upon them, and gradually there had grown up an intimacy between Clara and Mrs Askerton. There was an opening from the garden of Belton Cottage into the park, so that familiar intercourse was easy, and Mrs Askerton was a woman who knew well how to make herself pleasant to such another woman as Miss Amedroz.

The reader may as well know at ones that rumours prejudicial to the Askertons reached Belton before they had been established there for six months. At Taunton, which was twenty miles distant, these rumours were very rife, and there were people there who knew with accuracy though probably without a grain of truth in their accuracy every detail in the history of Mrs Askerton's life. And something, too, reached Clara's ears something from old Mr Wright, the rector, who loved scandal, and was very ill-natured. 'A very nice woman,' the rector had said; 'but she does not seem to have any belongings in particular.' 'She has got a husband,' Clara had replied with some little indignation, for she had never loved Mr Wright. 'Yes; I suppose she has got a husband.' Then Clara had, in her own judgment, accused the rector of lying, evil-speaking, and slandering, and had increased the measure of her cordiality to Mrs Askerton. But something more she had heard on the same subject at Perivale. 'Before you throw yourself into close intimacy with the lady, I think you should know something about her,' Mrs Winterfield had said to her. 'I do know something about her; I know that she has the manners and education of a lady, and that she is living affectionately with her husband, who is devoted to her. What more ought I to know?' 'If you really do know all that, you know a great deal,' Mrs Winterfield had replied.

'Do you know anything against her, aunt?' Clara asked, after a pause.

There was another pause before Mrs Winterfield answered. 'No, my dear; I cannot say that I do. But I think that young ladies, before they make intimate friendships, should be very sure of their friends.'

'You have already acknowledged that I know a great deal about her,' Clara replied. And then the conversation was at an end. Clara had not been quite ingenuous, as she acknowledged to herself. She was aware that her aunt would not permit herself to repeat rumours as to the truth of which she had no absolute knowledge. She understood that the weakness of her aunt's caution was due to the old lady's sense of charity and dislike of slander. But Clara had buckled on her armour for Mrs Askerton, and was glad, therefore, to achieve her little victory. When we buckle on our armour in

any cause, we are apt to go on buckling it, let the cause become as weak as it may; and Clara continued her intimacy with Mrs Askerton, although there was something in the lady's modes of speech, and something also in her modes of thinking, which did not quite satisfy the aspirations of Miss Amedroz as to a friend.

Page 17

Colonel Askerton himself was a pleasant, quiet man, who seemed to be contented with the life which he was leading. For six weeks in April and May he would go up to town, leaving Mrs Askerton at the cottage as to which, probably jovial, absence in the metropolis there seemed to be no spirit of grudging on the part of the wife. On the first of September a friend would come to the cottage and remain there for six weeks' shooting: and during the winter the Colonel and his wife always went to Paris for a fortnight. Such had been their life for the last two years; and thus so said Mrs Askerton to Clara did they intend to live as long as they could keep the cottage at Belton. Society at Belton they had none, and as they said desired none. Between them and Mr Wright there was only a speaking acquaintance. The married curate at Redicote would not let his wife call on Mrs Askerton, and the unmarried curate was a hard-worked, clerical hack a parochial minister at all times and seasons, who went to no houses except the houses of the poor, and who would hold communion with no man, and certainly with no woman, who would not put up with clerical admonitions for Sunday backslidings. Mr Amedroz himself neither received guests nor went as a guest to other men's houses. He would occasionally stand for a while at the gate of the Colonel's garden, and repeat the list of his own woes as long as his neighbour would stand there to hear it. But there was no society at Belton, and Clara, as far as she herself was aware, was the only person with whom Mrs Askerton held any social intercourse, except what she might have during her short annual holiday in Paris.

'Of course, you are right,' she said, when Clara told her of the proposed coming of Mr Belton. 'If he turn out to be a good fellow, you will have gained a great deal. And should he be a bad, fellow, you will have lost nothing. In either case you will know him, and considering how he stands towards you, that itself is desirable.'

'But if he should annoy papa?'

'In your papa's condition, my dear, the coming of any one will annoy him. At least, he will say so; though I do not in the least doubt that he will like the excitement better even than you will.'

'I can't say there will be much excitement to me.'

'No excitement in a young man's coming into the house! Without shocking your propriety, allow me to say that that is impossible. Of course, he is coming to see whether he can't make matters all right by marrying you.'

'That's nonsense, Mrs Askerton.'

'Very well. Let it be nonsense. But why shouldn't he? It's just what he ought to do. He hasn't got a wife; and, as far as I know, you haven't got a lover.'

'I certainly have not got a lover.'

‘Our religious nephew at Perivale does not seem to be of any use.’

‘I wish, Mrs Askerton, you would not speak of Captain Aylmer in that way. I don’t know any man whom I like so much, or at any rate better, than Captain Aylmer; but I hate the idea that no girl can become acquainted with an unmarried man without having her name mentioned with his, and having to hear ill-natured remarks of that kind.’

Page 18

'I hope you will learn to like this other man much better. Think how nice it will be to be mistress of the old place after all. And then to go back to the old family name! If I were you I would make up my mind not to let him leave the place till I had brought him to my feet.'

'If you go on like that I will not speak to you about him again.'

'Or rather not to my feet for gentlemen have laid aside the humble way of making love for the last twenty years at least; but I don't know whether the women haven't gained quite as much by the change as the men.'

'As I know nothing will stop you when you once get into a vein of that kind, I shall go,' said Clara. 'And till this man has come and gone I shall not mention his name again in your presence.'

'So be it,' said Mrs Askerton; 'but as I will promise to say nothing more about him, you need not go on his account.' But Clara had got up, and did leave the cottage at once.

CHAPTER III

WILL BELTON

Mr Belton came to the castle, and nothing further had been said at the cottage about his coming. Clara had seen Mrs Askerton in the meantime frequently, but that lady had kept her promise almost to Clara's disappointment. For she though she had in truth disliked the proposition that her cousin could be coming with any special views with reference to herself had nevertheless sufficient curiosity about the stranger to wish to talk about him. Her father, indeed, mentioned Belton's name very frequently, saying something with reference to him every time he found himself in his daughter's presence. A dozen times he said that the man was heartless to come to the house at such a time, and he spoke of his cousin always as though the man were guilty of a gross injustice in being heir to the property. But not the less on that account did he fidget himself about the room in which Belton was to sleep, about the food that Belton was to eat, and especially about the wine that Belton was to drink. What was he to do for wine? The stock of wine in the cellars at Belton Castle was, no doubt, very low. The squire himself drank a glass or two of port daily, and had some remnant of his old treasures by him, which might perhaps last him his time; and occasionally there came small supplies of sherry from the grocer at Taunton; but Mr Amedroz pretended to think that Will Belton would want champagne and claret and he would continue to make these suggestions in spite of his own repeated complaints that the man was no better than an ordinary farmer. 'I've no doubt he'll like beer,' said Clara. 'Beer!' said her father, and then stopped himself, as though he were lost in doubt whether it would best suit him to

scorn his cousin for having so low a taste as that suggested on his behalf, or to ridicule his daughter's idea that the household difficulty admitted of so convenient a solution.

Page 19

The day of the arrival at last came, and Clara certainly was in a twitter, although she had steadfastly resolved that she would be in no twitter at all. She had told her aunt by letter of the proposed visit, and Mrs Winterfield had expressed her approbation, saying that she hoped it would lead to good results. Of what good results could her aunt be thinking? The one probable good result would surely be this that relations so nearly connected should know each other. Why should there be any fuss made about such a visit? But, nevertheless, Clara, though she made no outward fuss, knew that inwardly she was not as calm about the man's coming as she would have wished herself to be.

He arrived about five o'clock in a gig from Taunton. Five was the ordinary dinner hour at Belton, but it had been postponed till six on this day, in the hope that the cousin might make his appearance at any rate by that hour. Mr Amedroz had uttered various complaints as to the visitor's heartlessness in not having written to name the hour of his arrival, and was manifestly intending to make the most of the grievance should he not present himself before six but this indulgence was cut short by the sound of the gig wheels. Mr Amedroz and his daughter were sitting in a small drawing-room which looked out to the front of the house, and he, seated in his accustomed chair near the window, could see the arrival. For a moment or two he remained quiet in his chair, as though he would not allow so insignificant a thing as his cousin's coming to ruffle him but he could not maintain this dignified indifference, and before Belton was out of the gig he had shuffled out into the hall.

Clara followed her father almost unconsciously, and soon found herself shaking hands with a big man, over six feet high, broad in the shoulders, large limbed, with bright quick grey eyes, a large mouth, teeth almost too perfect and a well-formed nose, with thick short brown hair and small whiskers which came half-way down his cheeks a decidedly handsome man with a florid face, but still, perhaps, with something of the promised roughness of the farmer. But a more good-humoured looking countenance Clara felt at once that she had never beheld.

'And you are the little girl that I remember when I was a boy at Mr Folliott's?' he said. His voice was clear, and rather loud, but it sounded very pleasant in that sad old house.

'Yes; I am the little girl,' said Clara smiling.

'Dear, dear! and that's twenty years ago now,' said he.

'But you oughtn't to remind me of that, Mr Belton.'

'Oughtn't I? Why not?'

'Because it shows how very old I am.'

'Ah, yes to be sure. But there's nobody here that signifies. How well I remember this room and the old tower out there. It isn't changed a bit!'

'Not to the outward eye, perhaps,' said the squire.

Page 20

'That's what I mean. So they're making hay still. Our hay has been all up these three weeks. I didn't know you ever meadowed the park.' Here he trod with dreadful severity upon the corns of Mr Amedroz, but he did not perceive it. And when the squire muttered something about a tenant, and the inconvenience of keeping land in his own hands, Belton would have gone on with the subject had not Clara changed the conversation. The squire complained bitterly of this to Clara when they were alone, saying that it was very heartless.

She had a little scheme of her own a plan arranged for the saying of a few words to her cousin on the earliest opportunity of their being alone together and she contrived that this should take place within half an hour after his arrival, as he went through the hall up to his room. 'Mr Belton,' she said, 'I'm sure you will not take it amiss if I take a cousin's privilege at once and explain to you something of our way of living here. My dear father is not very strong.'

'He is much altered since I saw him last.'

'Oh, yes. Think of all that he has had to bear! Well, Mr Belton, the fact is, that we are not so well off as we used to be, and are obliged to live in a very quiet way. You will not mind that?'

'Who? I?'

'I take it very kind of you, your coming all this way to see us'

'I'd have come three times the distance.'

'But you must put up with us as you find us, you know. The truth is we are very poor.'

'Well, now that's just what I wanted to know. One couldn't write and ask such a question; but I was sure I should find out if I came.'

'You've found it out already, you see.'

'As for being poor, it's a thing I don't think very much about not for young people. But it isn't comfortable when a man gets old. Now what I want to know is this; can't something be done?'

'The only thing to do is to be very kind to him. He has had to let the park to Mr Stovey, and he doesn't like talking about it.'

'But if it isn't talked about, how can it be mended?'

'It can't be mended.'

'We'll see about that. But I'll be kind to him; you see if I ain't. And I'll tell you what, I'll be kind to you too, if you'll let me. You have got no brother now.'

'No,' said Clara; 'I have got no brother now.' Belton was looking full into her face, and saw that her eyes had become clouded with tears.

'I will be your brother,' said he. 'You see if I don't. When I say a thing I mean it. I will be your brother.' And he took her hand, caressing it, and showing her that he was not in the least afraid of her. He was blunt in his bearing, saying things which her father would have called indelicate and heartless, as though they gave him no effort, and placing himself at once almost in a position of ascendancy. This Clara had not intended. She had thought that her farmer cousin, in spite of the superiority of his prospects as heir to the property, would have acceded to her little hints with silent acquiescence; but instead of this he seemed prepared to take upon himself the chief part in the play that was to be acted between them. 'Shall it be so?' he said, still holding her hand.

Page 21

'You are very kind.'

'I will be more than kind; I will love you dearly if you will let me. You don't suppose that I have looked you up here for nothing. Blood is thicker than water, and you have nobody now so near to you as I am. I don't see why you should be so poor, as the debts have been paid.'

'Papa has had to borrow money on his life interest in the place.'

'That's the mischief! Never mind. We'll see if we can't do something. And in the meantime don't make a stranger of me. Anything does for me. Lord bless you! if you were to see how I rough it sometimes! I can eat beans and bacon with any one; and what's more, I can go without 'em if I can't get 'em.'

'We'd better get ready for dinner now. I always dress, because papa likes to see it.' This she said as a hint to her cousin that he would be expected to change his coat, for her father would have been annoyed had his guest sat down to dinner without such ceremony. Will Belton was not very good at taking hints; but he did understand this, and made the necessary change in his apparel.

The evening was long and dull, and nothing occurred worthy of remark except the surprise manifested by Mr Amedroz when Belton called his daughter by her Christian name. This he did without the slightest hesitation, as though it were the most natural thing in the world for him to do. She was his cousin, and cousins of course addressed each other in that way. Clara's quick eye immediately saw her father's slight gesture of dismay, but Belton caught nothing of this. The squire took an early opportunity of calling him Mr Belton with some little peculiarity of expression; but this was altogether lost on Will, who five times in the next five minutes addressed 'Clara' as though they were already on the most intimate terms. She would have answered him in the same way, and would have called him Will, had she not been afraid of offending her father.

Mr Amedroz had declared his purpose of coming down to breakfast during the period of his cousin's visit, and at half-past nine he was in the parlour. Clara had been there some time, but had not seen her cousin. He entered the room immediately after her father, bringing his hat with him in his hand, and wiping the drops of perspiration from his brow. 'You have been out, Mr Belton,' said the squire.

'All round the place, sir. Six o'clock doesn't often find me in bed, summer or winter. What's the use of laying in bed when one has had enough of sleep?'

'But that's just the question,' said Clara; 'whether one has had enough at six o'clock.'



'Women want more than men, of course. A man, if he means to do any good with land, must be out early. The grass will grow of itself at nights, but it wants looking after as soon as the daylight comes.'

'I don't know that it would do much good to the grass here,' said the squire, mournfully.

'As much here as anywhere. And indeed I've got something to say about that.' He had now seated himself at the breakfast-table, and was playing with his knife and fork. 'I think, sir, you're hardly making the best you can out of the park.'

Page 22

'We won't mind talking about it, if you please,' said the squire.

'Well; of course I won't, if you don't like it; but upon my word you ought to look about you; you ought indeed.'

'In what way do you mean?' said Clara.

'If your father doesn't like to keep the land in his own hands, he should let it to some one who would put stock in it not go on cutting it year after year and putting nothing back, as this fellow will do. I've been talking to Stovey, and that's just what he means.'

'Nobody here has got money to put stock on the land,' said the squire, angrily.

'Then you should look for somebody somewhere else. That's all. I'll tell you what now, Mr Amedroz, I'll do it myself.' By this time he had helped himself to two large slices of cold mutton, and was eating his breakfast and talking with an equal amount of energy for either occupation.

'That's out of the question,' said the squire.

'I don't see why it should be out of the question. It would be better for you and better for me too, if this place is ever to be mine.' On hearing this the squire winced, but said nothing. This terrible fellow was so vehemently outspoken that the poor old man was absolutely unable to keep pace with him even to the repeating of his wish that the matter should be talked of no further. 'I'll tell you what I'll do, now,' continued Belton. 'There's altogether, outside the palings and in, about a hundred and fifty acres of it. I'll give you one pound two and sixpence an acre, and I won't cut an acre of grass inside the park no, nor much of it outside either only just enough to give me a little fodder for the cattle in winter.'

'And give up Plaistow Hall?' asked Clara.

'Lord love you, no. I've a matter of nine hundred acres on hand there, and most of it under the plough. I've counted it up, and it would just cost me a thousand pounds to stock this place. I should come and look at it twice a year or so, and I should see my money home again, if I didn't get any profit out of it.'

Mr Amedroz was astonished. The man had only been in his house one night, and was proposing to take all his troubles off his hands. He did not relish the proposition at all. He did not like to be accused of not doing as well for himself as others could do for him. He did not wish to make any change although he remembered at the moment his anger with Farmer Stovey respecting the haycarts. He did not desire that the heir should have any immediate interest in the place. But he was not strong enough to meet the proposition with a direct negative. 'I couldn't get rid of Stovey in that way,' he said, plaintively. 'I've settled it all with Stovey already,' said Belton. 'He'll be glad enough to

walk off with a twenty-pound note, which I'll give him. He can't make money out of the place. He hasn't got means to stock it, and then see the wages that hay-making runs away with! He'd lose by it even at what he's paying, and he knows it. There won't be any difficulty about Stovey.'

Page 23

By twelve o'clock on that day Mr Stovey had been brought into the house, and had resigned the land. It had been let to Mr William Belton at an increased rental a rental increased by nearly forty pounds per annum and that gentleman had already made many of his arrangements for entering upon his tenancy. The twenty pounds had already been paid to Stovey, and the transaction was complete. Mr Amedroz sat in his chair bewildered, dismayed and, as he himself declared shocked, quite shocked, at the precipitancy of the young man. It might be for the best. He didn't know. He didn't feel at all sure. But such hurrying in such a matter was, under all the circumstances of the family, to say the least of it, very indelicate. He was angry with himself for having yielded, and angry with Clara for having allowed him to do so. 'It doesn't signify much,' he said, at last. 'Of course he'll have it all to himself before long.'

'But, papa, it really seems to be a much better arrangement for you. You'll get more money'

'Money is not everything, my dear.'

'But you'd sooner have Mr Belton, our own cousin, about the place, than Mr Stovey.'

'I don't know. We shall see. The thing is done now, and there is no use in complaining. I must say he hasn't shown a great deal of delicacy.'

On that afternoon Belton asked Clara to go out with him, and walk round the place. He had been again about the grounds, and had made plans, and counted up capabilities, and calculated his profit and losses. 'If you don't dislike scrambling about,' said he, 'I'll show you everything that I intend to do.'

'But I can't have any changes made, Mr Belton,' said Mr Amedroz, with some affectation of dignity in his manner. 'I won't have the fences moved, or anything of that kind.'

'Nothing shall be done, sir, that you don't approve. I'll just manage it all as if I was acting as your own bailiff.' 'Son,' he was going to say, but he remembered the fate of his cousin Charles just in time to prevent the use of the painful word.

'I don't want to have anything done,' said Mr Amedroz.

'Then nothing shall be done. We'll just mend a fence or two, to keep in the cattle, and leave other things as they are. But perhaps Clara will walk out with me all the same.'

Clara was quite ready to walk out, and had already tied on her hat and taken her parasol.

'Your father is a little nervous,' said he, as soon as they were beyond hearing of the house.

'Can you wonder at it, when you remember all that he has suffered.'

'I don't wonder at it in the least; and I don't wonder at his disliking me either.'

'I don't think he dislikes you, Mr Belton.'

'Oh, but he does. Of course he does. I'm the heir to the place instead of you. It is natural that he should dislike me. But I'll live it down. You see if I don't. I'll make him so fond of me, he'll always want to have me here. I don't mind a little dislike to begin with.'

Page 24

'You're a wonderful man, Mr Belton.'

'I wish you wouldn't call me Mr Belton. But of course you must do as you please about that. If I can make him call me Will, I suppose you'll call me so too.'

'Oh, yes; then I will.'

'It don't much matter what a person is called; does it! Only one likes to be friendly with one's friends. I suppose you don't like my calling you Clara.'

'Now you've begun you had better go on.'

'I mean to. I make it a rule never to go back in the world. Your father is half sorry that he has agreed about the place; but I shan't let him off now. And I'll tell you what. In spite of what he says, I'll have it as different as possible before this time next year.

'Why, there's lots of timber that ought to come out of the plantation; and there's places where the roots want stubbing up horribly. These things always pay for themselves if they are properly done. Any good done in the world always pays.' Clara often remembered those words afterwards when she was thinking of her cousin's character. Any good done in the world always pays!

'But you mustn't offend my father, even though it should do good,' she said.

'I understand,' he answered. 'I won't tread on his toes. Where do you get your milk and butter?'

'We buy them.'

'From Stovey, I suppose.'

'Yes; from Mr Stovey. It goes against the rent.'

'And it ought to go against the grain too living in the country and paying for milk! I'll tell you what I'll do. I'll give you a cow. It shall be a little present from me to you.' He said nothing of the more important present which this would entail upon him in the matter of the grass for the cow; but she understood the nature of the arrangement, and was anxious to prevent it.

'Oh, Mr Belton, I think we'd better not attempt that,' she said.

'But we will attempt it. I've pledged myself to do nothing to oppose your father; but I've made no such promise as to you. We'll have a cow before I'm many days older. What a pretty place this is! I do like these rocks so much, and it is such a comfort to be off the flat.'

'It is pretty.'

'Very pretty. You've no conception what an ugly place Plaistow is. The land isn't actual fen now, but it was once. And it's quite flat. And there is a great dike, twenty feet wide, oozing through it just oozing, you know; and lots of little dikes, at right angles with the big one. And the fields are all square. And there are no hedges and hardly a tree to be seen in the place.

'What a picture you have drawn! I should commit suicide if I lived there.'

'Not if you had so much to do as I have.'

'And what is the house like?'

'The house is good enough an old-fashioned manor-house, with high brick chimneys, and brick gables, tiled all over, and large square windows set in stone. The house is good enough, only it stands in the middle of a farm-yard. I said there were no trees, but there is an avenue.'

Page 25

'Come, that is something.'

'It was an old family seat, and they used to have avenues in those days; but it doesn't lead up to the present hail door. It comes sideways up to the farm. yard; so that the whole thing must have been different once, and there must have been a great court-yard. In Elizabeth's time Plaistow Manor was rather a swell place, and belonged to some Roman Catholics who came to grief, and then the Howards got it. There's a whole history about it, only I don't care much about those things.'

'And is it yours now?'

'It's between me and my uncle, and I pay him rent for his part. He's a clergyman you know, and he has a living in Lincolnshire not far off.'

'And do you live alone in that big house?'

'There's my sister. You've heard of Mary haven't you?'

Then Clara remembered that there was a Miss Belton, a poor sickly creature, with a twisted spine and a hump back, as to whose welfare she ought to have made inquiries.

'Oh yes; of course,' said Clara. 'I hope she's better than she used to be when we heard of her.'

'She'll never be better. But then she does not become much worse. I think she does grow a little weaker. She's older than I am, you know two years older; but you would think she was quite an old woman to look at her.' Then, for the next half-hour, they talked about Mary Belton as they visited every corner of the place. Belton still had an eye to business as he went on talking, and Clara remarked how many sticks he moved as he went, how many stones he kicked on one side, and how invariably he noted any defect in the fences. But still he talked of his sister, swearing that she was as good as gold, and at last wiping away the tears from his eyes as he described her maladies. 'And yet I believe she is better off than any of us,' he said, 'because she is so good.' Clara began to wish that she had called him Will from the beginning, because she liked him so much. He was just the man to have for a cousin a true loving cousin, stalwart, self-confident, with a grain or two of tyranny in his composition as becomes a man in relation to his intimate female relatives; and one, moreover, with whom she could trust herself to be familiar without any danger of love-making! She saw his character clearly, and told herself that she understood it perfectly. He was a jewel of a cousin, and she must begin to call him Will as speedily as possible.

At last they came round in their walk to the gate leading into Colonel Askerton's garden; and here in the garden, close to the gate, they found Mrs Askerton. I fancy that she had been watching for them, or at any rate watching for Clara, so that she might know how



her friend was carrying herself with her cousin. She came at once to the wicket, and there she was introduced by Clara to Mr Belton. Mr Belton, as he made his bow, muttered something awkwardly, and seemed to lose his self-possession for the moment. Mrs Askerton was very gracious to him, and she knew well how to be both gracious and ungracious. She talked about the scenery, and the charms of the old place, and the dullness of the people around them, and the inexpediency of looking for society in country places; till after awhile Mr Belton was once more at his ease.

Page 26

'How is Colonel Askerton?' asked Clara.

'He's in-doors. Will you come and see him? He's reading a French novel, as usual. It's the only thing he ever does in summer. Do you ever read French novels, Mr Belton?'

'I read very little at all, and when I do I read English.'

'Ah, you're a man who has a pursuit in life, no doubt.'

'I should rather think so that is, if you mean, by a pursuit, earning my bread. A man has not much time for French novels with a thousand acres of land on his hands; even if he knew how to read French, which I don't.'

'But you're not always at work on your farm?'

'It's pretty constant, Mrs Askerton. Then I shoot, and hunt.'

'You're a sportsman?'

'All men living in the country are more or less.'

'Colonel Askerton shoots a great deal. He has the shooting of Belton, you know. He'll be delighted, I'm sure, to see you if you are here some time in September. But you, coming from Norfolk, would not care for partridge-shooting in Somersetshire.'

'I don't see why it shouldn't be as good here as there.'

'Colonel Askerton thinks he has got a fair head of game upon the place.'

'I dare say. Game is easily kept if people knew how to set about it.'

'Colonel Askerton has a very good keeper, and has gone to a great deal of expense since he has been here.'

'I'm my own head-keeper,' said Belton; 'and so I will be or rather should be, if I had this place.'

Something in the lady's tone had grated against his feelings and offended him; or perhaps he thought that she assumed too many of the airs of proprietorship because the shooting of the place had been let to her husband for thirty pounds a year.

'I hope you don't mean to say you'll turn us out,' said Mrs Askerton, laughing.

'I have no power to turn anybody out or in,' said he. 'I've got nothing to do with it.'



Clara, perceiving that matters were not going quite pleasantly between her old and new friend, thought it best to take her departure. Belton, as he went, lifted his hat from his head, and Clara could not keep herself from thinking that he was not only very handsome, but that he looked very much like a gentleman, in spite of his occupation as a farmer.

'Bye-bye, Clara,' said Mrs Askerton; 'come down and see me tomorrow, there's a dear. Don't forget what a dull life I have of it.' Clara said that she would come. And I shall be so happy to see Mr Belton if he will call before he leaves you.' At this Belton again raised his hat from his head, and muttered some word or two of civility. But this, his latter muttering, was different from the first, for he had altogether regained his presence of mind.

'You didn't seem to get on very well with my friend,' said Clara, laughing, as soon as they had turned away from the cottage.

'Well, no that is to say, not particularly well or particularly badly. At first I took her for somebody else I knew slightly ever so long ago, and I was thinking of that other person at the time.'

Page 27

'And what was the other person's name?'

'I can't even remember that at the present moment.'

'Mrs Askerton was a Miss Oliphant.'

'That wasn't the other lady's name. But, independently of that, they can't be the same. The other lady married a Mr Berdmore.'

'A Mr Berdmore!' Clara as she repeated the name felt convinced that she had heard it before, and that she had heard it in connexion with Mrs Askerton. She certainly had heard the name of Berdmore pronounced, or had seen it written, or had in some shape come across the name in Mrs Askerton's presence; or at any rate somewhere on the premises occupied by that lady. More than this she could not remember; but the name, as she had now heard it from her cousin, became at once distinctly connected in her memory with her friends at the cottage.

'Yes,' said Belton; 'a Berdmore. I knew more of him than of her, though for the matter of that, I knew very little of him either. She was a fast-going girl, and his friends were very sorry. But I think they are both dead or divorced, or that they have come to grief in some way.'

'And is Mrs Askerton like the fast-going lady?'

'In a certain way. Not that I remember what the fast-going lady was like; but there was something about this woman that put me in mind of the other. Vigo was her name; now I recollect it a Miss Vigo. It's nine or ten years ago now, and I was little more than a boy.'

'Her name was Oliphant.'

'I don't suppose they have anything to do with each other. What riled me was the way she talked of the shooting. People do when they take a little shooting. They pay some trumpery thirty or forty pounds a year, and then they seem to think that it's almost the same as though they owned the property themselves. I've known a man talk of his manor because he had the shooting of a wood and a small farm round it. They are generally shop-keepers out of London, gin distillers, or brewers, or people like that.'

'Why, Mr Belton, I didn't think you could be so furious!

'Can't I? When my back's up, it is up! But it isn't up yet.'

'And I hope it won't be up while you remain in Somersetshire.'

'I won't answer for that. There's Stovey's empty cart standing just where it stood yesterday; and he promised he'd have it home before three today. My back will be up with him if he doesn't mind himself.'

It was nearly six o'clock when they got back to the house, and Clara was surprised to find that she had been out three hours with her cousin. Certainly it had been very pleasant. The usual companion of her walks, when she had a companion, was Mrs Askerton; but Mrs Askerton did not like real walking. She would creep about the grounds for an hour or so, and even such companionship as that was better to Clara than absolute solitude; but now she had been carried about the place, getting over stiles and through gates, and wandering through the copses, till she was tired and hungry, and excited and happy. 'Oh, papa,' she said, 'we have had such a walk!'

Page 28

'I thought we were to have dined at five,' he replied, in a low wailing voice.

'No, papa, indeed indeed you said six.'

'That was for yesterday.'

'You said we were to make it six while Mr Belton was here.'

'Very well if it must be, I suppose it must be.'

'You don't mean on my account,' said Will. 'I'll undertake to eat my dinner, sir, at any hour that you'll undertake to give it me. If there's a strong point about me at all, it is my appetite.'

Clara, when she went to her father's room that evening, told him what Mr Belton had said about the shooting, knowing that her father's feelings would agree with those which had been expressed by her cousin. Mr Amedroz of course made this an occasion for further grumbling, suggesting that Belton wanted to get the shooting for himself as he had got the farm. But, nevertheless, the effect which Clara had intended was produced, and before she left him he had absolutely proposed that the shooting and the land should go together.

'I'm sure that Mr Belton doesn't mean that at all,' said Clara.

'I don't care what he means,' said the squire.

'And it wouldn't do to treat Colonel Askerton in that way,' said Clara.

'I shall treat him just as I like,' said the squire.

CHAPTER IV

SAFE AGAINST LOVE-MAKING

A *dear* cousin, and safe against love-making! This was Clara's verdict respecting Will Belton, as she lay thinking of him in bed that night. Why that warranty against love-making should be a virtue in her eyes I cannot, perhaps, explain. But all young ladies are apt to talk to themselves in such phrases about gentlemen with whom they are thrown into chance intimacy as though love-making were in itself a thing injurious and antagonistic to happiness, instead of being, as it is, the very salt of life. Safe against love-making! And yet Mrs Askerton, her friend, had spoken of the probability of such love-making as being the great advantage of his coming. And there could not be a second opinion as to the expediency of a match between her and her cousin in a worldly point of view. Clara, moreover, had already perceived that he was a man fit to



guide a wife, very good- humoured and good-tempered also, anxious to give pleasure to others, a man of energy and forethought, who would be sure to do well in the world and hold his head always high among his fellows as good a husband as a girl could have. Nevertheless, she congratulated herself in that she felt satisfied that he was safe against love-making! Might it be possible that the pressing of hands at Taunton had been so tender, and those last words spoken with Captain Aylmer so soft, that on his account she felt delighted to think that her cousin was warranted not to make love?

Page 29

And what did Will Belton think about his cousin, insured as he was thus supposed to be against the dangers of love? He, also, lay awake for awhile that night, thinking over his new friendship. Or rather he thought of it walking about his room, and looking out at the bright harvest moon for with him to be in bed was to be asleep. He sat himself down, and he walked about, and he leaned out of the window into the cool night air; and he made some comparisons in his mind, and certain calculations; and he thought of his present home, and of his sister, and of his future prospects as they were concerned with the old place at which he was now staying; and he portrayed to himself, in his mind, Clara's head and face and figure and feet and he resolved that she should be his wife. He had never seen a girl who seemed to suit him so well. Though he had only been with her for a day, he swore to himself that he knew he could love her. Nay he swore to himself that he did love her. Then when he had quite made up his mind, he tumbled into his bed and was asleep in five minutes.

Miss Amedroz was a handsome young woman, tall, well-made, active, and full of health. She carried herself as though she thought her limbs were made for use, and not simply for ease upon a sofa. Her head and neck stood well upon her shoulders, and her waist showed none of those waspish proportions of which ladies used to be more proud than I believe them to be now, in their more advanced state of knowledge and taste. There was much about her in which she was like her cousin, as though the blood they had in common between them had given to both the same proportions and the same comeliness. Her hair was of a dark brown colour, as was his. Her eyes were somewhat darker than his, and perhaps not so full of constant movement; but they were equally bright, and possessed that quick power of expressing tenderness which belonged to them. Her nose was more finely cut, as was also her chin, and the oval of her face; but she had the same large expressive mouth, and the same perfection of ivory-white teeth. As has been said before, Clara Amedroz, who was now nearly twenty-six years of age, was not a young-looking woman. To the eyes of many men that would have been her fault; but in the eyes of Belton it was no fault. He had not made himself fastidious as to women by much consort with them, and he was disposed to think that she who was to become his wife had better be something more than a girl not long since taken out of the nursery. He was well-to-do in the world, and could send his wife out in her carriage, with all becoming bravery of appurtenances. And he would do so, too, when he should have a wife. But still he would look to his wife to be a useful partner to him. She should be a woman not above agricultural solicitude, or too proud to have a care for her cows. Clara, he was sure, had no false pride; and yet as he was sure also she was at every point such a lady as would

Page 30

do honour to the carriage and the bravery when it should be forthcoming. And then such a marriage as this would put an end to all the trouble which he felt in reference to the entail on the estate. He knew that he was to be master of Belton, and of course had, in that knowledge, the satisfaction which men do feel from the consciousness of their future prosperity. And this with him was enhanced by a strong sympathy with old-fashioned prejudices as to family. He would be Belton of Belton; and there had been Beltons of Belton in old days, for a longer time backwards than he was able to count. But still the prospect had not been without its alloy, and he had felt real distress at the idea of turning his cousin out of her father's house. Such a marriage as that he now contemplated would put all these things right.

When he got up in the morning he was quite as keen about it as he had been on the previous evening and as he thought about it the more, he became keener and still more keen. On the previous evening, as he was leaning out of the window endeavouring to settle in his own mind what would be the proper conduct of the romance of the thing, he had considered that he had better not make his proposal quite at once. He was to remain eight days at Belton, and as eight days was not a long period of acquaintance, he had reflected that it might be well for him to lay what foundation for love it might be in his power to construct during his present sojourn, and then return and complete the work before Christmas. But as he was shaving himself, the habitual impatience of his nature predominated, and he became disposed to think that delay would be useless, and might perhaps be dangerous. It might be possible that Clara would be unable to give him a decisive answer so quickly as to enable him to return home an accepted lover; but if such doubt were left, such doubt would give him an excuse for a speedy return to Belton. He did not omit to tell himself that very probably he might not succeed at all. He was a man not at all apt to feel assurance that he could carry all before him in love. But in this matter, as in all others which required from him any personal effort, he prepared himself to do his best, leaving the consequences to follow as they might. When he threw his seed corn into the earth with all such due appliances of agricultural skill and industry as his capital and experience enabled him to use, he did his part towards the production of next year's crop; and after that he must leave it to a higher Power to give to him, or to withhold from him, the reward of his labour. He had found that, as a rule, the reward had been given when the labour had been honest; and he was now prepared to follow the same plan, with the same hopes, in this matter of his love-making.

Page 31

After much consideration very much consideration, a consideration which took him the whole time that he was brushing his hair and washing his teeth he resolved that he would, in the first instance, speak to Mr Amedroz. Not that he intended that the father should win the daughter for him. He had an idea that he would like to do that work for himself. But he thought that the old squire would be better pleased if his consent were asked in the first instance. The present day was Sunday, and he would not speak on the subject till Monday. This day he would devote to the work of securing his future father-in-law's good opinion; to that and to his prayers.

And he had gained very much upon Mr Amedroz before the evening of the day was over. He was a man before whom difficulties seemed to yield, and who had his own way simply because he had become accustomed to ask for it to ask for it and to work for it. He had so softened the squire's tone of thought towards him, that the future stocking of the land was spoken of between them with something like energy on both sides; and Mr Amedroz had given his consent, without any difficulty, to the building of a shed for winter stall-feeding. Clara sat by listening, and perceived that Will Belton would soon be allowed to do just what he pleased with the place. Her father talked as she had not heard him talk since her poor brother's death, and was quite animated on the subject of woodcraft. 'We don't know much about timber down where I am,' said Will, 'just because we've got no trees.'

'I'll show you your way,' said the old man. 'I've managed the timber on the estate myself for the last forty years.' Will Belton of course did not say a word as to the gross mismanagement which had been apparent even to him. What a cousin he was! Clara thought what a paragon among cousins! And then he was so manifestly safe against love-making! So safe, that he only cared to talk about timber, and oxen, and fences, and winter-forage! But it was all just as it ought to be; and if her father did not call him Will before long, she herself would set the way by doing so first. A very paragon among cousins!

'What a flatterer you are,' she said to him that night.

'A flatterer! I?'

'Yes, you. You have flattered papa out of all his animosity already. I shall be jealous soon; for he'll think more of you than of me.'

'I hope he'll come to think of us as being nearly equally near to him,' said Belton, with a tone that was half serious and half tender. Now that he had made up his mind, he could not keep his hand from the work before him an instant. But Clara had also made up her mind, and would not be made to think that her cousin could mean anything that was more than cousinly.

'Upon my word,' she said, laughing, 'that is very cool on your part.'

'I came here determined to be friends with him at any rate.'

'And you did so without any thought of me. But you said you would be my brother, and I shall not forget your promise. Indeed, indeed, I cannot tell you how glad I am that you have come both for papa's sake and my own. You have done him so much good that I only dread to think that you are going so soon.'

Page 32

'I'll be back before long. I think nothing of running across here from Norfolk. You'll see enough of me before next summer.'

Soon after breakfast on the next morning he got Mr Amedroz out into the grounds, on the plea of showing him the proposed site for the cattle shed; but not a word was said about the shed on that occasion. He went to work at his other task at once, and when that was well on hand the squire was quite unfitted for the consideration of any less important matter, however able to discuss it Belton might have been himself.

'I've got something particular that I want to say to you, sir,' Belton began.

Now Mr Amedroz was of opinion that his cousin had been saying something very particular ever since his arrival, and was rather frightened at this immediate prospect of a new subject.

'There's nothing wrong; is there?'

'No, nothing wrong at least, I hope it's not wrong. Would not it be a good plan, sir, if I were to marry my cousin Clara?'

What a terrible young man! Mr Amedroz felt that his breath was so completely taken away from him that he was quite unable to speak a word of answer at the moment. Indeed, he was unable to move, and stood still, where he had been fixed by the cruel suddenness of the proposition made to him.

'Of course I know nothing of what she may think about it,' continued Belton. 'I thought it best to come to you before I spoke a word to her. And I know that in many ways she is above me. She is better educated, and reads more, and all that sort of thing. And it may be that she'd rather marry a London man than a fellow who passes all his time in the country. But she couldn't get one who would love her better or treat her more kindly. And then as to the property; you must own it would be a good arrangement. You'd like to know it would go to your own child and your own grandchild wouldn't you, sir? And I'm not badly off, without looking to this place at all, and could give her every thing she wants. But then I don't know that she'd care to marry a farmer.' These last words he said in a melancholy tone, as though aware that he was confessing his own disgrace.

The squire had listened to it all, and had not as yet said a word. And now, when Belton ceased, he did not know what word to speak. He was a man whose thoughts about women were chivalrous, and perhaps a little old-fashioned. Of course, when a man contemplates marriage, he could do nothing better, nothing more honourable, than consult the lady's father in the first instance. But he felt that even a father should be addressed on such a subject with great delicacy. There should be ambages in such a matter. The man who resolved to commit himself to such a task should come forward

with apparent difficulty with great diffidence, and even with actual difficulty. He should keep himself almost hidden, as behind a mask, and should tell of his own ambition

Page 33

with doubtful, quivering voice. And the ambages should take time. He should approach the citadel to be taken with covered ways working his way slowly and painfully. But this young man, before he had been in the house three days, said all that he had to say without the slightest quaver in his voice, and evidently expected to get an answer about the squire's daughter as quickly as he had got it about the squire's land.

'You have surprised me very much,' said the old man at last, drawing his breath.

'I'm quite in earnest about it. Clara seems to me to be the very girl to make a good wife to such a one as I am. She's got everything that a woman ought to have By George, she has!'

'She is a good girl, Mr Belton.'

'She is as good as gold, every inch of her.'

'But you have not known her very long, Mr Belton.'

'Quite long enough for my purposes. You see I knew all about her beforehand who she is, and where she comes from. There's a great deal in that, you know.'

Mr Amedroz shuddered at the expressions used. It was grievous to him to hear his daughter spoken of as one respecting whom some one knew who she was and whence she came. Such knowledge respecting the daughter of such a family was, as a matter of course, common to all polite persons. 'Yes,' said Mr Amedroz, stiffly: 'you know as much as that about her, certainly.'

'And she knows as much about me. Now the question is, whether you have any objection to make?'

'Really, Mr Belton, you have taken me so much by surprise that I do not feel myself competent to answer you at once.'

'Shall we say in an hour's time, sir?' An hour's time! Mr Amedroz, if he could have been left to his own guidance, would have thought a month very little for such a work.

'I suppose you would wish me to see Clara first,' said Mr Amedroz.

'Oh dear, no. I would much rather ask her myself if only I could get your consent to my doing so.'

'And you have said nothing to her?'



'Not a word.'

'I am glad of that. You would have behaved badly, I think, had you done so while staying under my roof.'

'I thought it best, at any rate, to come to you first. But as I must be back at Plaistow on this day week, I haven't much time to lose. So if you could think about it this afternoon, you know Mr Amedroz, much bewildered, promised that he would do his best, and eventually did bring himself to give an answer on the next morning. 'I have been thinking about this all night,' said Mr Amedroz.

'I'm sure I'm very much obliged to you,' said Belton, feeling rather ashamed of his own remissness as he remembered how soundly he had himself slept.

'If you are quite sure of yourself'

'Do you mean sure of loving her? I am as sure of that as anything.'

'But men are so apt to change their fancies.'

'I don't know much about my fancies; but I don't often change my purpose when I'm in earnest. In such a matter as this I couldn't change. I'll say as much as that for myself, though it may seem bold.'

Page 34

'Of course, in regard to money such a marriage would be advantageous to my child. I don't know whether you know it, but I shall have nothing to give her literally nothing.'

'All the better, sir, as far as I am concerned. I'm not one who wants to be saved from working by a wife's fortune.'

'But most men like to get something when they marry.'

'I want to get nothing nothing, that is, in the way of money. If Clara becomes my wife I'll never ask you for one shilling.'

'I hope her aunt will do something for her.' This the old man said in a wailing voice, as though the expression of such a hope was grievous to him.

'If she becomes my wife, Mrs Winterfield will be quite at liberty to leave her money elsewhere.' There were old causes of dislike between Mr Belton and Mrs Winterfield, and even now Mrs Winterfield was almost offended because Mr Belton was staying at Belton Castle.

'But all that is quite uncertain,' continued Mr Amedroz.

'And I have your leave to speak to Clara myself?'

'Well, Mr Belton; yes; I think so. I do not see why you should not speak to her. But I fear you are a little too precipitate. Clara has known you so very short a time, that you can hardly have a right to hope that she should learn to regard you at once as you would have her do.' As he heard this, Belton's face became long and melancholy. He had taught himself to think that he could dispense with that delay till Christmas which he had at first proposed to himself, and that he might walk into the arena at once, and perhaps win the battle in the first round. 'Three days is such a very short time,' said the squire.

'It is short certainly,' said Belton.

The father's leave was however given, and armed with that, Belton was resolved that he would take, at any rate, some preliminary steps in love-making before he returned to Plaistow. What would be the nature of the preliminary steps taken by such a one as him, the reader by this time will probably be able to surmise.

CHAPTER V

NOT SAFE AGAINST LOVE-MAKING



'Why don't you call him Will?' Clara said to her father. This question was asked on the evening of that Monday on which Mr Amedroz had given his consent as to the marriage proposal.

'Call him Will! Why should I?'

'You used to do so, when he was a boy.'

'Of course I did; but that is years ago. He would think it impertinent now.'

'Indeed he would not; he would like it. He has told me so. It sounds so cold to him to be called Mr Belton by his relations.'

Page 35

The father looked at his daughter as though for a moment he also suspected that matters had really been arranged between her and her future lover without his concurrence, and before his sanction had been obtained. But if for a moment such a thought did cross his mind, it did not dwell there. He trusted Belton; but as to his daughter, he knew that he might be sure of her. It would be impossible with her to keep such a secret from him, even for half a day. And yet, how odd it was! Here was a man who in three days had fallen in love with his daughter; and here was his daughter apparently quite as ready to be in love with the man. How could she, who was ordinarily circumspect, and almost cold in her demeanour towards strangers who was from circumstances and from her own disposition altogether hostile to flirting intimacies how could this Clara have changed her nature so speedily? The squire did not understand it, but was prepared to believe that it was all for the best. 'I'll call him Will, if you like it,' said he.

'Do, papa, and then I can do so also. He is such a good fellow, and I am so fond of him.'

On the next morning Mr Amedroz did, with much awkwardness, call his guest by his Christian name. Clara caught her cousin's eye and smiled, and he also smiled. At that moment he was more in love than ever. Could anything be more charming than this? Immediately after breakfast he was going over to Redicote, to see a builder in a small way who lived there, and whom he proposed to employ in putting up the shed for the cattle; but he almost begrudged the time, so anxious was he to begin his suit. But his plan had been laid out and he would follow it. 'I think I shall be back by three o'clock,' he said to Clara, 'and then we'll have our walk.'

'I'll be ready; and you can call for me at Mr Askerton's. I must go down there, and it will save you something in your walk to pick me up at the cottage.' And so the arrangements for the day were made.

Clara had promised that she would soon call at the cottage, and was, indeed, rather anxious to see Mrs Askerton on her own account. What she had heard from her cousin as to a certain Miss Vigo of old days had interested her, and also what she had heard of a certain Mr Berdmore. It had been evident to her that her cousin had thought little about it. The likeness of the lady he then saw to the lady he had before known. had at first struck him; but when he found that the two ladies were not represented by one and the same person, he was satisfied, and there was an end of the matter for him. But it was not so with Clara. Her feminine mind dwelt on the matter with more earnestness than he had cared to entertain, and her clearer intellect saw possibilities which did not occur to him. But it was not till she found herself walking across the park to the cottage that she remembered that any inquiries as to her past life might be disagreeable to Mrs Askerton. She

Page 36

had thought of asking her friend plainly whether the names of Vigo and Berdmore had ever been familiar to her; but she reminded herself that there had been rumours afloat, and that there might be a mystery. Mrs Askerton would sometimes talk of her early life; but she would do this with dreamy, indistinct language, speaking of the sorrows of her girlhood, but not specifying their exact nature, seldom mentioning any names, and never referring with clear personality to those who had been nearest to her when she had been a child. Clara had seen her friend's maiden name, Mary Oliphant, written in a book, and seeing it had alluded to it. On that occasion Mrs Askerton had spoken of herself as having been an Oliphant, and thus Clara had come to know the fact. But now, as she made her way to the cottage, she remembered that she had learned nothing more than this as to Mrs Askerton's early life. Such being the case, she hardly knew how to ask any question about the two names that had been mentioned. And yet, why should she not ask such a question? Why should she doubt Mrs Askerton? And if she did doubt, why should not her doubts be solved?

She found Colonel Askerton and his wife together, and she certainly would ask no such question in his presence. He was a slight built, wiry man, about fifty, with iron-grey hair and beard who seemed to have no trouble in life, and to desire but few pleasures. Nothing could be more regular than the course of his days, and nothing more idle. He breakfasted at eleven, smoked and read till the afternoon, when he rode for an hour or two; then he dined, read again, smoked again, and went to bed. In September and October he shot, and twice in the year, as has been before stated, went away to seek a little excitement elsewhere. He seemed to be quite contented with his lot, and was never heard to speak an angry word with any one. Nobody cared for him much; but then he troubled himself with no one's affairs. He never went to church, and had not eaten or drank in any house but his own since he had come to Belton.

'Oh, Clara, you naughty girl,' said Mrs Askerton, 'why didn't you come yesterday? I was expecting you all day.'

'I was busy. Really, we've grown to be quite industrious people since my cousin came.'

'They tell me he's taking the land into his own hands,' said the colonel.

'Yes, indeed; and he is going to build sheds, and buy cattle; and I don't know what he doesn't mean to do; so that we shall be alive again.'

'I hope he won't want my shooting.'

'He has shooting of his own in Norfolk,' said Clara.



'Then he'll hardly care to come here for that purpose. When I heard of his proceedings I began to be afraid.'

'I don't think he would do anything to annoy you for the world,' said Clara, enthusiastically. 'He's the most unselfish person I ever met.'

'He'd have a perfect right to take the shooting if he liked it that is always supposing that he and your father agreed about it.'

Page 37

'They agree about everything now. He has altogether disarmed papa's prejudices, and it seems to be recognized that he is to have his own way about the place. But I don't think he'll interfere about the shooting.'

'He won't, my dear, if you ask him not,' said Mrs Askerton.

'I'll ask him in a moment if Colonel Askerton wishes it.'

'Oh dear no,' said he. 'It would be teaching the ostler to grease the horse's teeth. Perhaps he hasn't thought of it.'

'He thinks of everything,' said Clara.

'I wonder whether he's thinking of .' So far Mrs Askerton spoke, and then she paused. Colonel Askerton looked up at Clara with an ill-natured smile, and Clara felt that she blushed. Was it not cruel that she could not say a word in favour of a friend and a cousin a cousin who had promised to be a brother to her, without being treated with such words and such looks as these? But she was determined not to be put down. 'I'm quite sure of this,' she said, 'that my cousin would do nothing unfair or ungentlemanlike.'

'There would be nothing unfair or ungentlemanlike in it. I shouldn't take it amiss at all but I should simply take up my bed and walk. Pray tell him that I hope I shall have the pleasure of seeing him before he goes. I did call yesterday, but he was out.'

'He'll be here soon. He's to come here for me.' But Colonel Askerton's horse was brought to the door, and he could not therefore wait to make Mr Belton's acquaintance on that occasion.

'What a phoenix this cousin of yours is,' said Mrs Askerton, as soon as her husband was gone.

'He is a splendid fellow he is indeed. There's so much life about him! He's always doing something. He says that doing good will always pay in the long run. Isn't that a fine doctrine?'

'Quite a practical phoenix!'

'It has done papa so much good! At this moment he's out somewhere, thinking of what is going on, instead of moping in the house. He couldn't bear the idea of Will's coming, and now he is already beginning to complain because he's going away.'

'Will, indeed!'

'And why not Will? He's my cousin.'

'Yes ten times removed. But so much the better if he's to be anything more than a cousin.'

'He is to be nothing more, Mrs Askerton.'

'You're quite sure of that?

'I am quite sure of it. And I cannot understand why there should be such a suspicion because he and I are thrown closely together, and are fond of each other. Whether he is a sixth, eighth, or tenth cousin makes no difference. He is the nearest I have on that side; and since my poor brother's death he is papa's heir. It is so natural that he should be my friend and such a comfort that he should be such a friend as he is! I own it seems cruel to me that under such circumstances there should be any suspicion.'

'Suspicion, my dear suspicion of what?'

Page 38

'Not that I care I or it. I am prepared to love him as if he were my brother. I think him one of the finest creatures I ever knew perhaps the finest I ever did know. His energy and good-nature together are just the qualities to make the best kind of man. I am proud of him as my friend and my cousin, and now you may suspect what you please.'

'But, my dear, why should not he fall in love with you? It would be the most proper, and also the most convenient thing in the world.'

'I hate talking of falling in love as though a woman had nothing else to think of whenever she sees a man.'

'A woman has nothing else to think of.'

'I have a great deal else. And so has he.'

'It's quite out of the question on his part, then?'

'Quite out of the question. I'm sure he likes me; I can see it in his face, and hear it in his voice, and am so happy that it is so. But it isn't in the way that you mean. Heaven knows that I may want a friend some of these days, and I feel that I may trust to him. His feelings to me will be always those of a brother.'

'Perhaps so. I have seen that fraternal love before under similar circumstances, and it has always ended in the same way.'

'I hope it won't end in any way between us.'

'But the joke is that this suspicion, as you call it which makes you so indignant is simply a suggestion that a thing should happen which, of all things in the world, would be the best for both of you.'

'But the thing won't happen, and therefore let there be an end of it. I hate the twaddle talk of love, whether it's about myself or about any one else. It makes me feel ashamed of my sex, when I find that I cannot talk of myself to another woman without being supposed to be either in love or thinking of love either looking for it or avoiding it. When it comes, if it comes prosperously, it's a very good thing. But I for one can do without it, and I feel myself injured when such a state of things is presumed to be impossible.'

'It is worth any one's while to irritate you, because your indignation is so beautiful.'

'It is not beautiful to me; for I always feel ashamed afterwards of my own energy. And now, if you please, we won't say anything more about Mr Will Belton.'

'May I not talk about him, even as the enterprising cousin?'



'Certainly; and in any other light you please. Do you know he seemed to think that he had known you ever so many years ago.' Clara, as she said this, did not look direct at her friend's face; but still she could perceive that Mrs Askerton was disconcerted. There came a shade of paleness over her face, and a look of trouble on her brow, and for a moment or two she made no reply.

'Did he?' she then said. 'And when was that?'

'I suppose it was in London. But, after all, I believe it was not you, but somebody whom he remembers to have been like you. He says that the lady was a Miss Vigo.' As she pronounced the name, Clara turned her face away, feeling instinctively that it would be kind to do so.

Page 39

'Miss Vigo!' said Mrs Askerton at once; and there was that in the tone of her voice which made Clara feel that all was not right with her. 'I remember that there were Miss Vigos; two of them, I think. I didn't know that they were like me especially.'

'And he says that the one he remembers married a Mr Berdmore.'

'Married a Mr Berdmore!' The tone of voice was still the same, and there was an evident struggle, as though the woman was making a vehement effort to speak in her natural voice. Then Clara looked at her, feeling that if she abstained from doing so, the very fact of her so abstaining would be remarkable. There was the look of pain on Mrs Askerton's brow, and her cheeks were still pale, but she smiled as she went on speaking. 'I'm sure I'm flattered, for I remember that they were both considered beauties. Did he know anything more of her?'

'No; nothing more.'

'There must have been some casual likeness I suppose.' Mrs Askerton was a clever woman, and had by this time almost recovered her self-possession. Then there came a ring at the front door, and in another minute Mr Belton was in the room. Mrs Askerton felt that it was imperative on her to make some allusion to the conversation which had just taken place, and dashed at the subject at once. 'Clara tells me that I am exactly like some old friend of yours, Mr Belton.'

Then he looked at her closely as he answered her. 'I have no right to say that she was my friend, Mrs Askerton,' he said; 'indeed there was hardly what might be called an acquaintance between us; but you certainly are extremely like a certain Miss Vigo that I remember.'

'I often wonder that one person isn't more often found to be like another,' said Mrs Askerton.

'People often are like,' said he, 'but not like in such a way as to give rise to mistakes as to identity. Now, I should have stopped you in the street and called you Mrs Berdmore.'

'Didn't I once see or hear the name of Berdmore in this house?' asked Clara.

Then that look of pain returned. Mrs Askerton had succeeded in recovering the usual tone of her countenance, but now she was once more disturbed. 'I think I know the name,' said she.

'I fancy that I have seen it in this house,' said Clara. 'You may more likely have heard it, my dear. My memory is very poor, but if I remember rightly, Colonel Askerton did know a Captain Berdmore a long while ago, before he was married; and you may probably have heard him mention the name.' This did not quite satisfy Clara, but she said

nothing more about it then. If there was a mystery which Mrs Askerton did not wish to have explored, why should she explore it?

Soon after this Clara got up to go, and Mrs Askerton, making another attempt to be cheerful, was almost successful. So you're going back into Norfolk on Saturday, Clara tells me. You are making a very short visit now that you're come among us.'

Page 40

'It is a long time for me to be away from home. Farmers can hardly ever dare to leave their work. But in spite of my farm, I am talking of coming here again about Christmas.'

'But you are going to have a farming establishment here too?'

'That will be nothing. Clara will look after that for me; will you not?' Then they went, and Belton had to consider how he would begin the work before him. He had some idea that too much precipitancy might do him an injury, but he hardly knew how to commence without coming to the point at once. When they were out together in the park, he went back at first to the subject of Mrs Askerton.

'I would almost have sworn they were one and the same woman,' he said.

'But you see that they are not.'

'It's not only the likeness, but the voice. It so chanced that I once saw that Miss Vigo in some trouble. I happened to meet her in company with a man who was who was tipsy, in fact, and I had to relieve her.'

'Dear me how disagreeable!'

'It's a long time ago, and there can't be any harm in mentioning it now. It was the man she was going to marry, and whom she did marry.'

'What the Mr Berdmore?'

'Yes; he was often in that way. And there was a look about Mrs Askerton just now so like the look of that Miss Vigo then, that I cannot get rid of the idea.'

'They can't be the same, as she was certainly a Miss Oliphant. And you hear, too, what she says.'

'Yes I heard what she said. You have known her long?'

'These two years.'

'And intimately?'

'Very intimately. She is our only neighbour; and her being here has certainly been a great comfort to me. It is sad not having some woman near one that one can speak to and then, I really do like her very much.'

'No doubt it's all right.'

'Yes; it's all right,' said Clara. After that there was nothing more said about Mrs Askerton, and Belton began his work. They had gone from the cottage, across the park, away from the house, up to a high rock which stood boldly out of the ground, from whence could be seen the sea on one side, and on the other a far track of country almost away to the moors. And when they reached this spot they seated themselves. 'There,' said Clara, 'I consider this to be the prettiest spot in England.'

'I haven't seen all England,' said Belton.

'Don't be so matter-of-fact, Will. I say it's the prettiest in England, and you can't contradict me.'

'And I say you're the prettiest girl in England, and you can't contradict me.'

This annoyed Clara, and almost made her feel that her paragon of a cousin was not quite so perfect as she had represented him to be. 'I see', she said, 'that if I talk nonsense I'm to be punished.'

'Is it a punishment to you to know that I think you very handsome?' he said, turning round and looking full into her face.

Page 41

'It is disagreeable to me very, to have any such subject talked about at all. What would you think if I began to pay you foolish personal compliments?'

'What I say isn't foolish; and there's a great difference. Clara, I love you better than all the world put together.'

She now looked at him; but still she did not believe it. It could not be that after all her boastings she should have made so gross a blunder. 'I hope you do love me,' she said; 'indeed, you are bound to do so, for you promised that you would be my brother.'

'But that will not satisfy me now, Clara. Clara, I want to be your husband.'

'Will!' she exclaimed.

'Now you know it all; and if I have been too sudden, I must beg your pardon.'

'Oh, Will, forget that you have said this. Do not go on until everything must be over between us.'

'Why should anything be over between us? Why should it be wrong in me to love you?'

'What will papa say?'

'Mr Amedroz knows all about it already, and has given me his consent. I asked him directly I had made up my own mind, and he told me that I might go to you.'

'You have asked papa? Oh dear, oh dear, what am I to do?'

'Am I so odious to you then?' As he said this he got up from his seat and stood before her. He was a tall, well-built, handsome man, and he could assume a look and mien that were almost noble when he was moved as he was moved now.

'Odious! Do you not know that I have loved you as my cousin that I have already learned to trust you as though you were really my brother? But this breaks it all.'

'You cannot love me then as my wife?'

'No.' She pronounced the monosyllable alone, and then he walked away from her as though that one little word settled the question for him, now and for ever. He walked away from her, perhaps a distance of two hundred yards, as though the interview was over, and he were leaving her. She, as she saw him go, wished that he would return that she might say some word of comfort to him. Not that she could have said the only word that would have comforted him. At the first blush of the thing, at the first sound of the address which he had made to her, she had been angry with him. He had disappointed her, and she was indignant. But her anger had already melted and turned

itself to ruth. She could not but love him better, in that he had loved her so well; but yet she could not love him with the love which he desired.

But he did not leave her. When he had gone from her down the hill the distance that has been named, he turned back and came up to her slowly. He had a trick of standing and walking with his thumbs fixed into the armholes of his waistcoat, while his large hands rested on his breast. He would always assume this attitude when he was assured that he was right in his views, and was eager to carry some point at issue. Clara already understood that this attitude signified his intention to be autocratic. He now came close up to her and again stood over her, before he spoke. 'My dear,' he said, 'I have been rough and hasty in what I have said to you, and I have to ask you to pardon my want of manners.'

Page 42

'No, no, no,' she exclaimed.

'But in a matter of so much interest to us both you will not let an awkward manner prejudice me.'

'It is not that; indeed, it is not.'

'Listen to me, dearest. It is true that I promised to be your brother, and I will not break my word unless I break it by your own sanction. I did promise to be your brother, but I did not know then how fondly I should come to love you. Your father, when I told him of this, bade me not to be hasty; but I am hasty, and I haven't known how to wait. Tell me that I may come at Christmas for my answer, and I will not say a word to trouble you till then. I will be your brother, at any rate till Christmas.'

'Be my brother always.'

A black cloud crossed his brow as this request reached his ears. She was looking anxiously into his face, watching every turn in the expression of his countenance. 'Will you not let it wait till Christmas?' he asked.

She thought it would be cruel to refuse this request, and yet she knew that no such waiting could be of service to him. He had been awkward in his love-making, and was aware of it. He should have contrived this period of waiting for himself; giving her no option but to wait and think of it. He should have made no proposal, but have left her certain that such proposal was coming. In such case she must have waited and if good could have come to him from that, he might have received it. But, as the question was now presented to her, it was impossible that she should consent to wait. To have given such consent would have been tantamount to receiving him as her lover. She was therefore forced to be cruel.

'It will be of no avail to postpone my answer when I know what it must be. Why should there be suspense?'

'You mean that it is impossible that you should love me?'

'Not in that way, Will.'

'And why not?' Then there was a pause. 'But I am a fool to ask such a question as that, and I should be worse than a fool were I to press it. It must then be considered as settled?'

She got up and clung to his arm. 'Oh, Will, do not look at me like that!

'It must then be considered as settled?' he repeated.



'Yes, Will, yes. Pray consider it as settled.' He then sat down on the rock again, and she came and sat by him near to him, but not close as she had been before. She turned her eyes upon him, gazing on him, but did not speak to him; and he sat also without speaking for a while, with his eyes fixed upon the ground. 'I suppose we may go back to the house?' he said at last.

'Give me your hand, Will, and tell me that you will still love me as your sister.'

He gave her his hand. 'If you ever want a brother's care you shall have it from me,' he said.

'But not a brother's love?'

'No. How can the two go together? I shan't cease to love you because my love is in vain. Instead of making me happy it will make me wretched. That will be the only difference.'

Page 43

'I would give my life to make you happy, if that were possible.'

'You will not give me your life in the way that I would have it.'

After that they walked in silence back to the house, and when he had opened the front door for her, he parted from her and stood alone under the porch, thinking of his misfortune.

CHAPTER VI

SAFE AGAINST LOVE-MAKING ONCE AGAIN

For a considerable time Belton stood under the porch of the house, thinking of what had happened to him, and endeavouring to steady himself under the blow which he had received. I do not know that he had been sanguine of success. Probably he had made to himself no assurances on the subject. But he was a man to whom failure, of itself, was intolerable. In any other event of life he would have told himself that he would not fail that he would persevere and conquer. He could imagine no other position as to which he could at once have been assured of failure, in any project on which he had set his heart. But as to this project it was so. He had been told that she could not love him that she could never love him and he had believed her. He had made his attempt and had failed; and, as he thought of this, standing under the porch, he became convinced that life for him was altogether changed, and that he who had been so happy must now be a wretched man.

He was still standing there when Mr Amedroz came down into the hall, dressed for dinner, and saw his figure through the open doors. 'Will,' he said, coming up to him, 'it only wants five minutes to dinner.' Belton started and shook himself, as though he were shaking off a lethargy, and declared that he was quite ready. Then he remembered that he would be expected to dress, and rushed upstairs, three steps at a time, to his own room. When he came down, Clara and her father were already in the dining-room, and he joined them there.

Mr Amedroz, though he was not very quick in reading facts from the manners of those with whom he lived, had felt assured that things had gone wrong between Belton and his daughter. He had not as yet had a minute in which to speak to Clara, but he was certain that it was so. Indeed, it was impossible not to read terrible disappointment and deep grief in the young man's manner. He made no attempt to conceal it, though he did not speak of it. Through the whole evening, though he was alone for a while with the squire, and alone also for a time with Clara, he never mentioned or alluded to the subject of his rejection. But he bore himself as though he knew and they knew as though all the world knew that he had been rejected. And yet he did not remain silent. He talked of his property and of his plans, and explained how things were to be done in

his absence. Once only was there something like an allusion made to his sorrow. 'But you will be here at Christmas?' said Mr Amedroz, in answer to something which Belton had said as to work to be done in his absence. 'I do not know how that may be now,' said Belton. And then they had all been silent.

Page 44

It was a terrible evening to Clara. She endeavoured to talk, but found it to be impossible. All the brightness of the last few days had disappeared, and the world seemed to her to be more sad and solemn than ever. She had no idea when she was refusing him that he would have taken it to heart as he had done. The question had come before her for decision so suddenly, that she had not, in fact, had time to think of this as she was making her answer. All she had done was to feel that she could not be to him what he wished her to be. And even as yet she had hardly asked herself why she must be so steadfast in her refusal. But she had refused him steadfastly, and she did not for a moment think of reducing the earnestness of her resolution. It seemed to be manifest to her, from his present manner, that he would never ask the question again; but she was sure, let it be asked ever so often, that it could not be answered in any other way.

Mr Amedroz, not knowing why it was so, became cross and querulous, and scolded his daughter. To Belton, also, he was captious, making little difficulties, and answering him with petulance. This the rejected lover took with most extreme patience, as though such a trifling annoyance had no effect in adding anything to his misery. He still held his purpose of going on the Saturday, and was still intent on work which was to be done before he went; but it seemed that he was satisfied to do everything now as a duty, and that the enjoyment of the thing, which had heretofore been so conspicuous, was over.

At last they separated, and Clara, as was her wont, went up to her father's room. 'Papa,' she said, 'what is all this about Mr Belton?'

'All what, my dear? what do you mean?'

'He has asked me to be to be his wife; and has told me that he came with your consent.'

'And why shouldn't he have my consent? What is there amiss with him? Why shouldn't you marry him if he likes you? You seemed, I thought, to be very fond of him.'

This surprised Clara more than anything. She could hardly have told herself why, but she would have thought that such a proposition from her cousin would have made her father angry unreasonably angry with him for presuming to have such an idea; but now it seemed that he was going to be angry with her for not accepting her cousin out of hand.

'Yes, papa; I am fond of him; but not like that. I did not expect that he would think of me in that way.'

'But why shouldn't he think of you? It would be a very good marriage for you, as far as money is concerned.'

'You would not have me marry any one for that reason would you, papa?'

'But you seemed to like him. Well; of course I can't make you like him. I meant to do for the best; and when he came to me as he did, I thought he was behaving very handsomely, and very much like a gentleman.'

'I am sure he would do that.'

Page 45

'And if I could have thought that this place would be your home when I am gone, it would have made me very happy very happy.'

She now came and stood close to him and took his hand. 'I hope, papa, you do not make yourself uneasy about me. I shall do very well. Fm sure you can't want me to go away and leave you.'

'How will you do very well? I'm sure I don't know. And if your aunt Winterfield means to provide for you, it would only be kind in her to let me know it, so that I might not have the anxiety always on my mind.'

Clara knew well enough what was to be the disposition of her aunt's property, but she could not tell her father of that now. She almost felt that it was her duty to do so, but she could not bring herself to do it. She could only beg him not to be anxious on her behalf, making vague assurances that she would do very well. 'And are you determined not to change your mind about Will?' he said at last.

'I shall not change my mind about that, papa, certainly,' she answered. Then he turned away from her, and she saw that he was displeased.

When alone, she was forced to ask herself why it was that she was so certain. Alas! there could in truth be no doubt on that subject in her own mind. When she sat down, resolved to give herself an answer, there was no doubt. She could not love her cousin, Will Belton, because her heart belonged to Captain Aylmer.

But she knew that she had received nothing in exchange for her heart. He had been kind to her on that journey to Taunton, when the agony arising from her brother's death had almost crushed her. He had often been kind to her on days before that so kind, so soft in his manners, approaching so nearly to the little tenderness of incipient love-making, that the idea of regarding him as her lover had of necessity forced itself upon her. But in nothing had he gone beyond those tendernesses, which need not imperatively be made to mean anything, though they do often mean so much. It was now two years since she had first thought that Captain Aylmer was the most perfect gentleman she knew, and nearly two years since Mrs Winterfield had expressed to her a hope that Captain Aylmer might become her husband. She had replied that such a thing was impossible as any girl would have replied; and had in consequence treated Captain Aylmer with all the coolness which she had been able to assume whenever she was in company with him in her aunt's presence. Nor was it natural to her to be specially gracious to a man under such trying circumstances, even when no Mrs Winterfield was there to behold. And so things had gone on. Captain Aylmer had now and again made himself very pleasant to her at certain trying periods of joy or trouble almost more than pleasant. But nothing had come of it, and Clara had told herself that Captain Aylmer had no special feeling in her favour. She had told herself this, ever

since that journey together from Perivale to Taunton; but never till now had she confessed to herself what was her own case.

Page 46

She made a comparison between the two men. Her cousin Will was, she thought, the more generous, the more energetic perhaps by nature, the man of the higher gifts. In person he was undoubtedly the superior. He was full of noble qualities forgetful of self, industrious, full of resources, a very man of men, able to command, eager in doing work for others' good and his own a man altogether uncontaminated by the coldness and selfishness of the outer world. But he was rough, awkward, but indifferently educated, and with few of those tastes which to Clara Amedroz were delightful. He could not read poetry to her, he could not tell her of what the world of literature was doing now or of what it had done in times past. He knew nothing of the inner world of worlds which governs the world. She doubted whether he could have told her who composed the existing cabinet, or have given the name of a single bishop beyond the see in which his own parish was situated. But Captain Aylmer knew everybody, and had read everything, and understood, as though by instinct, all the movements of the world in which he lived.

But what mattered any such comparison? Even though she should be able to prove to herself beyond the shadow of a doubt that her cousin Will was of the two the fitter to be loved the one more worthy of her heart no such proof could alter her position. Love does not go by worth. She did not love her cousin as she must love any man to whom she could give her hand and, alas! she did love that other man.

On this night I doubt whether Belton did slumber with that solidity of repose which was usual to him. At any rate, before he came down in the morning he had found time for sufficient thought, and had brought himself to a resolution. He would not give up the battle as lost. To his thinking there was something weak and almost mean in abandoning any project which he had set before himself. He had been awkward, and he exaggerated to himself his own awkwardness. He had been hasty, and had gone about his task with inconsiderate precipitancy. It might be that he had thus destroyed all his chance of success. But, as he said to himself, 'he would never say die, as long as there was a puff of breath left in him.' He would not mope, and hang down his head, and wear the willow. Such a state of things would ill suit either the roughness or the readiness of his life. No! He would bear like a man the disappointment which had on this occasion befallen him, and would return at Christmas and once more try his fortune.

At breakfast, therefore, the cloud had passed from his brow. When he came in he found Clara alone in the room, and he simply shook hands with her after his ordinary fashion. He said nothing of yesterday, and almost succeeded in looking as though yesterday had been in no wise memorable. She was not so much at her ease, but she also received some comfort from his demeanour. Mr Amedroz came down almost immediately, and Belton soon took an opportunity of saying that he would be back at Christmas if Mr Amedroz would receive him.



Page 47

'Certainly,' said the squire. 'I thought it had been all settled.'

'So it was till I said a word yesterday which foolishly seemed to unsettle it. But I have thought it over again, and I find that I can manage it.'

'We shall be so glad to have you!' said Clara.

'And I shall be equally glad to come. They are already at work, sir, about the sheds.'

'Yes; I saw the carts full of bricks go by,' said the squire, querulously. 'I didn't know there was to be any brickwork. You said you would have it made of deal slabs with oak posts.'

'You must have a foundation, sir. I propose to carry the brickwork a foot and a half above the ground.'

'I suppose you know best. Only that kind of thing is so very ugly.'

'If you find it to be ugly after it is done, it shall be pulled down again.'

'No it can never come down again.'

'It can and it shall, if you don't like it. I never think anything of changes like that.'

'I think they'll be very pretty!' said Clara.

'I dare say,' said the squire, 'but at any rate it won't make much difference to me. I shan't be here long to see them.'

This was rather melancholy; but Belton bore up even against this, speaking cheery words and expressing bright hopes so that it seemed, both to Clara and her father, that he had in a great measure overcome the disappointment of the preceding day. It was probable that he was a man not prone to be deeply sensitive in such matters for any long period. The period now had certainly not been long, and yet Will Belton was alive again.

Immediately after breakfast there occurred a little incident which was not without its effect upon them all. There came up on the drive immediately before the front door, under the custody of a boy, a cow. It was an Alderney cow, and any man or woman at all understanding cows would at once have perceived that this cow was perfect in her kind. Her eyes were mild, and soft, and bright. Her legs were like the legs of a deer; and in her whole gait and demeanour she almost gave the lie to her own name, asserting herself to have sprung from some more noble origin among the woods, than maybe supposed to be the origin of the ordinary domestic cow a useful animal, but heavy in its appearance, and seen with more pleasure at some little distance than at

close quarters. But this cow was graceful in its movements, and almost tempted one to regard her as the far-off descendant of the elk or the antelope.

‘What’s that?’ said Mr Amedroz, who, having no cows of his own, was not pleased to see one brought up in that way before his hail door. ‘There’s somebody’s cow come here.’

Clara understood it in a moment; but she was pained, and said nothing. Had the cow come without any such scene as that of yesterday, she would have welcomed the animal with all cordiality, and would have sworn to her cousin that the cow should be cherished for his sake. But after what had passed it was different. How was she to take any present from him now?

Page 48

But Belton faced the difficulty without any bashfulness or apparent regret. 'I told you I would give you a cow,' said he 'and here she is.'

'What can she want with a cow?' said Mr Amedroz.

'I am sure she wants one very much. At any rate she won't refuse the present from me; will you, Clara?'

What could she say? 'Not if papa will allow me to keep it.'

'But we've no place to put it!' said the squire. 'We haven't got grass for it!'

'There's plenty of grass,' said Belton. 'Come, Mr Amedroz; I've made a point of getting this little creature for Clara, and you mustn't stand in the way of my gratification.' Of course he was successful, and of course Clara thanked him with tears in her eyes.

The next two days passed by without anything special to mark them, and then the cousin was to go. During the period of his visit he did not see Colonel Askerton, nor did he again see Mrs Askerton. He went to the cottage once, with the special object of returning the colonel's call; but the master was out, and he was not specially invited in to see the mistress. He said nothing more to Clara about her friends, but he thought of the matter more than once, as he was going about the place, and became aware that he would like to ascertain whether there was a mystery, and if so, what was its nature. He knew that he did not like Mrs Askerton, and he felt also that Mrs Askerton did not like him. This was, as he thought, unfortunate; for might it not be the case, that in the one matter which was to him of so much importance, Mrs Askerton might have considerable influence over Clara?

During these days nothing special was said between him and Clara. The last evening passed over without anything to brighten it or to make it memorable. Mr Amedroz, in his passive, but gently querulous way, was sorry that Belton was going to leave him, as his cousin had been the creation of some new excitement for him, but he said nothing on the subject; and when the time for going to bed had come, he bade his guest farewell with some languid allusion to the pleasure which he would have in seeing him again at Christmas. Belton was to start very early in the morning before six, and of course he was prepared to take leave also of Clara. But she told him very gently, so gently that her father did not hear it, that she would be up to give him a cup of coffee before he went.

'Oh no,' he said.

'But I shall. I won't have you go without seeing you out of the door.'

And on the following morning she was up before him. She hardly understood, herself, why she was doing this. She knew that it should be her object to avoid any further

special conversation on that subject which they discussed up among the rocks. She knew that she could give him no comfort, and that he could give none to her. It would seem that he was willing to let the remembrance of the scene pass away, so that

Page 49

it should be as though it had never been; and surely it was not for her to disturb so salutary an arrangement! But yet she was up to bid him God speed as he went. She could not bear, so she excused the matter to herself she could not bear to think that he should regard her as ungrateful. She knew all that he had done for them. She had perceived that the taking of the land, the building of the sheds, the life which he had contrived in so short a time to throw into the old place, had all come from a desire on his part to do good to those in whose way he stood by family arrangements made almost before his birth; and she longed to say to him one word of thanks. And had he not told her once in the heat of his disappointment; for then at that moment, as Clara had said to herself, she supposed that he must have been in some measure disappointed had he not even then told her that when she wanted a brother's care, a brother's care should be given to her by him? Was she not therefore~ bound to do for him what she would do for a brother?

She, with her own hands, brought the coffee into the little breakfast parlour, and handed the cup into his hands. The gig, which had come overnight from Taunton, was not yet at the door, and there was a minute or two during which they must speak to each other. Who has not seen some such girl when she has come down early, without the full completeness of her morning toilet, and yet nicer, fresher, prettier to the eye of him who is so favoured, than she has ever been in more formal attire? And what man who has been so favoured has not loved her who has so favoured him, even though he may not previously have been enamoured as deeply as poor Will Belton?

'This is so good of you,' he said.

'I wish I knew how to be good to you,' she answered not meaning to trench upon dangerous ground, but feeling, as the words came from her, that she had done so. 'You have been so good to us, so very good to papa, that we owe you everything. I am so grateful to you for saying that you will come back at Christmas.'

He had resolved that he would refrain from further love-making till the winter; but he found it very hard to refrain when so addressed. To take her in his arms, and kiss her twenty times, and swear that he would never let her go to claim her at once savagely as his own, that was the line of conduct to which temptation prompted him. How could she look at him so sweetly, how could she stand before him, ministering to him with all her pretty maidenly charms brought so close to him, without intending that he should love her? But he did refrain. 'Blood is thicker than water,' said he. 'That's the real reason why I first came.'

'I understand that quite, and it is that feeling that makes you so good. But I'm afraid you are spending a great deal of money here and all for our sakes.'

'Not at all. I shall get my money back again. And if I didn't, what then? I've plenty of money. it is not money that I want.'

Page 50

She could not ask him what it was that he did want, and she was obliged therefore to begin again. 'Papa will look forward so to the winter now.'

'And so shall I.'

'But you must come for longer then you won't go away at the end of a week? Say that you won't.'

'I'll see about it. I can't tell quite yet. You'll write me a line to say when the shed is finished, won't you?'

'That I will, and I'll tell you how Bessy goes on.' Bessy was the cow. 'I will be so very fond of her. She'll come to me for apples already.'

Belton thought that he would go to her, wherever she might be, even if he were to get no apples. 'It's all cupboard love with them,' he said. 'I'll tell you what I'll do when I come, I'll bring you a dog that will follow you without thinking of apples.' Then the gig was heard on the gravel before the door, and Belton was forced to go. For a moment he reflected whether, as her cousin, it was not his duty to kiss her. It was a matter as to which he had doubt as is the case with many male cousins; but ultimately he resolved that if he kissed her at all he would not kiss her in that light, and so he again refrained. 'Goodbye,' he said, putting out his great hand to her.

'Good-bye, Will, and God bless you.' I almost think he might have kissed her, asking himself no questions as to the light in which it was done.

As he turned from her he saw the tears in her eyes; and as he sat in the gig, thinking of them, other tears came into his own. By heaven, he would have her yet! He was a man who had not read much of romance. To him all the imagined mysteries of passion had not been made common by the perusal of legions of love stories but still he knew enough of the game to be aware that women had been won in spite, as it were, of their own teeth. He knew that he could not now run away with her, taking her off by force; but still he might conquer her will by his own. As he remembered the tears in her eyes, and the tone of her voice, and the pressure of her hand, and the gratitude that had become tender in its expression, he could not but think that he would be wise to love her still. Wise or foolish, he did love her still; and it should not be owing to fault of his if she did not become his wife. As he drove along he saw little of the Quantock hills, little of the rich Somersetshire pastures, little of the early beauty of the August morning. He saw nothing but her eyes, moistened with bright tears, and before he reached Taunton he had rebuked himself with many revilings in that he had parted from her and not kissed her.

Page 51

Clara stood at the door watching the gig till it was out of sight watching it as well as her tears would allow. What a grand cousin he was! Had it not been a pity a thousand pities that that grievous episode should have come to mar the brotherly love, the sisterly confidence, which might otherwise have been so perfect between them? But perhaps it might all be well yet. Clara knew, or thought that she knew, that men and women differed in their appreciation of love. She, having once loved, could not change. Of that she was sure. Her love might be fortunate or unfortunate. It might be returned, or it might simply be her own, to destroy all hope of happiness for her on earth. But whether it were this or that, whether productive of good or evil, the love itself could not be changed. But with men she thought it might be different. Her cousin, doubtless, had been sincere in the full sincerity of his heart when he made his offer. And had she accepted it had she been able to accept it she believed that he would have loved her truly and constantly. Such was his nature. But she also believed that love with him, unrequited love, would have no enduring effect, and that he had already resolved, with equal courage and wisdom, to tread this short-lived passion out beneath his feet. One night had sufficed to him for that treading out. As she thought of this the tears ran plentifully down her cheek; and going again to her room she remained there crying till it was time for her to wipe away the marks of her weeping, that she might go to her father.

But she was very glad that Will bore it so well very glad! Her cousin was safe against love-making once again.

CHAPTER VII

MISS AMEDROZ GOES TO PERIVALE

It had been settled for some time past that Miss Amedroz was to go to Perivale for a few days in November. Indeed it seemed to be a recognized fact in her life that she was to make the journey from Belton to Perivale and back very often, as there prevailed an idea that she owed a divided duty. This was in some degree hard upon her, as she had very little gratification in these visits to her aunt. Had there been any intention on the part of Mrs Winterfield to provide for her, the thing would have been intelligible according to the usual arrangements which are made in the world on such matters; but Mrs Winterfield had scarcely a right to call upon her niece for dutiful attendance after having settled it with her own conscience that her property was all to go to her nephew. But Clara entertained no thought of rebelling, and had agreed to make the accustomed journey in November, travelling then, as she did on all such journeys, at her aunt's expense.

Two things only occurred to disturb her tranquillity before she went, and they were not of much violence. Mr Wright, the clergyman, called at Belton Castle, and in the course of conversation with Mr Amedroz renewed one of those ill-natured rumours which had

before been spread about Mrs Askerton. Clara did not see him, but she heard an account of it all from her father.

Page 52

'Does it mean, papa,' she said, speaking almost with anger, 'that you want me to give up Mrs Askerton?'

'How can you be so unkind as to ask me such a question?' he replied. 'You know how I hate to be bothered. I tell you what I hear, and then you can decide for yourself.'

'But that isn't quite fair either, papa. That man comes here'

'That man, as you call him, is the rector of the parish, and I've known him for forty years.'

'And have never liked him, papa.'

'I don't know much about liking anybody, my dear. Nobody likes me, and so why should I trouble myself?'

'But, papa, it all amounts to this that somebody has said that the Askertons are not Askertons at all, but ought to be called something else. Now we know that he served as Captain and Major Askerton for seven years in India and in fact it all means nothing. If I know anything, I know that he is Colonel Askerton.'

'But do you know that she is his wife? That is what Mr Wright asks. I don't say anything. I think it's very indelicate talking about such things.'

'If I am asked whether I have seen her marriage certificate, certainly I have not; nor probably did you ever do so as to any lady that you ever knew. But I know that she is her husband's wife, as we all of us know things of that sort. I know she was in India with him. I've seen things of hers marked with her name that she has had at least ten years.'

'I don't know anything about it, my dear,' said Mr Amedroz, angrily.

'But Mr Wright ought to know something about it before he says such things. And then this that he's saying now isn't the same that he said before.'

'I don't know what he said before.'

'He said they were both of them using a feigned name.'

'It's nothing to me what name they use. I know I wish they hadn't come here, if I'm to be troubled about them in this way first by Wright and then by you.'

'They have been very good tenants, papa.'

'You needn't tell me that, Clara, and remind me about the shooting when you know how unhappy it makes me.'

After this Clara said nothing more, and simply determined that Mr Wright and his gossip should have no effect upon her intimacy with Mrs Askerton. But not the less did she continue to remember what her cousin had said about Miss Vigo.

And she had been ruffled a second time by certain observations which Mrs Askerton made to her respecting her cousin or rather by little words which were dropped on various occasions. It was very clear that Mrs Askerton did not like Mr Belton, and that she wished to prejudice Clara against him. 'It's a pity he shouldn't be a lover of yours,' the lady said, 'because it would be such a fine instance of Beauty and the Beast.' It will of course be understood that Mrs Askerton had never been told of the offer that had been made.

'You don't mean to say that he's not a handsome man,' said Clara.

Page 53

'I never observe whether a man is handsome or not; but I can see very well whether he knows what to do with his arms and legs, or whether he has the proper use of his voice before ladies.' Clara remembered a word or two spoken by her cousin to herself, in speaking which he had seemed to have a very proper use of his voice. 'I know when a man is at ease like a gentleman, and when he is awkward like a'

'Like a what?' said Clara. 'Finish what you've got to say.'

'Like a ploughboy, I was going to say,' said Mrs Askerton.

'I declare I think you have a spite against him, because he said you were like some Miss Vigo,' replied Clara, sharply. Mrs Askerton was on that occasion silenced, and she said nothing more about Mr Belton till after Clara had returned from Perivale.

The journey itself from Belton to Perivale was always a nuisance, and was more so now than usual, as it was made in the disagreeable month of November. There was kept at the little inn at Redicote an old fly-so called which habitually made the journey to the Taunton railway-station, under the conduct of an old grey horse and an older and greyer driver, whenever any of the old ladies of the neighbourhood were minded to leave their homes. This vehicle usually travelled at the rate of five miles an hour; but the old grey driver was never content to have time allowed to him for the transit calculated upon such a rate of speed. Accidents might happen, and why should he be made, as he would plaintively ask, to drive the poor beast out of its skin? He was consequently always at Belton a full hour before the time, and though Clara was well aware of all this, she could not help herself. Her father was fussy and impatient, the man was fussy and impatient; and there was nothing for her but to go. On the present occasion she was taken off in this way the full sixty minutes too soon, and after four dreary hours spent upon the road, found herself landed at the Taunton station, with a terrible gulf of time to be passed before she could again proceed on her journey.

One little accident had occurred to her. The old horse, while trotting leisurely along the level high road, had contrived to tumble down. Clara did not think very much of this, as the same thing had happened with her before; but, even with an hour or more to spare, there arises a question whether under such circumstances the train can be saved. But the grey old man reassured her. 'Now, miss,' said he, coming to the window, while he left his horse recumbent and apparently comfortable on the road, 'where'd you have been now, zure, if I hadn't a few minutes in hand for you?' Then he walked off to some neighbouring cottage, and having obtained assistance, succeeded in putting his beast again upon his legs. After that he looked once more in at the window. 'Who's right now, I wonder?' he said, with an air of triumph. And when he came to her for his guerdon at Taunton, he was evidently cross in not having it increased because of the accident.

Page 54

That hour at the Taunton station was terrible to her. I know of no hours more terrible than those so passed. The minutes will not go away, and utterly fail in making good their claim to be called winged. A man walks up and down the platform, and in that way obtains something of the advantage of exercise; but a woman finds herself bound to sit still within the dreary dullness of the waiting- room. There are, perhaps, people who under such circumstances can read, but they are few in number. The mind altogether declines to be active, whereas the body is seized by a spirit of restlessness to which delay and tranquillity are loathsome. The advertisements on the walls are examined, the map of some new Eden is studied some Eden in which an irregular pond and a church are surrounded by a multiplicity of regular villas and shrubs till the student feels that no consideration of health or economy would induce him to live there. Then the porters come in and out, till each porter has made himself odious to the sight. Everything is hideous, dirty, and disagreeable; and the mind wanders away, to consider why station-masters do not more frequently commit suicide. Clara Amedroz had already got beyond this stage, and was beginning to think of herself rather than of the station-master, when at last there sounded, close to her ears, the bell of promise, and she knew that the train was at hand.

At Taunton there branched away from the main line that line which was to take her to Perivale, and therefore she was able to take her own place quietly in the carriage when she found that the down- train from London was at hand. This she did, and could then watch with equanimity, while the travellers from the other train went through the penance of changing their seats. But she had not been so watching for many seconds when she saw Captain Frederic Aylmer appear upon the platform. Immediately she sank back into her corner and watched no more. Of course he was going to Perivale; but why had not her aunt told her that she was to meet him? Of course she would be staying in the same house with him, and her present small attempt to avoid him would thus be futile. The attempt was made; but nevertheless she was probably pleased when she found that it was made in vain. He came at once to the carriage in which she was sitting, and had packed his coats, and dressing-bag, and desk about the carriage before he had discovered who was his fellow-traveller 'How do you do, Captain Aylmer?' she said, as he was about to take his seat.

'Miss Amedroz! Dear me; how very odd! I had not the slightest expectation of meeting you here. The pleasure is of course the greater.'

'Nor I of seeing you. Mrs Winterfield has not mentioned to me that you were coming to Perivale.'

'I didn't know it myself till the day before yesterday. I'm going to give an account of my stewardship to the good-natured Perivalians who sent me to Parliament. I'm to dine with the Mayor tomorrow, and as some big-wig has come in his way who is going to dine with him also, the thing has been got up in a hurry. But I'm delighted to find that you are to be with us.'

Page 55

'I generally go to my aunt about this time of the year.'

'It is very good-natured of you.' Then he asked after her father, and she told him of Mr Belton's visit, telling him nothing as the reader will hardly require to be told of Mr Belton's offer. And so, by degrees, they fell into close and intimate conversation.

'I am so glad, for your, father's sake!' said the captain, with sympathetic voice, speaking still of Mr Belton's visit.

'That's what I feel, of course.'

'I is just as it should be, as he stands in that position to the property. And so he is a nice sort of fellow, is he?

'Nice is no word for him. He is perfect!'

'Dear me! This is terrible! You remember that they hated some old Greek patriot when they could find no fault in him?'

'I'll defy you to hate my cousin Will.'

'What sort of looking man is he?'

'Extremely handsome at least I should say so.'

'Then I certainly must hate him. And clever?'

'Well not what you would call clever. He is very clever about fields and cattle.'

'Come, there is some relief in that.'

'But you must not mistake me. He is clever; and then there's a way about him of doing everything just as he likes it, which is wonderful. You feel quite sure that he'll become master of everything.'

'But I do not feel at all sure that I should like him better for that

'But he doesn't meddle in things that he doesn't understand. And then he is so generous! His spending all that money down there is only done because he thinks it will make the place pleasanter to papa.'

'Has he got plenty of money?'

'Oh, plenty! At least, I think so. He says that he has.'

'The idea of any man owning that he had got plenty of money! What a happy mortal! And then to be handsome, and omnipotent, and to understand cattle and fields! One would strive to emulate him rather than envy him, had not one learned to acknowledge that it is not given to every one to get to Corinth.'

'You may laugh at him, but you'd like him if you knew him.'

'One never can be sure of that from a lady's account of a man. When a man talks to me about another man, I can generally tell whether I should like him or not particularly if I know the man well who is giving the description; but it is quite different when a woman is the describer.'

'You mean that you won't take my word?'

'We see with different eyes in such matters. I have no doubt your cousin is a worthy man and as prosperous a gentleman as the Thane of Cawdor in his prosperous days but probably if he and I came together we shouldn't have a word to say to each other.'

Clara almost hated Captain Aylmer for speaking as he did, and yet she knew that it was true. Will Belton was not an educated man, and were they two to meet in her presence the captain and the farmer she felt that she might have to blush for her cousin. But yet he was the better man of the two. She knew that he was the better man of the two, though she knew also that she could not love him as she loved the other.

Page 56

Then they changed the subject of their conversation, and discussed Mrs Winterfield, as they had often done before. Captain Aylmer had said that he should return to London on the Saturday, the present day being Tuesday, and Clara accused him of escaping always from the real hard work of his position. 'I observe that you never stay a Sunday at Perivale,' she said.

'Well not often. Why should I? Sunday is just the day that people like to be at home.'

'I should have thought it would not have made much difference to a bachelor in that way.'

'But Sunday is a day that one specially likes to pass after one's own fashion.'

'Exactly and therefore you don't stay with my aunt. I understand it all completely.'

'Now you mean to be ill-natured!'

'I mean to say that I don't like Sundays at Perivale at all, and that I should do just as you do if I had the power. But women women, that is, of my age are such slaves! We are forced to give an obedience for which we can see no cause, and for which we can understand no necessity. I couldn't tell my aunt that I meant to go away on Saturday.'

'You have no business which makes imperative calls upon your time.'

'That means that I can't plead pretended excuses. But the true reason is that we are dependent.'

'There is something in that, I suppose.'

'Not that I am dependent on her. But my position generally is dependent, and I cannot assist myself.'

Captain Aylmer found it difficult to make any answer to this, feeling the subject to be one which could hardly be discussed between him and Miss Amedroz. He not unnaturally looked to be the heir of his aunt's property, and any provision made out of that property for Clara would so far lessen that which would come to him. For anything that he knew, Mrs Winterfield might leave everything she possessed to her niece. The old lady had not been open and candid to him whom she meant to favour in her will, as she had been to her to whom no such favour was to be shown. But Captain Aylmer did know, with tolerable accuracy, what was the state of affairs at Belton, and was aware that Miss Amedroz had no prospect of maintenance on which to depend, unless she could depend on her aunt. She was now pleading that she was not dependent on that lady, and Captain Aylmer felt that she was wrong. He was a man of the world, and was by no means inclined to abandon any right that was his own; but it seemed to him that he was

almost bound to say some word to show that in his opinion Clara should hold herself bound to comply with her aunt's requirements.

'Dependence is a disagreeable word,' he said; and one never quite knows what it means.'

'If you were a woman you'd know. It means that I must stay at Perivale on Sundays, while you can go up to London or down to Yorkshire. That's what it means.'

'What you do mean, I think, is this that you owe a duty to your aunt, the performance of which is not altogether agreeable. Nevertheless it would be foolish in you to omit it.'

Page 57

'It isn't that not that at all. It would not be foolish, not in your sense of the word, but it would be wrong. My aunt has been kind to me, and therefore I am bound to her for this service. But she is kind to you also, and yet you are not bound. That's why I complain. You sail always under false pretences, and yet you think you do your duty. You have to see your lawyer which means going to your club; or to attend to your tenants which means hunting and shooting.'

'I haven't got any tenants.'

'You know very well that you could remain over Sunday without doing any harm to anybody only you don't like going to church three times, and you don't like hearing my aunt read a sermon afterwards. Why shouldn't you stay, and I go to the club?'

'With all my heart, if you can manage it.'

'But I can't; we ain't allowed to have clubs, or shooting, or to have our own way in anything, putting forward little pretences about lawyers.'

'Come, I'll stay if you'll ask me.'

'I'm sure I won't do that. In the first place you'd go to sleep, and then she would be offended; and I don't know that your sufferings would make mine any lighter. I'm not prepared to alter the ways of the world, but feel myself entitled to grumble at them sometimes.'

Mrs Winterfield inhabited a large brick house in the centre of the town. It had a long frontage to the street; for there was not only the house itself, with its three square windows on each side of the door, and its seven windows over that, and again its seven windows in the upper story but the end of the coach-house also abutted on the street, on which was the family clock, quite as much respected in Perivale as was the town-clock; and between the coach-house and the mansion there was the broad entrance into the yard, and the entrance also to the back door. No Perivalian ever presumed to doubt that Mrs Winterfield's house was the most important house in the town. Nor did any stranger doubt it on looking at the frontage. But then it was in all respects a town house to the eye that is, an English town house, being as ugly and as respectable as unlimited bricks and mortar could make it. Immediately opposite to Mrs Winterfield lived the leading doctor and a retired builder, so that the lady's eye was not hurt by any sign of a shop. The shops, indeed, came within a very few yards of her on either side; but as the neighbouring shops on each side were her own property, this was not unbearable. To me, had I lived there, the incipient growth of grass through some of the stones which formed the margin of the road would have been altogether unendurable. There is no sign of coming decay which is so melancholy to the eye as any which tells of a decrease in the throng of men. Of men or horses there was never any throng now in

that end of Perivale. That street had formed part of the main line of road from Salisbury to Taunton, and coaches, wagons, and posting-carriages had been frequent

Page 58

on it; but now, alas it was deserted. Even the omnibuses from the railway-station never came there unless they were ordered to call at Mrs Winterfield's door. For Mrs Winterfield herself, this desolation had, I think, a certain melancholy attraction. It suited her tone of mind and her religious views that she should be thus daily reminded that things of this world were passing away and going to destruction. She liked to have ocular proof that grass was growing in the highways under mortal feet, and that it was no longer worth man's while to renew human flags in human streets. She was drawing near to the pavements which would ever be trodden by myriads of bright sandals, and which yet would never be worn, and would be carried to those jewelled causeways on which no weed could find a spot for its useless growth.

Behind the house there was a square prim garden, arranged in parallelograms, tree answering to tree at every corner, round which it was still her delight to creep when the weather permitted. Poor Clara! How much advice she had received during these creepings, and how often had she listened to inquiries as to the schooling of the gardener's children. Mrs Winterfield was always unhappy about her gardener. Serious footmen are very plentiful, and even coachmen are to be found who, at a certain rate of extra payment, will be punctual at prayer time, and will promise to read good little books; but gardeners, as a class, are a profane people, who think themselves entitled to claim liberty of conscience, and who will not submit to the domestic despotism of a serious Sunday. They live in cottages by themselves, and choose to have an opinion of their own on church matters. Mrs Winterfield was aware that she ought to bid high for such a gardener as she wanted. A man must be paid well who will submit to daily inquiries as to the spiritual welfare of himself, his wife, and family. But even though she did bid high, and though she paid generously, no gardener would stop with her. One conscientious man attempted to bargain for freedom from religion during the six unimportant days of the week, being strong, and willing therefore to give up his day of rest; but such liberty could not be allowed to him, and he also went. 'He couldn't stop,' he said, 'in justice to the greenhouses, when missus was so constant down upon him about his sprittual backsliding. And after all, where did he backslide? It was only a pipe of tobacco with the babby in his arms, instead of that darned evening lecture.'

Poor Mrs Winterfield! She had been strong in her youth, and had herself sat through evening lectures with a fortitude which other people cannot attain. And she was strong too in her age, with the strength of a martyr, submitting herself with patience to wearinesses which are insupportable to those who have none of the martyr spirit. The sermons of Perivale were neither bright, nor eloquent, nor encouraging. All the old vicar or the young curate could tell she

Page 59

had heard hundreds of times. She knew it all by heart, and could have preached their sermons to them better than they could preach them to her. It was impossible that she could learn anything from them: and yet she would sit there thrice a day, suffering from cold in winter, from cough in spring, from heat in summer, and from rheumatism in autumn; and now that her doctor had forbidden her to go more than twice, recommending her to go only once, she really thought that she regarded the prohibition as a grievance. Indeed, to such as her, that expectation of the jewelled causeway, and of the perfect pavement that shall never be worn, must be everything. But if she was right right as to herself and others then why has the world been made so pleasant? Why is the fruit of the earth so sweet; and the trees why are they so green; and the mountains so full of glory? Why are women so lovely? and why is it that the activity of man's mind is the only sure forerunner of man's progress? In Listening thrice a day to outpourings from the clergyman at Perivale there certainly was no activity of mind.

Now, in these days, Mrs Winterfield was near to her reward. That she had ensured that I cannot doubt. She had fed the poor, and filled the young full with religious teachings perhaps not wisely, and in her own way only too well, but yet as her judgment had directed her. She had cared little for herself forgiving injuries done to her, and not forgiving those only which she thought were done to the Lord. She had lived her life somewhat as the martyr lived, who stood for years on his pillar unmoved, while his nails grew through his flesh. So had she stood, doing, I fear, but little positive good with her large means but thinking nothing of her own comfort here, in comparison with the comfort of herself and others in the world to which she was going.

On this occasion her nephew and niece reached her together; the prim boy, with the white cotton gloves and the low four-wheeled carriage, having been sent down to meet Clara. For Mrs Winterfield was a lady who thought it unbecoming that her niece though only an adopted niece should come to her door in an omnibus. Captain Aylmer had driven the four-wheeled carriage from the station, dispossessing the boy, and the luggage had been confided to the public conveyance.

'It is very fortunate that you should come together,' said Mrs Winterfield. 'I didn't know when to expect you, Fred. Indeed, you never say at what hour you'll come.'

'I think it safer to allow myself a little margin, aunt, because one has so many things to do.'

'I suppose it is so with a gentleman,' said Mrs Winterfield. After which Clara looked at Captain Aylmer, but did not betray any of her suspicions. 'But I knew Clara would come by this train,' continued the old lady; 'so I sent Tom to meet her. Ladies always can be punctual; they can do that at any rate.' Mrs Winterfield was one of those women who have always believed that their own sex is in every respect inferior to the other.

Page 60

CHAPTER VIII

CAPTAIN AYLMER MEETS HIS CONSTITUENTS

On the first evening of their visit Captain Aylmer was very attentive to his aunt. He was quite alive to the propriety of such attentions, and to their expediency; and Clara was amused as she watched him while he sat by her side, by the hour together, answering little questions and making little remarks suited to the temperament of the old lady's mind. She, herself, was hardly called upon to join in the conversation on that evening, and as she sat and listened, she could not but think that Will Belton would have been less adroit, but that he would also have been more straightforward. And yet why should not Captain Aylmer talk to his mat? Will Belton would also have talked to his aunt if he had one, but then he would have talked his own talk, and not his aunt's talk. Clara could hardly make up her mind whether Captain Aylmer was or was not a sincere man. On the following day Aylmer was out all the morning, paying visits among his constituents, and at three o'clock he was to make his speech in the town-hall. Special places in the gallery were to be kept for Mrs Winterfield and her niece, and the old woman was quite resolved that she would be there. As the day advanced she became very fidgety, and at length she was quite alive to the perils of having to climb up the town-hall stairs; but she persevered, and at ten minutes before three she was seated in her place.

'I suppose they will begin with prayer,' she said to Clara. Clara, who knew nothing of the manner in which things were done at such meetings, said that she supposed so. A town councillor's wife who sat on the other side of Mrs Winterfield here took the liberty of explaining that as the captain was going to talk politics there would be no prayers. 'But they have prayers in the Houses of Parliament,' said Mrs Winterfield, with much anger. To this the town councillor's wife, who was almost silenced by the great lady's wrath, said that indeed she did not know. After this Mrs Winterfield continued to hope for the best, till the platform was filled and the proceedings had commenced. Then she declared the present men of Perivale to be a godless set, and expressed herself very sorry that her nephew had ever had anything to do with them. 'No good can come of it, my dear,' she said. Clara from the beginning had feared that no good would come of her aunt's visit to the town-hall.

The business was put on foot at once, and with some little flourishing at the commencement, Captain Aylmer made his speech the same speech which we have all heard and read so often, specially adapted to the meridian of Perivale. He was a Conservative, and of course he told his hearers that a good time was coming; that he and his family were really about to buckle themselves to the work, and that Perivale would hear things that would surprise it. The malt

Page 61

tax was to go, and the farmers were to have free trade in beer the arguments from the other side having come beautifully round in their appointed circle and old England was to be old England once again. He did the thing tolerably well, as such gentlemen usually do, and Perivale was contented with its Member, with the exception of one Perivalian. To Mrs Winterfield, sitting up there and listening with all her ears, it seemed that he had hitherto omitted all allusion to any subject that was worthy of mention. At last he said some word about the marriage and divorce court, condemning the iniquity of the present law, to which Perivale had opposed itself violently by petition and general meetings; and upon hearing this Mrs Winterfield had thumped with her umbrella, and faintly cheered him with her weak old voice. But the surrounding Perivalians had heard the cheer, and it was repeated backward and forwards through the room, till the Member's aunt thought that it might be her nephew's mission to annul that godless Act of Parliament and restore the matrimonial bonds of England to their old rigidity. When Captain Aylmer came out to hand her up to her little carriage, she patted him, and thanked him, and encouraged him; and on her way home she congratulated herself to Clara that she should have such a nephew to leave behind in her place.

Captain Aylmer was dining with the Mayor on that evening, and Mrs Winterfield was therefore able to indulge herself in talking about him. 'I don't see much of young men, of course,' she said; 'but I do not even hear of any that are like him.' Again Clara thought of her cousin Will. Will was not at all like Frederic Aylmer; but was he not better? And yet, as she thought thus, she remembered that she had refused her cousin Will because she loved that very Frederic Aylmer whom her mind was thus condemning.

'I'm sure he does his duty as a Member of Parliament very well,' said Clara.

'That alone would not be much; but when that is joined to so much that is better, it is a great deal. I am told that very few of the men in the House now are believers at all.'

'Oh, aunt!'

'It is terrible to think of, my dear.'

'But, aunt; they have to take some oath, or something of that sort, to show that they are Christians.'

'Not now, my dear. They've done away with all that since we had Jew members. An atheist can go into Parliament now; and I'm told that most of them are that, or nearly as bad. I can remember when no Papist could sit in Parliament. But they seem to me to be doing away with everything. It's a great comfort to me that Frederic is what he is.'

'I'm sure it must be, aunt.'

Then there was a pause, during which, however, Mrs Winterfield gave no sign that the conversation was to be considered as being over. Clara knew her aunt's ways so well, that she was sure something more was coming, and therefore waited patiently, without any thought of taking up her book. 'I was speaking to him about you yesterday,' Mrs Winterfield said at last.

Page 62

'That would not interest him very much.'

'Why not? Do you suppose he is not interested in those I love? Indeed, it did interest him; and he told me what I did not know before, and what you ought to have told me.'

Clara now blushed, she knew not why, and became agitated. 'I don't know that I have kept anything from you that I ought to have told,' she said.

'He says that the provision made for you by your father has all been squandered.'

'If he used that word he has been very unkind,' said Clara, angrily.

'I don't know what word he used, but he was not unkind at all; he never is. I think he was very generous.'

'I do not want his generosity, aunt,'

'That is nonsense, my dear. If he has told me the truth, what have you to depend on?'

'I don't want to depend on anything. I hate hearing about it.'

'Clara, I wonder you can talk in that way. If you were only seventeen it would be very foolish; but at your age it is inexcusable. When I am gone, and your father is gone, who is to provide for you? Will your cousin do it Mr Belton, who is to have the property?'

'Yes, he would if I would let him of course I would not let him. But, aunt, pray do not go on. I would sooner have to starve than talk about it at all.'

There was another pause; but Clara again knew that the conversation was not over; and she knew also that it would be vain for her to endeavour to begin another subject. Nor could she think of anything else to say, so much was she agitated.

'What makes you suppose that Mr Belton would be so liberal?' asked Mrs Winterfield.

'I don't know. I can't say. He is the nearest relation I shall have; and of all the people I ever knew he is the best, and the most generous, and the least selfish. When he came to us papa was quite hostile to him disliking his very name; but when the time came, papa could not bear to think of his going, because he had been so good.'

'Clara!'

'Well, aunt.'

'I hope you know my affection for you.'

'Of course I do, aunt; and I hope you trust mine for you also.'

'Is there anything between you and Mr Belton besides cousinship?'

'Nothing.'

'Because if I thought that, my trouble would of course be at an end.'

'There is nothing but pray do not let me be a trouble to you.' Clara, for a moment, almost resolved to tell her aunt the whole truth; but she remembered that she would be treating her cousin badly if she told the story of his rejection.

There was another short period of silence, and then Mrs Winterfield went on. 'Frederic thinks that I should make some provision for you by will. That, of course, is the same as though he offered to do it himself. I told him that it would be so, and I read him my will last night. He said that that made no difference, and recommended me to add a codicil. I asked him how much I ought to give you, and he said fifteen hundred pounds. There will be as much as that after burying me without burden to the estate. You must acknowledge that he has been very generous.'

Page 63

But Clara, in her heart, did not at all thank Captain Aylmer for his generosity. She would have had everything from him, or nothing. It was grievous to her to think that she should owe to him a bare pittance to keep her out of the workhouse to him who had twice seemed to be on the point of asking her to share everything with him. She did not love her cousin Will as she loved him; but her cousin Will's assurance to her that he would treat her with a brother's care was sweeter to her by far than Frederic Aylmer's well-balanced counsel to his aunt on her behalf. In her present mood, too, she wanted no one to have fore. thought for her; she desired no provision; for her, in the discomfiture of heart, there was consolation in the feeling that when she should find herself alone in the world, she would have been ill-treated by her friends all round her. There was a charm in the prospect of her desolation of which she did not wish to be robbed by the assurance of some seventy pounds a year, to be given to her by Captain Frederic Aylmer. To be robbed of one's grievance is the last and foulest wrong a wrong under which the most enduring temper will at last yield and become soured by which the strongest back will be broken. 'Well, my dear,' continued Mrs Winterfield, when Clara made no response to this appeal for praise.

'It is so hard for me to say anything about it, aunt. What can I say but that I don't want to be a burden to any one?'

'That is a position which very few women can attain, that is, very few single women.'

'I think it would be well if all single women were strangled by the time they are thirty,' said Clara with a fierce energy which absolutely frightened her aunt.

'Clara! how can you say anything so wicked so abominably wicked?'

'Anything would be better than being twitted in this way. How can I help it that I am not a man and able to work for my bread? But I am not above being a housemaid, and so Captain Aylmer shall find. I'd sooner be a housemaid, with nothing but my wages, than take the money which you say he is to give me. It will be of no use, aunt, for I shall not take it.'

'It is I that am to leave it to you. It is not to be a present from Frederic.'

'It is the same thing, aunt. He says you are to do it; and you told me just now that it was to come out of his pocket.'

'I should have done it myself long ago, had you told me all the truth about your father's affairs.'

'How was I to tell you? I would sooner have bitten my tongue out. But I will tell you the truth now. If I had known that all this was to be said to me about money, and that our poverty was to be talked over between you and Captain Aylmer, I would not have come

to Perivale. I would rather that you should be angry with me and think that I had forgotten you.'

'You would not say that, Clara, if you remembered that this will probably be your last visit to me.'

Page 64

'No, no; it will not be the last. But do not talk about these things. And it will be so much better that I should be here when he is not here.'

'I had hoped that when I died you might both be with me together as husband and wife.'

'Such hopes never come to anything.'

'I still think that he would wish it.'

'That is nonsense, aunt. it is indeed, for neither of us wish it.' A lie on such a subject from a woman under such circumstances is hardly to be considered a lie at all. It is spoken with no mean object, and is the only bulwark which the woman has ready at her need to cover her own weakness.

'From what he said yesterday,' continued Mrs Winterfield, 'I think it is your own fault.'

'Pray pray do not talk in that way. It cannot be matter of any fault that two people do not want to marry each other.'

'Of course I asked him no positive question. It would be indelicate even in me to have done that. But he spoke as though he thought very highly of you.'

'No doubt he does. And so do I of Mr Possitt.'

'Mr Possitt is a very excellent young man,' said Mrs Winterfield, gravely. Mr Possitt was, indeed, her favourite curate of Perivale, and always dined at the house on Sundays between services, when Mrs Winterfield was very particular in seeing that he took two glasses of her best port wine to support him. 'But Mr Possitt has nothing but his curacy.'

'There is no danger, aunt, I can assure you.'

'I don't know what you call danger; but Frederic seemed to think that you are always sharp with him. You don't want to quarrel with him, I hope, because I love him better than any one in the world?'

'Oh, aunt, what cruel things you say to me without thinking of them!'

'I do not mean to be cruel, but I will say nothing more about him. As I told you before that I had not thought it expedient to leave away any portion of my little property from Frederic believing, as I did then, that the money intended for you by your father was still remaining it is best that you should now know that I have at last learnt the truth, and that I will at once see my lawyer about making the change.'

'Dear aunt, of course I thank you.'

'I want no thanks, Clara. I humbly strive to do what I believe to be my duty. I have never felt myself to be more than a steward of my money. That I have often failed in my stewardship I know well for in what duties do we not all fail?' Then she gently laid herself back in her arm-chair, closing her eyes, while she kept fast clasped in her hands the little book of daily devotion which she had been striving to read when the conversation had been commenced. Clara knew then that nothing more was to be said, and that she was not at present to interrupt her aunt. From her posture, and the closing of her eyelids, Mrs Winterfield might have been judged to be asleep; but Clara could see the gentle motion of her lips, and was aware that her aunt was solacing herself with prayer.

Page 65

Clara was angry with herself, and angry with all the world. She knew that the old lady who was sitting then before her was very good; and that all this that had now been said had come from pure goodness, and a desire that strict duty might be done; and Clara was angry with herself in that she had not been more ready with her thanks and more demonstrative with her love and gratitude. Mrs Winterfield was affectionate as well as good, and her niece's coldness, as the niece well knew, had hurt her sorely. But still what could Clara have done or said? She told herself that it was beyond her power to burst out into loud praises of Captain Aylmer; and of such nature was the gratitude which Mrs Winterfield had desired. She was not grateful to Captain Aylmer, and wanted nothing that was to come from his generosity. And then her mind went away to that other portion of her aunt's discourse. Could it be possible that this man was in truth attached to her, and was repelled simply by her own manner? She was aware that she had fallen into a habit of fighting with him, of sparring against him with words about indifferent things, and calling his conduct in question in a manner half playful and half serious. Could it be the truth that she was thus robbing herself of that which would be to her as to herself she had frankly declared the one treasure which she would desire? Twice, as has been said before, words had seemed to tremble on his lips which might have settled the question for her for ever; and on both occasions, as she knew, she herself had helped to laugh off the precious word that had been coming. But had he been thoroughly in earnest in earnest as she would have him to be no laugh would have deterred him from his purpose. Could she have laughed Will Belton out of his declaration?

At last the lips ceased to move, and she knew that her aunt was in truth asleep. The poor old lady hardly ever slept at night; but nature, claiming something of its due, would give her rest such as this in her arm-chair by the fire-side. They were sitting in a large double drawing-room upstairs, in which there were, as was customary with Mrs Winterfield in winter, two fires; and the candles were in the back-room, while the two ladies sat in that looking out into the street. This Mrs Winterfield did to save her eyes from the candles, and yet to be within reach of light if it were wanted. And Clara also sat motionless in the dark, careful not to disturb her aunt, and desirous of being with her when she should awake. Captain Aylmer had declared his purpose of being home early from the Mayor's dinner, and the ladies were to wait for his arrival before tea was brought to them. Clara was herself almost asleep when the door was opened, and Captain Aylmer entered the room.

'H sh!' she said, rising gently from her chair, and putting up her finger. He saw her by the dull light of the fire, and closed the door without a sound. Clara then crept into the back-room and he followed her with a noiseless step. 'She did not sleep at all last night,' said Clara; 'and now the unusual excitement of the day has fatigued her, and I think it is better not to wake her.' The rooms were large, and they were able to place themselves at such a distance from the sleeper that their low words could hardly disturb her.

Page 66

'Was she very tired when she got home?' he asked.

'Not very. She has been talking much since that.'

'Has she spoken about her will to you?'

'Yes she has.'

'I thought she would.' Then he was silent, as though he expected that she would speak again on that matter. But she had no wish to discuss her aunt's will with him, and therefore, to break the silence, asked him some trifling question. 'Are you not home earlier than you expected?'

'It was very dull, and there was nothing more to be said. I did come away early, and perhaps have given affront. I hope you will accept the compliment implied.'

'Your aunt will, when she wakes. She will be delighted to find you here.'

'I am awake,' said Mrs Winterfield. 'I heard Frederic come in. It is very good of him to come so soon. Clara, my dear, we will have tea.'

During tea, Captain Aylmer was called upon to give an account of the Mayor's feast how the rector had said grace before dinner, and Mr Possitt had done so after dinner, and how the soup had been uneatable. 'Dear me!' said Mrs Winterfield. 'And yet his wife was housekeeper formerly in a family that lived very well!' The Mrs Winterfields of this world allow themselves little spiteful pleasures of this kind, repenting of them, no doubt, in those frequent moments in which they talk to their friends of their own terrible vilenesses. Captain Aylmer then explained that his own health had been drunk, and his aunt desired to know whether, in returning thanks, he had been able to say anything further against that wicked Divorce Act of Parliament. This her nephew was constrained to answer with a negative, and so the conversation was carried on till tea was over. She was very anxious to hear every word that he could be made to utter as to his own doings in Parliament, and as to his doings in Perivale, and hung upon him with that wondrous affection which old people with warm hearts feel for those whom they have selected as their favourites. Clara saw it all, and knew that her aunt was almost doting.

'I think I'll go up to bed now, my dears,' said Mrs Winterfield, when she had taken her cup of tea. 'I am tired with those weary stairs in the Town-hall, and I shall be better in my own room.' Clara offered to go with her, but this attendance her aunt declined as she did always. So the bell was rung, and the old maid. servant walked off with her mistress, and Miss Amedroz and Captain Aylmer were left together.

'I don't think she will last long,' said Captain Aylmer, soon after the door was closed.

'I should be sorry to believe that; but she is certainly much altered.'

'She has great courage to keep her up and a feeling that she should not give way, but do her duty to the last. In spite of all that, however, I can see how changed she is since the summer. Have you ever thought how sad it will be if she should be alone when the day comes?'

Page 67

'She has Martha, who is more to her now than any one else unless it is you.'

'You could not remain with her over Christmas, I suppose?'

'Who, I? What would my father do? Papa is as old, or nearly as old, as my aunt.'

'But he is strong.'

'He is very lonely. He would be more lonely than she is, for he has no such servant as Martha to be with him. Women can do better than men, I think, when they come to my aunt's age.'

>From this they got into a conversation as to the character of the lady with whom they were both so nearly connected, and, in spite of all that Clara could do to prevent it, continual references were made by Captain Aylmer to her money and will, and the need of an addition to that will on Clara's behalf. At last she was driven to speak out.

'Captain Aylmer,' she said, 'the subject is so distasteful to me, that I must ask you not to speak about it.'

'In my position I am driven to think about it.'

'I cannot, of course, help your thoughts; but I can assure you that they are unnecessary.'

'It seems to me so hard that there should be such a gulf between you and me.' This he said after he had been silent for a while; and as he spoke he looked away from her at the fire.

'I don't know that there is any particular gulf,' she replied.

'Yes, there is. And it is you that make it. Whenever I attempt to speak to you as a friend you draw yourself off from me, and shut yourself up. I know that it is not jealousy.'

'Jealousy, Captain Aylmer!'

'Jealousy with my aunt, I mean.'

'No, indeed.'

'You are infinitely too proud for that; but I am sure that a stranger seeing it would think that it was so.'

'I don't know what it is that I do or that I ought not to do. But all my life everything that I have done at Perivale has always been wrong.'

'It would have been so natural that you and I should be friends.'

'If we are enemies, Captain Aylmer, I don't know it.'

'But if ever I venture to speak of your future life you always repel me as though you were determined to let me know that it should not be a matter of care to me.'

'That is exactly what I am determined to let you know. You are, or will be, a rich man, and you have everything the world can give you. I am, or shall be, a very poor woman.'

'Is that a reason why I should not be interested in your welfare?'

'Yes the best reason in the world. We are not related to each other, though we have a common connexion in dear Mrs Winterfield. And nothing, to my idea, can be more objectionable than any sort of dependence from a woman of my age on a man of yours there being no real tie of blood between them. I have spoken very plainly, Captain Aylmer, for you have made me do it.'

'Very plainly,' he said.

'If I have said anything to offend you, I beg your pardon; but I was driven to explain myself.'

Page 68

Then she got up and took her bed-candle in her hand.

'You have not offended me,' he said, as he also rose.

'Good-night, Captain Aylmer.'

He took her hand and kept it. 'Say that we are friends.'

'Why should we not be friends?'

'There is no reason on my part why we should not be the dearest friends,' he said.

'Were it not that I am so utterly without encouragement, I should say the very dearest.'

He still held her hand, and was looking into her face as he spoke. For a moment she stood there, bearing his gaze, as though she expected some further words to be spoken. Then she withdrew her hand, and again saying, in a clear voice, 'Good-night, Captain Aylmer,' she left the room.

CHAPTER IX

CAPTAIN AYLMER'S PROMISE TO HIS AUNT

What had Captain Aylmer meant by telling her that they might be the dearest friends by saying so much as that, and then saying no more? Of course Clara asked herself that question as soon as she was alone in her bedroom, after leaving Captain Aylmer below. And she made two answers to herself two answers which were altogether distinct and contradictory one of the other. At first she decided that he had said so much and no more because he was deceitful because it suited his vanity to raise hopes which he had no intention of fulfilling because he was fond of saying soft things which were intended to have no meaning. This was her first answer to herself. But in her second she accused herself as much as before she had accused him. She had been cold to him, unfriendly, and harsh. As her aunt had told her, she spoke sharp words to him, and repulsed the kindness which he offered her. What right had she to expect from him a declaration of love when she was studious to stop him at every avenue by which he might approach it? A little management on her side would, she almost knew, make things right. But then the idea of any such management distressed her nay, more, disgusted her. The management, if any were necessary, must come from him. And it was manifest enough that if he had any strong wishes in this matter he was not a good manager. Her cousin, Will Belton, knew how to manage much better.

On the next morning, however, all her thoughts respecting Captain Aylmer were dissipated by tidings which Martha brought to her bedside. Her aunt was ill. Martha was afraid that her mistress was very ill. She did not dare to send specially for the doctor on her own responsibility, as Mrs Winterfield had strong and peculiar feelings about doctors' visits, and had on this very morning declined to be so visited. On the

next day the doctor would come in the usual course of things, for she had submitted for some years back to such periodical visitings; but she had desired that nothing might be done out of the common way. Martha, however, declared that if she were alone with her mistress the doctor would be sent for; and she now petitioned for aid from Clara. Clara was, of course, by her aunt's bedside in a few minutes, and in a few minutes more the doctor from the other side of the way was there also.

Page 69

It was ten o'clock before Captain Aylmer and Miss Amedroz met at breakfast, and they had before that been together in Mrs Winterfield's room. The doctor had told Captain Aylmer that his aunt was very ill very ill, dangerously ill. She had been wrong to go into such a place as the cold, unaired Town-hall, and that, too, in the month of November; and the fatigue had also been too much for her. Mrs Winterfield, too, had admitted to Clara that she knew herself to be very ill. 'I felt it coming on me last night,' she said, 'when I was talking to you; and I felt it still more strongly when I left you after tea. I have lived long enough. God's will be done.' At that moment, when she said she had lived long enough, she forgot her intention with reference to her will. But she remembered it before Clara had left the room. 'Tell Frederic', she said, 'to send at once for Mr Palmer.' Now Clara knew that Mr Palmer was the attorney, and resolved that she would give no such message to Captain Aylmer. But Mrs Winterfield sent for her nephew, who had just left her, and herself gave her orders to him. In the course of the morning there came tidings from the attorney's office that Mr Palmer was away from Perivale, that he would be back on the morrow, and that he would of course wait on Mrs Winterfield immediately on his return.

Captain Aylmer and Miss Amedroz discussed nothing but their aunt's state of health that morning over the breakfast-table. Of course, under such circumstances in the house, there was no further immediate reference made to that offer of dearest friendship. It was clear to them both that the doctor did not expect that Mrs Winterfield would again leave her bed; and it was clear to Clara also that her aunt was of the same opinion.

'I shall hardly be able to go home now,' she said.

'It will be kind of you if you can remain.'

'And you?'

'I shall remain over the Sunday. If by that time she is at all better, I will run up to town and come down again before the end of the week. I know you don't believe it, but a man really has some things which he must do.'

'I don't disbelieve you, Captain Aylmer.'

'But you must write to me daily if I do go.'

To this Clara made no objection and she must write also to some one else. She must let her cousin know how little chance there was that she would be at home at Christmas, explaining to him at the same time that his visit to her father would on that account be all the more welcome.

'Are you going to her now?' he asked, as Clara got up immediately after breakfast. 'I shall be in the house all the morning, and if you want me you will of course send for me.'

‘She may perhaps like to see you.’

‘I will come up every now and again. I would remain there altogether, only I should be in the way.’ Then he got a newspaper and made himself comfortable over the fire, while she went up to her weary task in her aunt’s room.

Page 70

Neither on that day nor on the next did the lawyer come, and on the following morning all earthly troubles were over with Mrs Winterfield. It was early on the Sunday morning that she died, and late on the Saturday evening Mr Palmer had sent up to say that he had been detained at Taunton, but that he would wait on Mrs Winterfield early on the Monday morning. On the Friday the poor lady had said much on the subject, but had been comforted by an assurance from her nephew that the arrangement should be carried out exactly as she wished it, whether the codicil was or was not added to the will. To Clara she said nothing more on the subject, nor at such a time did Captain Aylmer feel that he could offer her any assurance on the matter. But Clara knew that the will was not altered; and though at the time she was not thinking much about money, she had, nevertheless, very clearly made up her own mind as to her own conduct. Nothing should induce her to take a present of fifteen hundred pounds or, indeed, of as many pence from Captain Aylmer. During those hours of sickness in the house they had been much thrown together, and no one could have been kinder or more gentle to her than he had been. He had come to call her Clara, as people will do when joined together in such duties, and had been very pleasant as well as affectionate in his manner with her. It had seemed to her that he also wished to take upon himself the cares and love of an adopted brother. But as an adopted brother she would have nothing to do with him. The two men whom she liked best in the world would assume each the wrong place; and between them both she felt that she would be left friendless.

On the Saturday afternoon they had both surmised how it was going to be with Mrs Winterfield, and Captain Aylmer had told Mr Palmer that he feared his coming on the Monday would be useless. He explained also what was required, and declared that he would be at once ready to make good the deficiency in the will Mr Palmer seemed to think that this would be better even than the making of a codicil in the last moments of the lady's life; and, therefore, he and Captain Aylmer were at rest on that subject.

During the greater part of the Saturday night both Clara and Captain Aylmer remained with their aunt; and once when the morning was almost there, and the last hour was near at hand, she had said a word or two which both of them had understood, in which she implored her darling Frederic to take a brother's care of Clara Amedroz. Even in that moment Clara had repudiated the legacy, feeling sure in her heart that Frederic Aylmer was aware what was the nature of the care which he ought to owe, if he would consent to owe any care to her. He promised his aunt that he would do as she desired him, and it was impossible that Clara should then, aloud, repudiate the compact. But she said nothing, merely allowing her hand to rest with his beneath the thin, dry hand of the dying

Page 71

woman. To her aunt, however, when for a moment they were alone together, she showed all possible affection, with thanks and tears, and warm kisses, and prayers for forgiveness as to all those matters in which she had offended. 'My pretty one my dear,' said the old woman, raising her hand on to the head of the crouching girl, who was hiding her moist eyes on the bed. Never during her life had her aunt appeared to her in so loving a mood as now, when she was leaving it. Then, with some eager impassioned words, in which she pronounced her ideas of what should be the religious duties of a woman, Mrs Winterfield bade farewell to her niece. After that, she had a longer interview with her nephew, and then it seemed that all worldly cares were over with her.

The Sunday was passed in all that blackness of funeral grief which is absolutely necessary on such occasions. It cannot be said that either Clara or Captain Aylmer were stricken with any of that agony of woe which is produced on us by the death of those whom we have loved so well that we cannot bring ourselves to submit to part with them. They were both truly sorry for their aunt, in the common parlance of the world; but their sorrow was of that modified sort which does not numb the heart and make the surviving sufferer feel that there never can be a remedy. Nevertheless, it demanded sad countenances, few words, and those spoken hardly above a whisper; an absence of all amusement and almost of all employment, and a full surrender to the trappings of woe. They two were living together without other companion in the big house sitting down together to dinner and to tea; but on this day hardly a dozen words were spoken between them, and those dozen were spoken with no purport. On the Monday Captain Aylmer gave orders for the funeral, and then went away to London, undertaking to be back on the day before the last ceremony. Clara was rather glad that he should be gone, though she feared the solitude of the big house. She was glad that he should be gone, as she found it impossible to talk to him with ease to herself. She knew that he was about to assume some position as protector or quasi guardian over her in conformity with her aunt's express wish, and she was quite resolved that she would submit to no such guardianship from his hands. That being so, the shorter period there might be for any such discussion the better.

The funeral was to take place on the Saturday, and during the four days that intervened she received two visits from Mr Possitt. Mr Possitt was very discreet in what he said, and Clara was angry with herself for not allowing his words to have any avail with her. She told herself that they were commonplace; but she told herself, also, after his first visit, that she had no right to expect anything else but commonplace words. How often are men found who can speak words on such occasions that are not commonplaces that really stir the soul, and bring true comfort to the listener?

Page 72

The humble listener may receive comfort even from commonplace words; but Clara was not humble, and rebuked herself for her own pride. On the second occasion of his coming she did endeavour to receive him with a meek heart, and to accept what he said with an obedient spirit. But the struggle within her bosom was hard, and when he bade her to kneel and pray with him, she doubted for a moment between rebellion and hypocrisy. But she had determined to be meek, and so hypocrisy carried the hour.

What would a clergyman say on such an occasion if the object of his solicitude were to decline the offer, remarking that prayer at that moment did not seem to be opportune; and that, moreover, he, the person thus invited, would like, first of all, to know what was to be the special object of the proposed prayer, if he found that he could, at the spur of the moment, bring himself at all into a fitting mood for the task? Of him who would decline, without argument, the clergyman would opine that he was simply a reprobate. Of him who would propose to accompany an hypothetical acceptance with certain stipulations, he would say to himself that he was a stiff-necked wrestler against grace, whose condition was worse than that of the reprobate. Men and women, conscious that they will be thus judged, submit to the hypocrisy, and go down upon their knees unprepared, making no effort, doing nothing while they are there, allowing their consciences to be eased if they can only feel themselves numbed into some ceremonial awe by the occasion. So it was with Clara, when Mr Possitt, with easy piety, went through the formula of his devotion, hardly ever having realized to himself the fact that of all works in which man can engage himself, that of prayer is the most difficult.

'It is a sad loss to me,' said Mr Possitt, as he sat for half an hour with Clara, after she had thus submitted herself. Mr Possitt was a weakly, pale-faced little man, who worked so hard in the parish that on every day, Sundays included, he went to bed as tired in all his bones as a day labourer from the fields 'a very great loss. There are not many now who understand what a clergyman has to go through, as our dear friend did.' If he was mindful of his two glasses of port wine on Sundays, who could blame him?

'She was a very kind woman, Mr Possitt.'

'Yes, indeed and so thoughtful! That she will have an exceeding great reward, who can doubt? Since I knew her she always lived as a saint upon earth. I suppose there's nothing known as to who will live in this house, Miss Amedroz?'

'Nothing I should think.'

'Captain Aylmer won't keep it in his own hands?'

'I cannot tell in the least; but as he is obliged to live in London because of Parliament, and goes to Yorkshire always in the autumn, he can hardly want it.'

Page 73

'I suppose not. But it will be a sad loss a sad loss to have this house empty. Ah I shall never forget her kindness to me. Do you know, Miss Amedroz,' and as he told his little secret he became beautifully confidential 'do you know, she always used to send me ten guineas at Christmas to help me along. She understood, as well as any one, how hard it is for a gentleman to live on seventy pounds a year. You will not wonder that I should feel that I've had a loss.' It is hard for a gentleman to live upon seventy pounds a year; and it is very hard, too, for a lady to live upon nothing a year, which lot in life fate seemed to have in store for Miss Amedroz.

On the Friday evening Captain Aylmer came back, and Clara was in truth glad to see him. Her aunt's death had been now far enough back to admit of her telling Martha that she would not dine till Captain Aylmer had come, and to allow her to think somewhat of his comfort. People must eat and drink even when the grim monarch is in the house; and it is a relief when they first dare to do so with some attention to the comforts which are ordinarily so important to them. For themselves alone women seldom care to exercise much trouble in this direction; but the presence of a man at once excuses and renders necessary the ceremony of a dinner. So Clara prepared for the arrival, and greeted the corner with some returning pleasantness of manner. And he, too, was pleasant with her, telling her of his plans, and speaking to her as though she were one of those whom it was natural that he should endeavour to interest in his future welfare.

'When I come back tomorrow,' he said, 'the will must be opened and read. It had better be done here.' They were sitting over the fire in the dining-room, after dinner, and Clara knew that the coming back to which he alluded was his return from the funeral. But she made no answer to this, as she wished to say nothing about her aunt's will. 'And after that,' he continued, 'you had better let me take you out.'

'I am very well,' she said. 'I do not want any special taking out.'

'But you have been confined to the house a whole week.'

'Women are accustomed to that, and do not feel it as you would. However, I will walk with you if you'll take me.'

'Of course I'll take you. And then we must settle our future plans. Have you fixed upon any day yet for returning? Of course, the longer you stay, the kinder you will be.'

'I can do no good to any one by staying.'

'You do good to me but I suppose I'm nobody. I wish I could tell what to do about this house. Dear, good old woman! I know she would have wished that I should keep it in my own hands, with some idea of living here at some future time but of course I shall never live here.'

'Why not?'

'Would you like it yourself?'

'I am not Member of Parliament for Perivale, and should not be the leading person in the town. You would be a sort of king here; and then, some day, you will have your mother's property as well as your aunt's; and you would be near to your own tenants.'

Page 74

'But that does not answer my question. Could you bring yourself to live here even if it were your own?'

'Why not?'

'Because it is so deadly dull because it has no attraction whatever because of all lives it is the one you would like the least. No one should live in a provincial town but they who make their money by doing so.'

'And what are the wives and daughters of such people to do and especially their widows? I have no doubt I could live here very happily if I had anybody near me that I liked. I should not wish to have to depend altogether on Mr Possitt for society.'

'And you would find him about the best.'

'Mr Possitt has been with me twice whilst you were away, and he, too, asked what you meant to do about the house.'

'And what did you say?'

'What could I say? Of course I said I did not know. I suppose he was meditating whether you would live here and ask him to dinner on Sundays!'

'Mr Possitt is a very good sort of man,' said the captain, gravely for Captain Aylmer, in the carrying out of his principles, always spoke seriously of everything connected with the Church in Perivale.

'And quite worthy to be asked to dinner on Sundays,' said Clara. 'But I did not give him any hope. How could I? Of course I knew that you would not live here, though I did not tell him so.'

'No; I don't suppose I shall. But I see very plainly that you think I ought to do so.'

'I've the old-fashioned idea as to a man's living near to his own property; that is all. No doubt it was good for other people in Perivale, besides Mr Possitt, that my dear aunt lived here; and if the house is shut up, or let to some stranger, they will feel her loss the more. But I don't know that you are bound to sacrifice yourself to them.'

'If I were to marry,' said Captain Aylmer, very slowly and in a low voice, 'of course I should have to think of my wife's wishes.'

'But if your wife, when she accepted you, knew that you were living here, she would hardly take upon herself to demand that you should give up your residence.'

'She might find it very dull.'

'She would make her own calculations as to that before she accepted you.'

'No doubt but I can't fancy any woman taking a man who was tied by his leg to Perivale. What do people do who live in Perivale?'

'Earn their bread.'

'Yes that's just what I said. But I shouldn't earn mine here.'

'I have the feeling I spoke of very strongly about papa's place,' said Clara, changing the conversation suddenly. 'I very often think of the future fate of Belton Castle when papa shall have gone. My cousin has got his house at Plaistow, and I don't suppose he'd live there.'

'And where will you go?' he asked.

As soon as she had spoken, Clara regretted her own imprudence in having ventured to speak upon her own affairs. She had been well pleased to hear him talk of his plans, and had been quite resolved not to talk of her own. But now, by her own speech, she had sot him to make inquiries as to her future life. She did not at first answer the question; but he repeated it. 'And where will you live yourself?'

Page 75

'I hope I may not have to think of that for some time to come yet.'

'It is impossible to help thinking of such things.'

'I can assure you that I haven't thought about it; but I suppose I shall endeavour to to I don't know what I shall endeavour to do.'

'Will you come and live at Perivale?'

'Why here more than anywhere else?'

'In this house I mean.'

'That would suit me admirably would it not? I'm afraid Mr Possitt would not find me a good neighbour. To tell the truth, I think that any lady who lives here alone ought to be older than I am. The Penvalians would not show to a young woman that sort of respect which they have always felt for this house.'

'I didn't mean alone,' said Captain Aylmer.

Then Clara got up and made some excuse for leaving him, and there was nothing more said between them nothing, at least, of moment, on that evening. She had become uneasy when he asked her whether she would like to live in his house at Perivale. But afterwards, when he suggested that she was to have some companion with her there, she felt herself compelled to put an end to the conversation. And yet she knew that this was always the way, both with him and with herself. He would say things which would seem to promise that in another minute he would be at her feet, and then he would go no farther. And she, when she heard those words though in truth size would have had him at her feet if she could would draw away, and recede, and forbid him as it were to go on. But Clara continued to make her comparisons, and knew well that her cousin Will would have gone on in spite of any such forbiddings.

On that night, however, when she was alone, she could console herself with thinking how right she had been. In that front bedroom, the door of which was opposite to her own, with closed shutters, in the terrible solemnity of lifeless humanity, was still lying the body of her aunt! What would she have thought of herself if at such a moment she could have listened to words of love, and promised herself as a wife while such an inmate was in the house? She little knew that he, within that same room, had pledged himself, to her who was now lying there waiting for her last removal had pledged himself, just seven days since, to make the offer which, when he was talking to her, she was always half hoping and half fearing!

He could have meant nothing else when he told her that he had not intended to suggest that she should live there alone in that great house at Perivale. She could not hinder herself from thinking of this, unfit as was the present moment for any such thoughts.

How was it possible that she should not speculate on the subject, let her resolutions against any such speculation be ever so strong? She had confessed to herself that she loved the man, and what else could she wish but that he also should love her? But there came upon her some faint suspicion some glimpse of what was almost a dream that he might possibly in this matter be guided rather by duty than by love. It might be that he would feel himself constrained to offer his hand to her constrained by the peculiarity of his position towards her. If so should she discover that such were his motives there would be no doubt as to the nature of her answer.

Page 76

CHAPTER X

SHOWING HOW CAPTAIN AYLMER KEPT HIS PROMISE

The next day was necessarily very sad. Clara had declared her determination to follow her aunt to the churchyard, and did so, together with Martha, the old servant. There were three or four mourning coaches, as family friends came over from Taunton, one or two of whom were to be present at the reading of the will. How melancholy was the occasion, and how well the work was done; how substantial and yet how solemn was the luncheon, spread after the funeral for the gentlemen; and how the will was read, without a word of remark, by Mr Palmer, need hardly be told here. The will contained certain substantial legacies to servants the amount to that old handmaid Martha being so great as to produce a fit of fainting, after which the old handmaid declared that if ever there was, by any chance, an angel of light upon the earth, it was her late mistress; and yet Martha had had her troubles with her mistress; and there was a legacy of two hundred pounds to the gentleman who was called upon to act as co-executor with Captain Aylmer. Other clause in the will there was none, except that one substantial clause which bequeathed to her well-beloved nephew, Frederic Folliott Aylmer, everything of which the testatrix died possessed. The will had been made at some moment in which Clara's spirit of independence had offended her aunt, and her name was not mentioned. That nothing should have been left to Clara was the one thing that surprised the relatives from Taunton who were present. The relatives from Taunton, to give them their due, expected nothing for themselves; but as there had been great doubt as to the proportions in which the property would be divided between the nephew and adopted niece, there was aroused a considerable excitement as to the omission of the name of Miss Amedroz an excitement which was not altogether unpleasant. When people complain of some cruel shame, which does not affect themselves personally, the complaint is generally accompanied by an unexpressed and unconscious feeling of satisfaction.

On the present occasion, when the will had been read and refolded, Captain Aylmer, who was standing on the rug near the fire, spoke a few words. His aunt, he said, had desired to add a codicil to the will, of the nature of which Mr Palmer was well aware. She had expressed her intention to leave fifteen hundred pounds to her niece, Miss Amedroz; but death had come upon her too quickly to enable her to perform her purpose. Of this intention on the part of Mrs Winterfield, Mr Palmer was as well aware as himself; and he mentioned the subject now, merely with the object of saying that, as a matter of course, the legacy to Miss Amedroz was as good as though the codicil had been completed. On such a question as that there could arise no question as to legal right; but he understood that the legal claim of Miss Amedroz, under such circumstances, was as void as his own. It was therefore no affair of generosity on his part. Then there was a little buzz of satisfaction on the part of those present, and the meeting was broken up.

Page 77

A certain old Mrs. Folliott, who was cousin to everybody concerned, had come over from Taunton to see how things were going. She had always been at variance with Mrs Winterfield, being a woman who loved cards and supper parties, and who had throughout her life stabled her horses in stalls very different to those used by the lady of Perivale. Now this Mrs Folliott was the first to tell Clara of the will. Clara, of course, was altogether indifferent. She had known for months past that her aunt had intended to leave nothing to her, and her only hope had been that she might be left free from any commiseration or remark on the subject. But Mrs Folliott, with sundry shakings of the head, told her how her aunt had omitted to name her and then told her also of Captain Aylmer's generosity. 'We all did think, my dear,' said Mrs Folliott, 'that she would have done better than that for you, or at any rate that she would not have left you dependent on him.' Captain Aylmer's horses were also supposed to be stabled in strictly Low Church stalls, and were therefore regarded by Mrs Folliott with much dislike.

'I and my aunt understood each other perfectly,' said Clara.

'I dare say. But if so, you really were the only person that did understand her. No doubt what she did was quite right, seeing that she was a saint; but we sinners would have thought it very wicked to have made such a will, and then to have trusted to the generosity of another person after we were dead.'

'But there is no question of trusting to any one's generosity, Mrs Folliott.'

'He need not pay you a shilling, you know, unless he likes it.'

'And he will not be asked to pay me a shilling.'

'I don't suppose he will go back after what he has said publicly.'

'My dear Mrs Folliott,' said Clara earnestly, 'pray do not let us talk about it. it is quite unnecessary. I never expected any of my aunt's property, and knew all along that it was to go to Captain Aylmer who, indeed, was Mrs Winterfield's heir naturally. Mrs Winterfield was not really my aunt, and I had no claim on her.'

'But everybody understood that she was to provide for you.'

'As I was not one of the everybodies myself, it will not signify.' Then Mrs Folliott retreated, having, as she thought, performed her duty to Clara, and contented herself henceforth with abusing Mrs Winterfield's will in her own social circles at Taunton.

On the evening of that day, when all the visitors were gone and the house was again quiet, Captain Aylmer thought it expedient to explain to Clara the nature of his aunt's will, and the manner in which she would be allowed to inherit under it the amount of money which her aunt had intended to bequeath to her. When she became impatient and objected to listen to him, he argued with her, pointing out to her that this was a

matter of business to which it was now absolutely necessary that she should attend. 'It may be the case,' he said, 'and, indeed, I hope it will, that no essential difference will be made by it except that it will gratify you to know how careful she was of your interests in her last moments. But you are bound in duty to learn your own position; and I, as her executor, am bound to explain it to you. But perhaps you would rather discuss it with Mr Palmer.'

Page 78

'Oh no save me from that.'

'You must understand, then, that I shall pay over to you the sum of fifteen hundred pounds as soon as the will has been proved.'

'I understand nothing of the kind. I know very well that if I were to take it, I should be accepting a present from you, and to that I cannot consent.'

'But, Clara'

'It is no good, Captain Aylmer. Though I don't pretend to understand much about law, I do know that I can have no claim to anything that is not put into the will; and I won't have what I could not claim. My mind is quite made up, and I hope I mayn't be annoyed about it. Nothing is more disagreeable than having to discuss money matters.'

Perhaps Captain Aylmer thought that the having no money matters to discuss might be even more disagreeable. 'Well,' he said, 'I can only ask you to consult any friend whom you can trust upon the matter. Ask your father, or Mr Belton, and I have no doubt that either of them will tell you that you are as much entitled to the legacy as though it had been written in the will.'

'On such a matter, Captain Aylmer, I don't want to ask anybody. You can't pay me the money unless I choose to take it, and I certainly shall not do that.' Upon hearing this he smiled, assuming, as Clara fancied that he was sometimes wont to do, a look of quiet superiority; and then, for that time, he allowed the subject to be dropped between them.

But Clara knew that she must discuss it at length with her father, and the fear of that discussion made her unhappy. She had already written to say that she would return home on the day but one after the funeral, and had told Captain Aylmer of her purpose. So very prudent a man as he of course could not think it right that a young lady should remain with him, in his house, as his visitor; and to her decision on this point he had made no objection. She now heartily wished that she had named the day after the funeral, and that she had not been deterred by her dislike of making a Sunday journey. She dreaded this day, and would have been very thankful if he would have left her and gone back to London. But he intended, he said, to remain at Perivale throughout the next week, and she must endure the day as best she might be able. She wished that it were possible to ask Mr Possitt to his accustomed dinner; but she did not dare to make the proposition to the master of the house. Though Captain Aylmer had declared Mr Possitt to be a very worthy man, Clara surmised that he would not be anxious to commence that practice of a Sabbatical dinner so soon after his aunt's decease. The day, after all, would be but one day, and Clara schooled herself into a resolution to bear it with good humour.

Page 79

Captain Aylmer had made a positive promise to his aunt on her deathbed that he would ask Clara Amedroz to be his wife, and he had no more idea of breaking his word than he had of resigning the whole property which had been left to him. Whether Clara would accept him he had much doubt. He was a man by no means brilliant, not naturally self-confident, nor was he, perhaps, to be credited with the possession of high principles of the finest sort; but he was clever, in the ordinary sense of the word, knowing his own interest, knowing, too, that that interest depended on other things besides money; and he was a just man, according to the ordinary rules of justice in the world. Not for the first time, when he was sitting by the bedside of his dying aunt, had he thought of asking Clara to marry him. Though he had never hitherto resolved that he would do so though he had never till then brought himself absolutely to determine that he would take so important a step he had pondered over it often, and was aware that he was very fond of Clara. He was, in truth, as much in love with her as it was in his nature to be in love. He was not a man to break his heart for a girl nor even to make a strong fight for a wife, as Belton was prepared to do. If refused once, he might probably ask again having some idea that a first refusal was not always intended to mean much and he might possibly make a third attempt, prompted by some further calculation of the same nature. But it might be doubted whether, on the first, second, or third occasion, he would throw much passion into his words; and those who knew him well would hardly expect to see him die of a broken heart, should he ultimately be unsuccessful.

When he had first thought of marrying Miss Amedroz he had imagined that she would have shared with him his aunt's property, and indeed such had been his belief up to the days of the last illness of Mrs Winterfield. The match therefore had recommended itself to him as being prudent as well as pleasant; and though his aunt had never hitherto pressed the matter upon him, he had understood what her wishes were. When she first told him, three or four days before her death, that her property was left altogether to him, and then, on hearing how totally her niece was without hope of provision from her father, had expressed her desire to give a sum of money to Clara, she had spoken plainly of her desire but she had not on that occasion asked him for any promise. But afterwards, when she knew that she was dying, she had questioned him as to his own feelings, and he, in his anxiety to gratify her in her last wishes, had given her the promise which she was so anxious to hear. He made no difficulty in doing so. It was his own wish as well as hers. In a money point of view he might no doubt now do better; but then money was not everything. He was very fond of Clara, and felt that if she would accept him he would be proud of his wife. She was well born and well educated, and it was the proper sort of thing

Page 80

for him to do. No doubt he had some idea, seeing how things had now arranged themselves, that he would be giving much more than he would get; and perhaps the manner of his offer might be affected by that consideration; but not on that account did he feel at all sure that he would be accepted. Clara Amedroz was a proud girl perhaps too proud. Indeed, it was her fault. If her pride now interfered with her future fortune in life, it should be her fault, not his. He would do his duty to her and to his aunt he would do it perseveringly and kindly; and then, if she refused him, the fault would not be his.

Such, I think, was the state of Captain Aylmer's mind when he got up on the Sunday morning, resolving that he would on that day make good his promise. And it must be remembered, on his behalf, that he would have prepared himself for his task with more animation if he had hitherto received warmer encouragement. He had felt himself to be repulsed in the little efforts which he had already made to please the lady, and had no idea whatever as to the true state of her feelings. Had he known what she knew, he would, I think, have been animated enough, and gone to his task as happy and thriving a lover as any. But he was a man somewhat diffident of himself, though sufficiently conscious of the value of the worldly advantages which he possessed and he was, perhaps, a little afraid of Clara, giving her credit for an intellect superior to his own.

He had promised to walk with her on the Saturday after the reading of the will, intending to take her out through the gardens down to a farm, now belonging to himself, which lay at the back of the town, and which was held by an old widow who had been senior in life to her late landlady; but no such walk had been possible, as it was dark before the last of the visitors from Taunton had gone. At breakfast on Sunday he again proposed the walk, offering to take her immediately after luncheon. 'I suppose you will not go to church?' he said.

'Not today. I could hardly bring myself to do it today.'

'I think you are right. I shall go. A man can always do these things sooner than a lady can. But you will come out afterwards?' To this she assented, and then she was left alone throughout the morning. The walk she did not mind. That she and Captain Aylmer should walk together was all very well. They might probably have done so had Mrs Winterfield been still alive. It was the long evening afterwards that she dreaded the long winter evening, in which she would have to sit with him as his guest, and with him only. She could not pass these hours without talking to him, and she felt that she could not talk to him naturally and easily. It would, however, be but for once, and she would bear it.

They went together down to the house of Mrs Partridge, the tenant, and made their kindly speeches to the old woman. Mrs Partridge already knew that Captain Aylmer was to be her landlord, but having hitherto seen more of Miss Amedroz than of the

captain, and having always regarded her landlady's niece as being connected irrevocably with the property, she addressed them as though the estate were a joint affair.

Page 81

'I shan't be here to trouble you long that I shan't, Miss Clara,' said the old woman.

'I am sure Captain Aylmer would be very sorry to lose you,' replied Clara, speaking loud, and close to the poor woman's ear, for she was deaf.

'I never looked to live after she was gone, Miss Clara never. No more I didn't. Deary deary! And I suppose you'll be living at the big house now; won't ye?'

'The big house belongs to Captain Aylmer, Mrs Partridge.' She was driven to bawl out her words, and by no means liked the task. Then Captain Aylmer said something, but his speech was altogether lost.

'Oh it belongs to the captain, do it? They told me that was the way of the will; but I suppose it's all one.'

'Yes; it's all one,' said Captain Aylmer, gaily.

'It's not exactly all one, as you call it,' said Clara, attempting to laugh, but still shouting at the top of her voice.

'Ah I don't understand; but I hope you'll both live there together and I hope you'll be as good to the poor as she that is gone. Well, well; I didn't ever think that I should be still here, while she is lying under the stones up in the old church!'

Captain Aylmer had determined that he would ask his question on the way back from the farm, and now resolved that he might as well begin with some allusion to Mrs Partridge's words about the house. The afternoon was bright and cold, and the lane down to the farmhouse had been dried by the wind, so that the day was pleasant for walking. 'We might as well go on to the bridge,' he said, as they left the farmyard. 'I always think that Perivale church looks better from Creevy bridge than any other point.' Perivale church stood high in the centre of the town, on an eminence, and was graced with a spire which was declared by the Perivalians to be preferable to that of Salisbury in proportion, though it was acknowledged to be somewhat inferior to it in height. The little river Creevy, which ran through a portion of the suburbs of the town, and which, as there seen, was hardly more than a ditch, then sloped away behind Creevy Grange, as the farm of Mrs Partridge was called, and was crossed by a small wooden bridge, from which there was a view, not only of the church, but of all that side of the hill on which Mrs Winterfield's large brick house stood conspicuously.

So they walked down to Creevy bridge, and, when there, stood leaning on the parapet and looking back upon the town.

'How well I know every house and spot in the place as I see them from here,' he said.

'A good many of the houses are your own or will be some day; and therefore you should know them.'

'I remember, when I used to be here as a boy fishing, I always thought Aunt Winterfield's house was the biggest house in the county.'

'It can't be nearly so large as your father's house in Yorkshire.'

'No; certainly it is not. Aylmer Park is a large place; but the house does not stretch itself out so wide as that; nor does it stand on the side of a hill so as to show out its proportions with so much ostentation. The coach-house and the stables, and the old brewhouse, seem to come half way down the hill. And when I was a boy I had much more respect for my aunt's red-brick house in Perivale than I had for Aylmer Park.'

Page 82

'And now it's your own.'

'Yes; now it's my own and all my respect for it is gone. I used to think the Creevy the best river in England for fish; but I wouldn't give a sixpence now for all the perch I ever caught in it.'

'Perhaps your taste for perch is gone also.'

'Yes; and my taste for jam. I never believed in the store-room at Aylmer Park as I did in my aunt's store-room here.'

'I don't doubt but what it is full now.'

'I dare say; but I shall never have the curiosity even to inquire. Ah, dear I wish I knew what to do about the house.'

'You won't sell it, I suppose?'

'Not if I could either live in it, or let it. It would be wrong to let it stand idle.'

'But you need not decide quite at once.'

'That's just what I want to do. I want to decide at once.'

'Then I'm sure I cannot advise you. It seems to me very unlikely that you should come and live here by yourself. It isn't like a country-house exactly.'

'I shan't live there by myself certainly. You heard what Mrs Partridge said just now.'

'What did Mrs Partridge say?'

'She wanted to know whether it belonged to both of us, and whether it was not all one. Shall it be all one, Clara?'

She was leaning over the rail of the bridge as he spoke, with her eyes fixed on the slowly moving water. When she heard his words she raised her face and looked full upon him. She was in some sort prepared for the moment, though it would be untrue to say that she had now expected it. Unconsciously she had made some resolve that if ever the question were put to her by him, she would not be taken altogether off her guard; and now that the question was put to her, she was able to maintain her composure. Her first feeling was one of triumph as it must be in such a position to any woman who has already acknowledged to herself that she loves the man who then asks her to be his wife. She looked up into Captain Aylmer's face and his eye almost quailed beneath hers. Even should he be triumphant, he was not perfectly assured that his triumph would be a success.

'Shall what be all one?' she asked.

'Shall it be in your house and my house? Can you tell me that you will love me and be my wife?' Again she looked at him, and he repeated his question. 'Clara, can you love me well enough to take me for your husband?'

'I can,' she said. Why should she hesitate, and play the coy girl, and pretend to any doubts in her mind which did not exist there? She did love him, and had so told herself with much earnestness. To him, while his words had been doubtful while he had simply played at making love to her, she had given no hint of the state of her affections. She had so carried herself before him as to make him doubt whether success could be possible for him. But now why should she hesitate now? It was as she had hoped or as she had hardly dared to hope. He did love her. 'I can,' she said; and then, before he could speak again, she repeated her words with more emphasis. 'Indeed I can; with all my heart.'

Page 83

As regarded herself, she was quite equal to the occasion; but had she known more of the inner feelings of men and women in general, she would have been slower to show her own. What is there that any man desires any man or any woman that does not lose half its value when it is found to be easy of access and easy of possession? Wine is valued by its price, not its flavour. Open your doors freely to Jones and Smith, and Jones and Smith will not care to enter them. Shut your doors obdurately against the same gentlemen, and they will use all their little diplomacy to effect an entrance. Captain Aylmer, when he heard the hearty tone of the girl's answer, already began almost to doubt whether it was wise on his part to devote the innermost bin of his cellar to wine that was so cheap.

Not that he had any idea of receding. Principle, if not love, prevented that. 'Then the question about the house is decided,' he said, giving his hand to Clara as he spoke.

'I don't care a bit about the house now,' she answered.

'That's unkind.'

'I am thinking so much more of you of you and of myself. What does an old house matter?'

'It's in very good repair,' said Captain Aylmer.

'You must not laugh at me,' she said; and in truth he was not laughing at her. 'What I mean is that anything about a house is indifferent to me now. It is as though I had got all that I want in the world. Is it wrong of me to say so?'

'Oh, dear, no not wrong at all. How can it be wrong?' He did not tell her that he also had got all he wanted; but his lack of enthusiasm in this respect did not surprise her, or at first even vex her. She had always known him to be a man careful of his words knowing their value not speaking with hurried rashness as would her dear cousin Will. And she doubted whether, after all, such hurried words mean as much as words which are slower and calmer. After all his heat in love and consequent disappointment, Will Belton had left her apparently well contented. His fervour had been short-lived. She loved her cousin dearly, and was so very glad that his fervour had been short-lived!

'When you asked me, I could but tell you the truth,' she said, smiling at him.

The truth is very well, but he would have liked it better had the truth come to him by slower degrees. When his aunt had told him to marry Clara Amedroz, he had been at once reconciled to the order by a feeling on his own part that the conquest of Clara would not be too facile. She was a woman of value, not to be snapped up easily or by any one. So he had thought then; but he began to fancy now that he had been wrong in that opinion.

Page 84

The walk back to the house was not of itself very exciting, though to Clara it was a short period of unalloyed bliss. No doubt had then come upon her to cloud her happiness, and she was 'wrapped up in measureless content.' It was well that they should both be silent at such a moment. Only yesterday had been buried their dear old friend the friend who had brought them together, and been so anxious for their future happiness! And Clara Amedroz was not a young girl, prone to jump out of her shoes with elation because she had got a lover. She could be steadily happy without many immediate words about her happiness. When they reached the house, and were once more together in the drawing-room, she again gave him her hand, and was the first to speak. And you; are you contented?' she asked. Who does not know the smile of triumph with which a girl asks such a question at such a moment as that?

'Contented? well yes; I think I am,' he said.

But even those words did not move her to doubt. 'If you are,' she said, 'I am. And now I will leave you till dinner, that you may think over what you have done.'

'I had thought about it before, you know,' he replied. Then he stooped over her and kissed her. It was the first time he had done so; but his kiss was as cold and proper as though they had been man and wife for years! But it sufficed for her, and she went to her room as happy as a queen.

CHAPTER XI

MISS AMEDROZ IS TOO CANDID BY HALE

Clara, when she left her accepted lover in the drawing-room and went up to her own chamber, had two hours for consideration before she would see him again and she had two hours for enjoyment. She was very happy. She thoroughly believed in the man who was to be her husband, feeling confident that he possessed those qualities which she thought to be most necessary for her married happiness. She had quizzed him at times, pretending to make it matter of accusation against him that his life was not in truth all that his aunt believed it to be but had it been more what Mrs Winterfield would have wished, it would have been less to Clara's taste. She liked his position in the world; she liked the feeling that he was a man of influence; perhaps she liked to think that to some extent he was a man of fashion. He was not handsome, but he looked always like a gentleman. He was well educated, given to reading, prudent, steady in his habits, a man likely to rise in the world; and she loved him. I fear the reader by this time may have begun to think that her love should never have been given to such a man. To this accusation I will make no plea at present, but I will ask the complainant whether such men are not always loved. Much is said of the rashness of women in giving away their hearts wildly; but the charge when made generally is, I think, an unjust one. I am more often astonished by the prudence of girls than by their recklessness.

Page 85

A woman of thirty will often love well and not wisely; but the girls of twenty seem to me to like propriety of demeanour, decency of outward life, and a competence. It is, of course, good that it should be so; but if it is so, they should not also claim a general character for generous and passionate indiscretion, asserting as their motto that Love shall still be Lord of All. Clara was more than twenty; but she was not yet so far advanced in age as to have lost her taste for decency of demeanour and propriety of life. A Member of Parliament, with a small house near Eaton Square, with a moderate income, and a liking for committees, who would write a pamphlet once every two years, and read Dante critically during the recess, was, to her, the model for a husband. For such a one she would read his blue books, copy his pamphlets, and learn his translations by heart. She would be safe in the hands of such a man, and would know nothing of the miseries which her brother had encountered. Her model may not appear, when thus described, to be a very noble one; but I think it is the model most approved among ladies of her class in England.

She made up her mind on various points during those two hours of solitude. In the first place, she would of course keep her purpose of returning home on the following day. It was not probable that Captain Aylmer would ask her to change it; but let him ask ever so much it must not be changed. She must at once have the pleasure of telling her father that all his trouble about her would now be over; and then, there was the consideration that her further sojourn in the house, with Captain Aylmer as her lover, would hardly be more proper than it would have been bad he not occupied that position. And what was she to say if he pressed her as to the time of their marriage? Her aunt's death would of course be a sufficient reason why it should be delayed for some few months; and, upon the whole, she thought it would be best to postpone it till the next session of Parliament should have nearly expired. But she would be prepared to yield to Captain Aylmer, should he name any time after Easter. It was clearly his intention to keep up the house in Perivale as his country residence. She did not like Perivale or the house, but she would say nothing against such an arrangement. Indeed, with what face could she do so? She was going to bring nothing to the common account absolutely nothing but herself! As she thought of this her love grew warmer, and she hardly knew how sufficiently to testify to herself her own gratitude and affection.

She became conscious, as she was preparing herself for dinner, of some special attention to her toilet. She was more than ordinarily careful with her hair, and felt herself to be aware of an anxiety to look her best. She had now been for some time so accustomed to dress herself in black, that in that respect her aunt's death had made no difference to her. Deep mourning had ceased from habit to impress her

Page 86

with any special feeling of funereal solemnity. But something about herself, or in the room, at last struck her with awe, bidding her remember how death had of late been busy among those who had been her dearest and nearest friends; and she sat down, almost frightened at her own heartlessness, in that she was allowing herself to be happy at such a time. Her aunt had been carried away to her grave only yesterday, and her brother's death had occurred under circumstances of peculiar distress within the year and yet she was happy, triumphant almost lost in the joy of her own position! She remained for a while in her chair, with her black dress hanging across her lap, as she argued with herself as to her own state of mind. Was it a sign of a hard heart within her, that she could be happy at such a time? Ought the memory of her poor brother to have such an effect upon her as to make any joy of spirits impossible to her? Should she at the present moment be so crushed by her aunt's demise, as to be incapable of congratulating herself upon her own success? Should she have told him, when he asked her that question upon the bridge, that there could be no marrying or giving in marriage between them, no talking on such a subject in days so full of sorrow as these? I do not know that she quite succeeded in recognizing it as a truth that sorrow should be allowed to bar out no joy that it does not bar out of absolute necessity by its own weight, without reference to conventional ideas; that sorrow should never, under any circumstances, be nursed into activity, as though it were a thing in itself divine or praiseworthy. I do not know that she followed out her arguments till she had taught herself that it is the Love that is divine the Love which, when outraged by death or other severance, produces that sorrow which man would control if he were strong enough, but which he cannot control by reason of the weakness of his humanity. I doubt whether so much as this made itself plain to her, as she sat there before her toilet table, with her sombre dress hanging from her hands on to the ground. But something of the strength of such reasoning was hers. Knowing herself to be full of joy, she would not struggle to make herself believe that it behoved her to be unhappy. She told herself that she was doing what was good for others as well as for herself what would be very good for her father, and what should be good, if it might be within her power to make it so, for him who was to be her husband. The blackness of the cloud of her brother's death would never altogether pass away from her. It had tended, as she knew well, to make her serious, grave, and old, in spite of her own efforts to the contrary. The cloud had been so black with her that it had nearly lost for her the prize which was now her own. But she told herself that that blackness was an injury to her, and not a benefit, and that it had now become a duty to her for his sake, if not for her own to dispel its shadows rather than encourage them. She would go down to him full of joy, though not full of mirth, and would confess to him frankly, that in receiving the assurance of his love, she had received everything that had seemed to have any value for her in the world.

Page 87

Hitherto she had been independent she had specially been careful to show to him her resolve to be independent of him. Now she would put aside all that, and let him know that she recognized in him her lord and master as well as husband. To her father had been left no strength on which she could lean, and she had been forced therefore to trust to her own strength. Now she would be dependent on him who was to be her husband. As heretofore she had rejected his offers of assistance almost with disdain, so now would she accept them without scruple, looking to him to be her guide in all things, putting from her that carping spirit in which she had been wont to judge of his actions, and believing in him as a wife should believe in her husband.

Such were the resolutions which Clara made in the first hour of solitude which came to her after her engagement; and they would have been wise resolutions but for this flaw that the stronger was submitting itself to the weaker, the greater to the less, the more honest to the less honest, that which was nearly true to that which was in great part false. The theory of man and wife that special theory in accordance with which the wife is to bend herself in loving submission before her husband is very beautiful; and would be good altogether if it could only be arranged that the husband should be the stronger and the greater of the two. The theory is based upon that hypothesis and the hypothesis sometimes fails of confirmation. In ordinary marriages the vessel rights itself, and the stronger and the greater takes the lead, whether clothed in petticoats, or in coat, waistcoat, and trousers; but there sometimes comes a terrible shipwreck, when the woman before marriage has filled herself full with ideas of submission, and then finds that her golden-headed god has got an iron body and feet of clay.

Captain Aylmer, when he was left alone, had also something to think about; and as there were two hours left for such thought before he would again meet Clara, and as he had nothing else with which to occupy himself during those two hours, he again strolled down to the bridge on which he had made his offer. He strolled down there, thinking that he was thinking, but hardly giving much mind to his thoughts, which he allowed to run away with themselves as they listed. Of course he was going to be married. That was a thing settled. And he was perfectly satisfied with himself in that he had done nothing in a hurry, and could accuse himself of no folly even if he had no great cause for triumph. He had been long thinking that he should like to have Clara Amedroz for his wife long thinking that he would ask her to marry him; and having for months indulged such thoughts, he could not take blame to himself for having made to his aunt that deathbed promise which she had exacted. At the moment in which she asked him the question he was himself anxious to do the thing she desired of him. How then could he have refused her?

Page 88

And, having given the promise, it was a matter of course with him to fulfil it. He was a man who would have never respected himself again would have hated himself for ever, had he failed to keep a promise from which no living being could absolve him. He had been right therefore to make the promise, and having made it, had been right to keep it, and to do the thing at once. And Clara was very good and very wise, and sometimes looked very well, and would never disgrace him; and as she was in worldly matters to receive much and give nothing, she would probably be willing to make herself amenable to any arrangements as to their future mode of life which he might propose. In respect of this matter he was probably thinking of lodgings for himself in London during the parliamentary session, while she remained alone in the big red house upon which his eyes were fixed at the time. There was much of convenience in all this, which might perhaps atone to him for the sacrifice which he was undoubtedly making of himself. Had marriage simply been of itself a thing desirable, he could doubtless have disposed of himself to better advantage. His prospects, present fortune, and general position were so favourable, that he might have dared to lift his expectations, in regard both to wealth and rank, very high. The Aylmers were a considerable people, and he, though a younger brother, had much more than a younger brother's portion. His seat in Parliament was safe; his position in society was excellent and secure; he was exactly so placed that marriage with a fortune was the only thing wanting to put the finishing coping-stone to his edifice that, and perhaps also the useful glory of having some Lady Mary or Lady Emily at the top of his table. Lady Emily Aylmer? Yes it would have sounded better, and there was a certain Lady Emily who might have suited. Now, as some slight regrets stole upon him gently, he failed to remember that this Lady Emily had not a shilling in the world.

Yes; some faint regrets did steal upon him, though he went on telling himself that he had acted rightly. His stars, which were generally very good to him, had not perhaps on this occasion been as good as usual. No doubt he had to a certain degree become encumbered with Clara Amedroz. Had not the direct and immediate leap with which she had come into his arms shown him somewhat too plainly that one word of his mouth tending towards matrimony had been regarded by her as being too valuable to be lost? The fruit that falls easily from the tree, though it is ever the best, is never valued by the gardener. Let him have well-nigh broken his neck in gathering it, unripe and crude, from the small topmost boughs of the branching tree, and the pippin will be esteemed by him as invaluable. On that morning, as Captain Aylmer had walked home from church, he had doubted much what would be Clara's answer to him. Then the pippin was at the end of the dangerous bough. Now it had fallen to

Page 89

his feet, and he did not scruple to tell himself that it was his and always might have been his as a matter of course. Well, the apple had come of a good kind, and, though there might be specks upon it, though it might not be fit for any special glory of show or pride of place among the dessert service, still it should be garnered and used, and no doubt would be a very good apple for eating. Having so concluded, Captain Aylmer returned to the house, washed his hands, changed his boots, and went down to the drawing-room just as dinner was ready.

She came up to him almost radiant with joy, and put her hand upon his arm. 'Martha did not know but what you were here,' she said, 'and told them to put dinner on the table.'

'I hope I have not kept you waiting.'

'Oh, dear, no. And what if you did? Ladies never care about things getting cold. It is gentlemen only who have feelings in such matters as that.'

'I don't know that there is much difference; but, however ' Then they were in the dining-room, and as the servant remained there during dinner, there was nothing in their conversation worth repeating. After dinner they still remained down-stairs, seating themselves on the two sides of the fire, Clara having fully resolved that she would not on such an evening as this leave Captain Aylmer to drink his glass of port wine by himself.

'I suppose I may stay with you, mayn't I?' she said.

'Oh, dear, yes; I'm sure I'm very much obliged. I'm not at all wedded to solitude.' Then there was a slight pause.

'That's lucky,' she said 'as you have made up your mind to be wedded in another sort of way.' Her voice as she spoke was very low, but there was a gentle ring of restrained joyousness in it which ought to have gone at once to his heart and made him supremely blessed for the time.

'Well yes,' he answered. 'We are in for it now, both of us are we not? I hope you have no misgivings about it, Clara.'

'Who? I? I have misgivings! No, indeed. I have no misgivings, Frederic; no doubts, no scruples, no alloy in my happiness. With me it is all as I would have it be. Ah; you haven't understood why it has been that I have seemed to be harsh to you when we have met.'

'No, I have not,' said he. This was true; but it is true also that it would have been well that he should be kept in his ignorance. She was minded, however, to tell him everything, and therefore she went on.

'I don't know how to tell you; and yet, circumstanced as we are now, it seems that I ought to tell you everything.'

Page 90

'Yes, certainly; I think that,' said Aylmer. He was one of those men who consider themselves entitled to see, hear, and know every little detail of a woman's conduct, as a consequence of the circumstances of his engagement, and who consider themselves shorn of their privilege if anything be kept back. If any gentleman had said a soft word to Clara eight years ago, that soft word ought to be repeated to him now. I am afraid that these particular gentlemen sometimes hear some fibs; and I often wonder that their own early passages in the tournaments of love do not warn them that it must be so. When James has sat deliciously through all the moonlit night with his arm round Mary's waist and afterwards sees Mary led to the altar by John, does it not occur to him that some John may have also sat with his arm round Anna's waist that Anna whom he is leading to the altar? These things should not be inquired into too curiously; but the curiosity of some men on such matters has no end. For the most part, women like telling only they do not choose to be pressed beyond their own modes of utterance. 'I should like to know that I have your full confidence,' said he.

'You have got my full confidence,' she replied.

'I mean that you should tell me anything that there is to be told.'

'It was only this, that I had learned to love you before I thought that my love would be returned.'

'Oh was that it?' said Captain Aylmer, in a tone which seemed to imply something like disappointment.

'Yes. Fred; that was it. And how could I, under such circumstances, trust myself to be gentle with you, or to look to you for assistance? How could I guess then all that I know now?'

'Of course you couldn't.'

'And therefore I was driven to be harsh. My aunt used to speak to me about it.'

'I don't wonder at that, for she was very anxious that we should be married.'

Clara for a moment felt herself to be uncomfortable as she heard these words, half perceiving that they implied some instigation on the part of Mrs Winterfield. Could it be that Captain Aylmer's offer had been made in obedience to a promise? 'Did you know of her anxiety?' she asked.

'Well yes; that is to say, I guessed it. It was natural enough that the same idea should come to her and to me too. Of course, seeing us so much thrown together, she could not but think of our being married as a chance upon the cards.'



'She used to tell me that I was harsh to you abrupt, she called it. But what could I do? I'll tell you, Fred, how I first found out that I really cared for you. What I tell you now is of course a secret; and I should speak of it to no one under any circumstances but those which unite us two together. My Cousin Will, when he was at Belton, made me an offer.'

'He did, did he? You did not tell me that when you were saying all those fine things in his praise in the railway carriage.'

Page 91

Of course I did not. Why should I? I wasn't bound to tell you my secrets then, sir.'

'But did he absolutely offer to you?'

'Is there anything so wonderful in that? But, wonderful or not, he did.'

'And you refused him?'

'I refused him certainly.'

'It wouldn't have been a bad match, if all that you say about his property is true.'

'If you come to that, it would have been a very good match; and perhaps you think I was silly to decline it?'

'I don't say that.'

'Papa thought so but, then, I couldn't tell papa the whole truth, as I can tell it to you now, Captain Aylmer. I couldn't tell dear papa that my heart was not my own to give to my Cousin Will; nor could I give Will any such reason. Poor Will! I could only say to him bluntly that I wouldn't have him.'

'And you would, if it hadn't been hadn't been for me.'

'Nay, Fred; there you tax me too far. What might have come of my heart if you hadn't fallen in my way, who can say? I love Will Belton dearly, and hope that you may do so'

'I must see him first.'

'Of course but, as I was saying, I doubt whether, under any circumstances, he would have been the man I should have chosen for a husband. But as it was it was impossible. Now you know it all, and I think that I have been very frank with you.'

'Oh! very frank.' He would not take her little jokes, nor understand her little prettinesses. That he was a man not prone to joking she knew well, but still it went against the grain with her to find that he was so very hard in his replies to her attempts.

It was not easy for Clara to carry on the conversation after this, so she proposed that they should go upstairs into the drawing-room. Such a change even as that would throw them into a different way of talking, and prevent the necessity of any further immediate allusion to Will Belton. For Clara was aware, though she hardly knew why, that her frankness to her future husband had hardly been successful, and she regretted that she had on this occasion mentioned her cousin's name. They went upstairs and again sat themselves in chairs over the fire; but for a while conversation did not seem to come to them freely. Clara felt that it was now Captain Aylmer's turn to begin, and

Captain Aylmer felt that he wished he could read the newspaper. He had nothing in particular that he desired to say to his lady-love. That morning, as he was shaving himself, he had something to say that was very particular as to which he was at that moment so nervous, that he had cut himself slightly through the trembling of his hand. But that had now been said, and he was nervous no longer. That had now been said, and the thing settled so easily, that he wondered at his own nervousness. He did not know that there was anything that required much further immediate speech. Clara had thought somewhat of the time which might be proposed for their marriage, making some little resolves, with which the reader is already acquainted; but no ideas of this kind presented themselves to Captain Aylmer. He had asked his cousin to be his wife, thereby making good his promise to his aunt. There could be no further necessity for pressing haste. Sufficient for the day is the evil thereof.

Page 92

It is not to be supposed that the thriving lover actually spoke to himself in such language as that or that he confessed to himself that Clara Amedroz was an evil to him rather than a blessing. But his feelings were already so far tending in that direction, that he was by no means disposed to make any further promise, or to engage himself in closer connexion with matrimony by the mention of any special day. Clara, finding that her companion would not talk without encouragement from her, had to begin again, and asked all those natural questions about his family, his brother, his sister, his home habits, and the old house in Yorkshire, the answers to which must be so full of interest to her. But even on these subjects he was dry, and in-disposed to answer with the full copiousness of free communication which she desired. And at last there came a question and an answer a word or two on one side, and then a word or two on the other, from which Clara got a wound which was very sore to her.

'I have always pictured to myself,' she said 'your mother as a woman who has been very handsome.'

'She is still a handsome woman, though she is over sixty.'

'Tall, I suppose?'

'Yes, tall, and with something of of what shall I say dignity, about her.'

'She is not grand, I hope?'

'I don't know what you call grand.'

'Not grand in a bad sense I'm sure she is not that. But there are some ladies who seem to stand so high above the level of ordinary females as to make us who are ordinary quite afraid of them.'

'My mother is certainly not ordinary,' said Captain Aylmer.

'And I am,' said Clara, laughing. 'I wonder what she'll say to me or, rather, what she will think of me.' Then there was a moment's silence, after which Clara, still laughing, went on. 'I see, Fred, that you have not a word of encouragement to give me about your mother.'

'She is rather particular,' said Captain Aylmer.

Then Clara drew herself up, and ceased to laugh. She had called herself ordinary with that half- insincere depreciation of self which is common to all of us when we speak of our own attributes, but which we by no means intend that they who hear us shall accept as strictly true, or shall re-echo as their own approved opinions. But in this instance Captain Aylmer, though he had not quite done that, had done almost as bad.

‘Then I suppose I had better keep out of her way,’ said Clara, by no means laughing as she spoke.

‘Of course when we are married you must go and see her.’

‘You do not, at any rate, promise me a very agreeable visit, Fred. But I dare say I shall survive it. After all, it is you that I am to marry, and not your mother; and as long as you are not majestic to me, I need not care for her majesty.’

‘I don’t know what you mean by majesty.’

‘You must confess that you speak of her as of something very terrible.’

Page 93

'I say that she is particular and so she is. And as my respect for her opinion is equal to my affection for her person, I hope that you will make a great effort to gain her esteem.'

'I never make any efforts of that kind. If esteem doesn't come without efforts it isn't worth having.'

'There I disagree with you altogether but I especially disagree with you as you are speaking about my mother, and about a lady who is to become your own mother-in-law. I trust that you will make such efforts, and that you will make them successfully. Lady Aylmer is not a woman who will give you her heart at once, simply because you have become her son's wife. She will judge you by your own qualities and will not scruple to condemn you should she see cause.'

Then there was a longer silence, and Clara's heart was almost in rebellion even on this, the first day of her engagement. But she quelled her high spirit, and said no further word about Lady Aylmer. Nor did she speak again till she had enabled herself to smile as she spoke.

'Well, Fred,' she said, putting her hand upon his arm, 'I'll do my best, and woman can do no more. And now I'll say good-night, for I must pack for tomorrow's journey before I go to bed.' Then he kissed her with a cold, chilling kiss and she left him for the night.

CHAPTER XII

MISS AMEDROZ RETURNS HOME

Clara was to start by a train leaving Perivale at eight on the following morning, and therefore there was not much time for conversation before she went. During the night she had endeavoured so to school herself as to banish from her breast all feelings of anger against her lover, and of regret as regarded herself. Probably, as she told herself, she had made more of what he had said than he had intended that she should do; and then, was it not natural that he should think much of his mother, and feel anxious as to the way in which she might receive his wife. As to that feeling of anger on her own part, she did get quit of it; but the regret was not to be so easily removed. It was not only what Captain Aylmer had said about his mother that clung to her, doing much to quench her joy; but there had been a coldness in his tone to her throughout the evening which she recognized almost unconsciously, and which made her heart heavy in spite of the joy which she repeatedly told herself ought to be her own. And she also felt though she was not clearly aware that she did so that his manner towards her had become less affectionate, less like that of a lover, since the honest tale she had told him of her own early love for him. She should have been less honest, and more discreet; less bold, and more like in her words to the ordinary run of women. She had known this as she

was packing last night, and she told herself that it was so as she was dressing on this her last morning at Perivale. That frankness

Page 94

of hers had not been successful, and she regretted that she had not imposed on herself some little reticence or even a little of that coy pretence of indifference which is so often used by ladies when they are wooed. She had been boldly honest, and had found her honesty to be bad policy. She thought, at least, that she had found its policy to be bad. Whether in truth it may not have been very good have been the best policy in the world tending to give her the first true intimation which she had ever yet received of the real character of the man who was now so much to her that is altogether another question.

But it was clearly her duty to make the best of her present circumstances, and she went down-stairs with a smiling face and with pleasant words on her tongue. When she entered the breakfast-room Captain Aylmer was there; but Martha was there also, and her pleasant words were received indifferently in the presence of the servant. When the old woman was gone, Captain Aylmer assumed a grave face, and began a serious little speech which he had prepared. But he broke down in the utterance of it, and was saying things very different from what he had intended before he had completed it.

'Clara,' he began, 'what occurred between us yesterday is a source of great satisfaction to me.'

'I am glad of that, Frederick,' said she, trying to be a little less serious than her lover.

'Of very great satisfaction,' he continued; 'and I cannot but think that we were justified by the circumstances of our position in forgetting for a time the sad solemnity of the occasion. When I remember that it was but the day before yesterday that I followed my dear old aunt to the grave, I am astonished to think that yesterday I should have made an offer of marriage.'

What could be the good of his talking in this strain? Clara, too, had had her own misgivings on the same subject little qualms of conscience that had come to her as she remembered her old friend in the silent watches of the night; but such thoughts were for the silent watches, and not for open expression in the broad daylight. But he had paused, and she must say something.

'One's excuse to oneself is this that she would have wished it so.'

'Exactly. She would have wished it. Indeed she did wish it, and therefore ' He paused in what he was saying, and felt himself to be on difficult ground. Her eye was full upon him, and she waited for a moment or two as though expecting that he would finish his words. But as he did not go on, she finished them for him.

'And therefore you sacrificed your own feelings.' Her heart was becoming sore, and she was unable to restrain the utterance of her sarcasm.



'Just so,' said he; 'or, rather, not exactly that. I don't mean that I am sacrificed; for, of course, as I have just now said, nothing as regards myself can be more satisfactory. But yesterday should have been a solemn day to us; and as it was not'

Page 95

'I thought it very solemn.'

'What I mean is that I find an excuse in remembering that I was doing what she asked me to do.'

'What she asked you to do, Fred?'

'What I had promised, I mean.'

'What you had promised? I did not hear that before.' These last words were spoken in a very low voice, but they went direct to Captain Aylmer's ears.

'But you have heard me declare,' he said, 'that as regards myself nothing could be more satisfactory.'

'Fred,' she said, 'listen to me for a moment. You and I engaged ourselves to each other yesterday as man and wife.'

'Of course we did.'

'Listen to me, dear Fred. In doing that there was nothing in my mind unbefitting the sadness of the day. Even in death we must think of life, and if it were well for you and me that we should be together it would surely have been but a foolish ceremony between us to have abstained from telling each other that it would be so because my aunt had died last week. But it may be, and I think it is the case, that the feelings arising from her death have made us both too precipitate.'

'I don't understand how that can be.'

'You have been anxious to keep a promise made to her, without considering sufficiently whether in doing so you would secure your own happiness; and I'

'I don't know about you, but as regards myself I must be considered to be the best judge.'

'And I have been too much in a hurry in believing that which I wished to believe.'

'What do you mean by all this, Clara?'

'I mean that our engagement shall be at an end; not necessarily so for always. But that as an engagement binding us both, it shall for the present cease to exist. You shall be again free'

'But I don't choose to be free.'

'When you think of it you will find it best that it should be so. You have performed your promise honestly, even though at a sacrifice to yourself. Luckily for you for both of us, I should say the full truth has come out; and we can consider quietly what will be best for us to do, independently of that promise. We will part, therefore, as dear friends but not as engaged to each other as man and wife.'

'But we are engaged, and I will not hear of its being broken.'

'A lady's word, Fred, is always the most potential before marriage; and you must therefore yield to me in this matter. I am sure your judgment will approve of my decision when you think of it. There shall be no engagement between us. I shall consider myself quite free free to do as I please altogether; and you, of course, will be free also.'

'If you please, of course it must be so.'

'I do please, Fred.'

'And yesterday, then, is to go for nothing.'

'Not exactly. It cannot go for nothing with me. I told you too many of my secrets for that. But nothing that was done or said yesterday is to be held as binding upon either of us.'

Page 96

'And you made up your mind to that last night?'

'It is at any rate made up to that now. Come I shall have to go without my breakfast if I do not eat it at once. Will you have your tea now, or wait and take it comfortably when I am gone?'

Captain Aylmer breakfasted with her, and took her to the station, and saw her off with all possible courtesy and attention, and then he walked back by himself to his own great house in Perivale. Not a word more had been said between him and Clara as to their engagement, and he recognized it as a fact that he was no longer bound to her as her future husband. Indeed, he had no power of not recognizing the fact, so decided had been her language, and so imperious her manner. It had been of no avail that he had said that the engagement should stand. She had told him that her voice was to be the more potential, and he had felt that it was so. Well might it not be best for him that it should be so? He had kept his promise to his aunt, and had done all that lay in his power to make Clara Amedroz his wife. If she chose to rebel against her own good fortune simply because he spoke to her a few words which seemed to him to be fitting, might it not be well for him to take her at her word?

Such were his first thoughts; but as the day wore on with him, something more generous in his nature came to his aid, and something also that was akin to real love. Now that she was no longer his own, he again felt a desire to have her. Now that there would be again something to be done in winning her, he was again stirred by a man's desire to do that something. He ought not to have told her of the promise. He was aware that what he had said on that point had been dropped by him accidentally, and that Clara's resolution after that had not been unnatural. He would, therefore, give her another chance, and resolved before he went to bed that night that he would allow a fortnight to pass away, and would then write to her, renewing his offer with all the strongest declarations of affection which he would be enabled to make.

Clara on her way home was not well satisfied with herself or with her position. She had had great joy, during the few hours of joy which had been hers, in thinking of the comfort which her news would give to her father. He would be released from all further trouble on her account by the tidings which she would convey to him by the tidings which she had intended to convey to him. But now the story which she would have to tell would by no means be comfortable. She would have to explain to him that her aunt had left no provision for her, and that would be the beginning and the end of her story. As for those conversations about the fifteen hundred pounds of them she would say nothing. When she reflected on what had taken place between herself and Captain Aylmer she was more resolved than ever that she would not touch any portion of that money or of any money that should come from him. Nor would she tell her father anything of the marriage engagement which had been made on one day and unmade on the next. Why should she add to his distress by showing him what good things might have been hers

had she only had the wit to keep them? No; she would tell her father simply of the will, and then comfort him in his affliction as best she might.

Page 97

As regarded her position with Captain Aylmer, the more she thought of it the more sure she became that everything was over in that quarter. She had, indeed, told him that such need not necessarily be the case but this she had done in her desire at the moment to mitigate the apparent authoritativeness of her own decision, rather than with any idea of leaving the matter open for further consideration. She was sure that Captain Aylmer would be glad of a means of escape, and that he would not again place himself in the jeopardy which the promise exacted from him by his aunt had made so nearly fatal to him. And for herself, though she still loved the man so loved him that she lay back in the corner of her carriage weeping behind her veil as she thought of what she had lost still she would not take him, though he should again press his suit upon her with all the ardour at his command. No, indeed. No man should ever be made to regard her as a burden imposed upon him by an extorted promise! What! let a man sacrifice himself to a sense of duty on her behalf! And then she repeated the odious words to herself, till she came to think that it had fallen from his lips and not from her own.

In writing to her father from Perivale, she had merely told him of Mrs Winterfield's death and of her own intended return. At the Taunton station she met the well-known old fly and the well-known old driver, and was taken home in the accustomed manner. As she drew nearer to Belton the sense of her distress became stronger and stronger, till at last she almost feared to meet her father. What could she say to him when he should repeat to her, as he would be sure to do, his lamentation as to her future poverty?

On arriving at the house she learned that he was upstairs in his bedroom. He had been ill, the servant said, and though he was not now in bed, he had not come down-stairs. So she ran up to his room, and finding him seated in an old arm-chair by the fire-side, knelt down at his feet, as she took his hand and asked him as to his health.

'What has Mrs Winterfield done for you in her will?' These were the first words he spoke to her.

'Never mind about wills now, papa. I want you to tell me of yourself.'

'Nonsense, Clara. Answer my question.'

'Oh, papa, I wish you would not think so much about money for me.'

'Not think about it? Why am I not to think about it? What else have I got to think of? Tell me at once, Clara, what she has done. You ought to have written to me directly the will was made known.'

There was no help for her, and the terrible word must be spoken. 'She has left her property to Captain Aylmer, papa; and I must say that I think she is right.'

‘You do not mean everything?’

‘She has provided for her servants.’

‘And has made no provision for you?’

‘No, papa.’



Page 98

'Do you mean to tell me that she has left you nothing absolutely nothing?' The old man's manner was altogether altered as he asked the question; and there came over his face so unusual a look of energy of the energy of anger that Clara was frightened, and knew not how to answer him with that tone of authority which she was accustomed to use when she found it necessary to exercise control over him. 'Do you mean to say that there is nothing nothing?' And as he repeated the question he pushed her away from his knees and stood up with an effort, leaning against the back of his chair.

'Dear papa, do not let this distress you.'

'But is it so? Is there in truth nothing?'

'Nothing, papa. Remember that she was not really my aunt.'

'Nonsense, child! nonsense! How can you talk such trash to me as that? And then you tell me not to distress myself! I am to know that you will be a beggar in a year or two probably in a few months and that is not to distress me! She has been a wicked woman!'

'Oh, papa, do not say that.'

'A wicked woman. A very wicked woman. It is always so with those who pretend to be more religious than their neighbours. She has been a very wicked woman, alluring you into her house with false hopes.'

'No, papa no; I must contradict you. She had given me no grounds for such hope.'

'I say she had even though she may not have made a promise. I say she had. Did not everybody think that you were to have her money?'

'I don't know what people may have thought. Nobody has had any right to think about it at all.'

'That is nonsense, Clara. You know that I expected it that you expected it yourself.'

'No no, no!'

'Clara how can you tell me that?'

'Papa, I knew that she intended to leave me nothing. She told me so when I was there in the spring.'

'She told you so?'

'Yes, papa. She told me that Frederic Aylmer was to have all her property. She explained to me everything that she meant to do, and I thought that she was right.'

'And why was not I told when you came home?'

'Dear papa!'

'Dear papa, indeed. What is the meaning of dear papa? Why have I been deceived?'

'What good could I do by telling you? You could not change it.'

'You have been very undutiful; and as for her, her wickedness and cruelty shock me shock me. They do, indeed. That she should have known your position, and had you with her always and then have made such a will as that! Quite heartless! She must have been quite heartless.'

Page 99

Clara now began to find that she must in justice to her aunt's memory tell her father something more. And yet it would be very difficult to tell him anything that would not bring greater affliction upon him, and would not also lead her into deeper trouble. Should it come to pass that her aunt's intention with reference to the fifteen hundred pounds was mentioned, she would be subjected to an endless persecution as to the duty of accepting that money from Captain Aylmer. But her present feelings would have made her much prefer to beg her bread upon the roads than accept her late lover's generosity. And then again, how could she explain to her father Mrs Winterfield's mistake about her own position without seeming to accuse her father of having robbed her? But nevertheless she must say something, as Mr Amedroz continued to apply that epithet of heartless to Mrs Winterfield, going on with it in a low droning tone, that was more injurious to Clara's ears than the first full energy of his anger.

'Heartless quite heartless shockingly heartless shockingly heartless!'

'The truth is, papa,' Clara said at last, 'that when my aunt told me about her will, she did not know but what I had some adequate provision from my own family.'

'Oh, Clara!'

'That is the truth, papa for she explained the whole thing to me. I could not tell her that she was mistaken, and thus ask for her money.'

'But she knew everything about that poor wretched boy.' And now the father dropped back into his chair, and buried his face in his hands.

When he did this Clara again knelt at his feet. She felt that she had been cruel, and that she had defended her aunt at the cost of her own father. She had, as it were, thrown in his teeth his own imprudence, and twitted him with the injuries which he had done to her. 'Papa,' she said, 'dear papa, do not think about it at all. What is the use? After all, money is not everything. I care nothing for money. If you will only agree to banish the subject altogether, we shall be so comfortable.'

'How is it to be banished?'

'At any rate we need not speak of it. Why should we talk on a subject which is simply uncomfortable, and which we cannot mend?'

'Oh dear, oh dear, oh dear!' And now he swayed himself backwards and forwards in his chair, bewailing his own condition and hers, and his past imprudence, while the tears ran down his cheeks. She still knelt there at his feet, looking up into his face with loving, beseeching eyes, praying him to be comforted, and declaring that all would still be well if he would only forget the subject, or, at any rate, cease to speak of it. But still he went on wailing, complaining of his lot as a child complains, and refusing all consolation.

'Yes; I know,' said he, 'it has all been my fault. But how could I help it? What was I to do?'

'Papa, nobody has said that anything was your fault; nobody has thought so.'

Page 100

'I never spent anything on myself never, never; and yet and yet and yet !'

'Look at it with more courage, papa. After all, what harm will it be if I should have to go out and earn my own bread like any other young woman? I am not afraid.'

At last he wept himself into an apathetic tranquillity, as though he had at present no further power for any of the energy of grief; and she left him while she went about the house and learned how things had gone on during her absence. It seemed, from the tidings which the servant gave her, that he had been ill almost since she had been gone. He had, at any rate, chosen to take his meals in his own room, and as far as was remembered, had not once left the house since she had been away. He had on two or three occasions spoken of Mr Belton, appearing to be anxious for his coming, and asking questions as to the cattle and the work that was still going on about the place; and Clara, when she returned to his room, tried to interest him again about her cousin. But he had in truth been too much distressed by the ill news as to Mrs Winterfield's will to be able to rally himself, and the evening that was spent up in his room was very comfortless to both of them. Clara had her own sorrows to bear as well as her father's, and could take no pleasant look out into the world of her own circumstances. She had gained her lover merely to lose him and had lost him under circumstances that were very painful to her woman's feeling. Though he had been for one night betrothed to her as her husband, he had never loved her. He had asked her to be his wife simply in fulfilment of a death-bed promise! The more she thought of it the more bitter did the idea of it become to her. And she could not also but think of her cousin. Poor Will! He, at any rate, had loved her, though his eagerness in love had been, as she told herself, but short-lived. As she thought of him, it seemed but the other day that he had been with her up on the rock in the park but as she thought of Captain Aylmer, to whom she had become engaged only yesterday, and from whom she had separated herself only that morning, she felt that an eternity of time had passed since she had parted from him.

On the following day, a dull, dark, melancholy day, towards the end of November, she went out to saunter about the park, leaving her father still in his bedroom, and after a while made her way down to the cottage. She found Mrs Askerton as usual alone in the little drawing-room, sitting near the window with a book in her hand; but Clara knew at once that her friend had not been reading that she had been sitting there looking out upon the clouds, with her mind fixed upon things far away. The general cheerfulness of this woman had often been cause of wonder to Clara, who knew how many of her hours were passed in solitude; but there did occasionally come upon her periods of melancholy in which she was unable to act up to the settled rule of her life, and in which she would confess that the days and weeks and months were too long for her.

Page 101

'So you are back,' said Mrs Askerton, as soon as the first greeting was over.

'Yes; I am back.'

'I supposed you would not stay there long after the funeral.'

'No; what good could I do?'

'And Captain Aylmer is still there, I suppose?'

'I left him at Perivale.'

There was a slight pause, as Mrs Askerton hesitated before she asked her next question. 'May I be told anything about the will?' she said.

'The weary will! If you knew how I hated the subject you would not ask me. But you must not think I hate it because it has given me nothing.'

'Given you nothing?'

'Nothing ! But that does not make me hate it. It is the nature of the subject that is so odious. I have now told you all everything that there is to be told, though we were to talk for a week. If you are generous you will not say another word about it.'

'But I am so sorry.'

'There that's it. You won't perceive that the expression of such sorrow is a personal injury to me. I don't want you to be sorry.'

'How am I to help it?'

'You need not express it. I don't come pitying you for supposed troubles. You have plenty of money; but if you were so poor that you could eat nothing but cold mutton, I shouldn't condole with you as to the state of your larder. I should pretend to think that poultry and piecrust were plentiful with you.'

'No, you wouldn't, dear not if I were as dear to you as you are to me.'

'Well, then, be sorry; and let there be an end of it. Remember how much of all this I must of necessity have to go through with poor papa.'

'Ah, yes; I can believe that.'

'And he is so far from well. Of course you have not seen him since I have been gone.'

'No; we never see him unless he comes up to the gate there.' Then there was another pause for a moment. And what about Captain Aylmer?' asked Mrs Askerton.

'Well what about him?'

'He is the heir now?'

'Yes he is the heir.'

'And that is all?'

'Yes; that is all. What more should there be? The poor old house at Perivale will be shut up, I suppose.'

'I don't care about the old house much, as it is not to be your house.'

'No it is not to be my house certainly.'

'There were two ways in which it might have become yours.'

'Though there were ten ways, none of those ways have come my way,' said Clara.

'Of course I know that you are so close that though there were anything to tell you would not tell it.'

'I think I would tell you anything that was proper to be told; but now there is nothing proper or improper.'

'Was it proper or improper when Mr Belton made an offer to you as I knew he would do of course; as I told you that he would? Was that so improper that it could not be told?'

Page 102

Clara was aware that the tell-tale colour in her face at once took from her the possibility of even pretending that the allegation was untrue, and that in any answer she might give she must acknowledge the fact. 'I do not think,' she said, 'that it is considered fair to gentlemen to tell such stories as that.'

'Then I can only say that the young ladies I have known are generally very unfair.'

'But who told you?'

'Who told me? My maid. Of course she got it from yours. Those things are always known.'

'Poor Will!'

'Poor Will, indeed. He is coming here again, I hear, almost immediately, and it needn't be "poor Will" unless you like it. But as for me, I am not going to be an advocate in his favour. I tell you fairly that I did not like what little I saw of poor Will.'

'I like him of all things.'

'You should teach him to be a little more courteous in his demeanour to ladies; that is all. I will tell you something else, too, about poor Will but not now. Some other day I will tell you something of your Cousin Will.'

Clara did not care to ask any questions as to this something that was to be told, and therefore took her leave and went away.

CHAPTER XIII

MR WILLIAM BELTON TAKES A WALK IN THE COUNTRY

Clara Amedroz had made one great mistake about her cousin, Will Belton, when she came to the conclusion that she might accept his proffered friendship without any apprehension that the friend would become a lover; and she made another, equally great, when she convinced herself that his love had been as short-lived as it had been eager. Throughout his journey back to Plaistow, he had thought of nothing else but his love, and had resolved to persevere, telling himself sometimes that he might perhaps be successful, and feeling sure at other times that he would encounter renewed sorrow and permanent disappointment but equally resolved in either mood that he would persevere. Not to persevere in pursuit of any desired object let the object be what it might was, to his thinking, unmanly, weak, and destructive of self-respect. He would sometimes say of himself, joking with other men, that if he did not succeed in this or that thing, he could never speak to himself again. To no man did he talk of his love in such a strain as this; but there was a woman to whom he spoke of it; and though he could not

joke on such a matter, the purport of what he said showed the same feeling. To be finally rejected, and to put up with such rejection, would make him almost contemptible in his own eyes.

Page 103

This woman was his sister, Mary Belton. Something has been already said of this lady, which the reader may perhaps remember. She was a year or two older than her brother, with whom she always lived, but she had none of those properties of youth which belonged to him in such abundance. She was, indeed, a poor cripple, unable to walk beyond the limits of her own garden, feeble in health, dwarfed in stature, robbed of all the ordinary enjoyments of life by physical deficiencies, which made even the task of living a burden to her. To eat was a pain, or at best a trouble. Sleep would not comfort her in bed, and weariness during the day made it necessary that the hours passed in bed should be very long. She was one of those whose lot in life drives us to marvel at the inequalities of human destiny, and to inquire curiously within ourselves whether future compensation is to be given.

It is said of those who are small and crooked-backed in their bodies, that their minds are equally cross-grained and their tempers as ungainly as their stature. But no one had ever said this of Mary Belton. Her friends, indeed, were very few in number; but those who knew her well loved her as they knew her, and there were three or four persons in the world who were ready at all times to swear that she was faultless. It was the great happiness of her life that among those three or four her own brother was the foremost. Will Belton's love for his sister amounted almost to veneration, and his devotion to her was so great, that in all the affairs of his life he was prepared to make her comfort one of his first considerations. And she, knowing this, had come to fear that she might be an embargo on his prosperity, and a stumbling-block in the way of his success. It had occurred to her that he would have married earlier in life if she had not been, as it were, in his way; and she had threatened him playfully for she could be playful that he would leave him if he did not soon bring a mistress to Plaistow Hall. 'I will go to uncle Robert,' she had said. Now uncle Robert was the clergyman in Lincolnshire of whom mention has been made, and he was among those two or three who believed in Mary Belton with an implicit faith as was also his wife. 'I will go to uncle Robert, Will, and then you will be driven to get a wife.'

'If my sister ever leaves my house, whether there be a wife in it or not,' Will had answered, 'I will never put trust in any woman again.'

Plaistow Manor-house or Hall was a fine brick mansion, built in the latter days of Tudor house architecture, with many gables and countless high chimneys very picturesque to the eye, but not in all respects comfortable as are the modern houses of the well-to-do squirearchy of England. And, indeed, it was subject to certain objectionable characteristics which in some degree justified the scorn which Mr Amedroz intended to throw upon it when he declared it to be a farm-house. The gardens belonging to it were large and excellent;

Page 104

but they did not surround it, and allowed the farm appurtenances to come close up to it on two sides. The door which should have been the front door, opening from the largest room in the house, which had been the hall and which was now the kitchen, led directly into the farm-yard. From the farther end of this farm-yard a magnificent avenue of elms stretched across the home pasture down to a hedge which crossed it at the bottom. That there had been a road through the rows of trees or, in other words, that there had in truth been an avenue to the house on that side was, of course, certain. But now there was no vestige of such road, and the front entrance to Plaistow Hall was by a little path across the garden from a modern road which had been made to run cruelly near to the house. Such was Plaistow Hall, and such was its mistress. Of the master, the reader, I hope, already knows so much as to need no further description.

As Belton drove himself home from the railway station late on that August night, he made up his mind that he would tell his sister all his story about Clara Amedroz. She had ever wished that he should marry, and now he had made his attempt. Little as had been her opportunity of learning the ways of men and women from experience in society, she had always seemed to him to know exactly what every one should do in every position of life. And she would be tender with him, giving him comfort even if she could not give him hope. Moreover Mary might be trusted with his secret; for Belton felt, as men always do feel, a great repugnance to have it supposed that his suit to a woman had been rejected. Women, when they have loved in vain, often almost wish that their misfortune should be known. They love to talk about their wounds mystically telling their own tales under feigned names, and extracting something of a bitter sweetness out of the sadness of their own romance. But a man, when he has been rejected rejected with a finality that is acknowledged by himself is unwilling to speak or hear a word upon the subject, and would willingly wash the episode out from his heart if it were possible.

But not on that his first night would he begin to speak of Clara Amedroz. He would not let his sister believe that his heart was too full of the subject to allow of his thinking of other matters. Mary was still up, waiting for him when he arrived, with tea, and cream, and fruit ready for him. 'Oh, Mary!' he said, 'why are you not in bed? You know that I would have come to you upstairs.' She excused herself, smiling, declaring that she could not deny herself the pleasure of being with him for half an hour on his first return from his travels. 'Of course I want to know what they are like,' she said.

'He is a nice-looking old man,' said Will 'and she is a nice-looking young woman.'

'That is graphic and short, at any rate.'

'And he is weak and silly, but she is strong and and and'



Page 105

'Not silly also, I hope?'

'Anything but that. I should say she is very clever.'

'I'm afraid you don't like her, Will.'

'Yes, I do.'

'Really?'

'Yes; really.'

'And did she take your coming well?'

'Very well. I think she is much obliged to me for going.'

'And Mr Amedroz?'

'He liked my coming too very much.'

'What after that cold letter?'

'Yes, indeed. I shall explain it all by degrees. I have taken a lease of all the land, and I'm to go back at Christmas; and as to the old gentleman he'd have me live there altogether if I would.'

'Why, Will?'

'Is it not odd? I'm so glad I didn't make up my mind not to go when I got that letter. And yet I don't know.' These last words he added slowly, and in a low voice, and Mary at once knew that everything was not quite as it ought to be.

'Is there anything wrong, Will?'

'No, nothing wrong; that is to say, there is nothing to make me regret that I went. I think I did some good to them.'

'It was to do good to them that you went there.'

'They wanted to have some one near them who could be to them as one of their own family. He is too old too much worn out to be capable of managing things; and the people there were, of course, robbing him. I think I have put a stop to that.'

'And you are to go again at Christmas?'



'Yes; they can do without me at my uncle's, and you will be there. I have taken the land, and already bought some of the stock for it, and am going to buy more.'

'I hope you won't lose money, Will.'

'No not ultimately, that is. I shall get the place in good condition, and I shall have paid myself when he goes, in that way, if in no other. Besides, what's a little money? I owe it to them for robbing her of her inheritance.'

'You do not rob her, Will.'

'It is hard upon her, though.'

'Does she feel it hard?'

'Whatever may be her feelings on such a matter, she is a woman much too proud to show them.'

'I wish I knew whether you liked her or not.'

'I do like her I love her better than any one in the world; better even than you, Mary; for I have asked her to be my wife.'

'Oh, Will!'

'And she has refused me. Now you know the whole of it the whole history of what I have done while I have been away.' And he stood up before her, with his thumbs thrust into the arm-holes of his waistcoat, with something serious and almost solemn in his gait, in spite of a smile which played about his mouth.

'Oh, Will!'

'I meant to have told you, of course, Mary to have told you everything; but I did not mean to tell it to-night; only it has somehow fallen from me. Out of the full heart the mouth speaks, they say.'

'I never can like her if she refuses your love.'

Page 106

'Why not? That is unlike you, Mary. Why should she be bound to love me because I love her?'

'Is there any one else, Will?'

'How can I tell? I did not ask her. I would not have asked her for the world, though I would have given the world to know.'

'And she is so very beautiful?'

'Beautiful! It isn't that so much though she is beautiful. But but I can't tell you why but she is the only girl that I ever saw who would suit me for a wife. Oh, dear!'

'My own Will!'

'But I'm not going to keep you up all night, Mary. And I'll tell you something else; I'm not going to break my heart for love. And I'll tell you something else again; I'm not going to give it up yet. I believe I've been a fool. Indeed, I know I've been a fool. I went about it just as if I were buying a horse, and had told the seller that that was my price he might take it or leave it. What right had I to suppose that any girl was to be had in that way; much less such a girl as Clara Amedroz?'

'It would have been a great match for her.'

'I'm not so sure of that, Mary. Her education has been different from mine, and it may well be that she should marry above me. But I swear I will not speak another word to you to-night. Tomorrow, if you're well enough, I'll talk to you all day.' Soon after that he did get her to go up to her room, though, of course, he broke that oath of his as to not speaking another word. After that he walked out by moonlight round the house, wandering about the garden and farm-yard, and down through the avenue, having in his own mind some pretence of the watchfulness of ownership, but thinking little of his property and much of his love. Here was a thing that he desired with all his heart, but it seemed to be out of his reach absolutely out of his reach. He was sick and weary with a feeling of longing sick with that covetousness wherewith Ahab coveted the vineyard of Naboth. What was the world to him if he could not have this thing on which he had set his heart? He had told his sister that he would not break his heart; and so much, he did not doubt, would be true. A man or woman with a broken heart was in his estimation a man or woman who should die of love; and he did not look for such a fate as that. But he experienced the palpable misery of a craving emptiness within his breast, and did believe of himself that he never could again be in comfort unless he could succeed with Clara Amedroz. He stood leaning against one of the trees, striking his hands together, and angry with himself at the weakness which had reduced him to such a state. What could any man be worth who was so little master of himself as he had now become?

After awhile he made his way back through the farm-yard, and in at the kitchen door, which he locked and bolted; and then, throwing himself down into a wooden armchair which always stood there, in the corner of the huge hearth, he took a short pipe from the mantelpiece, filled it with tobacco, and lighting it almost unconsciously, began to smoke with vehemence.

Page 107

Plaistow Hall was already odious to him, and he longed to be back at Belton, which he had left only that morning. Yes, on that very morning she had brought to him his coffee, looking sweetly into his face so sweetly as she ministered to him. And he might then well have said one word more in pleading his suit, if he had not been too awkward to know what that word should be. And was it not his own awkwardness that had brought him to this state of misery? What right had he to suppose that any girl should fall in love with such a one as he at first sight without a moment's notice to her own heart? And then, when he had her there, almost in his arms, why had he let her go without kissing her? It seemed to him now that if he might have once kissed her, even that would have been a comfort to him in his present affliction. 'D tion!' he said at last, as he jumped to his feet and kicked the chair on one side, and threw the pipe among the ashes. I trust it will be understood that he addressed himself, and not his lady-love, in this uncivil way 'D tion!' Then when the chair had been well kicked out of his way, he took himself up to bed. I wonder whether Clara's heart would have been hardened or softened towards him had she heard the oath, and understood all the thoughts and motives which had produced it.

On the next morning poor Mary Belton was too ill to come down-stairs; and as her brother spent his whole day out upon the farm, remaining among reapers and wheat stacks till nine o'clock in the evening, nothing was said about Clara on that day. Then there came a Sunday, and it was a matter of course that the subject of which they both were thinking should be discussed. Will went to church, and, as was their custom on Sundays, they dined immediately on his return. Then, as the afternoon was very warm, he took her out to a favourite seat she had in the garden, and it became impossible that they could longer abstain.

'And you really mean to go again at Christmas?' she asked.

'Certainly I shall I promised.'

'Then I am sure you will.'

'And I must go from time to time because of the land I have taken. Indeed there seems to be an understanding that I am to manage the property for Mr Amedroz.'

'And does she wish you to go?'

'Yes she says so.'

'Girls, I believe, think sometimes that men are indifferent in their love. They suppose that a man can forget it at once when he is not accepted, and that things can go on just as before.'

'I suppose she thinks so of me,' said Belton wofully.

'She must either think that, or else be willing to give herself the chance of learning to like you better.'

'There's nothing of that, I'm sure. She's as true as steel.'

'But she would hardly want you to go there unless she thought you might overcome either your love or her indifference. She would not wish you to be there that you might be miserable.'

Page 108

'Before I had asked her to be my wife I had promised to be her brother. And so I will, if she should ever want a brother. I am not going to desert her because she will not do what I want her to do, or be what I want her to be. She understands that. There is to be no quarrel between us.'

'But she would be heartless if she were to encourage you to be with her simply for the assistance you may give her, knowing at the same time that you could not be happy in her presence.'

'She is not heartless.'

'Then she must suppose that you are.'

'I dare say she doesn't think that I care much about it. When I told her, I did it all of a heap, you see; and I fancy she thought I was just mad at the time.'

'And did you speak about it again?'

'No; not a word. I shouldn't wonder if she hadn't forgotten it before I went away.'

'That would be impossible.'

'You wouldn't say so if you knew how it was done. It was all over in half an hour; and she had given me such an answer that I thought I had no right to say anything more about it. The morning when I left her she did seem to be kinder.'

'I wish I knew whether she cares for any one else.'

'Ah! I so often think of that. But I couldn't ask her, you know. I had no right to pry into her secrets. When I came away, she got up to see me off; and I almost felt tempted to carry her into the gig and drive her off.'

'I don't think that would have done, Will.'

'I don't suppose anything will do. We all know what happens to the child who cries for the top brick of the chimney. The child has to do without it. The child goes to bed and forgets it; but I go to bed and can't forget it.'

'My poor Will!'

Then he got up and shook himself, and stalked about the garden always keeping within a few yards of his sister's chair and carried on a strong battle within his breast, struggling to get the better of the weakness which his love produced, though resolved that the love itself should be maintained.

'I wish it wasn't Sunday,' he said at last, 'because then I could go and do something. If I thought that no one would see me, I'd fill a dung-cart or two, even though it is Sunday. I'll tell you what I'll go and take a walk as far as Denvir Sluice; and I'll be hack to tea. You won't mind?'

'Denvir Sluice is eight miles off.'

'Exactly I'll be there and back in something over three hours.'

'But, Will there's a broiling sun.'

'It will do me good. Anything that will take something out of me is what I want. I know I ought to stay and read to you; but I couldn't do it. I've got the fidgets inside, if you know what that means. To have the big hay-rick on fire, or something of that sort, is what would do me most good.'

Page 109

Then he started, and did walk to Denvir Sluice and back in three hours. The road from Plaistow Hall to Denvir Sluice was not in itself interesting. It ran through a perfectly flat country, without a tree. For the greater part of the way it was constructed on the top of a great bank by the side of a broad dike, and for five miles its course was straight as a line. A country walk less picturesque could hardly be found in England. The road, too, was very dusty, and the sun was hot above Belton's head as he walked. But nevertheless, he persevered, going on till he struck his stick against the waterfall which was called Denvir Sluice, and then returned not once slackening his pace, and doing the whole distance at a rate somewhat above five miles an hour. They used to say in the nursery that cold pudding is good to settle a man's love; but the receipt which Belton tried was a walk of sixteen miles, along a dusty road, after dinner, in the middle of an August day.

I think it did him some good. When he got back he took a long draught of home-brewed beer, and then went upstairs to dress himself.

'What a state you are in,' Mary said to him when he showed himself for a moment in the sitting. room.

'I did it from milestone to milestone in eleven minutes, backwards and forwards, all along the five- mile reach.'

Then Mary knew from his answer that the exercise had been of service to him, perceiving that he had been able to take an interest in his own prowess as a walker.

'I only hope you won't have a fever,' she said.

'The people who stand still are they who get fevers,' he answered. 'Hard work never does harm to any one. If John Bowden would walk his five miles an hour on a Sunday afternoon he wouldn't have the gout so often.'

John Bowden was a neighbour in the next parish, and Mary was delighted to find that her brother could take a pride in his performance.

By degrees Miss Belton began to know with some accuracy the way in which Will had managed his affairs at Belton Castle, and was enabled to give him salutary advice.

'You see, Will,' she said, 'ladies are different from men in this, that they cannot allow themselves to be in love so suddenly.'

'I don't see how a person is to help it. It isn't like jumping into a river, which a person can do or not, just as he pleases.'

'But I fancy it is something like jumping into a river, and that a person can help it. What the person can't help is being in when the plunge has once been made.'

'No, by George! There's no getting out of that river.'

'And ladies don't take the plunge till they've had time to think what may come after it. Perhaps you were a little too sudden with our Cousin Clara?'

'Of course I was. Of course I was a fool, and a brute too.'

'I know you were not a brute, and I don't think you were a fool; but yet you were too sudden. You see a lady cannot always make up her mind to love a man, merely because she is asked all in a moment. She should have a little time to think about it before she is called upon for an answer.'



Page 110

'And I didn't give her two minutes.'

'You never do give two minutes to anyone do you, Will? But you'll be back there at Christmas, and then she will have had time to turn it over in her mind.'

'And you think that I may have a chance?'

'Certainly you may have a chance.'

'Although she was so sure about it?'

'She spoke of her own mind and her own heart as she knew them then. But it depends chiefly on this, Will whether there is any one else. For anything we know, she may be engaged now.'

'Of course she may.' Then Belton speculated on the extreme probability of such a contingency; arguing within his own heart that of course every unmarried man who might see Clara would want to marry her, and that there could not but be some one whom even she would be able to love.

When he had been home about a fortnight, there came a letter to him from Clara, which was a great treasure to him. In truth, it simply told him of the completion of the cattle-shed, of her father's health, and of the milk which the little cow gave; but she signed herself his affectionate cousin, and the letter was very gratifying to him. There were two lines of a postscript, which could not but flatter him: 'Papa is so anxious for Christmas, that you may be here again and so, indeed, am I also.' Of course it will be understood that this was written before Clara's visit to Perivale, and before Mrs Winterfield's death. Indeed, much happened in Clara's history between the writing of that letter and Will Belton's winter visit to the Castle.

But Christmas came at last, all too slowly for Will and he started on his journey. On this occasion he arranged to stay a week in London, having a lawyer there whom he desired to see; and thinking, perhaps, that a short time spent among the theatres might assist him in his love troubles.

CHAPTER XIV

MR WILLIAM BELTON TAKES A WALK IN LONDON

At the time of my story there was a certain Mr Green, a worthy attorney, who held chambers in Stone Buildings, Lincoln's Inn, much to the profit of himself and family and to the profit and comfort also of a numerous body of clients a man much respected in the neighbourhood of Chancery Lane, and beloved, I do not doubt, in the neighbourhood of Bushey, in which delightfully rural parish he was possessed of a



genteel villa and ornamental garden. With Mr Green's private residence we shall, I believe, have no further concern; but to him at his chambers in Stone Buildings I must now introduce the reader of these memoirs. He was a man not yet forty years of age, with still much of the salt of youth about him, a pleasant companion as well as a good lawyer, and one who knew men and things in London, as it is given to pleasant clever fellows, such as Joseph Green, to know them. Now Mr Green and his father before him had been the legal

Page 111

advisers of the Amedroz family, and our Mr Joseph Green had had but a bad time of it with Charles Amedroz in the last years of that unfortunate young man's life. But lawyers endure these troubles, submitting themselves to the extravagances, embarrassments, and even villainy of the bad subjects among their clients' families, with a good-humoured patience that is truly wonderful. That, however, was all over now as regarded Mr Green and the Amedrozes, and he had nothing further to do but to save for the father what relics of the property he might secure. And he was also legal adviser to our friend Will Belton, there having been some old family connexion among them, and had often endeavoured to impress upon his old client at Belton Castle his own strong conviction that the heir was a generous fellow, who might be trusted in everything. But this had been taken amiss by the old squire, who, indeed, was too much disposed to take all things amiss and to suspect everybody. 'I understand,' he had said to his daughter. 'I know all about it. Belton and Mr Green have been dear friends always. I can't trust my own lawyer any longer.' In all which the old squire showed much ingratitude. It will, however, be understood that these suspicions were rife before the time of Belton's visit to the family estate.

Some four or five days before Christmas there came a visitor to Mr Green with whom the reader is acquainted, and who was no less a man than the Member for Perivale. Captain Aylmer, when Clara parted from him on the morning of her return to Belton Castle, had resolved that he would repeat his offer of marriage by letter. A month had passed by since then, and he had not as yet repeated it. But his intention was not altered. He was a deliberate man, who did not do such things quite as quickly as his rival, and who upon this occasion had thought it prudent to turn over more than once in his mind all that he proposed to do. Nor had he as yet taken any definite steps as to that fifteen hundred pounds which he had promised to Clara in her aunt's name, and which Clara had been, and was, so unwilling to receive. He had now actually paid it over, having purchased government stock in Clara's name for the amount, and had called upon Mr Green, in order that that gentleman, as Clara's lawyer, might make the necessary communication to her.

'I suppose there's nothing further to be done?' asked Captain Aylmer.

'Nothing further by me,' said the lawyer. 'Of course I shall write to her, and explain that she must make arrangements as to the interest. I am very glad that her aunt thought of her in her last moments.'

'Mrs Winterfield would have provided for her before, had she known that everything had been swallowed up by that unfortunate young man.'

'All's well that ends well. Fifteen hundred pounds are better than nothing.'

'Is it not enough?' said the captain, blushing.

'It isn't for me to have an opinion about that, Captain Aylmer. It depends on the nature of her claim; and that again depends on the relative position of the aunt and niece when they were alive together.'

Page 112

'You are aware that Miss Amedroz was not Mrs Winterfield's niece?'

'Do not think for a moment that I am criticizing the amount of the legacy. I am very glad of it, as, without it, there was literally no provision no provision at all.'

'You will write to herself?'

'Oh yes, certainly to herself. She is a better man of business than her father and then this is her own, to do as she likes with it.'

'She can't refuse it, I suppose?'

'Refuse it!'

'Even though she did not wish to take it, it would be legally her property, just as though it had been really left by the will?'

'Well; I don't know. I dare say you could have resisted the payment. But that has been made now, and there seems to be an end of it.'

At this moment a clerk entered the room and handed a card to his employer. 'Here's the heir himself,' said Mr Green.

'What heir?'

'Will Belton the heir of the property which Mr Amedroz holds.' Captain Aylmer had soon explained that he was not personally acquainted with Mr William Belton; but, having heard much about him, declared himself anxious to make the acquaintance. Our friend Will, therefore, was ushered into the room, and the two rivals for Clara's favour were introduced to each other. Each had heard much of the other, and each had heard of the other from the same person. But Captain Aylmer knew much more as to Belton than Belton knew in respect to him. Aylmer knew that Belton had proposed to Clara and had been rejected; and he knew also that Belton was now again going down to Somersetshire.

'You are to spend your Christmas, I believe, with our friends at Belton Castle?' said the captain.

'Yes and am now on my way there. I believe you know them also intimately.' Then there was some explanation as to the Winterfield connexion, a few remarks as to the precarious state of the old squire's health, a message or two from Captain Aylmer, which of course were of no importance, and the captain took his leave.

Then Green and Briton became very comfortably intimate in their conversation, calling each other Will and Joe for they were old and close friends. And they discussed

matters in that cozy tone of confidential intercourse which is so directly at variance with the tones used by men when they ordinarily talk of business. 'He has brought me good news for your friend, Miss Amedroz,' said the lawyer.

'What good news?'

'That aunt of hers left her fifteen hundred pounds, after all. Or rather, she did not leave it, but desired on her death-bed that it might be given.'

'That's the same thing, I suppose?'

'Oh quite that is to say, it's the same thing if the person who has to hand over the money does not dispute the legacy. But it shows how the old lady's conscience pricked her at last. And after all it was a shabby sum, and should have been three times as much.'

Page 113

'Fifteen hundred pounds! And that is all she will have when her father dies 7'

'Every farthing, Will. You'll take all the rest.'

'I wish she wasn't going to have that.'

'Why? Why on earth should you of all men grudge her such a moderate maintenance, seeing that you have not got to pay it?'

'It isn't a maintenance. How could it be a maintenance for such as her? What sort of maintenance would it be?'

'Much better than nothing. And so you would feel if she were your daughter.'

'She shall be my daughter, or my sister, or whatever you like to call her. You don't think that I'll take the whole estate and leave her to starve on the interest of fifteen hundred pounds a year!'

'You'd better make her your wife at once, Will.'

Will Belton blushed as he answered, 'That, perhaps, would be easier said than done. That is not in my power even if I should wish it. But the other is in my power.'

'Will, take my advice, and don't make any romantic promises when you are down at Belton. You'll be sure to regret them if you do. And you should remember that in truth Miss Amedroz has no greater claim on you than any other lady in the land.'

'Isn't she my cousin?'

'Well yes. She is your cousin, but a distant one only; and I'm not aware that cousinship gives any claim.'

'Who is she to have a claim on? I'm the nearest she has got. Besides, am not I going to take all the property which ought to be hers?'

'That's just it. There's no such ought in the case. The property is as much your own as this poker is mine. That's exactly the mistake I want you to guard against. If you liked her, and chose to marry her, that would be all very well; presuming that you don't want to get money in marriage.'

'I hate the idea of marrying for money.'

'All right. Then marry Miss Amedroz if you please. But don't make any rash undertakings to be her father, or her brother, or her uncle, or her aunt. Such romance always leads a man into trouble.'

'But I've done it already.'

'What do you mean?'

'I've told her that I would be her brother, and that as long as I had a shilling she should never want sixpence. And I mean it. And as for what you say about romance and repenting it, that simply comes from your being a lawyer.'

'Thank ye, Will.'

'If one goes to a chemist, of course one gets physic, and has to put up with the bad smells.'

'Thank you again.'

'But the chemist may be a very good sort of fellow at home all the same, and have a cupboard full of sweetmeats and a garden full of flowers. However, the thing is done as far as I am concerned, and I can almost find it in my heart to be sorry that Clara has got this dribble of money. Fifteen hundred pounds! It would keep her out of the workhouse, and that is about all.'

Page 114

'If you knew how many ladies in her position would think that the heavens had rained wealth upon them if some one would give them fifteen hundred pounds!'

'Very well. At any rate I won't take it away from her. And now I want you to tell me something else. Do you remember a fellow we used to know named Berdmore?'

'Philip Berdmore?'

'He may have been Philip, or Daniel, or Jeremiah, for anything I know. But the man I mean was very much given to taking his liquor freely.'

'That was Jack Berdmore, Philip's brother. Oh yes, I remember him. He's dead now. He drank himself to death at last, out in India.'

'He was in the army?'

'Yes and what a pleasant fellow he was at times! I see Phil constantly, and Phil's wife, but they never speak of Jack.'

'He got married, didn't he, after we used to see him?'

Oh yes he and Phil married sisters. It was a sad affair, that.'

'I remember being with him and her and the sister too, after they were engaged, and he got so drunk that we were obliged to take him away. There was a large party of us at Richmond, but I don't think you were there.'

'But I heard of it'

'And she was a Miss Vigo?'

'Exactly. I see the younger sister constantly. Phil isn't very rich, and he's got a lot of children but he's very happy.'

'What became of the other sister?'

'Of Jack's wife?'

'Yes. What became of her?'

'I haven't an idea. Something bad, I suppose, as they never speak of her.'

'And how long is he dead?'

'He died about three years since. I only knew it from Phil's telling me that he was in mourning for him. Then he did speak of him for a moment or two, and I came to know

that he had carried on to the end in the same way. If a fellow takes to drink in this country, he'll never get cured in India.'

'I suppose not.'

'Never.'

'And now I want to find out something about his widow.'

'And why?'

'Ah I'm not sure that I can tell you why. Indeed I'm sure that I cannot. But still you might be able to assist me.'

'There were heaps of people who used to know the Vigos,' said the lawyer.

'No end of people though I couldn't for the life of me say who any of them were.'

'They used to come out in London with an aunt, but nobody knew much about her. I fancy they had neither father nor mother.'

'They were very pretty.'

'And how well they danced. I don't think I ever knew a girl who danced so pleasantly giving herself no airs, you know as Mary Vigo.'

'Her name was Mary,' said Belton, remembering that Mrs Askerton's name was also Mary.

'Jack Berdmore married Mary.'

'Well now, Joe, you must find out for me what became of her. Was she with her husband when he died?'

Page 115

'Nobody was with him. Phil told me so. No one, that is, but a young lieutenant and his own servant. It was very sad. He had D.T., and all that sort of thing.'

'And where was she?'

'At Jericho, for anything that I know.'

'Will you find out?' Then Mr Joseph Green thought for a moment of his capabilities in that line, and having made an engagement to dine with his friend at his club on the evening before Will left London, said at last that he thought he could find out through certain mutual friends who had known the Berdmores in the old days. 'But the fact is,' said the lawyer, 'that the world is so good-natured instead of being ill-natured, as people say that it always forgets those who want to be forgotten.'

We must now go back for a few moments to Captain Aylmer and his affairs. Having given a full month to the consideration of his position as regarded Miss Amedroz, he made up his mind to two things. In the first place, he would at once pay over to her the money which was to be hers as her aunt's legacy, and then he would renew his offer. To that latter determination he was guided by mixed motives by motives which, when joined together, rarely fail to be operative. His conscience told him that he ought to do so and then the fact of her having, as it were, taken herself away from him, made him again wish to possess her. And there was another cause which, perhaps, operated in the same direction. He had consulted his mother, and she had strongly advised him to have nothing further to do with Miss Amedroz. Lady Aylmer abused her dead sister heartily for having interfered in the matter, and endeavoured to prove to her son that he was released from his promise by having in fact performed it. But on this point his conscience interfered backed by his wishes and he made his resolve as has been above stated. On leaving Mr Green's chambers he went to his own lodgings, and wrote his letter as follows:

'Mount Street, December, 186

Dearest Clara,

When you parted from me at Perivale you said certain things about our engagement which I have come to understand better since then, than I did at the time. It escaped from me that my dear aunt and I had had some conversation about you, and that I had told her what was my intention. Something was said about a promise, and I think it was that word which made you unhappy. At such a time as that when I and my aunt were talking together, and when she was, as she well knew, on her deathbed, things will be said which would not be thought of in other circumstances. I can only assure you now, that the promise I gave her was a promise to do that which I had previously resolved

upon doing. If you can believe what I say on this head, that ought to be sufficient to remove the feeling which induced you to break our engagement.

Page 116

I now write to renew my offer to you, and to assure you that I do so with my whole heart. You will forgive me if I tell you that I cannot fail to remember, and always to bear in my mind, the sweet assurances which you gave me of your regard for myself. As I do not know that anything has occurred to alter your opinion of me, I write this letter in strong hope that it may be successful. I believe that your fear was in respect to my affection for you, not as to yours for me. If this was so, I can assure you that there is no necessity for such fear.

I need not tell you that I shall expect your answer with great anxiety.

Yours most affectionately,

F. F. Aylmer.

P.S. I have today caused to be bought in your name Bank Stock to the amount of fifteen hundred pounds, the amount of the legacy coming to you from my aunt.'

This letter, and that from Mr Green respecting the money, both reached Clara on the same morning. Now, having learned so much as to the position of affairs at Belton Castle, we may return to Will and his dinner engagement with Mr Joseph Green.

'And what have you heard about Mrs Berdmore?' Belton asked, almost as soon as the two men were together.

'I wish I knew why you want to know.'

'I don't want to do anybody any harm.'

'Do you want to do anybody any good?'

'Any good! I can't say that I want to do any particular good. The truth is, I think I know where she is, and that she is living under a false name.'

'Then you know more of her than I do.'

'I don't know anything. I'm only in doubt. But as the lady I mean lives near to friends of mine, I should like to know.'

'That you may expose her?'

'No by no means. But I hate the idea of deceit. The truth is, that any one living anywhere under a false name should be exposed or should be made to assume their right name.'

'I find that Mrs Berdmore left her husband some years before he died. There was nothing in that to create wonder, for he was a man with whom a woman could hardly continue to live. But I fear she left him under protection that was injurious to her character.

'And how long ago is that?'

'I do not know. Some years before his death.'

'And how long ago did he die?'

'About three years since. My informant tells me that he believes she has since married. Now you know all that I know.' And Belton also knew that Mrs Askerton of the cottage was the Miss Vigo with whom he had been acquainted in earlier years.

After that they dined comfortably, and nothing passed between them which need be recorded as essential to our story till the time came for them to part. Then, when they were both standing at the club door, the lawyer said a word or two which is essential. 'So you're off tomorrow?' said he.

'Yes; I shall go down by the express.'

Page 117

'I wish you a pleasant journey. By the by, I ought to tell you that you won't have any trouble in being either father or mother, or uncle or aunt to Miss Amedroz.'

'Why not?'

'I suppose it's no secret.'

'What's no secret?'

'She's going to be married to Captain Aylmer.'

Then Will Belton started so violently, and assumed on a sudden so manifest a look of anger, that his tale was at once told to Mr Green. 'Who says so?' he asked. 'I don't believe it.'

'I'm afraid it's true all the same, Will.'

'Who says it?'

'Captain Aylmer was with me today, and he told me. He ought to be good authority on such a subject.'

'He told you that he was going to marry Clara Amedroz?'

'Yes, indeed.'

'And what made him come to you, to tell you?'

'There was a question about some money which he had paid to her, and which, under existing circumstances, he thought it as well that he should not pay. Matters of that kind are often necessarily told to lawyers. But I should not have told it to you, Will, if I had not thought that it was good news.'

'It is not good news,' said Belton moodily.

'At any rate, old fellow, my telling it will do no harm. You must have learned it soon.' And he put his hand kindly almost tenderly, on the other's arm. But Belton moved himself away angrily. The wound had been so lately inflicted that he could not as yet forgive the hand that had seemed to strike him.

'I'm sorry that it should be so bad with you, Will.'

'What do you mean by bad? It is not bad with me. it is very well with me. Keep your pity for those who want it.' Then he walked off by himself across the broad street before the club door, leaving his friend without a word of farewell, and made his way up into St.

James's Square, choosing, as was evident to Mr Green, the first street that would take him out of sight.

'He's hit, and hit hard,' said the lawyer, looking after him. 'Poor fellow! I might have guessed it from what he said. I never knew of his caring for any woman before.' Then Mr Green put on his gloves and went away home.

We will now follow Will Belton into St. James's Square, and we shall follow a very unhappy gentleman. Doubtless he had hitherto known and appreciated the fact that Miss Amedroz had refused his offer, and had often declared, both to himself and to his sister, his conviction that that refusal would never be reversed. But, in spite of that expressed conviction, he had lived on hope. Till she belonged to another man she might yet be his. He might win her at last by perseverance. At any rate he had it in his power to work towards the desired end, and might find solace even in that working. And the misery of his loss would not be so great to him as he found himself forced to confess to himself before he had completed his wanderings on this night in not having

Page 118

her for his own, as it would be in knowing that she had given herself to another man. He had often told himself that of course she would become the wife of some man, but he had never yet realized to himself what it would be to know that she was the wife of any one specified rival. He had been sad enough on that moonlight night in the avenue at Plaistow when he had leaned against the tree, striking his hands together as he thought of his great want; but his unhappiness then had been as nothing to his agony now. Now it was all over and he knew the man who had supplanted him.

How he hated him! With what an unchristian spirit did he regard that worthy captain as he walked across St. James's Square, across Jermyn Street, across Piccadilly, and up Bond Street, not knowing whither he was going. He thought with an intense regret of the laws of modern society which forbid duelling forgetting altogether that even had the old law prevailed, the conduct of the man whom he so hated would have afforded him no casus belli. But he was too far gone in misery and animosity to be capable of any reason on the matter. Captain Aylmer had interfered with his dearest wishes, and during this now passing hour he would willingly have crucified Captain Aylmer had it been within his power to do so. Till he had gone beyond Oxford Street, and had wandered away into the far distance of Portman Square and Baker Street, he had not begun to think of any interest which Clara Amedroz might have in the matter on which his thoughts were employed. He was sojourning at an hotel in Bond Street, and had gone thitherwards more by habit than by thought; but he had passed the door of his inn, feeling it to be impossible to render himself up to his bed in his present disturbed mood. As he was passing the house in Bond Street he had been intent on the destruction of Captain Aylmer and had almost determined that if Captain Aylmer could not be made to vanish into eternity, he must make up his mind to go that road himself.

It was out of the question that he should go down to Belton. As to that he had come to a very decided opinion by the time that he had crossed Oxford Street. Go down to see her, when she had treated him after this fashion! No, indeed. She wanted no brother now. She had chosen to trust herself to this other man, and he, Will Belton, would not interfere further in her affairs. Then he drew upon his imagination for a picture of the future, in which he portrayed Captain Aylmer as a ruined man, who would probably desert his wife, and make himself generally odious to all his acquaintance a picture as to the realization of which I am bound to say that Captain Aylmer's antecedents gave no probability. But it was the looking at this self-drawn picture which first softened the artist's heart towards the victim whom he had immolated on his imaginary canvas. When Clara should be ruined by the baseness and villainy and general scampishness of this man

Page 119

whom she was going to marry to whom she was about to be weak enough and fool enough to trust herself then he would interpose and be her brother once again a broken-hearted brother no doubt, but a brother efficacious to keep the wolf from the door of this poor woman and her children. Then, as he thus created Captain Aylmer's embryo family of unprovided orphans for after a while he killed the captain, making him to die some death that was very disgraceful, but not very distinct even to his own imagination as he thought of those coming pledges of a love which was to him so bitter, he stormed about the streets, performing antics of which no one would have believed him capable who had known him as the thriving Mr William Belton, of Plaistow Hall, among the fens of Norfolk.

But the character of a man is not to be judged from the pictures which he may draw or from the antics which he may play in his solitary hours. Those who act generally with the most consummate wisdom in the affairs of the world, often meditate very silly doings before their wiser resolutions form themselves. I beg, therefore, that Mr Belton may be regarded and criticized in accordance with his conduct on the following morning when his midnight rambles, which finally took him even beyond the New Road, had been followed by a few tranquil hours in his Bond Street bedroom for at last he did bring himself to return thither and put himself to bed after the usual fashion. He put himself to bed in a spirit somewhat tranquillized by the exercise of the night, and at last wept himself to sleep like a baby.

But he was by no means like a baby when he took him early on the following morning to the Paddington Station, and booked himself manfully for Taunton. He had had time to recognize the fact that he had no ground of quarrel with his cousin because she had preferred another man to him. This had happened to him as he was recrossing the New Road about two o'clock, and was beginning to find that his legs were weary under him. And, indeed, he had recognized one or two things before he had gone to sleep with his tears dripping on to his pillow. In the first place, he had ill-treated Joe Green, and had made a fool of himself in his friend's presence. As Joe Green was a sensible, kind-hearted fellow, this did not much signify but not on that account did he omit to tell himself of his own fault. Then he discovered that it would ill become him to break his word to Mr Amedroz and to his daughter, and to do so without a word of excuse, because Clara had exercised a right which was indisputably her own. He had undertaken certain work at Belton which required his presence, and he would go down and do his work as though nothing had occurred to disturb him. To remain away because of this misfortune would be to show the white feather. It would be unmanly. All this he recognized as the pictures he had painted faded away from their canvases. As to Captain Aylmer himself, he hoped that he might never be called

Page 120

upon to meet him. He still hoped that, even as he was resolutely cramming his shirts into his portmanteau before he began his journey. His Cousin Clara he thought he could meet, and tender to her some expression of good wishes as to her future life, without giving way under the effort. And to the old squire he could endeavour to make himself pleasant, speaking of the relief from all trouble which this marriage with Captain Aylmer would afford for now, in his cooler moments, he could perceive that Captain Aylmer was not a man apt to ruin himself, or his wife and children. But to Captain Aylmer himself, he could not bring himself to say pleasant things or to express pleasant wishes. She who was to be Captain Aylmer's wife, who loved him, would of course have told him what had occurred up among the rocks in Belton Park; and if that was so, any meeting between Will and Captain Aylmer would be death to the former.

Thinking of all this he journeyed down to Taunton, and thinking of all this he made his way from Taunton across to Belton Park.

CHAPTER XV

EVIL WORDS

Clara Amedroz had received her two letters together that, namely, from the attorney, and that from Captain Aylmer and the result of those letters is already known. She accepted her lover's renewed offer of marriage, acknowledging the force of his logic, and putting faith in the strength of his assurances. This she did without seeking advice from any one. Who was there from whom she could seek advice on such a matter as that who, at least, was there at Belton? That her father would, as a matter of course, bid her accept Captain Aylmer, was, she thought, certain; and she knew well that Mrs Askerton would do the same. She asked no counsel from any one, but taking the two letters up to her own room, sat down to consider them. That which referred to her aunt's money, together with the postscript in Captain Aylmer's letter on the same subject, would be of the least possible moment if she could bring herself to give a favourable answer to the other proposition. But should she not be able to do this should she hesitate as to doing so at once then she must write to the lawyer in very strong terms, refusing altogether to have anything to do with the money. And in such a case as this, not a word could she say to her father either on one subject or on the other.

But why should she not accept the offer made to her? Captain Aylmer declared that he had determined to ask her to be his wife before he had made any promise to Mrs Winterfield. If this were in truth so, then the very ground on which she had separated herself from him would be removed. Why should she hesitate in acknowledging to herself that she loved the man and believed him to be true? So she sat herself down

and answered both the letters writing to the lawyer first. To him she said that nothing need be done about the money or the interest till he should

Page 121

see or hear from Captain Aylmer again. Then to Captain Aylmer she wrote very shortly, but very openly with the same ill-judged candour which her spoken words to him had displayed. Of course she would be his; his without hesitation, now that she knew that he expressed his own wishes, and not merely those of his aunt. 'As to the money,' she said, 'it would be simply nonsense now for us to have any talk of money. It is yours in any way, and you had better manage about it as you please. I have written an ambiguous letter to Mr Green, which will simply plague him, and which you may go and see if you like.' Then she added her postscript, in which she said that she should now at once tell her father, as the news would remove from his mind all solicitude as to her future position. That Captain Aylmer did go to Mr Green we already know, and we know also that he told Mr Green of his intended marriage.

Nothing was said by Captain Aylmer as to any proposed period for their marriage; but that was only natural. It was not probable that any man would name a day till he knew whether or not he was accepted. Indeed, Clara, on thinking over the whole affair, was now disposed to find fault rather with herself than with her lover, and forgetting his coldness and formality at Perivale, remembered only the fact of his offer to her, and his assurance now received that he had intended to make it before the scene which had taken place between him and his aunt. She did find fault with herself, telling herself that she had quarrelled with him without sufficient cause and the eager loving candour of her letter to him was attributable to those self-accusations.

'Papa,' she said, after the postman had gone away from Belton, so that there might be no possibility of any recall of her letter, 'I have something to tell you which I hope will give you pleasure.'

'It isn't often that I hear anything of that kind,' said he.

'But I think that this will give you pleasure. I do indeed. I am going to be married.'

'Going to what?'

'Going to be married, papa. That is, if I have your leave. Of course any offer of that kind that I have accepted is subject to your approval.'

'And I have been told nothing about it!'

'It began at Perivale, and I could not tell you then. You do not ask me who is to be my husband.'

'It is not Will Belton?'

'Poor Will! No; it is not Will. It is Frederic Aylmer. I think you would prefer him as a son-in-law even to my Cousin Will.'

'No I shouldn't. Why should I prefer a man whom I don't even know, who lives in London, and who will take you away, so that I shall never see you again?'

'Dear papa don't speak of it in that way. I thought you would be glad to know that I was to be so so so happy!'

'But why is it to be done this way of a sudden? Why didn't he come to me? Will came to me the very first thing.'

Page 122

'He couldn't come all the way to Belton very well particularly as he does not know you.'

'Will came here.'

'Oh, papa, don't make difficulties. Of course that was different. He was here when he first thought of it. And even then he didn't think very much about it.'

'He did all that he could, I suppose?'

'Well yes. I don't know how that might be.' And Clara almost laughed as she felt the difficulties into which she was creeping. 'Dear Will. He is much better as a cousin than as a husband.'

'I don't see that at all. Captain Aylmer will not have the Belton estate or Plaistow Hall.'

'Surely he is well enough off to take care of a wife. He will have the whole of the Perivale estate, you know.'

'I don't know anything about it. According to my ideas of what is proper he should have spoken to me first. If he could not come he might have written. No doubt my ideas may be old-fashioned, and I'm told that Captain Aylmer is a fashionable young man.'

'Indeed he is not, papa. He is a hard-working Member of Parliament.'

'I don't know that he is any better for that. People seem to think that if a man is a Member of Parliament he may do what he pleases. There is Thompson, the Member for Minehead, who has bought some sort of place out by the moors. I never saw so vulgar, pigheaded a fellow in my life. Being in Parliament used to be something when I was young, but it won't make a man a gentleman now-a-days. It seems to me that none but brewers, and tallow-chandlers, and lawyers go into Parliament now. Will Belton could go into Parliament if he pleased, but he knows better than that. He won't make himself such a fool.'

This was not comfortable to Clara; but she knew her father, and allowed him to go on with his grumbling. He would come round by degrees, and he would appreciate, if he could not be induced to acknowledge, the wisdom of the step she was about to take.

'When is it to be?' he asked.

'Nothing of that kind has ever been mentioned, papa.'

'It had better be soon, if I am to have anything to do with it.' Now it was certainly the case that the old man was very ill. He had not been out of the house since Clara had returned home; and, though he was always grumbling about his food, he could hardly

be induced to eat anything when the morsels for which he expressed a wish were got for him.

'Of course you will be consulted, papa, before anything is settled.'

'I don't want to be in anybody's way, my dear.'

'And may I tell Frederic that you have given your consent?

'What's the use of my consenting or not consenting? If you had been anxious to oblige me you would have taken your Cousin Will.'

'Oh, papa, how could I accept a man I didn't love?'

'You seemed to me to be very fond of him at first; and I must say, I thought he was ill-treated.'

Page 123

'Papa, papa; do not say such things as that to me!'

'What am I to do? You tell me, and I can't altogether hold my tongue.' Then there was a pause. 'Well, my dear, as for my consent, of course you may have it if it's worth anything. I don't know that I ever heard anything bad about Captain Aylmer.'

He had heard nothing bad about Captain Aylmer! Clara, as she left her father, felt that this was very grievous. Whatever cause she might have had for discontent with her lover, she could not but be aware that he was a man whom any father might be proud to welcome as a suitor for his daughter. He was a man as to whom no ill tales had ever been told who had never been known to do anything wrong or imprudent; who had always been more than respectable, and as to whose worldly position no exception could be taken. She had been entitled to expect her father's warmest congratulations, and her tidings had been received as though she had proposed to give her hand to one whose character and position only just made it not imperative on the father to withhold his consent! All this was hard, and feeling it to be so, she went upstairs, all alone, and cried bitterly as she thought of it.

On the next day she went down to the cottage and saw Mrs Askerton. She went there with the express purpose of telling her friend of her engagement desirous of obtaining in that quarter the sympathy which her father declined to give her. Had her communication to him been accepted in a different spirit, she might probably have kept her secret from Mrs Askerton till something further had been fixed about her marriage; but she was in want of a few kind words, and pined for some of that encouragement which ladies in love usually wish to receive, at any rate from some one chosen friend. But when she found herself alone with Mrs Askerton she hardly knew how to tell her news; and at first could not tell it at all, as that lady was eager in speaking on another subject.

'When do you expect your cousin?' Mrs Askerton asked, almost as soon as Clara was seated.

'The day after tomorrow.'

'And he is in London now?'

'He may be. I dare say he is. But I don't know anything about it.'

'I can tell you then that he is. Colonel Askerton has heard of his being there.'

'You seem to speak of it as though there were some offence in it. Is there any reason why he should not be in London if he pleases?'

'None in the least. I would much rather that he should be there than here.'

'Why so? Will his coming hurt you?'

'I don't like him. I don't like him at all and now you know the truth. You believe in him I don't. You think him to be a fine fellow and a gentleman, whereas I don't think him to be either.'

'Mrs Askerton!'

'This is strong language, I know.'

'Very strong language.'

Page 124

'Yes, my dear; but the truth is, Clara, that you and I, living together here this sort of hermit's life, each seeing so much of the other and seeing nothing of anybody else, must either be real friends, telling each other what we think, or we must be nothing. We can't go on with the ordinary make-believes of society, saying little civil speeches and not going beyond them. Therefore I have made up my mind to tell you in plain language that I don't like your cousin, and don't believe in him.'

'I don't know what you mean by believing in a man.'

'I believe in you. Sometimes I have thought that you believe in me, and sometimes I have feared that you do not. I think that you are good, and honest, and true; and therefore I like to see your face and hear your voice though it is not often that you say very pleasant things to me.'

'Do I say unpleasant things?'

'I am not going to quarrel with you not if I can help it. What business has Mr Belton to go about London making inquiries as to me? What have I done to him, that he should honour me so far?'

'Has he made inquiries?'

'Yes; he has. If you have been contented with me as I am if you are satisfied, why should he want to learn more? If you have any question to ask me I will answer it. But what right can he have to be asking questions among strangers?'

Clara had no question to ask, and yet she could not say that she was satisfied. She would have been better satisfied to have known more of Mrs Askerton, but yet she had never condescended to make inquiries about her friend. But her curiosity was now greatly raised; and, indeed, Mrs Askerton's manner was so strange, her vehemence so unusual, and her eagerness to rush into dangerous subjects so unlike her usual tranquillity in conversation, that Clara did not know how to answer her.

'I know nothing of any questioning,' she said.

'I am sure you don't. Had I thought you did, much as I love you valuable as your society is to me down in this desert I would never speak to you again. But remember if you want to ask any questions, and will ask them of me I will answer them, and will not be angry.'

'But I don't want to ask any questions.'

'You may some day; and then you can remember what I say.'

'And am I to understand that you are determined to quarrel with my Cousin Will?'



'Quarrel with him! I don't suppose that I shall see him. After what I have said it is not probable that you will bring him here, and the servant will have orders to say that I am not at home if he should call. Luckily he and Colonel Askerton did not meet when he was here before.'

'This is the most strange thing I ever heard in my life.'

'You will understand it better, my dear, when he makes his communication to you.'

'What communication?'

'You'll find that he'll have a communication to make. He has been so diligent and so sharp that he'll have a great deal to tell, I do not doubt. Only, remember, Clara, that if anything that he tells you makes any difference in your feelings towards me, I shall expect you to come to me and say so openly. If he makes his statement, let me make mine. I have a right to ask for that, after what I have promised.'

Page 125

'You may be sure that I will.'

'I want nothing more. I have no distrust in you none in the least. I tell you that I believe in you. If you will do that, and will keep Mr William Belton out of my way during his visit to these parts, I shall be satisfied.' For some time past Mrs Askerton had been walking about the room, but, as she now finished speaking, she sat herself down as though the subject was fully discussed and completed. For a minute or two she made an effort to resume her usual tranquillity of manner, and in doing so attempted to smile, as though ridiculing her own energy. 'I knew I should make a fool of myself when you came,' she said; and now I have done it.'

'I don't think you have been a fool at all, but you may have been mistaken.'

'Very well, my dear, we shall see. It's very odd what a dislike I took to that man the first time I saw him.'

'And I am so fond of him!'

'Yes; he has cozened you as he has your father. I am only glad that he did not succeed in cozening you further than he did. But I ought to have known you better than to suppose you could give your heart of hearts to one who is'

'Do not abuse him any more.'

'Who is so very unlike the sort of people with whom you have lived. I may, at any rate, say that.'

'I don't know that. I haven't lived much with any one yet except papa, and my aunt, and you.'

'But you know a gentleman when you see him.'

'Come, Mrs Askerton, I will not stand this. I thought you had done with the subject, and now you begin again. I had come here on purpose to tell you something of real importance that is, to me; but I must go away without telling you, unless you will give over abusing my cousin.'

'I will not say a word more about him not at present.'

'I feel so sure that you are mistaken, you know.'

'Very well and I feel sure that you are mistaken. We will leave it so, and go to this matter of importance.' But Clara felt it to be very difficult to tell her tidings after such a conversation as that which had just occurred. When she had entered the room her mind had been tuned to the subject, and she could have found fitting words without



much difficulty to herself; but now her thoughts had been scattered and her feelings hurt, and she did not know how to bring herself back to the subject of her engagement. She paused, therefore, and sat with a doubtful, hesitating look, meditating some mode of escape. 'I am all ears,' said Mrs Askerton; and Clara thought that she discovered something of ridicule or of sarcasm in the tone of her friend's voice.

'I believe I'll put it off till another day,' she said.

'Why so? You don't think that anything really important to you will not be important to me also?'

'I'm sure of that, but somehow'

'You mean to say that I have ruffled you?'

'Well perhaps; a little.'

Page 126

'Then be unruffled again, like my own dear, honest Clara. I have been ruffled too, but I'll be as tranquil now as a drawing-room cat.' Then Mrs Askerton got up from her chair, and seated herself by Clara's side on the sofa. 'Come; you can't go till you've told me; and if you hesitate, I shall think that you mean to quarrel With me.'

'I'll come to you tomorrow.'

'No, no; you shall tell me today. All tomorrow you'll be preparing for your cousin.'

'What nonsense!'

'Or else you'll come prepared to vindicate him, and then we shan't get on any further. Tell me what it is today. You can't leave me in curiosity after what you have said.'

'You've heard of Captain Aylmer, I think.'

'Of course I've heard of him.'

'But you've never seen him?'

'You know I never have.'

'I told you that he was at Perivale when Mrs Winterfield died.'

'And now he has proposed, and you are going to accept him? That will indeed be important. Is it so? say. But don't I know it is so? Why don't you speak?'

'If you know it, why need I speak?'

'But it is so? Oh, Clara, I am so glad. I congratulate you with all my heart with all my heart. My dearest, dearest Clara! What a happy arrangement! What a success! It is just as it should be. Dear, good man! to come forward in that sensible way, and put an end to all the little family difficulties!'

'I don't know so much about success. Who is it that is successful?'

'You, to be sure.'

'Then by the same measurement he must be unsuccessful.'

'Don't be a fool, Clara.'

'Of course I have been successful if I've got a man that I can love as my husband.'

'Now, my dear, don't be a fool. Of course all that is between you and him, and I don't in the least doubt that it is all as it should be. If Captain Aylmer had been the elder brother

instead of the younger, and had all the Aylmer estates instead of the Perivale property, I know you would not accept him if you did not like him.'

'I hope not.'

'I am sure you would not. But when a girl with nothing a year has managed to love a man with two or three thousand a year, and has managed to be loved by him in return instead of going through the same process with the curate or village doctor it is a success, and her friend will always think so. And when a girl marries a gentleman, and a Member of Parliament, instead of well, I'm not going to say anything personal her friends will congratulate her upon his position. It may be very wicked, and mercenary, and all that; but it's the way of the world.'

'I hate hearing about the world.'

'Yes, my dear; all proper young ladies like you do hate it. But I observe that such girls as you never offend its prejudices. You can't but know that you would have done a wicked as well as a foolish thing to marry a man without an adequate income.'



Page 127

'But I needn't marry at all.'

'And what would you live on then? Come Clara, we needn't quarrel about that. I've no doubt he's charming, and beautiful, and'

'He isn't beautiful at all; and as for charming'

'He has charmed you at any rate.'

'He has made me believe that I can trust him without doubt, and love him without fear.'

'An excellent man! And the income will be an additional comfort; you'll allow that?'

'I'll allow nothing.'

'And when is it to be?'

'Oh perhaps in six or seven years.'

'Clara!'

'Perhaps sooner; but there's been no word said about time.'

'Is not Mr Amedroz delighted?'

'Not a bit. He quite scolded me when I told him.'

'Why what did he want?'

'You know papa.'

'I know he scolds at everything, but I shouldn't have thought he would have scolded at that. And when does he come here?'

'Who come here?'

'Captain Aylmer.'

'I don't know that he is coming at all.'

'He must come to be married.'

'All that is in the clouds as yet. I did not like to tell you, but you mustn't suppose that because I've told you, everything is settled. Nothing is settled.'

'Nothing except the one thing?'

‘Nothing else.’

It was more than an hour after that before Clara went away, and when she did so she was surprised to find that she was followed out of the house by Colonel Askerton. It was quite dusk at this time, the days being just at their shortest, and Colonel Askerton, according to his custom, would have been riding, or returning from his ride. Clara had been over two hours at the cottage, and had been aware when she reached it that he had not as yet gone out. It appeared now that he had not ridden at all, and, as she remembered to have seen his horse led before the window, it at once occurred to her that he had remained at home with the view of catching her as she went away. He came up to her just as she was passing through the gate, and offered her his right hand as he raised his hat with his left. It sometimes happens to all of us in life that we become acquainted with persons intimately that is, with an assumed intimacy whom in truth we do not know at all. We meet such persons frequently, often eating and drinking in their company, being familiar with their appearance, and well-informed generally as to their concerns; but we never find ourselves holding special conversations with them, or in any way fitting the modes of our life to the modes of their life. Accident has brought us together, and in one sense they are our friends. We should probably do any little kindness for them, or expect the same from them; but there is nothing in common between us, and there is generally a mutual though unexpressed agreement that there shall be nothing in common. Miss Amedroz was intimately acquainted with Colonel Askerton after this fashion. She saw him very frequently, and his name was often on her tongue; but she rarely, if ever, conversed with him, and knew of his habits only from his wife's words respecting them. When, therefore, he followed her through the garden gate into the park, she was driven to suppose that he had something special to say to her.

Page 128

'I'm afraid you'll have a dark walk, Miss Amedroz,' he said.

'It's only just across the park, and I know the way so well.'

'Yes of course. I saw you coming out, and as I want to say a word or two, I have ventured to follow you. When Mr Belton was down here I did not have the pleasure of meeting him.'

'I remember that you missed each other.'

'Yes, we did. I understand from my wife that he will be here again in a day or two.'

'He will be with us the day after tomorrow.'

'I hope you will excuse my saying that it will be very desirable that we should miss each other again.' Clara felt that her face became red with anger as she listened to Colonel Askerton's words. He spoke slowly, as was his custom, and without any of that violence of expression which his wife had used; but on that very account there was more, if possible, of meaning in his words than in hers. William Belton was her cousin, and such a speech as that which Colonel Askerton had made, spoken with deliberation and unaccompanied by any previous explanation, seemed to her almost to amount to insult. But as she did not know how to answer him at the spur of the moment, she remained silent. Then he continued, 'You may be sure, Miss Amedroz, that I should not make so strange a request to you if I had not good reason for making it.'

'I think it a very strange request.'

'And nothing but a strong conviction of its propriety on my part would have induced me to make it.'

'If you do not want to see my cousin, why cannot you avoid him without saying anything to me on the subject

'Because you would not then have understood as thoroughly as I wish you to do why I kept out of his way. For my wife's sake and for yours, if you will allow me to say so I do not wish to come to any open quarrel with him; but if we met, a quarrel would, I think, be inevitable. Mary has probably explained to you the nature of his offence against us?'

'Mrs Askerton has told me something as to which I am quite sure that she is mistaken.'

'I will say nothing about that, as I have no wish at all to set you against your cousin. I will bid you good-night now as you are close at home.' Then he turned round and left her.



Clara, as she thought of all this, could not but call to mind her cousin's remembrances about Miss Vigo and Mr Berdmore. What if he made some inquiry as to the correctness of his old recollections? Nothing, she thought, could be more natural. And then she reflected that, in the ordinary way of the world, persons feel none of that violent objection to the asking of questions about their antecedents which was now evinced by both Colonel and Mrs Askerton. But of one thing she felt quite assured that her cousin, Will Belton, would make no inquiry which he ought not to make; and would make no improper use of any information which he might obtain.

Page 129

CHAPTER XVI

THE HEIR'S SECOND VISIT TO BELTON

Clara began to doubt whether any possible arrangement of the circumstances of her life could be regarded as fortunate. She was very fond, in a different degree and after a different fashion, of both Captain Aylmer and Mr Belton. As regarded both, her position was now exactly what she herself would have wished. The man that she loved was betrothed to her, and the other man, whom she loved indeed also as a brother, was coming to her in that guise with the understanding that that was to be his position. And yet everything was going wrong! Her father, though he did not actually say anything against Captain Aylmer, showed by a hundred little signs, of which he was a skilful master, that the Aylmer alliance was distasteful to him, and that he thought himself to be aggrieved in that his daughter would not marry her cousin; whereas, over at the cottage, there was a still more bitter feeling against Mr Belton a feeling so bitter, that it almost induced Clara to wish that her cousin was not coming to them.

But the cousin did come, and was driven up to the door in the gig from Taunton, just as had been the case on his previous visit. Then, however, he had come in the full daylight, and the hay-carts had been about, and all the prettiness and warmth of summer had been there; now it was mid-winter, and there had been some slight beginnings of snow, and the wind was moaning about the old tower, and the outside of the house looked very unpleasant from the hall-door. As it had become dusk in the afternoon, the old squire had been very careful in his orders as to preparations for Will's comfort as though Clara would have forgotten all those things in the preoccupation of her mind, caused by the constancy of her thoughts towards Will's rival. He even went so far as to creep across the upstairs landing-place to see that the fire was lighted in Will's room, this being the first time that he had left his chamber for many days and had given special orders as to the food which was to be prepared for Will's dinner in a very different spirit from that which had dictated some former orders when Will was about to make his first visit, and when his coming had been regarded by the old man as a heartless, indelicate, and almost hostile proceeding.

'I wish I could go down to receive him,' said Mr Amedroz, plaintively. 'I hope he won't take it amiss.'

'You may be sure he won't do that.'

'Perhaps I can tomorrow.'

'Dear papa, you had better not think of it till the weather is milder.'

'Milder! how is it to get milder at this time of the year?'

‘Of course he’ll come up to you, papa.’

‘He’s very good. I know he’s very good. No one also would do as much.’

Clara understood accurately what all this meant. Of course she was glad that her father should feel so kindly towards her cousin, and think so much of his coming; but every word said by the old man in praise of Will Belton implied an equal amount of dispraise as regarded Captain Aylmer, and contained a reproach against his daughter for having refused the former and accepted the latter.

Page 130

Clara was in the hall when Belton arrived, and received him as he entered, enveloped in his damp great-coats. 'It is so good of you to come in such weather,' she said.

'Nice seasonable weather, I call it,' he said. It was the same comfortable, hearty, satisfactory voice which had done so much towards making his way for him on his first arrival at Belton Castle. The voices to which Clara was most accustomed were querulous as though the world had been found by the owners of them to be but a bad place. But Belton's voice seemed to speak of cheery days and happy friends, and a general state of things which made life worth having. Nevertheless, forty-eight hours had not yet passed over his head since he was walking about London in such misery that he had almost cursed the hour in which he was born. His misery still remained with him, as black now as it had been then; and yet his voice was cheery. The sick birds, we are told, creep into holes, that they may die alone and unnoticed; and the wounded beasts hide themselves that their grief may not be seen of their fellows. A man has the same instinct to conceal the weakness of his sufferings; but, if he be a man, he hides it in his own heart, keeping it for solitude and the watches of the night, while to the outer world he carries a face on which his care has made no marks.

'You will be sorry to hear that papa is too ill to come downstairs.'

'Is he, indeed? I am truly sorry. I had heard he was ill; but did not know he was so ill as that.'

'Perhaps he fancies himself weaker than he is.'

'We must try and cure him of that. I can see him, I hope?'

'Oh dear, yes. He is most anxious for you to go to him. As soon as ever you can come upstairs I will take you.' He had already stripped himself of his wrappings, and declaring himself ready, at once followed Clara to the squire's room.

'I'm sorry, sir, to find you in this way,' he said.

'I'm very poorly, Will very,' said the squire, putting out his hand as though he were barely able to lift it above his knee. Now it certainly was the fact that half an hour before he had been walking across the passage.

'We must see if we can't soon make you better among us,' said Will.

The squire shook his head with a slow, melancholy movement, not raising his eyes from the ground. 'I don't think you'll ever see me much better, Will,' he said. And yet half an hour since he had been talking of being down in the dining-room on the next day. 'I shan't trouble you much longer,' said the squire. 'You'll soon have it all without paying rent for it.'

This was very unpleasant, and almost frustrated Belton's attempts to be cheery. But he persevered nevertheless. 'It'll be a long time yet before that day comes, sir.'

'Ah; that's easily said. But never mind. Why should I want to remain when I shall have once seen her properly settled. I've nothing to live for except that she may have a home.'

Page 131

On this subject it was quite impossible that Belton should say anything. Clara was standing by him, and she, as he knew, was engaged to Captain Aylmer. So circumstanced, what could he say as to Clara's settlement in life? That something should be said between him and the old man, and something also between him and Clara, was a matter of course; but it was quite out of the question that he should discuss Clara's prospects in life in presence of them both together.

'Papa's illness makes him a little melancholy,' said Clara.

'Of course of course. It always does,' said Will.

'I think he will be better when the weather becomes milder,' said Clara.

'I suppose I may be allowed to know how I feel myself,' said the squire. 'But don't keep Will up here when he wants his dinner. There; that'll do. You'd better leave me now.' Then Will went out to his old room, and a quarter of an hour afterwards he found himself seated with Clara at the dinner-table; and a quarter of an hour after that the dinner was over, and they had both drawn their chairs to the fire.

Neither of them knew how to begin with the other. Clara was under no obligation to declare her engagement to her cousin, but yet she felt that it would be unhandsome in her not to do so. Had Will never made the mistake of wanting to marry her himself, she would have done so as a matter of course. Had she supposed him to cherish any intention of renewing that mistake she would have felt herself bound to tell him so that he might save himself from unnecessary pain. But she gave him credit for no such intention, and yet she could not but remember that scene among the rocks. And then was she, or was she not, to say anything to him about the Askertons? With him also the difficulty was as great. He did not in truth believe that the tidings which he had heard from his friend the lawyer required corroboration; but yet it was necessary that he should know from herself that she had disposed of her hand and it was necessary also that he should say some word to her as to their future standing and friendship.

'You must be very anxious to see how your farm goes on,' said she.

He had not thought much of his agricultural venture at Belton for the last three or four days, and would hardly have been vexed had he been told that every head of cattle about the place had died of the murrain. Some general idea of the expediency of going on with a thing which he had commenced still actuated him; but it was the principle involved, and not the speculation itself, which interested him. But he could not explain all this, and he therefore was driven to some cold agreement with her. 'The farm! you mean the stock. Yes; I shall go and have a look at them early tomorrow. I suppose they're all alive.'

‘Pudge says that they are doing uncommonly well.’ Pudge was a leading man among the Belton labourers, whom Will had hired to look after his concerns.

Page 132

'That's all right. I dare say Pudge knows quite as much about it as I do.'

'But the master's eye is everything.'

'Pudge's eye is quite as good as mine; and probably much better, as he knows the country.'

'You used to say that it was everything for a man to look after his own interests.'

'And I do look after them. Pudge and I will go and have a look at every beast tomorrow, and I shall look very wise and pretend to know more about it than he does. In stock-farming the chief thing is not to have too many beasts. They used to say that half-stocking was whole profit, and. whole- stocking was half profit. If the animals have plenty to eat, and the rent isn't too high, they'll take care of. their owner.'

'But then there is so much illness.'

'I always insure.'

Clara perceived that the subject of the cattle didn't suit the present occasion. When he had before been at Belton. he had liked nothing so much as talking about the cattle-sheds, and the land, and the kind of animals which would suit the place; but now the novelty of the thing was gone and the farmer did not wish to talk of his farm. In her anxiety to find a topic which would not be painful, she went from the cattle to the cow. 'You can't think what a pet Bess has been with us. And she seems to think that she is privileged to go everywhere, and do anything.'

'I hope they have taken care that she has had winter food.'

'Winter food! Why Pudge, and all the Pudges, and all the family in the house, and all your cattle would have to wait, before Bessy would be allowed to miss a meal. Pudge always says, with his sententious shake of the head, that the young squire was very particular about Bessy.'

'Those Alderneys want a little care that's all.'

Bessy was. of no better service to Clara in her present difficulty than the less aristocratic herd of common cattle. There was a pause for a moment, and then she began again.

'How did you leave your sister, Will?'

'Much the same as usual. I think she has borne the first of the cold weather better than she did last year.'

'I do so wish that I knew her.'

‘Perhaps you will some day. But I don’t suppose that you ever will.’

‘Why not?’

‘It’s not likely that you’ll ever come to Plaistow now and Mary never leaves it except to go to my uncle’s.’

Clara instantly knew that he had heard of her engagement, though she could not imagine from what source he had heard it. There was something in the tone of his voice something especially in the expression of that word ‘now’, which told her that it must be so. ‘I should be so glad to go there if I could,’ she said, with that special hypocrisy which belongs to women, and is allowed to them; ‘but, of course, I cannot leave papa in his present state.’

‘And if you did leave him you would not go to Plaistow.’

Page 133

'Not unless you and Mary asked me.'

'And you wouldn't if we did. How could you?'

'What do you mean, Will? It seems as though you were almost savage to me.'

'Am I? Well I feel savage, but not to you.'

'Nor to any one, I hope, belonging to me.' She knew that it was all coming; that the whole subject of her future life must now be discussed; and she began to fear that the discussion might not be easy. But she did not know how to give it a direction. She feared that he would become angry, and yet she knew not why. He had accepted his own rejection tranquilly, and could hardly take it as an offence that she should now be engaged to Captain Aylmer.

'Mr Green has told me', said he, 'that you are going to be married.'

'How could Mr Green have known?'

'He did know at least I suppose he knew, for he told me.'

'How very odd.'

'I suppose it is true?' Clara did not make any immediate answer, and then he repeated the question. 'I suppose it is true?'

'It is true that I am engaged.'

'To Captain Aylmer?'

'Yes; to Captain Aylmer. You know that I had known him very long. I hope that you are not angry with me because I did not write and tell you. Strange as it may seem, seeing that you had heard it already, it is not a week yet since it was settled; and had I written to you, I could only have addressed my letter to you here.'

'I wasn't thinking about that. I didn't specially want you to write to me. What difference would it make?'

'But I should have felt that I owed it to your kindness and your regard for me.'

'My regard! What's the use of regard?'

'You are not going to quarrel with me, Will, because because because . If you had really been my brother, as you once said you would be, you could not but have approved of what I have done.'

'But I am not your brother.'

'Oh, Will; that sounds so cruel!'

'I am not your brother, and I have no right to approve or disapprove.'

'I will not say that I could make my engagement with Captain Aylmer dependent on your approval. It would not be fair to him to do so, and it would put me into a false position.'

'Have I asked you to make any such absurd sacrifice?'

'Listen to me, Will. I say that I could not do that. But, short of that, there is nothing I would not do to satisfy you. I think so much of your judgment and goodness, and so very much of your affection; I love you so dearly, that Oh, Will, say a kind word to me!'

'A kind word; yes, but what sort of kindness?'

'You must know that Captain Aylmer'

'Don't talk to me of Captain Aylmer. Have I said anything against him? Have I ventured to make any objection? Of course, I know his superiority to myself. I know that he is a man of the world, and that I am not; that he is educated, and that I am ignorant; that he has a position, and that I have none; that he has much to offer, and that I have nothing. Of course, I see the difference; but that does not make me comfortable.'

Page 134

'Will, I had learned to love him before I had ever seen you.'

'Why didn't you tell me so, that I might have known there was no hope, and have gone away utterly out of the kingdom? If it was all settled then, why didn't you tell me, and save me from breaking my heart with false hopes?'

'Nothing was settled then. I hardly knew my own mind; but yet I loved him. There; cannot you understand it? Have I not told you enough?'

'Yes, I understand it.'

'And do you blame me?'

He paused awhile before he answered her. 'No; I do not blame you. I suppose I must blame no one but myself. But you should bear with me. I was so happy, and now I am so wretched.'

There was nothing that she could say to comfort him. She had altogether mistaken the nature of the man's regard, and had even mistaken the very nature of the man. So much she now learned, and could tell herself that had she known him better she would either have prevented this second visit, or would have been careful that he should have learned the truth from herself before he came. Now she could only wait till he should again have got strength to hide his suffering under the veil of his own manliness.

'I have not a word to say against what you are doing,' he said at last; 'not a word. But you will understand what I mean when I tell you that it is not likely that you will come to Plaistow.'

'Some day, Will, when you have a wife of your own'

'Very well; but we won't talk about that at present, if you please. When I have, things will be different. In the meantime your course and mine will be separate. You, I suppose, will be with him in London, while I shall be at the devil as likely as not.'

'How can you speak to me in that way? Is that like being my brother?'

'I don't feel like being your brother. However, I beg your pardon, and now we will have done with it. Spilt milk can't be helped, and my milk pans have got themselves knocked over. That's all. Don't you think we ought to go up to your father again?'

On the following day Belton and Mr Amedroz discussed the same subject, but the conversation went off very quietly. Will was determined not to exhibit his weakness before the father as he had done before the daughter. When the squire, with a maundering voice, drawled out some expression of regret that his daughter's choice had not fallen in another place, Will was able to say that bygones must be bygones. He

regretted it also, but that was now over. And when the squire endeavoured to say a few ill-natured words about Captain Aylmer, Will stopped him at once by asserting that the captain was all that he ought to be.

'And it would have made me so happy to think that my daughter's child should come to live in his grandfather's old house,' murmured Mr Amedroz.

'And there's no knowing that he mayn't do so yet,' said Will. 'But all these things are so doubtful that a man is wrong to fix his happiness upon them.' After that he went out to ramble about, the place, and before the third day was over Clara was able to perceive that, in spite of what he had said, he was as busy about the cattle as though his bread depended on them.

Page 135

Nothing had been said as yet about the Askertons, and Clara had resolved that their name should not first be mentioned by her. Mrs Askerton had prophesied that Will would have some communication to make about herself, and Clara would at any rate see whether her cousin would, of his own accord, introduce the subject. But three days passed by, and he had made no allusion to the cottage or its inhabitants. This in itself was singular, as the Askertons were the only local friends whom Clara knew, and as Belton had become personally acquainted with Mrs Askerton. But such was the case; and when Mr Amedroz once said something about Mrs Askerton in the presence of both Clara and Belton, they both of them shrank from the subject in a manner that made Clara understand that any conversation about the Askertons was to be avoided. On the fourth day Clara saw Mrs Askerton, but then Will Belton's name was not mentioned. There was therefore, among them all, a sense of some mystery which made them uncomfortable, and which seemed to admit of no solution. Clara was more sure than ever that her cousin had made no inquiries that he should not have made, and that he would put no information that he might have to an improper use. But of such certainty on her part she could say nothing.

Three weeks passed by, and it seemed as though Belton's visit were to come to an end without any further open trouble. Now and then something was said about Captain Aylmer; but it was very little, and Belton made no further reference to his own feelings. It had come to be understood that his visit was to be limited to a month; and to both him and Clara the month wore itself away slowly, neither of them having much pleasure in the society of the other. The old squire came downstairs once for an hour or two, and spent the whole time in bitter complaints. Everything was wrong, and everybody was ill-treating him. Even with Will he quarrelled, or did his best to quarrel, in regard to everything about the place, though at the same time he did not cease to grumble at his visitor for going away and leaving him. Belton bore it all so well that the grumbling and quarrelling did not lead to much; but it required all his good-humour and broad common sense to prevent serious troubles and misunderstanding.

During the period of her cousin's visit at Belton, Clara received two letters from Captain Aylmer, who was spending the Christmas holidays with his father and mother, and on the day previous to that of her cousin's departure there came a third. In neither of these letters was there much said about Sir Anthony, but they were all very full of Lady Aylmer. In the first he wrote with something of the personal enthusiasm of a lover and therefore Clara hardly felt the little drawbacks to her happiness which were contained in certain innuendoes respecting Lady Aylmer's ideas, and Lady Aylmer's hopes, and Lady Aylmer's fears. Clara was not going to marry Lady Aylmer,

Page 136

and did not fear but that she could hold her own against any mother-in-law in the world when once they should be brought face to face. And as long as Captain Aylmer seemed to take her part rather than that of his mother it was all very well. The second letter was more trying to her temper, as it contained one or two small morsels of advice as to conduct which had evidently originated with her ladyship. Now there is nothing, I take it, so irritating to an engaged young lady as counsel from her intended husband's mamma. An engaged young lady, if she be really in love, will take almost anything from her lover as long as she is sure that it comes altogether from himself. He may take what liberties he pleases with her dress. He may prescribe high church or low church if he be not, as is generally the case, in a condition to accept, rather than to give, prescriptions on that subject. He may order almost any course of reading providing that he supply the books. And he may even interfere with the style of dancing, and recommend or prohibit partners. But he may not thrust his mother down his future wife's throat. In answer to the second letter, Clara did not say much to show her sense of objection. Indeed she said nothing. But in saying nothing she showed her objection, and Captain Aylmer understood it. Then came the third letter, and as it contained matter touching upon our story, it shall be given entire and I hope it may be taken by gentlemen about to marry as a fair specimen of the sort of letter they ought not to write to the girls of their hearts:

Aylmer Castle

19th January, 186 .

'Dearest Clara I got your letter of the 16th yesterday, and was sorry you said nothing in reference to my mother's ideas as to the house at Perivale. Of course she knew that I heard from you, and was disappointed when, I was obliged to tell her, that you had not alluded to the subject. She is very anxious about you, and, having now given her assent to our marriage, is of course desirous of knowing that her kindly feeling is reciprocated. I assured her that my own Clara was the last person to be remiss in such a matter, and reminded her that young ladies are seldom very careful in their mode of answering letters. Remember, therefore, that I am now your guarantee, and send some message to relieve me from my liability.

When I told her of your father's long illness, which she laments greatly, and of your cousin's continued presence at Belton Castle, she seemed to think that Mr Belton's visit should not be prolonged. When I told her that he was your nearest relative, she remarked that cousins are the same as any other people which indeed they are. I know that my Clara Will not suppose that I mean more by this than the words convey. Indeed I mean less. But not having the advantage of a mother of your own, you will not be sorry to know what are my mother's opinions on matters which so nearly concern you.

Page 137

And now I come to another subject, as to which what I shall say will surprise you very much. You know, I think, that my aunt Winterfield and I had some conversation about your neighbours, the Askertons; and you will remember that my aunt, whose ideas on such matters were always correct, was a little afraid that your father had not made sufficient inquiry respecting them before he allowed them to settle near him as tenants. It now turns out that she is very far, indeed, from what she ought to be. My mother at first thought of writing to you about this; but she is a little fatigued, and at last resolved that under all the circumstances it might be as well that I should tell you. It seems that Mrs Askerton was married before to a certain Captain Berdmore, and that she left her first husband during his lifetime under the protection of Colonel Askerton. I believe they, the Colonel and Mrs Askerton, have been since married. Captain Berdmore died about four years ago in India, and it is probable that such a marriage has taken place. But under these circumstances, as Lady Aylmer says, you will at once perceive that all acquaintance between you and the lady should be brought to an end. Indeed, your own sense of what is becoming to you, either as an unmarried girl or as my future wife, or indeed as a woman at all, will at once make you feel that this must be so. I think, if I were you, I would tell the whole to Mr Amedroz; but this I will leave to your own discretion. I can assure you that Lady Aylmer has full proof as to the truth of what I tell you.

I go up to London in February. I suppose I may hardly hope to see you before the recess in July or August; but I trust that before that we shall have fixed the day when you will make me the happiest of men.

Yours, with truest affection,

F. F. Aylmer.'

It was a disagreeable, nasty letter from the first line to the last. There was not a word in it which did not grate against Clara's feelings not a thought expressed which did not give rise to fears as to her future happiness. But the information which it contained about the Askertons 'the communication,' as Mrs Askerton herself would have called it made her for the moment almost forget Lady Aylmer and her insolence. Could this story be true? And if true, how far would it be imperative on her to take the hint,, or rather obey the order, which had been given her? What steps should she take to learn the truth? Then she remembered Mrs Askerton's promise 'If you want to ask any questions, and will ask them of me, I will answer them.' The communication, as to which Mrs Askerton had prophesied, had now been made but it had been made not by Will Belton, whom Mrs Askerton had reviled, but by Captain Aylmer, whose praises Mrs Askerton had so loudly sung. As Clara thought of this, she could not analyse her own feelings, which were not devoid of a certain triumph. She had known that Belton would not put on his armour to attack a woman. Captain Aylmer had done so, and she was hardly surprised at his doing it. Yet Captain Aylmer was the man she loved! Captain Aylmer

was the man she had promised to marry. But, in truth, she hardly knew which was the man she loved!

Page 138

This letter came on a Sunday morning, and on that day she and Belton went to church together. On the following morning early he was to start for Taunton. At church they saw Mrs Askerton, whose attendance there was not very frequent. It seemed, indeed, as though she had come with the express purpose of seeing Belton once during his visit. As they left the church she bowed to him, and that was all they saw of each other throughout the month that he remained in Somersetshire.

'Come to me tomorrow Clara,' Mrs Askerton said as they all passed through the village together. Clara muttered some reply, having not as yet made up her mind as to what her conduct must be. Early on the next morning Will Belton went away, and again Clara got up to give him his breakfast. On this occasion he had no thought of kissing her. He went away without having had a word said to him about Mrs Askerton, and then Clara settled herself down to the work of deliberation. What should she do with reference to the communication that had been made to her by Captain Aylmer?

CHAPTER XVII

AYLMER PARK

Aylmer Park and the great house of the Aylmers together formed an important and, as regarded in some minds, an imposing country residence. The park was large, including some three or four hundred acres, and was peopled, rather thinly, by aristocratic deer. It was surrounded by an aristocratic paling, and was entered, at three different points, by aristocratic lodges. The sheep were more numerous than the deer, because Sir Anthony, though he had a large income, was not in very easy circumstances. The ground was quite flat; and though there were thin belts of trees, and some ornamental timber here and there, it was not well wooded. It had no special beauty of its own, and depended for its imposing qualities chiefly on its size, on its three sets of double lodges, and on its old established character as an important family place in the county. The house was of stone, with a portico of Ionic columns which looked as though it hardly belonged of right to the edifice, and stretched itself out grandly, with two pretentious wings, which certainly gave it a just claim to be called a mansion. It required a great many servants to keep it in order, and the numerous servants required an experienced duenna, almost as grand in appearance as Lady Aylmer herself, to keep them in order. There was an open carriage and a close carriage, and a butler, and two footmen, and three gamekeepers, and four gardeners, and there was a coachman, and there were grooms, and sundry inferior men and boys about the place to do the work which the gardeners and game-keepers and grooms did not choose to do themselves. And they all became fat, and lazy, and stupid, and respectable together; so that, as the reader will at once perceive, Aylmer Park was kept up in the proper English style. Sir Anthony very often discussed with his steward

Page 139

the propriety of lessening the expenditure of his residence, and Lady Aylmer always attended and probably directed these discussions; but it was found that nothing could be done. Any attempt to remove a gamekeeper or a gardener would evidently throw the whole machinery of Aylmer Park out of gear. If retrenchment was necessary Aylmer Park must be abandoned, and the glory of the Aylmers must be allowed to pale. But things were not so had as that with Sir Anthony. The gardeners, grooms, and gamekeepers were maintained; ten domestic servants sat down to four heavy meals in the servants' hall every day, and Lady Aylmer contented herself with receiving little or no company, and with stingy breakfasts and bad dinners for herself and her husband and daughter. By all this it must be seen that she did her duty as the wife of an English country gentleman, and properly maintained his rank as a baronet.

He was a heavy man, over seventy years of age, much afflicted with gout, and given to no pursuit on earth which was available for his comfort. He had been a hunting man, and he had shot also; but not with that energy which induces a sportsman to carry on those amusements in opposition to the impediments of age. He had been, and still was, a county magistrate; but he had never been very successful in the justice-room, and now seldom troubled the county with his judicial incompetence. He had been fond of good dinners and good wine, and still, on occasions, would make attempts at enjoyment in that line; but the gout and Lady Aylmer together were too many for him, and he had but small opportunity for filling up the blanks of his existence out of the kitchen or cellar. He was a big man, with a broad chest, and a red face, and a quantity of white hair and was much given to abusing his servants. He took some pleasure in standing, with two sticks, on the top of the steps before his own front door, and railing at any one who came in his way. But he could not do this when Lady Aylmer was by; and his dependents, knowing his habits, had fallen into an ill-natured way of deserting the side of the house which he frequented. With his eldest son, Anthony Aylmer, he was not on very good terms; and though there was no positive quarrel, the heir did not often come to Aylmer Park. Of his son Frederic he was proud and the best days of his life were probably those which Captain Aylmer spent at the house. The table was then somewhat more generously spread, and this was an excuse for having up the special port in which he delighted. Altogether his life was not very attractive; and though he had been born to a baronetcy, and eight thousand a-year, and the possession of Aylmer Park, I do not think that he was, or had been, a happy man.

Page 140

Lady Aylmer was more fortunate. She had occupations of which her husband knew nothing, and for which he was altogether unfit. Though she could not succeed in making retrenchments, she could and did succeed in keeping the household books. Sir Anthony could only blow up the servants when they were thoughtless enough to come in his way, and in doing that was restricted by his wife's presence. But Lady Aylmer could get at them day and night. She had no gout to impede her progress about the house and grounds, and could make her way to places which the master never saw; and then she wrote many letters daily, whereas Sir Anthony hardly ever took a pen in his hand. And she knew the cottages of all the poor about the place, and knew also all their sins of omission and commission. She was driven out, too, every day, summer and winter, wet and dry, and consumed enormous packets of wool and worsted, which were sent to her monthly from York. And she had a companion in her daughter, whereas Sir Anthony had no companion. Wherever Lady Aylmer went, Miss Aylmer went with her, and relieved what might otherwise have been the tedium of her life. She had been a beauty on a large scale, and was still aware that she had much in her personal appearance which justified pride. She carried herself uprightly, with a commanding nose and broad forehead; and though the graces of her own hair had given way to a front, there was something even in the front which added to her dignity, if it did not make her a handsome woman.

Miss Aylmer, who was the eldest of the younger generation, and who was now gently descending from her fortieth year, lacked the strength of her mother's character, but admired her mother's ways, and followed Lady Aylmer in all things at a distance. She was very good as indeed was Lady Aylmer entertaining a high idea of duty, and aware that her own life admitted of but little self-indulgence. She had no pleasures, she incurred no expenses; and was quite alive to the fact that as Aylmer Park required a regiment of lazy, gormandizing servants to maintain its position in the county, the Aylmers themselves should not be lazy, and should not gormandize. No one was more careful with her few shillings than Miss Aylmer. She had, indeed, abandoned a life's correspondence with an old friend because she would not pay the postage on letters to Italy. She knew that it was for the honour of the family that one of her brothers should sit in Parliament, and was quite willing to deny herself a new dress because sacrifices must be made to lessen electioneering expenses. She knew that it was her lot to be driven about slowly in a carriage with a livery servant before her and another behind her, and then eat a dinner which the cook-maid would despise. She was aware that it was her duty to be snubbed by her mother, and to encounter her father's ill-temper, and to submit to her brother's indifference, and to have, so to say, the slightest possible modicum of personal individuality.

Page 141

She knew that she had never attracted a man's love, and might hardly hope to make friends for the comfort of her coming age. But still she was contented, and felt that she had consolation for it all in the fact that she was am. Aylmer. She read many novels, and it cannot but be supposed that something of regret would steal over her as she remembered that nothing of the romance of life had ever, or could ever, come in her way. She wept over the loves of many women, though she had never been happy or unhappy in her own. She read of gaiety, though she never encountered it, and must have known that the world elsewhere was less dull than it was at Aylmer Park. But she took her life as it came, without a complaint, and prayed that God would make her humble in the high position to which it had pleased Him to call her. She hated Radicals, and thought that Essays and Reviews, and Bishop Colenso, came direct from the Evil One. She taught the little children in the parish, being specially urgent to them always to courtesy when they saw any of the family and was as ignorant, meek, and stupid a poor woman as you shall find anywhere in Europe.

It may be imagined that Captain Aylmer, who knew the comforts of his club and was accustomed to life in London, would feel the dullness of the paternal roof to be almost unendurable. In truth, he was not very fond of Aylmer Park, but he was more gifted with patience than most men of his age and position, and was aware that it behoved him to keep the Fifth Commandment if he expected to have his own days prolonged in the land. He therefore made his visits periodically, and contented himself with clipping a few days at both ends from the length prescribed by family tradition, which his mother was desirous of exacting. September was always to be passed at Aylmer Park, because of the shooting. In September, indeed, the eldest son himself was wont to be there probably with a friend or two and the fat old servants bestirred themselves, and there was something of life about the place. At Christmas, Captain Aylmer was there as the only visitor, and Christmas was supposed to extend from the middle of December to the opening of Parliament. It must, however, be explained, that on the present occasion his visit had been a matter of treaty and compromise. He had not gone to Aylmer Park at all till his mother had in some sort assented to his marriage with Clara Amedroz. To this Lady Aylmer had been very averse, and there had been many serious letters. Belinda Aylmer, the daughter of the house, had had a bad time in pleading her brother's cause and some very harsh words had been uttered but ultimately the matter had been arranged, and, as is usual in such contests, the mother had yielded to the son. Captain Aylmer had therefore gone down a few days before Christmas, with a righteous feeling that he owed much to his mother for her condescension, and almost prepared to make himself very disagreeable to Clara by way of atoning to his family for his folly in desiring to marry her.

Page 142

Lady Aylmer was very plain-spoken on the subject of all Clara's shortcomings very plain-spoken, and very inquisitive. 'She will never have one shilling, I suppose?' she said.

'Yes, ma'am.' Captain Aylmer always called his mother 'ma'am'. 'She will have that fifteen hundred pounds that I told you of.'

'That is to say, you will have back the money which you yourself have given her, Fred. I suppose that is the English of it?' Then Lady Aylmer raised her eyebrows and looked very wise.

'Just so, ma'am.'

'You can't call that having anything of her own. In point of fact she is penniless.'

'It is no good harping on that,' said Captain Aylmer, somewhat sharply.

'Not in the least, my dear; no good at all. Of course you have looked it all in the face. You will be a poor man instead of a rich man, but you will have enough to live on that is if she doesn't have a large family which of course she will.'

'I shall do very well, ma'am.'

'You might do pretty well, I dare say, if you could live privately at Perivale, keeping up the old family house there, and having no expenses; but you'll find even that close enough with your seat in Parliament, and the necessity there is that you should be half the year in London. Of course she won't go to London. She can't expect it. All that had better be made quite clear at once.' Hence had come the letter about the house at Perivale, containing Lady Aylmer's advice on that subject, as to which Clara made no reply.

Lady Aylmer, though she had given her assent, was still not altogether without hope. It might be possible that the two young people could be brought to see the folly and error of their ways before it would be too late; and that Lady Aylmer, by a judicious course of constant advice, might be instrumental in opening the eyes, if not of the lady, at any rate of the gentleman. She had great reliance on her own powers, and knew well that a falling drop will hollow a stone. Her son manifested no hot eagerness to complete his folly in a hurry, and to cut the throat of his prospects out of hand. Time, therefore, would be allowed to her, and she was a woman who could use time with patience. Having, through her son, dispatched her advice about the house at Perivale which which simply amounted to this, that Clara should expressly state her willingness to live there alone whenever it might suit her husband to be in London or elsewhere she went to work on other points, connected with the Amedroz family, and eventually succeeded in learning something very much like the truth as to poor Mrs Askerton and her troubles. At first

she was so comfortably horror-stricken by the iniquity she had unravelled so delightfully shocked and astounded as to believe that the facts as they then stood would suffice to annul the match.

'You don't tell me', she said to Belinda, 'that Frederic's wife will have been the friend of such a woman as that!' And Lady Aylmer, sitting upstairs with her household books before her, put up her great fat hands and her great fat arms, and shook her head front and all in most satisfactory dismay.

Page 143

'But I suppose Clara did not know it.' Belinda had considered it to be an act of charity to call Miss Amedroz Clara since the family consent had been given.

'Didn't know it! They have been living in that sort of way that they must have been confidantes in everything. Besides, I always hold that a woman is responsible for her female friends.'

'I think if she consents to drop her at once that is, absolutely to make a promise that she will never speak to her again Frederic ought to take that as sufficient. That is, of course, mamma, unless she has had anything to do with it herself.'

'After this I don't know how I'm to trust her. I don't indeed. It seems to me that she has been so artful throughout. It has been a regular case of catching.'

'I suppose, of course, that she has been anxious to marry Frederic but perhaps that was natural.'

'Anxious look at her going there just when he had to meet his constituents. How young women can do such things passes me! And how it is that men don't see it all, when it's going on just under their noses, I can't understand. And then, her getting my poor dear sister to speak to him when she was dying! I didn't think your aunt would have been so weak.' It will be thus seen that there was entire confidence on this subject between Lady Aylmer and her daughter.

We know what were the steps taken with reference to the discovery, and how the family were waiting for Clara's reply. Lady Aylmer, though in her words she attributed so much mean cunning to Miss Amedroz, still was disposed to believe that that lady would show rather a high spirit on this occasion; and trusted to that high spirit as the means for making the breach which she still hoped to accomplish. It had been intended or rather desired that Captain Aylmer's letter should have been much sharper and authoritative than he had really made it; but the mother could not write the letter herself, and had felt that to write in her own name would not have served to create anger on Clara's part against her betrothed. But she had quite succeeded in inspiring her son with a feeling of horror against the iniquity of the Askertons. He was prepared to be indignantly moral; and perhaps perhaps the misguided Clara might be silly enough to say a word for her lost friend! Such being the present position of affairs, there was certainly ground for hope.

And now they were all waiting for Clara's answer. Lady Aylmer had well calculated the course of post, and knew that a letter might reach them by Wednesday morning. 'Of course she will not write on Sunday,' she had said to her son, 'but you have a right to expect that not another day should go by.' Captain Aylmer, who felt that they were putting Clara on her trial, shook his head impatiently, and made no immediate answer. Lady Aylmer, triumphantly feeling that she had the culprit on the hip, did not care to

notice this. She was doing the best she could for his happiness as she had done for his health, when in days gone by she had administered to him his infantine rhubarb and early senna; but as she had never then expected him to like her doses, neither did she now expect that he should be well pleased at the remedial measures to which he was to be subjected.

Page 144

No letter came on the Wednesday, nor did any come on the Thursday, and then it was thought by the ladies at the Park that the time had come for speaking a word or two. Belinda, at her mother's instance, began the attack not in her mother's presence, but when she only was with her brother.

'Isn't it odd, Frederic, that Clara shouldn't write about those people at Belton?'

'Somersetshire is the other side of London, and letters take a long time.'

'But if she had written on Monday, her answer would have been here on Wednesday morning indeed, you would have had it Tuesday evening, as mamma sent over to Whitby for the day mail letters.' Poor Belinda was a bad lieutenant, and displayed too much of her senior officer's tactics in thus showing how much calculation and how much solicitude there had been as to the expected letter.

'If I am contented I suppose you may be,' said the brother.

'But it does seem to me to be so very important! If she hasn't got your letter, you know, it would be so necessary that you should write again, so that the the the contamination should be stopped as soon as possible.' Captain Aylmer shook his head and walked away. He was, no doubt, prepared to be morally indignant morally very indignant at the Askerton iniquity; but he did not like the word contamination as applied to his future wife.

'Frederic,' said his mother, later on the same day when the hardly-used groom had returned from his futile afternoon's inquiry at the neighbouring post. town 'I think you should do something in this affair.'

'Do what, ma'am? Go off to Belton myself?'

'No, no. I certainly would not do that. In the first place it would be very inconvenient to you, and in the next place it would not be fair upon us. I did not mean that at all. But I think that something should be done. She should be made to understand.'

'You may be sure, ma'am, that she understands as well as anybody.'

'I dare say she is clever enough at these kind of things.'

'What kind of things?'

'Don't bite my nose off, Frederic, because I am anxious about your wife.'

'What is it that you wish me to do? I have written to her, and can only wait for her answer.'



'It may be that she feels a delicacy in writing to you on such a subject; though I own However, to make a long story short, if you like, I will write to her myself.'

'I don't see that that would do any good. It would only give her offence.'

'Give her offence, Frederic, to receive a letter from her future mother-in-law from me! Only think, Frederic, what you are saying.'

'If she thought she was being bullied about this, she would turn rusty at once.'

Page 145

'Turn rusty! What am I to think of a young lady who is prepared to turn rusty at once, too because she is cautioned by the mother of the man she professes to love against an improper acquaintance against an acquaintance so very improper?' Lady Aylmer's eloquence should have been heard to be appreciated. It is but tame to say that she raised her fat arms and fat hands, and wagged her front her front that was the more formidable as it was the old one, somewhat rough and dishevelled, which she was wont to wear in the morning. The emphasis of her words should have been heard, and the fitting solemnity of her action should have been seen. 'If there were any doubt,' she continued to say, 'but there is no doubt. There are the damning proofs.' There are certain words usually confined to the vocabularies of men, which women such as Lady Aylmer delight to use on special occasions, when strong circumstances demand strong language. As she said this she put her hand below the table, pressing it apparently against her own august person; but she was in truth indicating the position of a certain valuable correspondence, which was locked up in the drawer of her writing-table.

'You can write if you like it, of course; but I think you ought to wait a few more days.'

'Very well, Frederic; then I will wait. I will wait till Sunday. I do not wish to take any step of which you do not approve. If you have not heard by Sunday morning, then I will write to her on Monday.'

On the Saturday afternoon life was becoming inexpressibly disagreeable to Captain Aylmer, and he began to meditate an escape from the Park. In spite of the agreement between him and his mother, which he understood to signify that nothing more was to be said as to Clara's wickedness, at any rate till Sunday after post-hour, Lady Aylmer had twice attacked him on the Saturday, and had expressed her opinion that affairs were in a very frightful position. Belinda went about the house in melancholy guise, with her eyes rarely lifted off the ground, as though she were prophetically weeping the utter ruin of her brother's respectability. And even Sir Anthony had raised his eyes and shaken his head, when, on opening the post-bag at the breakfast-table an operation which was always performed by Lady Aylmer in person her ladyship had exclaimed, 'again no letter!' Then Captain Aylmer thought that he would fly, and resolved that, in the event of such flight, he would give special orders as to the re-direction of his own letters from the post-office at Whitby.

That evening, after dinner, as soon as his mother and sister had left the room, he began the subject with his father. 'I think I shall go up to town on Monday, sir,' said he.

'So soon as that. I thought you were to stop till the 9th.'

'There are things I must see to in London, and I believe I had better go at once.'

'Your mother will be greatly disappointed.'

Page 146

'I shall be sorry for that but business is business, you know.' Then the father filled his glass and passed the bottle. He himself did not at all like the idea of his son's going before the appointed time, but he did not say a word of himself. He looked at the red-hot coals, and a hazy glimmer of a thought passed through his mind, that he too would escape from Aylmer Park if it were possible.

'If you'll allow me, I'll take the dog-cart over to Whitby on Monday, for the express train.'

'You can do that certainly, but'

'Sir?'

'Have you spoken to your mother yet?'

'Not yet. I will to-night.'

'I think she'll be a little angry, Fred.' There was a sudden tone of subdued confidence in the old man's voice as he made this suggestion, which, though it was by no means a customary tone, his son well understood. 'Don't you think she will be eh, a little?'

'She shouldn't go on as she does with me about Clara,' said the captain.

'Ah I supposed there was something of that. Are you drinking port?'

'Of course I know that she means all that is good,' said the son, passing back the bottle.

'Oh yes she means all that is good.'

'She is the best mother in the world.'

'You may say that, Fred and the best wife.'

'But if she can't have her own way altogether ' then the son paused, and the father shook his head.

'Of course she likes to have her own way,' said Sir Anthony.

'It's all very well in some things.'

'Yes it's very well in some things'

'But there are things which a man must decide for himself.'

'I suppose there are,' said Sir Anthony, not venturing to think what those things might be as regarded himself.

'Now, with reference to marrying'

'I don't know what you want with marrying at all, Fred. You ought to be very happy as you are. By heavens, I don't know any one who ought to be happier. If I were you, I know'

'But you see, sir, that's all settled.'

'If it's all settled, I suppose there's an end of it.'

'It's no good my mother nagging at one.'

'My dear boy, she's been nagging at me, as you call it, for forty years. That's her way. The best woman in the world, as we were saying but that's her way. And it's the way with most of them. They can do anything if they keep it up anything. The best thing is to bear it if you've got it to bear. But why on earth you should go and marry, seeing that you're not the eldest son, and that you've got everything on earth that you want as a bachelor, I can't understand. I can't indeed, Fred. By heaven, I can't!' Then Sir Anthony gave a long sigh, and sat musing awhile, thinking of the club in London to which he belonged, but which he never entered of the old days in which he had been master of a bedroom near St. James's Street of his old friends whom he never saw now, and of whom he never heard, except as one and another, year after year, shuffled away from their wives to that world in which there is no marrying or giving in marriage. Ah, well,' he said, 'I suppose we may as well go into the drawing-room. If it is settled, I suppose it is settled. But it really seems to me that your mother is trying to do the best she can for you. It really does.'



Page 147

Captain Aylmer did not say anything to his mother that night as to his going, but as he thought of his prospects in the solitude of his bedroom, he felt really grateful to his father for the solicitude which Sir Anthony had displayed on his behalf. It was not often that he received paternal counsel, but now that it had come he acknowledged its value. That Clara Amedroz was a self-willed woman he thought that he was aware. She was self-reliant, at any rate and by no means ready to succumb with that pretty feminine docility which he would like to have seen her evince. He certainly would not wish to be 'nagged' by his wife. Indeed he knew himself well enough to assure himself that he would not stand it for a day. In his own house he would be master, and if there came tempests he would rule them. He could at least promise himself that. As his mother had been strong, so had his father been weak. But he had as he felt thankful in knowing inherited his mother's strength rather than his father's weakness. But, for all that, why have a tempest to rule at all? Even though a man do rule his domestic tempests, he cannot have a very quiet house with them. Then again he remembered how very easily Clara had been won. He wished to be just to all men and women, and to Clara among the number. He desired even to be generous to her with a moderate generosity. But above all things he desired not to be duped. What if Clara had in truth instigated her aunt to that deathbed scene, as his mother had more than once suggested! He did not believe it. He was sure that it had not been so. But what if it were so? His desire to be generous and trusting was moderate but his desire not to be cheated, not to be deceived, was immoderate. Upon the whole might it not be well for him to wait a little longer, and ascertain how Clara really intended to behave herself in this emergency of the Askertons? Perhaps, after all, his mother might be right.

On the Sunday the expected letter came but before its contents are made known, it will be well that we should go back to Belton, and see what was done by Clara in reference to the tidings which her lover had sent her.

CHAPTER XVIII

MRS ASKERTON'S STORY

When Clara received the letter from Captain Aylmer on which so much is supposed to hang, she made up her mind to say nothing of it to any one not to think of it if she could avoid thinking of it till her cousin should have left her. She could not mention it to him; for, though there was no one from whom she would sooner have asked advice than from him, even on so delicate a matter as this, she could not do so in the present case, as her informant was her cousin's successful rival. When, therefore, Mrs Askerton on leaving the church had spoken some customary word to Clara, begging her to come to the cottage on the following day, Clara had been unable to answer not having as yet made up her mind whether she would or would not go to the cottage again. Of course the idea of consulting her father occurred to her or rather the idea of telling him; but any such telling would lead to some advice from him which she would find it difficult to obey,

and to which she would be unable to trust. And, moreover, why should she repeat this evil story against her neighbours?

Page 148

She had a long morning by herself after Will had started, and then she endeavoured to arrange her thoughts and lay down for herself a line of conduct. Presuming this story to be true, to what did it amount? It certainly amounted to very much. If, in truth, this woman had left her own husband and gone away to live with another man, she had by doing so at any rate while she was doing so fallen in such a way as to make herself unfit for the society of an unmarried young woman who meant to keep her name unblemished before the world. Clara would not attempt any further unravelling of the case, even in her own mind but on that point she could not allow herself to have a doubt. Without condemning the unhappy victim, she understood well that she would owe it to all those who held her dear, if not to herself, to eschew any close intimacy with one in such a position. The rules of the world were too plainly written to allow her to guide herself by any special judgment of her own in such a matter. But if this friend of hers having been thus unfortunate had since redeemed, or in part redeemed, her position by a second marriage, would it be then imperative upon her to remember the past for ever, and to declare that the stain was indelible? Clara felt that with a previous knowledge of such a story she would probably have avoided any intimacy with Mrs Askerton. She would then have been justified in choosing whether such intimacy should or should not exist, and would so have chosen out of deference to the world's opinion. But now it was too late for that. Mrs Askerton had for years been her friend; and Clara had to ask herself this question: was it now needful did her own feminine purity demand that she should throw her friend over because in past years her life had been tainted by misconduct.

It was clear enough at any rate that this was expected from her nay, imperatively demanded by him who was to be her lord by him to whom her future obedience would be due. Whatever might be her immediate decision, he would have a right to call upon her to be guided by his judgment as soon as she would become his wife. And indeed, she felt that he had such right now unless she should decide that no such right should be his, now or ever. It was still within her power to say that she could not submit herself to such a rule as his but having received his commands she must do that or obey them. Then she declared to herself, not following the matter out logically, but urged to her decision by sudden impulse, that at any rate she would not obey Lady Aylmer. She would have nothing to do, in any such matter, with Lady Aylmer. Lady Aylmer should be no god to her. That question about the house at Perivale had been very painful to her. She felt that she could have endured the dreary solitude at Perivale without complaint, if, after her marriage, her husband's circumstances had made such a mode of living expedient. But to have been asked to pledge her consent to such

Page 149

a life before her marriage, to feel that he was bargaining for the privilege of being rid of her, to know that the Aylmer people were arranging that he, if he would marry her, should be as little troubled with his wife as possible all this had been very grievous to her. She had tried to console herself by the conviction that Lady Aylmer not Frederic had been the sinner; but even in that consolation there had been the terrible flaw that the words had come to her written by Frederic's hand. Could Will Belton have written such a letter to his future wife?

In her present emergency she must be guided by her own judgment or her own instincts not by any edicts from Aylmer Park! If in what she might do she should encounter the condemnation of Captain Aylmer, she would answer him she would be driven to answer him by counter-condemnation of him and his mother. Let it be so. Anything would be better than a mean, truckling subservience to the imperious mistress of Aylmer Park.

But what should she do as regarded Mrs Askerton? That the story was true she was beginning to believe. That there was some such history was made certain to her by the promise which Mrs Askerton had given her.

'If you want to ask any questions, and will ask them of me, I will answer them.' Such a promise would not have been volunteered unless there was something special to be told. It would be best, perhaps, to demand from Mrs Askerton the fulfilment of this promise. But then in doing so she must own from whence her information had come. Mrs Askerton had told her that the 'communication' would be made by her Cousin Will. Her Cousin Will had gone away without a word of Mrs Askerton, and now the 'communication' had come from Captain Aylmer!

The Monday and Tuesday were rainy days, and the rain was some excuse for her not going to the cottage. On the Wednesday her father was ill, and his illness made a further excuse for her remaining at home. But on the Wednesday evening there came a note to her from Mrs Askerton. 'You naughty girl, why do you not come to me? Colonel Askerton has been away since yesterday morning, and I am forgetting the sound of my own voice. I did not trouble you when your divine cousin was here for reasons; but unless you come to me now I shall think that his divinity has prevailed. Colonel Askerton is in Ireland, about some property, and will not be back till next week.'

Clara sent back a promise by the messenger, and on the following morning she put on her hat and shawl, and started on her dreaded task. When she left the house she had not even yet quite made up her mind what she would do. At first she put her lover's letter into her pocket, so that she might have it for reference; but, on second thoughts, she replaced it in her desk, dreading lest she might be persuaded into showing or reading some part of it. There had come a sharp frost after the rain, and the ground was hard and dry. In order that she might gain

Page 150

some further last moment for thinking, she walked round, up among the rocks, instead of going straight to the cottage; and for a moment though the air was sharp with frost she sat upon the stone where she had been seated when her Cousin Will blurted out the misfortune of his heart. She sat there on purpose that she might think of him, and recall his figure, and the tones of his voice, and the look of his eyes, and the gesture of his face. What a man he was so tender, yet so strong; so thoughtful of others, and yet so self-sufficient! She had, unconsciously, imputed to him one fault, that he had loved and then forgotten his love unconsciously, for she had tried to think that this was a virtue rather than a fault but now with a full knowledge of what she was doing, but without any intention of doing it she acquitted him of that one fault. Now that she could acquit him, she owned that it would have been a fault. To have loved, and so soon to have forgotten it! No; he had loved her truly, and alas! he was one who could not be made to forget it. Then she went on to the cottage, exercising her thoughts rather on the contrast between the two men than on the subject to which she should have applied them.

'So you have come at last!' said Mrs Askerton. 'Till I got your message I thought there was to be some dreadful misfortune.'

'What misfortune?'

'Something dreadful! One often anticipates something very bad without exactly knowing what. At least, I do. I am always expecting a catastrophe when I am alone that is and then I am so often alone.'

'That simply means low spirits, I suppose?'

'It's more than that, my dear.'

'Not much more, I take it.'

'Once when we were in India we lived close to the powder magazine, and we were always expecting to be blown up. You never lived near a powder magazine.'

'No, never unless there's one at Belton. But I should have thought that was exciting.'

'And then there was the gentleman who always had the sword hanging over him by the horse's hair.'

'What do you mean, Mrs Askerton?'

'Don't look so innocent, Clara. You know what I mean. What were the results at last of your cousin's diligence as a detective officer?'

'Mrs Askerton, you wrong my cousin greatly. He never once mentioned your name while he was with us. He did not make a single allusion to you, or to Colonel Askerton, or to the cottage.'

'He did not?'

'Never once.'

'Then I beg his pardon. But not the less has he been busy making inquiries.'

'But why should you say that there is a powder magazine, or a sword hanging over your head?'

'Ah, why?'

Page 151

Here was the subject ready opened to her hand, and yet Clara did not know how to go on with it. It seemed to her now that it would have been easier for her to commence it, if Mrs Askerton had made no commencement herself. As it was, she knew not how to introduce the subject of Captain Aylmer's letter, and was almost inclined to wait, thinking that Mrs Askerton might tell her own story without any such introduction. But nothing of the kind was forthcoming. Mrs Askerton began to talk of the frost, and then went on to abuse Ireland, complaining of the hardship her husband endured in being forced to go thither in winter to look after his tenants.

'What did you mean', said Clara, at last, 'by the sword hanging over your head?'

'I think I told you what I meant pretty plainly. If you did not understand me I cannot tell you more plainly.'

'It is odd that you should say so much, and not wish to say more.'

'Ah! you are making your inquiries now.'

'In my place would not you do so too? How can I help it when you talked of a sword? Of course you make me ask what the sword is.'

'And am I bound to satisfy your curiosity?'

'You told me, just before my cousin came here, that if I asked any question you would answer me.'

'And I am to understand that you are asking such a question now?'

'Yes if it will not offend you.'

'But what if it will offend me offend me greatly? Who likes to be inquired into?'

'But you courted such inquiry from me.'

'No, Clara, I did not do that. I'll tell you what I did. I gave you to understand that if it was needful that you should hear about me and my antecedents certain matters as to which Mr Belton had been inquiring into in a manner that I thought to be most unjustifiable I would tell you that story.'

'And do so without being angry with me for asking.'

'I meant, of course, that I would not make it a ground for quarrelling with you. If I wished to tell you, I could do so without any inquiry.'

'I have sometimes thought that you did wish to tell me.'

'Sometimes I have almost.'

'But you have no such wish now?'

'Can't you understand? It may well be that one so much alone as I am living here without a female friend, or even acquaintance, except yourself should often feel a longing for that comfort which full confidence between us would give me.'

'Then why not'

'Stop a moment. Can't you understand that I may feel this, and yet entertain the greatest horror against inquiry? We all like to tell our own sorrows, but who likes to be inquired into? Many a woman burns to make a full confession, who would be as mute as death before a policeman.'

'I am no policeman.'

'But you are determined to ask a policeman's questions?'

Page 152

To this Clara made no immediate reply. She felt that she was acting almost falsely in going on with such questions, while she was in fact aware of all the circumstances which Mrs Askerton could tell but she did not know how to declare her knowledge and to explain it. She sincerely wished that Mrs Askerton should be made acquainted with the truth; but she had fallen into a line of conversation which did not make her own task easy. But the idea of her own hypocrisy was distressing to her, and she rushed at the difficulty with hurried, eager words, resolving that, at any rate, there should be no longer any doubt between them.

'Mrs Askerton,' she said, 'I know it all. There is nothing for you to tell. I know what the sword is.'

'What is it that you know?'

'That you were married long ago to Mr Berdmore.'

'Then Mr Belton did do me the honour of talking about me when he was here?' As she said this she rose from her chair, and stood before Clara with flashing eyes.

'Not a word. He never mentioned your name, or the name of any one belonging to you. I have heard it from another.'

'From what other?'

'I do not know that that signifies but I have learned it.'

'Well and what next?'

'I do not know what next. As so much has been told me, and as you had said that I might ask you, I have come to you, yourself. I shall believe your own story more thoroughly from yourself than from any other teller.'

'And suppose I refuse to answer you?'

'Then I can say nothing further.'

'And what will you do?'

'Ah that I do not know. But you are harsh to me, while I am longing to be kind to you. Can you not see that this has been all forced upon me partly by yourself?'

'And the other part who has forced that upon you? Who is your informant? If you mean to be generous, be generous altogether. Is it a man or a woman that has taken the trouble to rip up old sorrows that my name may be blackened? But what matters? There I was married to Captain Berdmore. I left him, and went away with my present

husband. For three years I was a man's mistress, and not his wife. When that poor creature died we were married, and then came here. Now you know it all all all though doubtless your informant has made a better story of it. After that, perhaps, I have been very wicked to sully the air you breathe by my presence.'

'Why do you say that to me?'

'But no you do not know it all. No one can ever know it all. No one can ever know how I suffered before I was driven to escape, or how good to me has been he who who who ' Then she turned her back upon Clara, and, walking off to the window, stood there, hiding the tears which clouded her eyes, and concealing the sobs which choked her utterance.

Page 153

For some moments for a space which seemed long to both of them Clara kept her seat in silence. She hardly dared to speak; and though she longed to show her sympathy, she knew not what to say. At last she too rose and followed the other to the window. She uttered no words, however, but gently putting her arm around Mrs Askerton's waist, stood there close to her, looking out upon the cold wintry flower-beds not venturing to turn her eyes upon her companion. The motion of her arm was at first very gentle, but after a while she pressed it closer, and thus by degrees drew her friend to her with an eager, warm, and enduring pressure. Mrs Askerton made some little effort towards repelling her, some faint motion of resistance; but as the embrace became warmer the poor woman yielded herself to it, and allowed her face to fall upon Clara's shoulder. So they stood, speaking no word, making no attempt to rid themselves of the tears which were blinding their eyes, but gazing out through the moisture on the bleak wintry scene before them. Clara's mind was the more active at the moment, for she was resolving that in this episode of her life she would accept no lesson whatever from Lady Aylmer's teaching no, nor any lesson whatever from the teaching of any Aylmer in existence. And as for the world's rules, she would fit herself to them as best she could; but no such fitting should drive her to the unwomanly cruelty of deserting this woman whom she had known and loved and whom she now loved with a fervour which she had never before felt towards her.

'You have heard it all now,' said Mrs Askerton at last.

'And is it not better so?'

'Ah I do not know. How should I know?'

'Do you not know?' And as she spoke, Clara pressed her arm still closer. 'Do you not know yet?' Then, turning herself half round, she clasped the other woman full in her arms, and kissed her forehead and her lips.

'Do you not know yet?'

'But you will go away, and people will tell you that you are wrong.'

'What people?' said Clara, thinking as she spoke of the whole family at Aylmer Park.

'Your husband will tell you so.'

'I have no husband as yet to order me what to think or what not to think.'

'No not quite as yet. But you will tell him all this.'

'He knows it. It was he who told me.'

'What! Captain Aylmer?'

‘Yes; Captain Aylmer.’

‘And what did he say?’

‘Never mind. Captain Aylmer is not my husband not as yet. If he takes me, he must take me as I am, not as he might possibly have wished me to be. Lady Aylmer’

‘And does Lady Aylmer know it?’

‘Yes. Lady Aylmer is one of those hard, severe women who never forgive.’

‘Ah, I see it all now. I understand it all. Clara, you must forget me, and come here no more. You shall not be ruined because you are generous.’

‘Ruined! If Lady Aylmer’s displeasure can ruin me, I must put up with ruin. I will not accept her for my guide. I am too old, and have had my own way too long. Do not let that thought trouble you. In this matter I shall judge for myself. I have judged for myself already.’

Page 154

'And your father?'

'Papa knows nothing of it.'

'But you will tell him?'

'I do not know. Poor papa is very ill. If he were well I would tell him, and he would think as I do.'

'And your cousin?'

'You say that he has heard it all.'

'I think so. Do you know that I remembered him the first moment that I saw him? But what could I do? When you mentioned to me my old name, my real name, how could I be honest? I have been driven to do that which has made honesty to me impossible. My life has been a lie; and yet how could I help it? I must live somewhere and how could I live anywhere without deceit?'

'And yet that is so sad.'

'Sad indeed! But what could I do? Of course I was wrong in the beginning. Though how am I to regret it, when it has given me such a husband as I have? Ah if you could know it all, I think I think you would forgive me.'

Then by degrees she told it all, and Clara was there for hours listening to her story. The reader will not care to hear more of it than he has heard. Nor would Clara have desired any closer revelation; but as it is often difficult to obtain a confidence, so is it impossible to stop it in the midst of its effusion. Mrs Askerton told the history of her life of her first foolish engagement, her belief, her half-belief, in the man's reformation, of the miseries which resulted from his vices, of her escape and shame, of her welcome widowhood, and of her second marriage. And as she told it, she paused at every point to insist on the goodness of him who was now her husband. 'I shall tell him this,' she said at last. 'as I do everything; and then he will know that I have in truth got a friend.'

She asked again and again about Mr Belton, but Clara could only tell her that she knew nothing of her cousin's knowledge. Will might have heard it all, but if so he had kept his information to himself.

'And now what shall you do?' Mrs Askerton asked of Clara, at length prepared to go.

'Do? in what way? I shall do nothing.'

'But you will write to Captain Aylmer?'

‘Yes I shall write to him.’

‘And about this?’

‘Yes I suppose I must write to him.’

‘And what will you say?’

‘That I cannot tell. I wish I knew what to say. If it were to his mother I could write my letter easily enough.’

‘And what would you say to her?’

‘I would tell her that I was responsible for my own friends. But I must go now. Papa will complain that I am so long away.’ Then there was another embrace, and at last Clara found her way out of the house and was alone again in the park.

Page 155

She clearly acknowledged to herself that she had a great difficulty before her. She had committed herself altogether to Mrs Askerton, and could no longer entertain any thought of obeying the very plainly expressed commands which Captain Aylmer had given her. The story as told by Captain Aylmer had been true throughout; but, in the teeth of that truth, she intended to maintain her acquaintance with Mrs Askerton. From that there was now no escape. She had been carried away by impulse in what she had done and said at the cottage, but she could not bring herself to regret it. She could not believe that it was her duty to throw over and abandon a woman whom she loved, because that woman had once, in her dire extremity, fallen away from the path of virtue. But how was she to write the letter?

When she reached her father he complained of her absence, and almost scolded her for having been so long at the cottage. 'I cannot see', said he, 'what you find in that woman to make so much of her.'

'She is the only neighbour I have, papa.'

'And better none than her, if all that people say of her is true.'

'All that people say is never true, papa.'

'There is no smoke without fire. I am not at all sure that it's good for you to be so much with her.'

'Oh, papa don't treat me like a child.'

'And I'm sure it's not good for me that you should be so much away. For anything I have seen of you all day you might have been at Perivale. But you are going soon, altogether, so I suppose I may as well make up my mind to it.'

'I'm not going for a long time yet, papa.'

'What do you mean by that?'

'I mean that there's nothing to take me away from here at present.'

'You are engaged to be married.'

'But it will be a long engagement. It is one of those engagements in which neither party is very anxious for an immediate change.' There was something bitter in Clara's tone as she said this, which the old man perceived, but could only half understand. Clara remained with him then for the rest of the day, going down-stairs for five minutes to her dinner, and then returning to him and reading aloud while he dozed. Her winter evenings at Belton Castle were not very bright, but she was used to them and made no complaint.

When she left her father for the night she got out her desk and prepared herself for her letter to her lover. She was determined that it should be finished that night before she went to bed. And it was so finished; though the writing of it gave her much labour, and occupied her till the late hours had come upon her. When completed it was as follows:

'Belton Castle,

Thursday Night.

Page 156

Dear Frederic I received your letter last Sunday, but I could not answer it sooner, as it required much consideration, and also some information which I have only obtained today. About the plan of living at Perivale I will not say much now, as my mind is so full of other things. I think, however, I may promise that I will never make any needless difficulty as to your plans. My cousin Will left us on Monday, so your mother need not have any further anxiety on that head. It does papa good to have him here, and for that reason I am sorry that he has gone. I can assure you that I don't think what you said about him meant anything at all particular. Will is my nearest cousin, and of course you would be glad that I should like him which I do, very much.

And now about the other subject, which I own has distressed me, as you supposed it would I mean about Mrs Askerton. I find it very difficult in your letter to divide what comes from your mother and what from yourself. Of course I want to make the division, as every word from you has great weight with me. At present I don't know Lady Aylmer personally, and I cannot think of her as I do of you. Indeed, were I to know her ever so well, I could not have the same deference for her that I have for the man who is to be my husband. I only say this, as I fear that Lady Aylmer and I may not perhaps agree about Mrs Askerton.

I find that your story about Mrs Askerton is in the main true. But the person who told it you does not seem to have known any of the provocations which she received. She was very badly treated by Captain Berdmore, who, I am afraid, was a terrible drunkard; and at last she found it impossible to stay with him. So she went away. I cannot tell you how horrid it all was, but I am sure that if I could make you understand it, it would go a long way in inducing you to excuse her. She was married to Colonel Askerton as soon as Captain Berdmore died, and this took place before she came to Belton. I hope you will remember that. It all occurred out in India, and I really hardly know what business we have to inquire about it now.

At any rate, as I have been acquainted with her a long time, and very intimately, and as I am sure that she has repented of anything that has been wrong, I do not think that I ought to quarrel with her now. Indeed I have promised her that I will not. I think I owe it you to tell you the whole truth, and that is the truth.

Pray give my regards to your mother, and tell her that I am sure she would judge differently if she were in my place. This poor woman has no other friend here; and who am I, that I should take upon myself to condemn her? I cannot do it. Dear Frederic, pray do not be angry with me for asserting my own will in this matter. I think you would wish me to have an opinion of my own. In my present position I am bound to have one, as I am, as yet, responsible for what I do myself. I shall be very, very sorry, if I find that you differ from me; but still I cannot be made to think that I am wrong. I wish you were here, that we might talk it over together, as I think that in that case you would agree with me.

Page 157

If you can manage to come to us at Easter, or any other time when Parliament does not keep you in London, we shall be so delighted to see you.

Dear Frederic,

Yours very affectionately,

Clara Amedroz.'

CHAPTER XI

MISS AMEDROZ HAS ANOTHER CHANCE

It was on a Sunday morning that Clara's letter reached Aylmer Park, and Frederic Aylmer found it on his plate as he took his place at the breakfast-table. Domestic habits at Aylmer Park had grown with the growth of years till they had become adamant, and domestic habits required prayers every morning at a quarter before nine o'clock. At twenty minutes before nine Lady Aylmer would always be in the dining-room to make the tea and open the post-bag, and as she was always there alone, she knew more about other people's letters than other people ever knew about hers. When these operations were over she rang the bell, and the servants of the family, who by that time had already formed themselves into line in the hail, would march in, and settle themselves on benches prepared for them near the sideboard which benches were afterwards carried away by the retiring procession. Lady Aylmer herself always read prayers, as Sir Anthony never appeared till the middle of breakfast. Belinda would usually come down in a scurry as she heard her mother's bell, in such a way as to put the army in the hail to some confusion; but Frederic Aylmer, when he was at home, rarely entered the room till after the service was over. At Perivale no doubt he was more strict in his conduct; but then at Perivale he had special interests and influences which were wanting to him at Aylmer Park. During those five minutes Lady Aylmer would deal round the letters to the several plates of the inmates of her house not without looking at the post-office marks upon them; and on this occasion she had dealt a letter from Clara to her son.

The arrival of the letter was announced to Frederic Aylmer before he took his seat.

'Frederic,' said her ladyship, in her most portentous voice, 'I am glad to say that at last there is a letter from Belton.'

He made no immediate reply, but making his way slowly to his place, took up the little packet, turned it over in his hand, and then put it into his pocket. Having done this, he began very slowly with his tea and egg. For three minutes his mother was contented to make, or to pretend to make, some effort in the same direction. Then her impatience became too much for her, and she began to question him.

‘Will you not read it, Frederic?’

‘Of course I shall, ma’am.’

‘But why not do so now, when you know how anxious we are?’

‘There are letters which one would sooner read in private.’

‘But when a matter is of so much importance ,’ said Belinda.

‘The importance, Bel, is to me, and not to you,’ said her brother.

Page 158

'All we want to know is,' continued the sister, 'that she promises to be guided by you in this matter; and of course we feel quite sure that she will.'

'If you are quite sure that must be sufficient for you.'

'I really think you need not quarrel with your sister,' said Lady Aylmer, 'because she is anxious as to the the respectability, I must say, for there is no other word, of a young lady whom you propose to make your wife. I can assure you that I am very anxious myself very anxious indeed.'

Captain Aylmer made no answer to this, but he did not take the letter from his pocket. He drank his tea in silence, and in silence sent up his cup to be refilled. In silence also was it returned to him. He ate his two eggs and his three bits of toast, according to his custom, and when he had finished, sat out his three or four minutes as was usual. Then he got up to retire to his room, with the envelope still unbroken in his pocket.

'You will go to church with us, I suppose?' said Lady Aylmer.

'I won't promise, ma'am; but if I do, I'll walk across the park so that you need not wait for me.'

Then both the mother and sister knew that the Member for Perivale did not intend to go to church on that occasion. To morning service Sir Anthony always went, the habits of Aylmer Park having in them more of adamant in reference to him than they had as regarded his son.

When the father, mother, and daughter returned, Captain Aylmer had read his letter, and bad, after doing so, received further tidings from Belton Castle further tidings which for the moment prevented the necessity of any reference to the letter, and almost drove it from his own thoughts. When his mother entered the library he was standing before the fire with a scrap of paper in his hand.

'Since you have been at church there has come a telegraphic message,' he said.

'What is it, Frederic? Do not frighten me if you can avoid it!'

'You need not be frightened, ma'am, for you did not know him. Mr Amedroz is dead.'

'No!' said Lady Aylmer, seating herself.

'Dead!' said Belinda, holding up her hands.

'God bless my soul!' said the baronet, who had now followed the ladies into the room. 'Dead! Why, Fred, he was five years younger than I am!'

Then Captain Aylmer read the words of the message ' Mr Amedroz died this morning at five o'clock. I have sent word to the lawyer and to Mr Belton.'

'Who does it come from?' asked Lady Aylmer.

'From Colonel Askerton.'

Lady Aylmer paused, and shook her head, and moved her foot uneasily upon the carpet. The tidings, as far as they went, might be unexceptionable, but the source from whence they had come had evidently polluted them in her ladyship's judgment. Then she uttered a series of inter-ejaculations, expressions of mingled sorrow and anger.

'There was no one else near her,' said Captain Aylmer apologetically.

Page 159

'Is there no clergyman in the parish?'

'He lives a long way off. The message had to be sent at once.'

'Are there no servants in the house? It looks it looks . But I am the last person in the world to form a harsh judgment of a young woman at such a moment as this. What did she say in her letter, Fred?'

Captain Aylmer had devoted two hours of consideration to the letter before the telegram had come to relieve his mind by a fresh subject, and in those two hours he had not been able to extract much of comfort out of the document. It was, as he felt, a stubborn, stiff-necked, disobedient, almost rebellious letter. It contained a manifest defiance of his mother, and exhibited doctrines of most questionable morality. It had become to him a matter of doubt whether he could possibly marry a woman who could entertain such ideas and write such a letter. If the doubt was to be decided in his own mind against Clara, he had better show the letter at once to his mother, and allow her ladyship to fight the battle for him a task which, as he well knew, her ladyship would not be slow to undertake. But he had not succeeded in answering the question satisfactorily to himself when the telegram arrived and diverted all his thoughts. Now that Mr Amedroz was dead, the whole thing might be different. Clara would come away from Belton and Mrs Askerton, and begin life, as it were, afresh It seemed as though in such an emergency she ought to have another chance; and therefore he did not hasten to pronounce his judgment. Lady Aylmer also felt something of this, and forbore to press her question when it was not answered.

'She will have to leave Belton now, I suppose?' said Sir Anthony.

'The property will belong to a distant cousin a Mr William Belton.'

'And where will she go?' said Lady Aylmer. 'I suppose she has no place that she can call her home?'

'Would it not be a good thing to ask her here?' said Belinda. Such a question as that was very rash on the part of Miss Aylmer. In the first place, the selection of guests for Aylmer Park was rarely left to her; and in this special case she should have understood that such a proposal should have been fully considered by Lady Aylmer before it reached Frederic's ears.

'I think it would be a very good plan,' said Captain Aylmer, generously.

Lady Aylmer shook her head. 'I should like much to know what she has said about that unfortunate connexion before I offer to take her by the hand myself. I'm sure Fred will feel that I ought to do so.'



But Fred retreated from the room without showing the letter. He retreated from the room and betook himself to solitude, that he might again endeavour to make up his mind as to what he would do. He put on his hat and his great-coat and gloves, and went off without his luncheon that he might consider it all. Clara Amedroz had now no home and, indeed, very little means of providing one. If he intended

Page 160

that she should be his wife, he must furnish her with a home at once. It seemed to him that three houses might possibly be open to her of which one, the only one which under such circumstances would be proper, was Aylmer Park. The other two were Plaistow Hall and Mrs Askerton's cottage at Belton. As to the latter should she ever take shelter there, everything must be over between him and her. On that point there could be no doubt. He could not bring himself to marry a wife out of Mrs Askerton's drawing-room, nor could he expect his mother to receive a young woman brought into the family under such circumstances. And Plaistow Hall was almost as bad. It was as bad to him, though it would, perhaps, be less objectionable in the eyes of Lady Aylmer. Should Clara go to Plaistow Hall there must be an end to everything. Of that also he taught himself to be quite certain. Then he took out Clara's letter and read it again. She acknowledged the story about the woman to be true such a story as it was too and yet refused to quarrel with the woman had absolutely promised the woman not to quarrel with her! Then he read and re-read the passage in which Clara claimed the right of forming her own opinion in such matters. Nothing could be more indelicate nothing more unfit for his wife. He began to think that he had better show the letter to his mother, and acknowledge that the match must be broken off. That softening of his heart which had followed upon the receipt of the telegraphic message departed from him as he dwelt upon the stubborn, stiff-necked, unfeminine obstinacy of the letter. Then he remembered that nothing had as yet been done towards putting his aunt's fifteen hundred pounds absolutely into Clara's hands; and he remembered also that she might at the present moment be in great want. William Belton might, not improbably, assist her in her want, and this idea was wormwood to him in spite of his almost formed resolution to give up his own claims. He calculated that the income arising from fifteen hundred pounds would be very small, and he wished that he had counselled his aunt to double the legacy. He thought very much about the amount of the money and the way in which it might be best expended, and was, after his cold fashion, really solicitous as to Clara's welfare. If he could have fashioned her future life, and his own too, in accordance with his own now existing wishes, I think he would have arranged that neither of them should marry at all, and that to him should be assigned the duty and care of being Clara's protector with full permission to tell her his mind as often as he pleased on the subject of Mrs Askerton. Then he went in and wrote a note to Mr Green, the lawyer, desiring that the interest of the fifteen hundred pounds for one year might be at once remitted to Miss Amedroz. He knew that he ought to write to her himself immediately, without loss of a post; but how was he to write while things were in their present position? Were he now to condole with her on her father's death, without any reference to the great Askerton iniquity, he would thereby be condoning all that was past, and acknowledging the truth and propriety of her arguments. And he would be doing even worse than that. He would be cutting the ground absolutely from beneath his own feet as regarded that escape from his engagement which he was contemplating.

Page 161

What a cold-hearted, ungenerous wretch he must have been! That will be the verdict against him. But the verdict will be untrue. Cold-hearted and ungenerous he was; but he was no wretch as men and women are now-a-days called wretches. He was chilly hearted, but yet quite capable of enough love to make him a good son, a good husband, and a good father too. And though he was ungenerous from the nature of his temperament, he was not close-fisted or over covetous. And he was a just man, desirous of obtaining nothing that was not fairly his own. But, in truth, the artists have been so much in the habit of painting for us our friends' faces without any of those flaws and blotches with which work and high living are apt to disfigure us, that we turn in disgust from a portrait in which the roughnesses and pimples are made apparent.

But it was essential that he should now do something, and before he sat down to dinner he did show Clara's letter to his mother. 'Mother,' he said, as he sat himself down in her little room upstairs and she knew well by the tone of his voice, and by the mode of his address, that there was to be a solemn occasion, and a serious deliberative council on the present existing family difficulty 'mother, of course I have intended to let you know what is the nature of Clara's answer to my letter.'

'I am glad there is to be no secret between us, Frederic. You know how I dislike secrets in families.' As she said this she took the letter out of her son's hands with an eagerness that was almost greedy. As she read it, he stood over her, watching her eyes, as they made their way down the first page and on to the second, and across to the third, and so, gradually on, till the whole reading was accomplished. What Clara had written about her Cousin Will, Lady Aylmer did not quite understand; and on this point now she was so little anxious that she passed over that portion of the letter readily. But when she came to Mrs Askerton and the allusions to herself, she took care to comprehend the meaning and weight of every word. 'Divide your words and mine! Why should we want to divide them? Not agree with me about Mrs Askerton! How is it possible that any decent young woman should not agree with me! It is a matter in which there is no room for a doubt. True the story true! Of course it is true. Does she not know that it would not have reached her from Aylmer Park if it were not true? Provocation! Badly treated! Went away! Married to Colonel Askerton as soon as Captain Berdmore died! Why, Frederic, she cannot have been taught to understand the first principle of morals in life! And she that was so much with my poor sister! Well, well!' The reader should understand that the late Mrs Winterfield and Lady Aylmer had never been able to agree with each other on religious subjects. 'Remember that they are married. Why should we remember anything of the kind? It does not make an atom of difference to the woman's character. Repented!

Page 162

How can Clara say whether she has repented or not? But that has nothing to do with it. Not quarrel with her as she calls it! Not give her up! Then, Frederic, of course it must be all over, as far as you are concerned.' When she had finished her reading, she returned the letter, still open, to her son, shaking her head almost triumphantly. As far as I am a judge of a young woman's character, I can only give you one counsel,' said Lady Aylmer solemnly.

'I think that she should have another chance,' said Captain Aylmer.

'What other chance can you give her? It seems to me that she is obstinately bent on her own destruction.'

'You might ask her to come here, as Belinda suggested.'

'Belinda was very foolish to suggest anything of the kind without more consideration.'

'I suppose that my future wife would be made welcome here?'

'Yes, Frederic, certainly. I do not know who could be more welcome. But is she to be your wife?'

'We are engaged.'

'But does not that letter break any engagement? Is there not enough in that to make such a marriage quite out of the question? What do you think about it yourself, Frederic?'

'I think that she should have another chance.'

What would Clara have thought of all this herself if she could have heard the conversation between Lady Aylmer and her betrothed husband, and have known that her lover was proposing to give her 'another chance?' But it is lucky for us that we seldom know what our best friends say on our behalf, when they discuss us and our faults behind our backs.

'What chance, Frederic, can she have? She knows all about this horrid woman, and yet refuses to give her up! What chance can she have after that?'

'I think that you might have her here and talk to her.' Lady Aylmer, in answer to this, simply shook her head. And I think she was right in supposing that such shaking of her head was a sufficient reply to her son's proposition. What talking could possibly be of service to such a one as this Miss Amedroz? Why should she throw her pearls before

swine? 'We must either ask her to come here, or else I must go to her,' said Captain Aylmer.

'I don't see that at all, Frederic.'

'I think it must be so. As she is situated at present she has got no home; and I think it would be very horrid that she should be driven into that woman's house, simply because she has no other shelter for her head.'

'I suppose she can remain where she is for the present?

'She is all alone, you know; and it must be very gloomy and her cousin can turn her out at a moment's notice.'

'But that would not entitle her to come here, unless'

'No I quite understand that. But you cannot wonder that I should feel the hardship of her position.'

'Who is to be blamed if it be hard? You see, Frederic, I take my standing upon that letter her own letter. How am I to ask a young woman into my house who declares openly that my opinion on such a matter goes for nothing with her? How am I to do it? That's what I ask you. How am I to do it? It's all very well for Belinda to suggest this and that. But how am I to do it? That's what I want to know.'

Page 163

But at last Lady Aylmer managed to answer the question for herself, and did do it. But this was not done on that Sunday afternoon, nor on the Monday, nor on the Tuesday. The question was closely debated, and at last the anxious mother perceived that the giving of the invitation would be more safe than withholding it. Captain Aylmer at last expressed his determination to go to Belton unless the invitation were given; and then, should he do that, there might be danger that he would never be again seen at Aylmer Park till he brought Clara Amedroz with him as his wife. The position was one of great difficulty, but the interests at stake were so immense that something must be risked. It might be that Clara would not come when invited, and in that case her obstinacy would be a great point gained. And if she came ! Well; Lady Aylmer admitted to herself that the game would be difficult and very troublesome; but yet it might be played, and perhaps won. Lady Aylmer was a woman who had great confidence in herself. Not so utterly had victory in such contests deserted her hands, that she need fear to break a lance with Miss Amedroz beneath her own roof, when the occasion was so pressing.

The invitation was therefore sent in a note written by herself, and was enclosed in a letter from her son. After much consultation and many doubts on the subject, it was at last agreed that nothing further should now be urged about Mrs Askerton. 'She shall have her chance,' said Lady Aylmer over and over again, repeating her son's words. 'She shall have her chance.' Lady Aylmer, therefore, in her note, confined herself strictly to the giving of the invitation, and to a suggestion that, as Clara had now no settled home of her own, a temporary sojourn at Aylmer Park might be expedient. And Captain Aylmer in his letter hardly said much more. He knew, as he wrote the words, that they were cold and comfortless, and that he ought on such an occasion to have written words that should have been warm at any rate, even though they might not have contained comfort. But, to have written with affection, he should have written at once, and he had postponed his letter from the Sunday till the Wednesday. It had been absolutely necessary that that important question as to the invitation should be answered before he could write at all.

When all this was settled he went up to London; and there was an understanding between him and his mother that he should return to Aylmer Park with Clara, in the event of her acceptance of the invitation.

'You won't go down to Belton for her?' said the mother.

'No I do not think that will be necessary,' said the son.

'I should think not,' said the mother.

CHAPTER XX

WILLIAM BELTON DOES NOT GO OUT HUNTING

Page 164

We will now follow the other message which was sent down into Norfolk, and which did not get into Belton's hands till the Monday morning. He was sitting with his sister at breakfast, and was prepared for hunting, when the paper was brought into the room. Telegraphic messages were not very common at Plaistow Hall, and on the arrival of any that had as yet reached that house, something of that awe had been felt with which such missives were always accompanied in their earliest days. 'A telegruff message, mum, for Mr William,' said the maid, looking at her mistress with eyes opened wide, as she handed the important bit of paper to her master. Will opened it rapidly, laying down the knife and fork with which he was about to operate upon a ham before him. He was dressed in boots and breeches, and a scarlet coat in which garb he was, in his sister's eyes, the most handsome man in Norfolk.

'Oh, Mary!' he exclaimed.

'What is it, Will?'

'Mr Amedroz is dead.'

Miss Belton put out her hand for the paper before she spoke again, as though she could better appreciate the truth of what she heard when reading it herself on the telegraph slip than she had done from her brother's words. 'How sudden! how terribly sudden!' she said.

'Sudden indeed. When I left him he was not well, certainly, but I should have said that he might have lived for twenty years. Poor old man! I can hardly say why it was so, but I had taken a liking to him.'

'You take a liking to everybody, Will.'

'No I don't. I know people I don't like.' Will Belton as he said this was thinking of Captain Aylmer, and he pressed the heel of his boot hard against the floor.

'And Mr Amedroz is dead! It seems to be so terribly sudden. What will she do, Will?'

'That's what I'm thinking about.'

'Of course you are, my dear. I can see that. I wish I wish'

'It's no good wishing anything, Mary. I don't think wishing ever did any good yet. If I might have my wish, I shouldn't know how to have it.'

'I was wishing that you didn't think so much about it.'

'You need not be troubled about me. I shall do very well. But what is to become of her now at once? Might she not come here? You are now the nearest female relation that she has.'

Mary looked at him with her anxious, painful eyes, and he knew by her look that she did not approve of his plan. 'I could go away,' he continued. 'She could come to you without being troubled by seeing me.'

'And where would you go, Will?'

'What does it matter? To the devil, I suppose.'

'Oh, Will, Will!'

Page 165

'You know what I mean. I'd go anywhere. Where is she to find a home till till she is married?' He had paused at the word; but was determined not to shrink from it, and bolted it out in a loud, sharp tone so that both he and she recognized all the meaning of the word all that was conveyed in the idea. He hated himself when he endeavoured to conceal from his own mind any of the misery that was coming upon him. He loved her. He could not get over it. The passion was on him like a palsy, for the shaking off of which no sufficient physical energy was left to him. It clung to him in his goings out and comings in with a painful, wearing tenacity, against which he would now and again struggle, swearing that it should be so no longer but against which he always struggled in vain. It was with him when he was hunting. He was ever thinking of it when the bird rose before his gun. As he watched the furrow, as his men and horses would drive it straight and deep through the ground, he was thinking of her and not of the straightness and depth of the furrow, as had been his wont in former years. Then he would turn away his foot, and stand alone in his field, blinded by the salt drops in his eyes, weeping at his own weakness. And when he was quite alone, he would stamp his foot on the ground, and throw abroad his arms, and curse himself. What Nessus's shirt was this that had fallen upon him, and unmanned him from the sole of his foot to the top of his head? He went through the occupations of the week. He hunted, and shot, and gave his orders, and paid his men their wages but he did it all with a palsy of love upon him as he did it. He wanted her, and he could not overcome the want. He could not bear to confess to himself that the thing by which he had set so much store could never belong to him. His sister understood it all, and sometimes he was almost angry with her because of her understanding it. She sympathized with him in all his moods, and sometimes he would shake away her sympathy as though it scalded him. 'Where is she to find a home till till she is married?' he said.

Not a word had as yet been said between them about the property which was now his estate. He was now Belton of Belton, and it must be supposed that both he and she had remembered that it was so. But hitherto not a word had been said between them on that point. Now she was compelled to allude to it. 'Cannot she live at the Castle for the present?

'What all alone?'

'Of course she is remaining there now.'

'Yes,' said he, 'of course she is there now. Now! Why, remember what these telegraphic messages are. He died only on yesterday morning. Of course she is there, but I do not think it can be good that she should remain there. There is no one near her where she is but that Mrs Askerton. It can hardly be good for her to have no other female friend at such a time as this.'

'I do not think that Mrs Askerton will hurt her.'



Page 166

'Mrs Askerton will not hurt her at all and as long as Clara does not know the story, Mrs Askerton may serve as well as another. But yet'

'Can I go to her, Will?'

'No, dearest. The journey would kill you in winter. And he would not like it. We are bound to think of that for her sake cold-hearted, thankless, meagre-minded creature as I know he is.'

'I do not know why he should be so bad.'

'No, nor I. But I know that he is. Never mind. Why should we talk about him? I suppose she'll have to go there to Aylmer Park. I suppose they will send for her, and keep her there till it's all finished. I'll tell you what, Mary I shall give her the place.'

'What Belton Castle?'

'Why not? Will it ever be of any good to you or me? Do you want to go and live there?'

'No, indeed not for myself.'

'And do you think that I could live there? Besides why should she be turned out of her father's house?'

'He would not be mean enough to take it.'

'He would be mean enough for anything. Besides, I should take very good care that it should be settled upon her.'

'That's nonsense, Will it is indeed. You are now William Belton of Belton, and you must remain so.'

'Mary I would sooner be Will Belton with Clara Amedroz by my side to get through the world with me, and not the interest of an acre either at Belton Castle or at Plaistow Hall! And I believe I should be the richer man at the end if there were any good in that.' Then he went out of the room, and she heard him go through the kitchen, and knew that he passed out into the farm-yard, towards the stable, by the back-door. He intended, it seemed, to go on with his hunting in spite of this death which had occurred. She was sorry for it, but she could not venture to stop him. And she was sorry also that nothing had been settled as to the writing of any letter to Clara. She, however, would take upon herself to write while he was gone.

He went straight out towards the stables, hardly conscious of what he was doing or where he was going, and found his hack ready saddled for him in the stall. Then he remembered that he must either go or come to some decision that he would not go.

The horse that he intended to ride had been sent on to the meet, and if he were not to be used, some message must be dispatched as to the animal's return. But Will was half inclined to go, although he knew that the world would judge him to be heartless if he were to go hunting immediately on the receipt of the tidings which had reached him that morning. He thought that he would like to set the world at defiance in this matter. Let Frederic Aylmer go into mourning for the old man who was dead. Let Frederic Aylmer be solicitous for the daughter who was left lonely in the old house. No doubt, he, Will Belton, had inherited the dead man's estate, and should, therefore, in accordance with all the ordinary rules

Page 167

of the world on such matters, submit himself at any rate to the decency of funereal reserve. An heir should not be seen out hunting on the day on which such tidings as to his heritage had reached him. But he did not wish, in his present mood, to be recognized as the heir. He did not want the property. He would have preferred to rid himself altogether of any of the obligations which the ownership of the estate entailed upon him. It was not permitted to him to have the custody of the old squire's daughter, and therefore he was unwilling to meddle with any of the old squire's concerns.

Belton had gone into the stable, and had himself loosed the animal, leading him out into the yard as though he were about to mount him. Then he had given the reins to a stable boy, and had walked away among the farm buildings, not thinking of what he was doing. The lad stood staring at him with open mouth, not at all understanding his master's hesitation. The meet, as the boy knew, was fourteen miles off, and Belton had not allowed himself above an hour and a half for the journey. It was his practice to jump into the saddle and bustle out of the place, as though seconds were important to him. He would look at his watch with accuracy, and measure his pace from spot to spot, as though minutes were too valuable to be lost. But now he wandered away like one distraught, and the stable boy knew that something was wrong. 'I thout he was a thinken of the white cow as choked 'erself with the tunnup that was skipped in the chopping,' said the boy, as he spoke of his master afterwards to the old groom. At last, however, a thought seemed to strike Belton. 'Do you get on Brag,' he said to the boy, 'and ride off to Goldingham Corner, and tell Daniel to bring the horse home again. I shan't hunt today. And I think I shall go away from home. If so, tell him to be sure the horses are out every morning and tell him to stop their beans. I mightn't hunt again for the next month.' Then he returned into the house, and went to the parlour in which his sister was sitting. 'I shan't go out today,' he said.

'I thought you would not, Will,' she answered.

'Not that I see any harm in it.'

'I don't say that there is any harm, but it is as well on such occasions to do as others do.'

'That's humbug, Mary.'

'No, Will; I do not think that. When any practice has become the fixed rule of the society in which we live, it is always wise to adhere to that rule, unless it call upon us to do something that is actually wrong. One should not offend the prejudices of the world, even if one is quite sure that they are prejudices.'

'It hasn't been that that has brought me back, Mary. I'll tell you what. I think I'll go down to Belton after all.'

Page 168

His sister did not know what to say in answer to this. Her chief anxiety was, of course, on behalf of her brother. That he should be made to forget Clara Amedroz, if that were only possible, was her great desire; and his journey at such a time as this down to Belton was not the way to accomplish such forgetting. And then she felt that Clara might very possibly not wish to see him. Had Will simply been her cousin, such a visit might be very well; but he had attempted to be more than her cousin, and therefore it would probably not be well. Captain Aylmer might not like it; and Mary felt herself bound to consider even Captain Aylmer's likings in such a matter. And yet she could not bear to oppose him in anything. 'It would be a very long journey,' she said.

'What does that signify?'

'And then it might so probably be for nothing.'

'Why should it be for nothing?'

'Because '

'Because what? Why don't you speak out? You need not be afraid of hurting me. Nothing that you can say can make it at all worse than it is.'

'Dear Will, I wish I could make it better.'

'But you can't. Nobody can make it either better or worse. I promised her once before that I would go to her when she might be in trouble, and I will be as good as my word. I said I would be a brother to her and so I will. So help me God, I will!' Then he rushed out of the room, striding through the door as though he would knock it down, and hurried up stairs to his own chamber. When there he stripped himself of his hunting things, and dressed himself again with all the expedition in his power; and then he threw a heap of clothes into a large portmanteau, and set himself to work packing as though everything in the world were to depend upon his catching a certain train. And he went to a locked drawer, and taking out a cheque-book, folded it up and put it into his pocket. Then he rang the bell violently; and as he was locking the portmanteau, pressing down the lid with all his weight and all his strength, he ordered that a certain mare should be put into a certain dog-cart and that somebody might be ready to drive over with him to the Downham Station. Within twenty minutes of the time of his rushing upstairs he appeared again before his sister with a greatcoat on, and a railway rug hanging over his arm. 'Do you mean that you are going today?' said she.

'Yes. I'll catch the 11.40 up-train at Downham. What's the good of going unless I go at once? If I can be of any use it will be at the first. It may be that she will have nobody there to do anything for her.'

'There is the clergyman, and Colonel Askerton even if Captain Aylmer has not gone down.'

'The clergyman and Colonel Askerton are nothing to her. And if that man is there I can come back again.'

'You will not quarrel with him?'

'Why should I quarrel with him? What is there to quarrel about? I'm not such a fool as to quarrel with a man because I hate him. If he is there I shall see her for a minute or two, and then I shall come back.'

Page 169

'I know it is no good my trying to dissuade you.'

'None on earth. If you knew it all you would not try to dissuade me. Before I thought of asking her to be my wife and yet I thought of that very soon but before I ever thought of that, I told her that when she wanted a brother's help I would give it her. Of course I was thinking of the property that she shouldn't be turned out of her father's house like a beggar. I hadn't any settled plan then how could I? But I meant her to understand that when her father died I would be the same to her that I am to you. If you were alone, in distress, would I not go to you?'

'But I have no one else, Will,' said she, stretching out her hand to him where he stood.

'That makes no difference,' he replied, almost roughly. A promise is a promise, and I resolved from the first that my promise should hold good in spite of my disappointment. Dear, dear it seems but the other day when I made it and now, already, everything is changed.' As he was speaking the servant entered the room, and told him that the horse and gig were ready for him. 'I shall just do it nicely,' said he, looking at his watch. 'I have over an hour. God bless you, Mary. I shan't be away long. You may be sure of that.'

'I don't suppose you can tell as yet, Will.'

'What should keep me long? I shall see Green as I go by, and that is half of my errand. I dare say I shan't stay above a night down in Somersetshire.'

'You'll have to give some orders about the estate.'

'I shall not say a word on the subject to anybody; that is, not to anybody there. I am going to look after her, and not the estate.' Then he stooped down and kissed his sister, and in another minute was turning the corner out of the farm-yard on to the road at a quick pace, not losing a foot of ground in the turn, in that fashion of rapidity which the horses at Plaistow Hall soon learned from their master. The horse is a closely sympathetic beast, and will make his turns, and do his trottings, and comport himself generally in strict unison with the pulsation of his master's heart. When a horse won't jump it is generally the case that the inner man is declining to jump also, let the outer man seem ever so anxious to accomplish the feat.

Belton, who was generally very communicative with his servants, always talking to any man he might have beside him in his dog-cart about the fields and cattle and tillage around him, said not a word to the boy who accompanied him on this occasion. He had a good many things to settle in his mind before he got to London, and he began upon the work as soon as he had turned the corner out of the farm-yard. As regarded this Belton estate, which was now altogether his own, he had always bad doubts and

qualms qualms of feeling rather than of conscience; and he had, also, always entertained a strong family ambition. His people, ever so far back, had been Beltons of

Page 170

Belton. They told him that his family could be traced back to very early days before the Plantagenets, as he believed, though on this point of the subject he was very hazy in his information and he liked the idea of being the man by whom the family should be reconstructed in its glory. Worldly circumstances had been so kind to him, that he could take up the Belton estate with more of the prestige of wealth than had belonged to any of the owners of the place for many years past. Should it come to pass that living there would be desirable, he could rebuild the old house, and make new gardens, and fit himself out with all the pleasant braveries of a well-to-do English squire. There need be no pinching and scraping, no question whether a carriage would be possible, no doubt as to the prudence of preserving game. All this had given much that was delightful to his prospects. And he had, too, been instigated by a somewhat weak desire to emerge from that farmer's rank into which he knew that many connected with him had supposed him to have sunk. It was true that he farmed land that was half his own and that, even at Plaistow, he was a wealthy man; but Plaistow Hall, with all its comforts, was a farmhouse; and the ambition to be more than a farmer had been strong upon him.

But then there had been the feeling that in taking the Belton estate he would be robbing his Cousin Clara of all that should have been hers. It must be remembered that he had not been brought up in the belief that he would ever become the owner of Belton. All his high ambition in that matter had originated with the wretched death of Clara's brother. Could he bring himself to take it all with pleasure, seeing that it came to him by so sad a chance by a catastrophe so deplorable? When he would think of this, his mind would revolt from its own desires, and he would declare to himself that his inheritance would come to him with a stain of blood upon it. He, indeed, would have been guiltless; but how could he take his pleasure in the shades of Belton without thinking of the tragedy which had given him the property? Such had been the thoughts and desires, mixed in their nature and militating against each other, which had induced him to offer his first visit to his cousin's house. We know what was the effect of that visit, and by what pleasant scheme he had endeavoured to overcome all his difficulties, and so to become master of Belton that Clara Amedroz should also be its mistress. There had been a way which, after two days' intimacy with Clara, seemed to promise him comfort and happiness on all sides. But he had come too late, and that way was closed against him! Now the estate was his, and what was he to do with it? Clara belonged to his rival, and in what way would it become him to treat her? He was still thinking simply of the cruelty of the circumstances which had thrown Captain Aylmer between him and his cousin, when he drove himself up to the railway station at Downham.

Page 171

'Take her back steady, Jem,' he said to the boy.

'I'll be sure to take her wery steady,' Jem answered, 'and tell Compton to have the samples of barley ready for me. I may be back any day, and we shall be sowing early this spring.'

Then he left his cart, followed the porter who had taken his luggage eagerly, knowing that Mr Belton was always good for sixpence, and in five minutes' time he was again in motion.

On his arrival in London he drove at once to the chambers of his friend, Mr Green, and luckily found the lawyer there. Had he missed doing this, it was his intention to go out to his friend's house; and in that case he could not have gone down to Taunton till the next morning; but now he would be able to say what he wished to say, and hear what he wished to hear, and would travel down by the night- mail train. He was anxious that Clara should feel that he had hurried to her without a moment's delay. It would do no good. He knew that. Nothing that he could do would alter her, or be of any service to him. She had accepted this man, and had herself no power of making a change, even if she should wish it. But still there was to him something of gratification in the idea that she should be made to feel that he, Belton, was more instant in his affection, more urgent in his good offices, more anxious to befriend her in her difficulties, than the man whom she had consented to take for her husband. Aylmer would probably go down to Belton, but Will was very anxious to be the first on the ground very anxious though his doing so could be of no use. All this was wrong on his part. He knew that it was wrong, and he abused himself for his own selfishness. But such self-abuse gave him no aid in escaping from his own wickedness. He would, if possible, be at Belton before Captain Aylmer; and he would, if possible, make Clara feel that, though he was not a Member of Parliament, though he was not much given to books, though he was only a farmer, yet he had at any rate as much heart and spirit as the fine gentleman whom she preferred to him.

'I thought I should see you,' said the lawyer; 'but I hardly expected you so soon as this.'

'I ought to have been a day sooner, only we don't get our telegraphic messages on a Sunday.'

He still kept his greatcoat on; and it seemed by his manner that he had no intention of staying where he was above a minute or two.

'You'll come out and dine with me today?' said Mr Green.

'I can't do that, for I shall go down by the mail train.'

'I never saw such a fellow in my life. What good will that do? It is quite right that you should be there in time for the funeral; but I don't suppose he will be buried before this day week.'

But Belton had never thought about the funeral. When he had spoken to his sister of saying but a few words to Clara and then returning, he had forgotten that there would be any such ceremony, or that he would be delayed by any such necessity.

Page 172

'I was not thinking about the funeral,' said Belton. 'You'll only find yourself uncomfortable there.'

'Of course I shall be uncomfortable.'

'You can't do anything about the property, you know.'

'What do you mean by doing anything?' said Belton, in an angry tone.

'You can't very well take possession of the place, at any rate, till after the funeral. It would not be considered the proper thing to do.'

'You think, then, that I'm a bird of prey, smelling the feast from afar off, and hurrying at the dead man's carcase as soon as the breath is out of his body?'

'I don't think anything of the kind, my dear fellow.'

'Yes, you do, or you wouldn't talk to me about doing the proper thing! I don't care a straw about the proper thing! If I find that there's anything to be done tomorrow that can be of any use, I shall do it, though all Somersetshire should think it improper! But I'm not going to look after my own interests!'

'Take off your coat and sit down, Will, and don't look angry at me. I know that you're not greedy, well enough. Tell me what you are going to do, and let me see if I can help you.'

Belton did as he was told; he pulled off his coat and sat himself down by the fire. 'I don't know that you can do anything to help me at least, not as yet. But I must go and see after her. Perhaps she may be all alone.'

'I suppose she is all alone.'

'He hasn't gone down, then?'

'Who Captain Aylmer? No he hasn't gone down, certainly. He is in Yorkshire.'

'I'm glad of that!'

'He won't hurry himself. He never does, I fancy. I had a letter from him this morning about Miss Amedroz.'

'And what did he say?'

'He desired me to send her seventy-five pounds the interest of her aunt's money.'

'Seventy-five pounds!' said Will Belton, contemptuously.

'He thought she might want money at once; and I sent her the cheque today. It will go down by the same train that carries you.'

'Seventy-five pounds! And you are sure that he has not gone himself?'

'It isn't likely that he should have written to me, and passed through London himself, at the same time but it is possible, no doubt. I don't think he even knew the old squire; and there is no reason why he should go to the funeral.'

'No reason at all,' said Belton who felt that Captain Aylmer's presence at the Castle would be an insult to himself. 'I don't know what on earth he should do there except that I think him just the fellow to intrude where he is not wanted.' And yet Will was in his heart despising Captain Aylmer because he had not already hurried down to the assistance of the girl whom he professed to love.

'He is engaged to her, you know,' said the lawyer, in a low voice.

'What difference does that make with such a fellow as he is a cold-blooded fish of a man, who thinks of nothing in the world but being respectable? Engaged to her! Oh, damn him!'

Page 173

'I've not the slightest objection. I don't think, however, that you'll find him at Belton before you. No doubt she will have heard from him; and it strikes me as very possible that she may go to Aylmer Park.'

'What should she go there for?'

'Would it not be the best place for her?'

'No. My house would be the best place for her. I am her nearest relative. Why should she not come to us?'

Mr Green turned round his chair and poked the fire, and fidgeted about for some moments before he answered. 'My dear fellow, you must know that that wouldn't do.' He then said, 'You ought to feel that it wouldn't do you ought indeed.'

'Why shouldn't my sister receive Miss Amedroz as well as that old woman down in Yorkshire?'

'If I may tell you, I will.'

'Of course you may tell me.'

'Because Miss Amedroz is engaged to be married to that old woman's son, and is not engaged to be married to your sister's brother. The thing is done, and what is the good of interfering? As far as she is concerned, a great burden is off your hands.'

'What do you mean by a burden?'

'I mean that her engagement to Captain Aylmer makes it unnecessary for you to suppose that she is in want of any pecuniary assistance. You told me once before that you would feel yourself called upon to see that she wanted nothing.'

'So I do now.'

'But Captain Aylmer will look after that.'

'I tell you what it is, Joe; I mean to settle the Belton property in such a way that she shall have it, and that he shan't be able to touch it. And it shall go to some one who shall have my name William Belton. That's what I want you to arrange for me.'

'After you are dead, you mean.'

'I mean now, at once. I won't take the estate from her. I hate the place and everything belonging to it. I don't mean her. There is no reason for hating her.'



'My dear Will, you are talking nonsense.'

'Why is it nonsense? I may give what belongs to me to whom I please.'

'You can do nothing of the kind at any rate, not by my assistance. You talk as though the world were all over with you as though you were never to be married or have any children of your own.'

'I shall never marry.'

'Nonsense, Will. Don't make such an ass of yourself as to suppose that you'll not get over such a thing as this. You'll be married and have a dozen children yet to provide for. Let the eldest have Belton Castle, and everything will go on then in the proper way.'

Belton had now got the poker into his hands, and sat silent for some time, knocking the coals about. Then he got up, and took his hat, and put on his coat. Of course I can't make you understand me,' he said; at any rate not all at once. I'm not such a fool as to want to give up my property just because a girl is going to be married to a man I don't like. I'm not such an ass as to give him my estate for such a reason as that for it will be giving it to him, let me tie it up as I may. But I've a feeling about it which makes it impossible for me to take it. How would you like to get a thing by another fellow having destroyed himself

Page 174

'You can't help that. It's yours by law.'

'Of course it is. I know that. And as it's mine I can do what I like with it. Well good-bye. When I've got anything to say, I'll write.' Then he went down to his cab and had himself driven to the Great Western Railway Hotel.

Captain Aylmer had sent to his betrothed seventy-five pounds; the exact interest at five per cent, for one year of the sum which his aunt had left her. This was the first subject of which Belton thought when he found himself again in the railway carriage, and he continued thinking of it half the way down to Taunton. Seventy-five pounds! As though this favoured lover were prepared to give her exactly her due, and nothing more than her due! Had he been so placed, he, Will Belton, what would he have done? Seventy-five pounds might have been more money than she would have wanted, for he would have taken her to his own house to his own bosom as soon as she would have permitted, and would have so laboured on her behalf, taking from her shoulders all money troubles, that there would have been no question as to principal or interest between them. At any rate he would not have confined himself to sending to her the exact sum which was her due. But then Aylmer was a cold-blooded man more like a fish than a man. Belton told himself over and over again that he had discovered that at the single glance which he had had when he saw Captain Aylmer in Green's chambers. Seventy-five pounds indeed! He himself was prepared to give his whole estate to her, if she would take it even though she would not marry him, even though she was going to throw herself away upon that fish! Then he felt somewhat as Hamlet did when he jumped upon Laertes at the grave of Ophelia. Send her seventy-five pounds indeed, while he was ready to drink up Esil for her, or to make over to her the whole Belton estate, and thus abandon the idea for ever of being Belton of Belton!

He reached Taunton in the middle of the night during the small hours of the morning in a winter night; but yet he could not bring himself to go to bed. So he knocked up an ostler at the nearest inn, and ordered out a gig. He would go down to the village of Redicote, on the Minehead road, and put up at the public-house there. He could not now have himself driven at once to Belton Castle, as he would have done had the old squire been alive. He fancied that his presence would be a nuisance if he did so. So he went to the little inn at Redicote, reaching that place between four and five o'clock in the morning; and very uncomfortable he was when he got there. But in his present frame of mind he preferred discomfort. He liked being tired and cold, and felt, when he was put into a chill room, without fire, and with a sanded floor, that things with him were as they ought to be.

Yes he could have a fly over to Belton Castle after breakfast. Having learned so much, and ordered a dish of eggs and bacon for his morning's breakfast, he went upstairs to a miserable little bedroom, to dress himself after his night's journey.



Page 175

CHAPTER XXI

MRS ASKERTON'S GENEROSITY

The death of the old man at Belton Castle had been very sudden. At three o'clock in the morning Clara had been called into his room, and at five o'clock she was alone in the world having neither father, mother, nor brother; without a home, without a shilling that she could call her own with no hope as to her future life, if as she had so much reason to suppose Captain Aylmer should have chosen to accept her last letter as a ground for permanent separation. But at this moment, on this saddest morning, she did not care much for that chance. It seemed to be almost indifferent to her, that question of Lady Aylmer and her anger. The more that she was absolutely in need of external friendship, the more disposed was she to reject it, and to declare to herself that she was prepared to stand alone in the world.

For the last week she had understood from the doctor that her father was in truth sinking, and that she might hardly hope ever to see him again convalescent. She had therefore in some sort prepared herself for her loneliness, and anticipated the misery of her position. As soon as it was known to the women in the room that life had left the old man, one of them had taken her by the hand and led her back to her own chamber. 'Now, Miss Clara, you had better lie down on the bed again you had indeed; you can do nothing sitting up.' She took the old woman's advice, and allowed them to do with her as they would. It was true that there was no longer any work by which she could make herself useful in that house in that house, or, as far as she could see, in any other. Yes; she would go to bed, and lying there would feel how convenient it would be for many persons if she also could be taken away to her long rest, as her father, and aunt, and brother had been taken before her.

Her name and family had been unfortunate, and it would be well that there should be no Amedroz left to trouble those more fortunate persons who were to come after them. In her sorrow and bitterness she included both her Cousin Will and Captain Aylmer among those more fortunate ones for whose sake it might be well that she should be made to vanish from off the earth. She had read Captain Aylmer's letter over and over again since she had answered it, and had read nearly as often the copy of her own reply and had told herself, as she read them, that of course he would not forgive her. He might perhaps pardon her, if she would submit to him in everything; but that she would not submit to his commands respecting Mrs Askerton she was fully resolved and, therefore, there could be no hope. Then, when she remembered how lately her dear father's spirit had fled, she hated herself for having allowed her mind to dwell on any thing beyond her loss of him.

Page 176

She was still in her bedroom, having fallen into that half-waking slumber which the numbness of sorrow so often produces, when word was brought to her that Mrs Askerton was in the house. It was the first time that Mrs Askerton had ever crossed the door, and the remembrance that it was so came upon her at once. During her father's lifetime it had seemed to be understood that their neighbour should have no admittance there but now now that her father was gone the barrier was to be overthrown. And why not? Why should not Mrs Askerton come to her? Why, if Mrs Askerton chose to be kind to her, should she not altogether throw herself into her friend's arms? Of course her doing so would give mortal offence to everybody at Aylmer Park; but why need she stop to think of that? She had already made up her mind that she would not obey orders from Aylmer Park on this subject.

She had not seen Mrs Askerton since that interview between them which was described some few chapters back. Then everything had been told between them, so that there was no longer any mystery either on the one side or on the other. Then Clara had assured her friend of her loving friendship in spite of any edicts to the contrary which might come from Aylmer Park; and after that what could be more natural than that Mrs Askerton should come to her in her sorrow? 'She says she'll come up to you if you'll let her,' said the servant. But Clara declined this proposition, and in a few minutes went down to the small parlour in which she had lately lived, and where she found her visitor.

'My poor dear, this has been very sudden,' said Mrs Askerton.

'Very sudden very sudden. And yet, now that he has gone, I know that I expected it.'

'Of course I came to you as soon as I heard of it, because I knew you were all alone. If there had been any one else I should not have come.'

'It is very good of you.'

'Colonel Askerton thought that perhaps he had better come. I told him of all that which we said to each other the other day. He thought at first that it would be better that I should not see you.'

'It was very good of you to come,' said Clara again, and as she spoke she put out her hand and took Mrs Askerton's continuing to hold it for awhile; 'very good indeed.'

'I told him that I could not but go down to you that I thought you would not understand it if I stayed away.'

'At any rate it was good of you to come to me.'

'I don't believe,' said Mrs Askerton, 'that what people call consolation is ever of any use. It is a terrible thing to lose a father.'



'Very terrible. Ah, dear, I have hardly yet found out how sad it is. As yet I have only been thinking of myself, and wishing that I could be with him.'

'Nay, Clara.'

'How can I help it? What am I to do? Or where am I to go? Of what use is life to such a one as me? And for him who would dare to wish him back again? When people have fallen and gone down in the world, it is bad for them to go on living. Everything is a trouble, and there is nothing but vexation.'

Page 177

'Think what I have suffered, dear.'

'But you have had somebody to care for you somebody whom you could trust.'

'And have not you?'

'No; no one.'

'What do you mean, Clara?'

'I mean what I say. I have no one. It is no use asking questions not now, at such a time as this. And I did not mean to complain. Complaining is weak and foolish. I have often told myself that I could bear anything, and so I will. When I can bring myself to think of what I have lost in my father I shall be better, even though I shall be more sorrowful. As it is, I hate myself for being so selfish.'

'You will let me come and stay with you today, will you not?'

'No, dear; not today.'

'Why not today, Clara?'

'I shall be better alone. I have so many things to think of.'

'I know well that it would be better that you should not be alone much better. But I will not press it. I cannot insist with you as another woman would.'

'You are wrong there; quite wrong. I would be led by you sooner than by any woman living. What other woman is there to whom I would listen for a moment?' As she said this, even in the depth of her sorrow she thought of Lady Aylmer, and strengthened herself in her resolution to rebel against her lover's mother. Then she continued, 'I wish I knew my Cousin Mary Mary Bolton; but I have never seen her.'

'Is she nice?'

'So Will tells me; and I know that what he says must be true even about his sister.'

'Will, Will! You are always thinking of your Cousin Will. If he be really so good he will show it now.'

'How can he show it? What can he do?'

'Does he not inherit all the property?'

'Of course he does. And what of that? When I say that I have no friend I am not thinking of my poverty.'

'If he has that regard for you which he pretends, he can do much to assist you. Why should he not come here at once?'

'God forbid.'

'Why? Why do you say so? He is your nearest relative.'

'If you do not understand I cannot explain.'

'Has he been told what has happened?' Mrs Askerton asked.

'Colonel Askerton sent a message to him, I believe.'

'And to Captain Aylmer also?'

'Yes; and to Captain Aylmer. It was Colonel Askerton who sent it.'

'Then he will come, of course.'

'I think not. Why should he come? He did not even know poor papa.'

'But, my dear Clara, has he not known you?'

'You will see that he will not come. And I tell you beforehand that he will be right to stay away. Indeed, I do not know how he could come and I do not want him here.'

'I cannot understand you, Clara.'

'I suppose not. I cannot very well understand myself.'

'I should not be at all surprised if Lady Aylmer were to come herself.'

Page 178

'Oh, heavens! How little you can know of Lady Aylmer's position and character!'

'But if she is to be your mother-in-law?'

'And even if she were! The idea of Lady Aylmer coming away from Aylmer Park all the way from Yorkshire, to such a house as this! If they told me that the Queen was coming it would hardly disconcert me more. But, dear, there is no danger of that at least.'

'I do not know what may have passed between you and him; but unless there has been some quarrel he will come. That is, he will do so if he is at all like any men whom I have known.'

'He will not come.'

Then Mrs Askerton made some half-whispered offers of services to be rendered by Colonel Askerton, and soon afterwards took her leave, having first asked permission to come again in the afternoon, and when that was declined, having promised to return on the following morning. As she walked back to the cottage she could not but think more of Clara's engagement to Captain Aylmer than she did of the squire's death. As regarded herself, of course she could not grieve for Mr Amedroz; and as regarded Clara, Clara's father had for some time past been apparently so insignificant, even in his own house, that it was difficult to acknowledge the fact that the death of such a one as he might leave a great blank in the world. But what had Clara meant by declaring so emphatically that Captain Aylmer would not visit Belton, and by speaking of herself as one who had neither position nor friends in the world? If there had been a quarrel, indeed, then it was sufficiently intelligible and if there was any such quarrel, from what source must it have arisen? Mrs Askerton felt the blood rise to her cheeks as she thought of this, and told herself that there could be but one such source. Mrs Askerton knew that Clara had received orders from Aylmer Castle to discontinue all acquaintance with herself, and, therefore, there could be no doubt as to the cause of the quarrel. It had come to this then, that Clara was to lose her husband because she was true to her friend; or rather because she would not consent to cast an additional stone at one who for some years past had become a mark for many stones.

I am not prepared to say that Mrs Askerton was a high-minded woman. Misfortunes had come upon her in life of a sort which are too apt to quench high nobility of mind in woman. There are calamities which, by their natural tendencies, elevate the character of women and add strength to the growth of feminine virtues but then, again, there are other calamities which few women can bear without some degradation, without some injury to that delicacy and tenderness which is essentially necessary to make a woman charming as a woman. In this, I think, the world is harder to women than to men; that a woman often loses much by the chance of adverse circumstances which a man only loses by his own misconduct. That there are women whom no calamity can degrade is true enough

Page 179

and so it is true that there are some men who are heroes; but such are exceptions both among men and women. Not such a one had Mrs Askerton been. Calamity had come upon her partly, indeed, by her own fault, though that might have been pardoned but the weight of her misfortunes had been too great for her strength, and she had become in some degree hardened by what she had endured; if not unfeminine, still she was feminine in an inferior degree, with womanly feelings of a lower order. And she had learned to intrigue, not being desirous of gaining aught by dishonest intriguing, but believing that she could only hold her own by carrying on her battle after that fashion. In all this I am speaking of the general character of the woman, and am not alluding to the one sin which she had committed. Thus, when she had first become acquainted with Miss Amedroz, her conscience had not rebuked her in that she was deceiving her new friend. When asked casually in conversation as to her maiden name, she had not blushed as she answered the question with a falsehood. When, unfortunately, the name of her first husband had in some way made itself known to Clara, she had been ready again with some prepared fib. And when she had recognized William Belton, she had thought that the danger to herself of having any one near her who might know her quite justified her in endeavouring to create ill-will between Clara and her cousin. 'Self-preservation is the first law of nature,' she would have said; and would have failed to remember, as she did always fail to remember that nature does not require by any of its laws that self-preservation should be aided by falsehood.

But though she was not high-minded, so also was she not ungenerous; and now, as she began to understand that Clara was sacrificing herself because of that promise which had been given when they two had stood together at the window in the cottage drawing-room, she was capable of feeling more for her friend than for herself. She was capable even of telling herself that it was cruel on her part even to wish for any continuance of Clara's acquaintance. 'I have made my bed, and I must lie upon it,' she said to herself; and then she resolved that, instead of going up to the house on the following day, she would write to Clara, and put an end to the intimacy which existed between them. 'The world is hard, and harsh, and unjust,' she said, still speaking to herself. 'But that is not her fault; I will not injure her because I have been injured myself.'

Colonel Askerton was up at the house on the same day, but he did not ask for Miss Amedroz, nor did she see him. Nobody else came to the house then, or on the following morning, or on that afternoon, though Clara did not fail to tell herself that Captain Aylmer might have been there if he had chosen to take the journey and to leave home as soon as he had received the message; and she made the same calculation as to her Cousin Will though in that calculation, as we know, she was wrong. These two days had been very desolate with her, and she had begun to look forward to Mrs Askerton's coming when instead of that there came a messenger with a letter from the cottage.

Page 180

'You can do as you like, my dear,' Colonel Askerton had said on the previous evening to his wife. He had listened to all she had been saying without taking his eyes from off his newspaper, though she had spoken with much eagerness.

'But that is not enough. You should say more to me than that.'

'Now I think you are unreasonable. For myself, I do not care how this matter goes; nor do I care one straw what any tongues may say. They cannot reach me, excepting so far as they may reach me through you.'

'But you should advise me.'

'I always do copiously, when I think that I know better than you; but in this matter I feel so sure that you know better than I, that I don't wish to suggest anything.' Then he went on with his newspaper, and she sat for a while looking at him, as though she expected that something more would be said. But nothing more was said, and she was left entirely to her own guidance.

Since the days in which her troubles had come upon Mrs Askerton, Clara Amedroz was the first female friend who had come near her to comfort her, and she was very loth to abandon such comfort. There had, too, been something more than comfort, something almost approaching to triumph, when she found that Clara had clung to her with affection after hearing the whole story of her life. Though her conscience had not pricked her while she was exercising all her little planned deceits, she had not taken much pleasure in them. How should any one take pleasure in such work? Many of us daily deceive our friends, and are so far gone in deceit that the deceit alone is hardly painful to us. But the need of deceiving a friend is always painful. The treachery is easy; but to be treacherous to those we love is never easy never easy, even though it be so common. There had been a double delight to this poor woman in the near neighbourhood of Clara Amedroz since there had ceased to be a necessity for falsehood on her part. But now, almost before her joy had commenced, almost before she had realized the sweetness of her triumph, had come upon her this task of doing that herself which Clara in her generosity had refused to do. 'I have made my bed and I must lie upon it,' she said. And then, instead of going down to the house as she had promised, she wrote the following letter to Miss Amedroz:

'The Cottage, Monday.

Dearest Clara

I need not tell you that I write as I do now with a bleeding heart. A few days since I should have laughed at any woman who used such a phrase of herself, and declared her to be an affected fool; but now I know how true such a word may be. My heart is bleeding, and I feel myself to be overcome by my disgrace. You told me that I did not



understand you yesterday. Of course I understood you. Of course I know how it all is, and why you spoke as you did of Captain Aylmer. He has chosen to think that you could not know me without pollution, and has determined that you must give up either me or him. Though he has judged me, I am not going to judge him. The world is on his side; and, perhaps, he is right. He knows nothing of my trials and difficulties and why should he? I do not blame him for demanding that his future wife shall not be intimate with a woman who is supposed to have lost her fitness for the society of women.

Page 181

At any rate, dearest, you must obey him and we will see each other no more. I am quite sure that I should be very wicked were I to allow you to injure your position in life on my account. You at any rate love him, and would be happy with him, and as you are engaged to him, you have no just ground for resenting his interference.

You will understand me now as well as though I were to fill sheets and sheets of paper with what I could say on the subject. The simple fact is, that you and I must forget each other, or simply remember one another as past friends. You will know in a day or two what your plans are. If you remain here, we will go away. If you go away, we will remain here that is, if your cousin will keep us as tenants. I do not, of course, know what you may have written to Captain Aylmer since our interview up here, but I beg that you will write to him now, and make him understand that he need have no fears in respect of me. You may send him this letter if you will. Oh, dear! If you could know what I suffer as I write this.

I feel that I owe you an apology for harassing you on such a subject at such a time; but I know that I ought not to lose a day in telling you that you are to see nothing more of the friend who has loved you.

Mary Askerton.'

Clara's first impulse on receiving this letter was to go off at once to the cottage, and insist on her privilege of choosing her own friends. If she preferred Mrs Askerton to Captain Aylmer, that was no one's business but her own. And she would have done so had she not been afraid of meeting with Colonel Askerton. To him she would not have known how to speak on such a subject nor would she have known how to conduct herself at the cottage without speaking of it. And then, after a while, she felt that were she to do so should she now deliberately determine to throw herself into Mrs Askerton's arms she must at the same time give up all ideas of becoming Captain Aylmer's wife. As she thought of this she asked herself various questions concerning him, which she did not find it easy to answer. Did she wish to be his wife? Could she assure herself that if they were married they would make each other happy? Did she love him? She was still able to declare to herself that the answer to the last question should be an affirmative; but, nevertheless, she thought that she could give him up without great unhappiness. And when she began to think of Lady Aylmer, and to remember that Frederic Aylmer's imperative demands upon her obedience had, in all probability, been dictated by his mother, she was again anxious to go at once to the cottage, and declare that she would not submit to any interference with her own judgment.

On the next morning the postman brought to her a letter which was of much moment to her but he brought to her also tidings which moved her more even than the letter. The letter was from the lawyer, and enclosed a cheque for seventy-five pounds, which he had been instructed to pay to her, as the interest of the money left to her by her aunt. What should be her answer to that letter she knew very well, and she instantly wrote it,

sending back the cheque to Mr Green. The postman's news, more important than the letter, told her that William Belton was at the inn at Redicote.

Page 182

CHAPTER XXII

PASSIONATE PLEADING

Clara wrote her letter to the lawyer, returning the cheque, before she would allow herself a moment to dwell upon the news of her cousin's arrival. She felt that it was necessary to do that before she should even see her cousin thus providing against any difficulty which might arise from adverse advice on his part; and as soon as the letter was written she sent it to the post-office in the village. She would do almost any thing that Will might tell her to do, but Captain Aylmer's money she would not take, even though Will might so direct her. They would tell her, no doubt, among them, that the money was her own that she might take it without owing any thanks for it to Captain Aylmer. But she knew better than that as she told herself over and over again. Her aunt had left her nothing, and nothing would she have from Captain Aylmer unless she had all that Captain Aylmer had to give, after the fashion in which women best love to take such gifts.

Then, when she had done that, she was able to think of her cousin's visit. 'I knew he would come,' she said to herself, as she sat herself in one of the old chairs in the hall, with a large shawl wrapped round her shoulders. She had just been to the front door, with the nominal purpose of dispatching her messenger thence to the post-office; but she had stood for a minute or two under the portico, looking in the direction by which Belton would come from Redicote, expecting, or rather hoping, that she might see his figure or hear the sound of his gig. But she saw nothing and heard nothing, and so returned into the hall, slowly shutting the door. 'I knew that he would come,' she said, repeating to herself the same words over and over again. Yet when Mrs Askerton had told her that he would do this thing which he had now done, she had expressed herself as almost frightened by the idea. 'God forbid,' she had said. Nevertheless now that he was there at Redicote, she assured herself that his coming was a thing of which she had been certain; and she took a joy in the knowledge of his nearness to her which she did not attempt to define to herself. Had he not said that he would be a brother to her, and was it not a brother's part to go to a sister in affliction? 'I knew that he would come. I was sure of it. He is so true.' As to Captain Aylmer's not coming she said nothing, even to herself; but she felt that she had been equally sure on that subject. Of course, Captain Aylmer would not come! He had sent her seventy-five pounds in lieu of coming, and in doing so was true to his character. Both men were doing exactly that which was to have been expected of them. So at least Clara Amedroz now assured herself. She did not ask herself how it was that she had come to love the thinner and the meaner of the two men, but she knew well that such had been her fate.

Page 183

On a sudden she rose from her chair, as though remembering a duty to be performed, and went to the kitchen and directed that breakfast might be got ready for Mr Belton. He would have travelled all night and would be in want of food. Since the old squire's death there had been no regular meal served in the house, and Clara had taken such scraps of food and cups of tea as the old servant of the house had brought to her. But now the cloth must be spread again, and as she did this with her own hands she remembered the dinners which had been prepared for Captain Aylmer at Perivale after his aunt's death. It seemed to her that she was used to be in the house with death, and that the sadness and solemn ceremonies of woe were becoming things familiar to her. There grew upon her a feeling that it must be so with her always. The circumstances of her life would ever be sad. What right had she to expect any other fate after such a catastrophe as that which her brother had brought upon the family? It was clear to her that she had done wrong in supposing that she could marry and live with a prosperous man of the world like Captain Aylmer. Their natures were different, and no such union could lead to any good. So she told herself, with much misery of spirit, as she was preparing the breakfast-table for William Belton.

But William Belton did not come to eat the breakfast. He got what he wanted in that way at the inn at Redicote, and even then hesitated, loitering at the bar, before he would go over. What was he to say, and how would he be received? After all, had he not done amiss in coming to a house at which he probably might not be wanted? Would it not be thought that his journey had been made solely with a view to his own property? He would be regarded as the heir pouncing upon the inheritance before as yet the old owner was under the ground. At any rate it would be too early for him to make his visit yet awhile; and, to kill time, he went over to a carpenter who had been employed by him about the place at Belton. The carpenter spoke to him as though everything were his own, and was very intent upon future improvements. This made Will more disgusted with himself than ever, and before he could get out of the carpenter's yard he thoroughly wished himself back at Plaistow. But having come so far, he could hardly return without seeing his cousin, and at last he had himself driven over, reaching the house between eleven and twelve o'clock in the day.

Clara met him in the hall, and at once led him into the room which she had prepared for him. He had given her his hand in the hall, but did not speak to her till she had spoken to him after the closing of the room door behind them. 'I thought that you would come' she said, still holding him by the hand.

'I did not know what to do,' he answered. 'I couldn't say which was best. Now I am here I shall only be in your way.' He did not dare to press her hand, nor could he bring himself to take his away from her.

Page 184

'In my way yes; as an angel, to tell me what to do in my trouble. I knew you would come, because you are so good. But you will have breakfast see, I have got it ready for you.'

'Oh no; I breakfasted at Redicote. I would not trouble you.'

'Trouble me, Will! Oh, Will, if you knew!' Then there came tears in her eyes, and at the sight of them both his own were filled. How was he to stand it? To take her to his bosom and hold her there for always; to wipe away her tears so that she should weep no more; to devote himself and all his energy and all that was his comfort to her this he could have done; but he knew not how to do anything short of this. Every word that she spoke to him was an encouragement to this, and yet he knew that it could not be so. To say a word of his love, or even to look it, would now be an unmanly insult. And yet, how was he not to look it not to speak of it? 'It is such a comfort that you should be here with me,' she said.

'Then I am glad I am here, though I do not know what I can do. Did he suffer much, Clara?'

'No, I think not; very little. He sank at last quicker than I expected, but just as I thought he would go. He used to speak of you so often, and. always with regard and esteem!'

' Dear old man!'

'Yes, Will; he was, in spite of his little faults. No father ever loved his daughter better than he loved me.'

After a while the servant brought in the tea, explaining to Belton that Miss Clara had neither eaten nor drank that morning. 'She wouldn't take anything till you came, sir.' Then Will added his entreaties, and Clara was persuaded, and by degrees there grew between them more ease of manner and capability for talking than had been within their reach when they first met. And during the morning many things were explained, as to which Clara would a few hours previously have thought it to be almost impossible that she should speak to her cousin. She had told him of her aunt's money, and the way in which she had on that very morning sent back the cheque to the lawyer; and she had said something also as to Lady Aylmer's views, and her own views as to Lady Aylmer. With Will this subject was one most difficult of discussion; and he blushed and fidgeted in his chair, and walked about the room, and found himself unable to look Clara in the face as she spoke to him. But she went on, goading him with the name, which of all names was the most distasteful to him; and mentioning that name almost in terms of reproach of reproach which he felt it would be ungenerous to reciprocate, but which he would have exaggerated to unmeasured abuse if he had given his tongue licence to speak his mind.



'I was right to send back the money wasn't I, Will? Say that I was right. Pray tell me that you think so!'

'I don't understand it at present, you see; I am no lawyer.'

'But it doesn't want a lawyer to know that I couldn't take the money from him. I am sure you feel that.'

Page 185

'If a man owes money of course he ought to pay it.'

'But he doesn't owe it, Will. It is intended for generosity.'

'You don't want anybody's generosity, certainly.' Then he reflected that Clara must, after all, depend entirely on the generosity of some one till she was married; and he wanted to explain to her that everything he had in the world was at her service was indeed her own. Or he would have explained, if he knew how, that he did not intend to take advantage of the entail that the Belton estate should belong to her as the natural heir of her father. But he conceived that the moment for explaining this had hardly as yet arrived, and that he had better confine himself to some attempt at teaching her that no extraneous assistance would be necessary to her, 'In money matters,' said he, 'of course you are to look to me. That is a matter of course. I'll see Green about the other affairs. Green and I are friends. We'll settle it.'

'That's not what I meant, Will.'

'But it's what I mean. This is one of those things in which a man has to act on his own judgment. Your father and I understood each other.'

'He did not understand that I was to accept your bounty.'

'Bounty is a nasty word, and I hate it. You accepted me as your brother, and as such I mean to act.' The word almost stuck in his throat, but he brought it out at last in a fierce tone, of which she understood accurately the cause and meaning. 'All money matters about the place must be settled by me. Indeed, that's why I came down.'

'Not only for that, Will?'

'Just to be useful in that way, I mean.'

'You came to see me because you knew I should want you.' Surely this was malice prepense! Knowing what was his want, how could she exasperate it by talking thus of her own? 'As for money, I have no claim on any one. No creature was ever more forlorn. But I will not talk of that.'

'Did you not say that you would treat me as a brother?'

'I did not mean that I was to be a burden on you.'

'I know what I meant, and that is sufficient.' Belton had been at the house some hours before he made any signs of leaving her, and when he did so he had to explain something of his plans. He would remain, he said, for about a week in the neighbourhood.



She of course was obliged to ask him to stay at the house at the house which was in fact his own; but he declined to do this, blurting out his reason at last very plainly.

'Captain Aylmer would not like it, and I suppose you are bound to think of what he likes and dislikes.' 'I don't know what right Captain Aylmer would have to dislike any such thing,' said Clara. But, nevertheless, she allowed the reason to pass as current, and did not press her invitation. Will declared that he would stay at the inn at Redicote,, striving to explain in some very unintelligible manner that such an arrangement would be very convenient. He would remain at Redicote, and would come over to Belton every day during his sojourn in the country. Then he asked one question in a low whisper as to the last sad ceremony, and, having received an answer, started off with the declared intention of calling on Colonel Askerton.

Page 186

The next two or three days passed uncomfortably enough with Will Belton. He made his head-quarters at the little inn of Redicote, and drove himself backwards and forwards between that place and the estate which was now his own. On each of these days he saw Colonel Askerton, whom he found to be a civil pleasant man, willing enough to rid himself of the unpleasant task he had undertaken, but at the same time, willing also to continue his services if any further services were required of him. But of Mrs Askerton on these occasions Will saw nothing, nor had he ever spoken to her since the time of his first visit to the Castle. Then came the day of the funeral, and after that rite was over he returned with his cousin to the house. There was no will to be read. The old squire had left no will, nor was there anything belonging to him at the time of his death that he could bequeath. The furniture in the house, the worn-out carpets and old-fashioned chairs, belonged to Clara; but, beyond that, property had she none, nor had it been in her father's power to endow her with anything. She was alone in the world, penniless, with a conviction on her own mind that her engagement with Frederic Aylmer must of necessity come to an end, and with a feeling about her cousin which she could hardly analyse, but which told her that she could not go to his house in Norfolk, nor live with him at Belton Castle, nor trust herself in his hands as she would into those of a real brother.

On the afternoon of the day on which her father had been buried, she brought to him a letter, asking him to read it, and tell her what she should do. The letter was from Lady Aylmer, and contained an invitation to Aylmer Castle. It had been accompanied, as the reader may possibly remember, by a letter from Captain Aylmer himself. Of this she of course informed her cousin; but she did not find it to be necessary to show the letter of one rival to the other. Lady Aylmer's letter was cold in its expression of welcome, but very dictatorial in pointing out the absolute necessity that Clara should accept the invitation so given. 'I think you will not fail to agree with me, dear Miss Amedroz,' the letter said, 'that under these strange and perplexing circumstances, this is the only roof which can, with any propriety, afford you a shelter.' 'And why not the poor-house?' she said, aloud to her cousin, when she perceived that his eye had descended so far on the page. He shook his head angrily, but said nothing; and when he had finished the letter he folded it and gave it back still in silence. 'And what am I to do?' she said. 'You tell me that I am to come to you for advice in everything.'

'You must decide for yourself here.'

'And you won't advise me.. You won't tell me whether she is right?

'I suppose she is right.'

'Then I had better go?'

'If you mean to marry Captain Aylmer, you had better go.'

'I am engaged to him.'



Page 187

'Then you had better go.'

'But I will not submit myself to her tyranny.'

'Let the marriage take place at once, and you will have to submit only to his. I suppose you are prepared for that?'

'I do not know. I do not like tyranny.'

Again he stood silent for awhile, looking at her, and then he answered: 'I should not tyrannize over you, Clara.'

'Oh, Will, Will, do not speak like that. Do not destroy everything.'

'What am I to say?'

'What would you say if your sister, your real sister, asked advice in such a strait? If you had a sister, who came to you, and told you all her difficulty, you would advise her. You would not say words to make things worse for her.'

'It would be very different.'

'But you said you would be my brother.'

'How am I to know what you feel for this man? It seems to me that you half hate him, half fear him, and sometimes despise him.'

'Hate him! No I never hate him.'

'Go to him, then, and ask him what you had better do. Don't ask me.' Then he hurried out of the room, slamming the door behind him. But before he had half gone down the stairs he remembered the ceremony at which he had just been present, and how desolate she was in the world, and he returned to her. 'I beg your pardon, Clara,' he said, 'I am passionate; but I must be a beast to show my passion to you on such a day as this. If I were you I should accept Lady Aylmer's invitation merely thanking her for it in the ordinary way. I should then go and see how the land lay. That is the advice I should give my sister.'

'And I will if it is only because you tell me.'

'But as for a home tell her you have one of your own at Belton Castle, from which no one can turn you out, and where no one can intrude on you. This house belongs to you.' Then, before she could answer him, he had left the room and she listened to his heavy quick footsteps as he went across the hall and out of the front door.



He walked across the park and entered the little gate of Colonel Askerton's garden, as though it were his habit to go to the cottage when he was at Belton. There had been various matters on which the two men had been brought into contact concerning the old squire's death and the tenancy of the cottage, so that they had become almost intimate. Belton had nothing new that he specially desired to say to Colonel Askerton, whom, indeed, he had seen only a short time before at the funeral; but he wanted the relief of speaking to some one before he returned to the solitude of the inn at Redicote. On this occasion, however, the colonel was out, and the maid asked him if he would see Mrs Askerton. When he said something about not troubling her, the girl told him that her mistress wished to speak to him, and then he had no alternative but to allow himself to be shown into the drawing-room.

'I want to see you a minute,' said Mrs Askerton, bowing to him without putting out her hand, 'that I might ask you how you find your cousin.'



Page 188

'She is pretty well, I think'

'Colonel Askerton has seen more of her than I have since her father's death, and he says that she does not bear it well. He thinks that she is ill.'

'I do not think her ill. Of course she is not in good spirits.'

'No; exactly. How should she be? But he thinks she seems so worn. I hope you will excuse me, Mr Belton, but I love her so well that I cannot bear to be quite in the dark as to her future. Is anything settled yet?'

'She is going to Aylmer Castle.'

'To Aylmer Castle! Is she indeed? At once?'

'Very soon. Lady Aylmer has asked her.'

'Lady Aylmer! Then I suppose'

'You suppose what?' Will Belton asked.

'I did not think she would have gone to Aylmer Castle though I dare say it is the best thing she could do She seemed to me to dislike the Aylmers that is, Lady Aylmer so much! But I suppose she is right?'

'She is right to go if she likes it.'

'She is circumstanced so cruelly! Is she not? Where else could she go? I do so feel for her. I believe I need hardly tell you, Mr Belton, that, she would be as welcome here as flowers in May but that I do not dare to ask her to come to us.' She said this in a low voice, turning her eyes away from him, looking first upon the ground, and then again up at the window but still not daring to meet his eye.

'I don't exactly know about that,' said Belton awkwardly.

'You know, I hope, that I love her dearly.'

'Everybody does that,' said Will.

'You do, Mr Belton.'

'Yes I do; just as though she were my sister.'

'And as your sister would you let her come here to us?' He sat silent for awhile, thinking, and she waited patiently for his answer. But she spoke again before he answered her. 'I am well aware that you know all my history, Mr Belton.'



'I shouldn't tell it her, if you mean that, though she were my sister. If she were my wife I should tell her.'

'And why your wife?'

'Because then I should be sure it would do no harm.'

'Then I find that you can be generous, Mr Belton. But she knows it all as well as you do.'

'I did not tell her.'

'Nor did I but I should have done so had not Captain Aylmer been before me. And now tell me whether I could ask her to come here.'

'It would be useless, as she is going to Aylmer Castle'.

'But she is going there simply to find a home having no other.'

'That is not so, Mrs Askerton. She has a home as perfectly her own as any woman in the land. Belton Castle is hers, to do what she may please with it. She can live here if she likes it, and nobody can say a word to her. She need not go to Aylmer Castle to look for a home.'

'You mean you would lend her the house?'

'It is hers.'

'I do not understand you, Mr Belton.'

Page 189

'It does not signify we will say no more about it.'

'And you think she likes going to Lady Aylmer's?'

'How should I say what she likes?'

Then there was another pause before Mrs Askerton spoke again. 'I can tell you one thing,' she said: 'she does not like him.'

'That is her affair.'

'But she should be taught to know her own mind before she throws herself away altogether. You would not wish your cousin to marry a man whom she does not love because at one time she had come to think that she loved him. That is the truth of it, Mr Belton. If she goes to Aylmer Castle she will marry him and she will be an unhappy woman always afterwards. If you would sanction her coming here for a few days, I think all that would be cured. She would come in a moment, if you advised her.'

Then he went away, allowing himself to make no further answer at the moment, and discussed the matter with himself as he walked back to Redicote, meditating on it with all his mind, and all his heart, and all his strength. And, as he meditated, it came on to rain bitterly a cold piercing February rain and the darkness of night came upon him, and he floundered on through the thick mud of the Somersetshire lanes, unconscious of the weather and of the darkness. There was a way open to him by which he might even yet get what he wanted. He thought he saw that there was a way open to him through the policy of this woman, whom he perceived to have become friendly to him. He saw, or thought that he saw, it all. No day had absolutely been fixed for this journey to Yorkshire; and if Clara were induced to go first to the cottage, and stay there with Mrs Askerton, no such journey might ever be taken. He could well understand that such a visit on her part would give a mortal offence to all the Aylmers. That tyranny of which Clara spoke with so much dread would be exhibited then without reserve, and so there would be an end altogether of the Aylmer alliance. But were she once to start for Aylmer Park, then there would be no hope for him. Then her fate would be decided -and his. As far as he could see, too as far as he could see then, there would be no dishonesty in this plan. Why should Clara not go to Mrs Askerton's house? What could be more natural than such a visit at such a time? If she were in truth his sister he would not interfere to prevent it if she wished it. He had told himself that the woman should be forgiven her offence, and had thought that that forgiveness should be complete. If the Aylmers were so unreasonable as to quarrel with her on this ground, let them quarrel with her. Mrs Askerton had told him that Clara did not really like Captain Aylmer. Perhaps it was so; and if so, what greater kindness could he do her than give her an opportunity for escaping such a union?

Page 190

The whole of the next day he remained at Redicote, thinking, doubting, striving to reconcile his wishes and his honesty. It rained all day, and as he sat alone, smoking in the comfortless inn, he told himself that the rain was keeping him but in truth it was not the rain. Had he resolved to do his best to prevent this visit to Yorkshire, or had he resolved to further it, I think he would have gone to Belton without much fear of the rain. On the second day after the funeral he did go, and he had then made up his mind. Clara, if she would listen to him, should show her independence of Lady Aylmer by staying a few days with the Askertons before she went to Yorkshire, and by telling Lady Aylmer that such was her intention. 'If she really loves the man,' he said to himself, 'she will go at once, in spite of anything that I can say. If she does not, I shall be saving her.'

'How cruel of you not to come yesterday!' Clara said, as soon as she saw him.,

'It rained hard,' he answered.

'But men like you care so little for rain; but that is when you have business to take you out or pleasure.'

'You need not be so severe. The truth is I had things to trouble me.'

'What troubled you, Will. I thought all the trouble was mine.'

'I suppose everybody thinks that his own shoe pinches the hardest.'

'Your shoe can't pinch you very bad, I should think. Sometimes when I think of you it seems that you are an embodiment of prosperity and happiness.'

'I don't see it myself that's all. Did you write to Lady Aylmer, Clara?'

'I wrote; but I didn't send it. I would not send any letter till I had shown it to you, as you are my confessor and adviser. There; read it. Nothing, I think, could be more courteous or less humble.' He took the letter and read it. Clara had simply expressed herself willing to accept Lady Aylmer's invitation, and asked her ladyship to fix a day. There was no mention of Captain Aylmer's name in the note.

'And you think this is best?' he said. His voice was hardly like his own as he spoke. There was wanting to it that tone of self-assurance which his voice almost always possessed, even when self-assurance was lacking to his words.

'I thought it was your own advice,' she said.

'Well yes; that is, I don't quite know. You couldn't go for a week or so yet, I suppose.'

'Perhaps in about a week.'

‘And what will you do till then.?’

‘What will I do!’

‘Yes where do you mean to stay?’

‘I thought, Will, that perhaps you would let me remain here.’

‘Let you! Oh, heavens! Look here, Clara.’

‘Before heaven I want what may be the best for you without thinking of you, if I could only help it.’

Page 191

'I have never doubted you. I never will doubt you. I believe in you next to my God. I do, Will; I do.' He walked up and down the room half-a-dozen times before he spoke again, while she stood by the table watching him. 'I wish,' she said, 'I knew what it is that troubles you.' To this he made no answer, but went on walking till she came up to him, and putting both her hands upon his arm said, 'It will be better, Will, that I should go will it not? Speak to me, and say so. I feel that it will be better.' Then he stopped in his walk and looked down upon her, as her hands still rested upon his shoulder. He gazed upon her for some few seconds, remaining quite motionless, and then, opening his arms, he surrounded her with his embrace, and pressing her with all his strength close to his bosom, kissed her forehead, and her cheeks, and her lips, and her eyes. His will was so masterful, his strength so great, and his motion so quick, that she was powerless to escape from him till he relaxed his hold. Indeed she hardly struggled, so much was she surprised and so soon released. But the moment that he left her he saw that her face was burning red, and that the tears were streaming from her eyes. She stood for a moment trembling, with her hands clenched, and with a look of scorn upon her lips and brow that he had never seen before; and then she threw herself on a sofa, and, burying her face, sobbed aloud; while her whole body was shaken as with convulsions. He leaned over her repentant, not knowing what to do, not knowing how to speak. All ideas of his scheme had gone from him now. He had offended her for ever past redemption. What could be the use now of any scheme? And as he stood there he hated himself because of his scheme. The utter misery and disgrace of the present moment had come upon him because he had thought more of himself than of her. It was but a few moments since she had told him that she trusted him next to her God; and yet in those few moments, he had shown himself utterly unworthy of that trust, and had destroyed all her confidence. But he could not leave, her without speaking to her. 'Clara!' he said 'Clara.' But she did not answer him. 'Clara; will you not speak to me? Will you not let me ask you to forgive me?' But still she only sobbed. For her, at that moment, we may say that sobbing was easier than speech. How was she to pardon so great an offence? How was she to resent such passionate love?

But he could not continue to stand there motionless, all but speechless, while she lay with her face turned away from him. He must at any rate in some manner take himself away out of the room; and this he could not do, even in his present condition of unlimited disgrace, without a word of farewell. 'Perhaps I had better go and leave you,' he said.

Then at last there came a voice, 'Oh, Will, why have you done this? Why have you treated me so badly?' When he had last seen her face her mouth had been full of scorn, but, there was, no scorn now in her voice. 'Why why why?'

Page 192

Why indeed except that it was needful for him that she should know the depth of his passion. 'If you will forgive me, Clara, I will not offend you so again,' he said.

'You have offended me. What am I to say? What am I to do? I have no other friend.'

'I am a wretch. I know that I am a wretch.'

'I did not suspect that you would be so cruel. Oh, Will!'

But before he went she told him that she had forgiven him, and she had preached to him a solemn, sweet sermon on the wickedness of yielding, to momentary impulses. Her low, grave words sank into his ears as though they were divine; and when she said a word to him, blushing as she spoke, of the sin of his passion and of what her sin would be, if she were to permit it, he sat by her weeping like an infant, tears which were certainly tears of innocence. She had been very angry with him; but I think she loved him better when, her sermon was finished than she had ever loved him before.

There was no further question as to her going to Aylmer Castle, nor was any mention made of Mrs Askerton's invitation to the cottage. The letter for Lady Aylmer was sent, and it was agreed between them that Will should remain at Redicote till the answer from Yorkshire should come, and should then convey Clara as far as London on her journey. And when he took leave of her that afternoon, she was able to give him her hand in her old hearty, loving way, and to call him Will with the old hearty, loving tone. And he he was able to accept these tokens of her graciousness, as though they were signs of a pardon which she had been good to give, but which he certainly had not deserved.

As he went back to Redicote, he swore to himself that he would never love any woman but her even though she must be the wife of Captain Aylmer.

CHAPTER XXIII

THE LAST DAY AT BELTON

In course of post there came an answer from Lady Aylmer, naming a day for Clara's journey to Yorkshire, and also a letter from Captain Aylmer, in, which he stated that he would meet her in London and convey her down to Aylmer Park. 'The House is sitting,' he said, 'and therefore I shall be a little troubled about my time; but I cannot allow that your first meeting with my mother should take place in my absence.' This was all very well, but at the end of the letter there was a word of caution that was not so well. 'I am sure, my dear Clara, that you will remember how much is due to my mother's age, and character, and position. Nothing will be wanted to the happiness of our marriage, if you can succeed in gaining her affection, and therefore I make it my first request to you, that you should endeavour to win her good opinion.' There was nothing perhaps really amiss, certainly nothing unreasonable, in such words from a future husband to his



future wife; but Clara, as she read them, shook her head and pressed her foot against the ground in anger. It would not do. Sorrow would come and trouble and disappointment. She did not say so, even to herself in words; but the words, though not spoken, were audible enough to herself. She could not, would not, bend to Lady Aylmer, and she knew that trouble would come of this visit.

Page 193

I fear that many ladies will condemn Miss Amedroz when I tell them that she showed this letter to her Cousin Will. It does not promise well for any of the parties concerned when a young woman with two lovers can bring herself to show the love-letters of him to whom she is engaged to the other lover whom she has refused! But I have two excuses to put forward in Clara's defence. In the first place, Captain Aylmer's love-letters were not in truth love-letters, but were letters of business; and in the next place, Clara was teaching herself to regard Will Belton as her brother, and to forget that he had ever assumed the part of a lover.

She was so teaching herself, but I cannot say that the lesson was one easily learned; nor had the outrage upon her of which Will had been guilty, and which was described in the last chapter, made the teaching easier. But she had determined, nevertheless, that it should be so. When she thought of Will her heart would become very soft towards him; and sometimes, when she thought of Captain Aylmer, her heart would become anything but soft towards him. Unloving feelings would be very strong within her bosom as she re-read his letters, and remembered that he had not come to her, but had sent her seventy-five pounds to comfort her in her trouble! Nevertheless, he was to be her husband, and she would do her duty. What might have happened had Will Belton come to Belton Castle before she had known Frederic Aylmer of that she stoutly resolved that she would never think at all; and consequently the thought was always intruding upon her.

'You will sleep one night in town, of course?' said Will.

'I suppose so. You know all about it. I shall do as I'm told.'

'You can't go down to Yorkshire from here in one day. Where would you like to stay in London?'

'How on earth should I know? Ladies do sleep at hotels in London sometimes, I suppose?'

'Oh yes. I can write and have rooms ready for you.'

'Then that difficulty is over,' said Clara.

But in Belton's estimation the difficulty was not exactly over. Captain Aylmer would, of course, be in London that night, and it was a question with Will whether or no Clara was not bound in honour to tell the accursed beast, I am afraid Mr Belton called him in his soliloquies where she would lodge on the occasion. Or would it suffice that he, Will, should hand her over to the enemy at the station of the Great Northern Railway on the following morning? All the little intricacies of the question presented themselves to Will's imagination. How careful he would be with her, that the inn accommodation should suffice for her comfort! With what pleasure would he order a little dinner for

them two, making something of a genteel fête of the occasion! How sedulously would he wait upon her with those little attentions, amounting almost to worship, with which such men as Will Belton are prone to treat all women in exceptional

Page 194

circumstances, when the ordinary routine of life has been disturbed! If she had simply been his cousin, and if he had never regarded her otherwise, how happily could he have done all this! As things now were, if it was left to him to do, he should do it, with what patience and grace might be within his power; he would do it, though he would be mindful every moment of the bitterness of the transfer which he would so soon be obliged to make; but he doubted whether it would not be better for Clara's sake that the transfer should be made overnight. He would take her up to London, because in that way he could be useful; and then he would go away and hide himself. 'Has Captain Aylmer said where he would meet you?' he asked after a pause.

'Of course I must write and tell him.'

'And is he to come to you when you reach London?'

'He has said nothing about that. 'He will probably be at the House of Commons, or too busy somewhere to come to me then. But why do you ask? Do you wish to hurry through town?'

'Oh dear, no.'

'Or perhaps you have friends you want to see. Pray don't let me be in your way. I shall do very well, you know.'

Belton rebuked her by a look before he answered her. 'I was only thinking,' he said, 'of what would be most convenient for yourself. I have nobody to see, and nothing to do, and nowhere to go to.' Then Clara understood it all, and said that she would write to Captain Aylmer and ask him, to join them at the hotel.

She determined that she would see Mrs Askerton before she went; and as that lady did not come to the Castle, Clara called upon her at the cottage. This she did the day before she left, and she took her cousin with her. Belton had been at the cottage once or twice since the day on which Mrs Askerton had explained to him how the Aylmer alliance might be extinguished, but Colonel Askerton had always been there, and no reference had been made to the former conversation. Colonel Askerton was not there now, and Belton was almost afraid that words would be spoken to which he would hardly know how to listen.

'And so you are really going?' said Mrs Askerton.

'Yes; we start tomorrow,' said Clara.

'I am not thinking of the journey to London,' said Mrs Askerton, 'but of the danger and privations of your subsequent progress to the North.'

'I shall do very well. I am not afraid that any one will eat me.'

'There are so many different ways of eating people! Are there not, Mr Belton?'

'I don't know about eating, but there are a great many ways of boring people,' said he.

'And I should think they will be great at that kind of thing at Aylmer Castle. One never hears of Sir Anthony, but I can fancy Lady Aylmer to be a terrible woman.'

'I shall manage to hold my own, I dare say,' said Clara.

'I hope you will; I do hope you will,' said Mrs Askerton. 'I don't know whether you will be powerful to do so, or whether you will fail; my heart is not absolute; but I do know what will be the result if you are successful.'

Page 195

'It is much more than than I know myself.'

'That I can believe too. Do you travel down to Yorkshire alone?'

'No; Captain Aylmer will meet me in town.'

Then Mrs Askerton looked at Mr Belton, but made no immediate reply; nor did she say anything further about Clara's journey. She looked at Mr Belton, and Will caught her eye, and understood that he was being rebuked for not having carried out that little scheme which, had been prepared for him. But he had come to hate the scheme, and almost hated Mrs Askerton for proposing it. He had declared to himself that her welfare, Clara's welfare, was the one thing which the should regard; and he had told himself that he was not strong enough, either in purpose or in wit, to devise schemes for her welfare. She was better able to manage things for herself than he was to manage them for her. If she loved this 'accursed beast,' let her marry him; only for that was now his one difficulty only he could not bring himself to think it possible that she should love him.

'I suppose you will never see this place again?' said Mrs Askerton after a long pause.

'I hope I shall, very often,' said Clara. 'Why should I not see it again? It is not going out of the family.'

'No not exactly out of the family. That is, it will belong to your cousin.'

'And cousins may be as far apart as strangers, you mean; but Will and I are not like that; are we, Will?'

'I hardly know what we are like,' said he.

'You do not mean to say that you will throw me over? But the truth is, Mrs Askerton, that I do not mean to be thrown over. I look upon him as my brother, and I intend to cling to him as sisters do cling.'

'You will hardly come back here before you are married,' said Mrs Askerton. It was a terrible speech for her to make, and could only be excused on the ground that the speaker was in truth desirous of doing that which she thought would benefit both of those whom she addressed.

'Of course you are going to your wedding now?'

'I am doing nothing of the kind,' said Clara. 'How can you speak in that way to me so soon after my father's death? It is a rebuke to me for being here at all.'



'I intend no rebuke, as you well know. What I mean is this; if you do not stay in Yorkshire till you are married, let the time be when it may, where do you intend to go in the meantime?'

'My plans are not settled yet.'

'She will have this house if she pleases,' said Will. 'There will be no one else here. It will be her own, to do as she likes with it.'

'She will hardly come here to be alone.'

'I will not be inquired into, my dear,' said Clara, speaking with restored good-humour. 'Of course I am an unprotected female, and subject to disadvantages. Perhaps I have no plans for the future; and if I have plans, perhaps I do not mean to divulge them.'

Page 196

'I had better come to the point at once,' said Mrs Askerton. 'If if it should ever suit you, pray come here to us. Flowers shall not be more welcome in May. It is difficult to speak of it all, though you both understand everything as well as I do. I cannot press my invitation as another woman might.'

'Yes, you can,' said Clara with energy. 'Of course you can.'

'Can I? Then I do. Dear Clara, do come to us.' And then as she spoke Mrs Askerton knelt on the ground at her visitor's knees. 'Mr Belton, do tell her that when she is tired with the grandeur of Aylmer Park she may come to us here.'

'I don't know anything about the grandeur of Aylmer Park,' said Will, suddenly.

'But she may come here may she not?'

'She will not ask my leave,' said he.

'She says that you are her brother. Whose leave should she ask?'

'He knows that I should ask his rather than that of any living person,' said Clara.

'There, Mr Belton. Now you must say that she may come or that she may not.'

'I will say nothing. She knows what to do much better than I can tell her.'

Mrs Askerton was still kneeling, and again appealed to Clara. 'You hear what he says. What do you say yourself? Will you come to us? that is, if such a visit will suit you in point of convenience?'

'I will make no promise; but I know no reason why I should not.'

'And I must be content with that? Well: I will be content.' Then she got up. 'For such a one as I am, that is a great deal. And, Mr Belton, let me tell you this I can be grateful to you, though you cannot be gracious to me.'

'I hope I have not been ungracious,' said he.

'Upon my word, I cannot compliment you. But there is something so much better than grace, that I can forgive you. You know, at any rate, how thoroughly I wish you well.'

Upon this Clara got up to take her leave, and the demonstrative affection of an embrace between the two women afforded a remedy for the awkwardness of the previous conversation.

'God bless you, dearest,' said Mrs Askerton. 'May I write to you?'

'Certainly,' said Clara.

'And you will answer my letters?'

'Of course I will. You must tell me everything about the place and especially as to Bessy. Bessy is never to be sold is she, Will? Bessy was the cow which Belton had given her.

'Not if you choose to keep her.'

'I will go down and see to her myself,' said Mrs Askerton, and will utter little prayers of my own over her horns that certain events that I desire may come to pass. Good-bye, Mr Belton. You may be as ungracious as you please, but it will not make any difference.'

Page 197

When Clara and her cousin left the cottage they did not return to the house immediately, but took a last walk round the park, and through the shrubbery, and up to the rocks on which a remarkable scene had once taken place between them. Few words were spoken as they were walking, and there had been no agreement as to the path they would take. Each seemed to understand that there was much of melancholy in their present mood, and that silence was more fitting than speech. But when they reached the rocks Belton sat himself down, asking Clara's leave to stop there for a moment. 'I don't suppose I shall ever come to this place again,' said he.

'You are as bad as Mrs Askerton,' said Clara.

'I do not think I shall ever come to this place again,' said he, repeating his words very solemnly. At any rate, I will never do so willingly, unless'

'Unless what?'

'Unless you are either my wife, or have promised to become so.'

'Oh, Will; you know that that is impossible.'

'Then it is impossible that I should come here again.'

'You know that I am engaged to another man.'

'Of course I do. I am not asking you to break your engagement. I am simply telling you that in spite of that engagement I love you as well as I did love you before you had made it. I have a right to let you know the truth.' As if she had not known it without his telling it to her now! 'It was here that I told you that I loved you. I now repeat it here; and will never come here again unless I may say the same thing over and over and over. That is all. We might as well go on now.' But when he got up she sat down, as though unwilling to leave the spot. It was still winter, and the rock was damp with cold drippings from the trees, and the moss around was wet, and little pools of water had formed themselves in the shallow holes upon the surface. She did not speak as she seated herself; but he was of course obliged to wait till she should be ready to accompany him. 'It is too cold for you to sit there,' he said. 'Come, Clara; I will not have you loiter here. It is cold and wet.'

'It is not colder for me than for you.'

'You are not used to that sort of thing as I am.'

'Will,' she said, 'you must never speak to me again as you spoke just now. Promise me that you will not.'

'Promises will do no good in such a matter.'

'It is almost a repetition of what you did before though of course it is not so bad as that.'

'Everything I do is bad.'

'No, Will dear Will! Almost everything you do is good. But of what use can it be to either of us for you to be thinking of that which can never be? Cannot you think of me as your sister and only as your sister?

'No; I cannot.'

'Then it is not right that we should be together.'

'I know nothing of right. You ask me a question, and I suppose you don't wish that I should tell you a lie.'

Page 198

'Of course I do not wish that.'

'Therefore I tell you the truth. I love you as any other man loves the girl that he does love; and, as far as I know myself now, I never can be happy unless you are my own.'

'Oh, Will, how can that be when I am engaged to marry another man?'

'As to your engagement I should care nothing. Does he love you as I love you? If he loves you, why is he not here? If he loves you, why does he let his mother ill-use you, and treat you with scorn? If he loves you as I love you, how could he write to you as he does write? Would I write to you such a letter as that? Would I let you be here without coming to you to be looked after by any one else? If you had said that you would be my wife, would I leave you in solitude and sorrow, and then send you seventy-five pounds to console you? If you think he loves you, Clara'

'He thought he was doing right when he sent me the money.'

'But he shouldn't have thought it right. Never mind. I don't want to accuse him; but this I know and you know; he does not love you as I love you.'

'What can I say to answer you?'

'Say that you will wait till you have seen him. Say that I may have a hope a chance; that if he is cold, and hard, and and and, just what we know he is, then I may have a chance.'

'How can I say that when I am engaged to him? Cannot you understand that I am wrong to let you speak of him as you do?'

'How else am I to speak of him? Tell me this. Do you love him?' 'Yes I do.'

'I don't believe it!'

'Will!'

'I don't believe it. Nothing on earth shall make me believe it. It is impossible impossible!'

'Do you mean to insult me, Will?'

'No; I do not mean to insult you, but I mean to tell you the truth. I do not think you love that man as you ought to love the man whom you are going to marry. I should tell you just the same thing if I were really your brother. Of course it isn't that I suppose you love any one else me for instance. I'm not such a fool as that. But I don't think you love



him; and I'm quite sure he doesn't love you. That's just what I believe; and if I do believe it, how am I to help telling you?'

'You've no right to have such beliefs.'

'How am I to help it? Well never mind. I won't let you sit there any longer. At any rate you'll be able to understand now that I shall never come to this place any more.' Clara, as she got up to obey him, felt that she also ought never to see it again unless, indeed unless

Page 199

They passed that evening together without any reference to the scene on the rock, or any allusion to their own peculiar troubles. Clara, though she would not admit to Mrs Askerton that she was going away from the place for ever, was not the less aware that such might very probably be the case. She had no longer any rights of ownership at Belton Castle, and all that had taken place between her and her cousin tended to make her feel that under no circumstances could she again reside there. Nor was it probable that she would be able to make to Mrs Askerton the visit of which they had been talking. If Lady Aylmer were wise so Clara thought there would be no mention of Mrs Askerton at Aylmer Park; and, if so, of course she would not outrage her future husband by proposing to go to a house of which she knew that he disapproved. If Lady Aylmer were not wise if she should take upon herself the task of rebuking Clara for her friendship then, in such circumstances as those, Clara believed that the visit to Mrs Askerton might be possible.

But she determined that she would leave the home in which she had been born, and had passed so many happy and so many unhappy days, as though she were never to see it again. All her packing had been done, down to the last fragment of an old letter that was stuffed into her writing-desk; but, nevertheless, she went about the house with a candle in her hand, as though she were still looking that nothing had been omitted, while she was in truth saying farewell in her heart to every corner which she knew so well. When at last she came down to pour out for her desolate cousin his cup of tea, she declared that everything was done. 'You may go to work now, Will,' she said, and do what you please with the old place. My jurisdiction is over.'

'Not altogether,' said he. He no longer spoke like a despairing lover. Indeed there was a smile round his mouth, and his voice was cheery.

'Yes altogether. I give over my sovereignty from this moment and a dirty dilapidated sovereignty it is.'

'That's all very well to say.'

'And also very well to do. What best pleases me in going to Aylmer Castle just now is the power it gives me of doing at once that which otherwise I might have put off till the doing of it had become much more unpleasant. Mr Belton, there is the key of the cellar which I believe gentlemen always regard as the real sign of possession. I don't advise you to trust much to the contents.' He took the key from her, and without saying a word chucked it across the room on to an old sofa. 'If you won't take it, you had better, at any rate, have it tied up with the others,' she said.

'I dare say you'll know where to find it when you want it,' he answered.

'I shall never want it.'



'Then it's as well there as anywhere else.'

'But you won't remember, Will.'

'I don't suppose I shall have occasion for remembering.' Then he paused a moment before he went on. 'I have told you before that I do not intend to take possession of the place. I do not regard it as mine at all.'

Page 200

'And whose is it, then?'

'Yours.'

'No, dear Will; it is not mine. You know that.'

'I intend that it shall be so, and therefore you might as well put the keys where you will know how to find them.'

Alter he had gone she did take up the key, and tied it with sundry others, which she intended to give to the old servant who was to be left in charge of the house. But after a few moments' consideration she took the cellar key again off the bunch, and put it back upon the sofa in the place to which he had thrown it.

On the following morning they started on their journey. The old fly from Redicote was not used on this occasion, as Belton had ordered a pair of post-horses and a comfortable carriage from Taunton. 'I think it such a shame,' said Clara, 'going away for the last time without having Jerry and the grey horse.' Jerry was the man who had once driven her to Taunton when the old horse fell with her on the road. 'But Jerry and the grey horse could not have taken you and me too, and all our luggage,' said Will. 'Poor Jerry! I suppose not,' said Clara; 'but still there is an injury done in going without him.'

There were four or five old dependents of the family standing round the door to bid her adieu, to all of whom she gave her hand with a cordial pressure. They, at least, seemed to regard her departure as final. And of course it was final. She had assured herself of that during the night. And just as they were about to start, both Colonel and Mrs Askerton walked up to the door. 'He wouldn't let you go without bidding you farewell,' said Mrs Askerton. 'I am so glad to shake hands with him,' Clara answered. Then the colonel spoke a word to her, and, as he did so, his wife contrived to draw Will Belton for a moment behind the carriage. 'Never give it up, Mr Belton,' said she eagerly. 'If you persevere she'll be yours yet.' 'I fear not,' he said. 'Stick to her like a man,' said she, pressing his hand in her vehemence. 'If you do, you'll live to thank me for having told you so.' Will had not a word to say for himself, but he thought that he would stick to her. Indeed, he thought that he had stuck to her pretty well.

At last they were off, and the village of Belton was behind them; Will, glancing into his cousin's face, saw that her eyes were laden with tears, and refrained from speaking. As they passed the ugly red-brick rectory house, Clara for a moment put her face to the window, and then withdrew it. 'There is nobody there,' she said, 'who will care to see me. Considering that I have lived here all my life, is it not odd that there should be so few to bid me good-bye?'

'People do not like to put themselves forward on such occasions,' said Will.

'People there are no people. No one ever had so few to care for them as I have. And now But never mind; I mean to do very well, and I shall do very well.' Belton would not take advantage of her in her sadness, and they reached the station at Taunton almost without another word.

Page 201

Of course they had to wait there for half an hour, and of course the waiting was very tedious. To Will it was very tedious indeed, as he was not by nature good at waiting. To Clara, who on this occasion sat perfectly still in the waiting-room, with her toes on the fender before the fire, the evil of the occasion was not so severe. 'The man would take two hours for the journey, though I told him an hour and a half would be enough,' said Will, querulously.

'But we might have had an accident.'

'An accident! What accident? People don't have accidents every day.'

At last the train came and they started. Clara, though she had with her her best friend I may almost say the friend whom in the world she loved the best did not have an agreeable journey. Belton would not talk; but as he made no attempt at reading, Clara did not like to have recourse to the book which she had in her travelling-bag. He sat opposite to her, opening the window and shutting it as he thought she might like it, but looking wretched and forlorn. At Swindon he brightened up for a moment under the excitement of getting her something to eat, but that relaxation lasted only for a few minutes. After that he relapsed again into silence till the train had passed Slough and he knew that in another half-hour they would be in London. Then he leant over her and spoke.

'This will probably be the last opportunity I shall have of saying a few words to you alone.'

'I don't know that at all, Will.'

'It will be the last for a long time at any rate. And as I have got something to say, I might as well say it now. I have thought a great deal about the property the Belton estate, I mean; and I don't intend to take it as mine.'

'That is sheer nonsense, Will. You must take it, as it is yours, and can't belong to any one else.'

'I have thought it over, and I am quite sure that all the business of the entail was wrong radically wrong from first to last. You are to understand that my special regard for you has nothing whatever to do with it. I should do the same thing if I felt that I hated you.'

'Don't hate me, Will!'

'You know what I mean. I think the entail was all wrong, and I shan't take advantage of it. It's not common sense that I should have everything because of poor Charley's misfortune.'

'But it seems to me that it does not depend upon you or upon me, or upon anybody. It is yours by law, you know.'

'And therefore it won't be sufficient for me to give it up without making it yours by law also which I intend to do. I shall stay in town tomorrow and give instructions to Mr Green. I have thought it proper to tell you this now, in order that you may mention it to Captain Aylmer.'

They were leaning over in the carriage one towards the other; her face had been slightly turned away from him; but now she slowly raised her eyes till they met his, and looking into the depth of them, and seeing there all his love and all his suffering, and the great nobility of his nature, her heart melted within her. Gradually, as her tears came would come, in spite of all her constraint, she again turned her face towards the window. 'I can't talk now,' she said, 'indeed I can't.'

Page 202

'There is no need for any more talking about it,' he replied. And there was no more talking between them, on that subject or on any other, till the tickets had been taken and the train was again in motion. Then he referred to it again for a moment. 'You will tell Captain Aylmer, my dear.'

'I will tell him what you say, that he may know your generosity. But of course he will agree with me that no such offer can be accepted. It is quite quite quite out of the question.'

'You had better tell him and say nothing more; or you can ask him to see Mr Green after tomorrow. He, as a man who understands business, will know that this arrangement must be made, if I choose to make it. Come; here we are. Porter, a four-wheeled cab. Do you go with him, and I'll look after the luggage.'

Clara, as she got into the cab, felt that she ought to have been more stout in her resistance to his offer. But it would be better, perhaps, that she should write to him from Aylmer Park, and get Frederic to write also.

CHAPTER XXIV

THE GREAT NORTHERN RAILWAY HOTEL

At the door of the hotel of the Great Northern Railway Station they met Captain Aylmer. Rooms had been taken there because they were to start by an early train on that line in the morning, and Captain Aylmer had undertaken to order dinner. There was nothing particular in the meeting to make it unpleasant to our friend Will. The fortunate rival could do no more in the hall of the inn than give his hand to his affianced bride, as he might do to any other lady, and then suggest to her that she should go upstairs and see her room. When he had done this, he also offered his hand to Belton; and Will, though he would almost sooner have out off his own, was obliged to take it. In a few minutes the two men were standing alone together in the sitting-room.

'I suppose you found it cold coming up?' said the captain.

'Not particularly,' said Will.

'It's rather a long journey from Belton.'

'Not very long,' said Will.

'Not for you, perhaps; but Miss Amedroz must be tired.'

Belton was angry at having his cousin called Miss Amedroz feeling that the reserve of the name was intended to keep him at a distance. But he would have been equally angry had Aylmer called her Clara.

'My cousin,' said Will, stoutly, 'is able to bear slight fatigue of that kind without suffering.'

'I didn't suppose she suffered; but journeys are always tedious, especially where there is so much roadwork. I believe you are twenty miles from the station?'

'Belton Castle is something over twenty miles from Taunton.'

'We are seven from our station at Aylmer Park, and we think that a great deal.'

'I'm more than that at Plaistow,' said Will.

'Oh, indeed. Plaistow is in Norfolk, I believe?'

Page 203

'Yes Plaistow is in Norfolk.'

'I suppose you'll leave it now and go into Somersetshire,' suggested Captain Aylmer.

'Certainly not. Why should I leave it?'

'I thought, perhaps as Belton Castle is now your own'

'Plaistow Hall is more my own than Belton Castle, if that signifies anything which it doesn't.' This he said in an angry tone, which, as he became conscious of it, he tried to rectify. 'I've a deal of stock and all that sort of thing at Plaistow, and couldn't very well leave it, even if I wished it,' he said.

'You've pretty good shooting too, I suppose,' said Aylmer.

'As far as partridges go I'll back it against most properties of the same extent in any county.'

'I'm too busy a man myself,' said the captain, 'to do much at partridges. We think more of pheasants down with us.'

'I dare say.'

'But a Norfolk man like you is of course keen about birds.'

'We are obliged to put up with what we've got, you know not but what I believe there is a better general head of game in Norfolk than in any other county in England.'

'That's what makes your hunting rather poor.'

'Our hunting poor! Why do you say it's poor?'

'So many of you are against preserving foxes.'

'I'll tell you what, Captain Aylmer; I don't know what pack you hunt with, but I'll bet you a five- pound note that we killed more foxes last year than you did that is, taking three days a week. Nine-and-twenty brace and a half in a short season I don't call poor at all.'

Captain Aylmer saw that the man was waxing angry, and made no further allusion either to the glories or deficiencies of Norfolk. As he could think of no other subject on which to speak at the spur of the moment, he sat himself down and took up a paper; Belton took up another, and so they remained till Clara made her appearance. That Captain Aylmer read his paper is probable enough. He was not a man easily disconcerted, and there was nothing in his present position to disconcert him. But I feel sure that Will Belton did not read a word. He was angry with this rival, whom he hated, and was

angry with himself for showing his anger. He would have wished to appear to the best advantage before this man, or rather before Clara in this man's presence; and he knew that in Clara's absence he was making such a fool of himself that he would be unable to recover his prestige. He had serious thoughts within his own breast whether it would not be as well for him to get up from his seat and give Captain Aylmer a thoroughly good thrashing: 'Drop into him and punch his head,' as he himself would have expressed it. For the moment such an exercise would give him immense gratification. The final results would, no doubt, be disastrous; but then, all future results, as far as he could see them, were laden with disaster. He was still thinking of this, eyeing the man from under the newspaper, and telling himself that the feat would probably be too easy to afford much enjoyment, when Clara re-entered the room. Then he got up, acting on the spur of the moment got up quickly and suddenly, and began to bid her adieu.

Page 204

'But you are going to dine here, Will?' she said.

'No; I think not.'

'You promised you would. You told me you had nothing to do to-night.' Then she turned to Captain Aylmer. 'You expect my cousin to dine with us today?'

'I ordered dinner for three,' said Captain Aylmer.

'Oh, very well; it's all the same thing to me,' said Will.

'And to me,' said Captain Aylmer.

'It's not all the same thing to me,' said Clara. 'I don't know when I may see my cousin again. I should think it very bad of you, Will, if you went away this evening.'

'I'll go out just for half an hour,' said he, 'and be back to dinner.'

'We dine at seven,' said the captain. Then Belton took his hat and left the two lovers together.

'Your cousin seems to be a rather surly sort of gentleman.' Those were the first words which Captain Aylmer spoke when he was alone with the lady of his love. Nor was he demonstrative of his affection by any of the usual signs of regard which are permitted to accepted lovers. He did not offer to kiss her, nor did he attempt to take her hand with a warmer pressure now that he was alone with her. He probably might have gone through some such ceremony had he first met Clara in a position propitious to such purposes; but, as it was, he had been a little ruffled by Will Belton's want of good breeding, and had probably forgotten that any such privileges might have been his. I wonder whether any remembrance flashed across Clara's mind at this moment of her Cousin Will's great iniquity in the sitting-room at Belton Castle. She thought of it very often, and may possibly have thought of it now.

'I don't believe that he is surly, Frederic,' she said. 'He may, perhaps, be out of humour.'

'And why should he be out of humour with me? I only suggested to him that it might suit him to live at Belton instead of at that farm of his, down in Norfolk.'

'He is very fond of Plaistow, I fancy.'

'But that's no reason why he should be cross with me. I don't envy him his taste, that's all. If he can't understand that he, with his name, ought to live on the family property which belongs to him, it isn't likely that anything that I can say will open his eyes upon the subject.'

'The truth is, Frederic, he has some romantic notion about the Belton estate.'

'What romantic notion?'

'He thinks it should not be his at all.'

'Whose then? Who does he think should have it?'

'Of course there can be nothing in it, you know; of course, it's all nonsense.'

'But what is his idea? Who does he think should be the owner?'

'He means that it should be mine. But of course, Frederic, it is all nonsense; we know that.'

Page 205

It did not seem to be quite clear at the moment that Frederic had altogether made up his mind upon the subject. As he heard those tidings from Clara there came across his face a puzzled, dubious look, as though he did not quite understand the proposition which had been suggested to him as though some consideration were wanted before he could take the idea home to himself and digest it, so as to enable himself to express an opinion upon it. There might be something in it some show of reason which did not make itself clear to Clara's feminine mind. 'I have never known what was the precise nature of your father's marriage settlement,' said he.

Then Clara began to explain with exceeding eagerness that there was no question as to the accuracy of the settlement, or the legality of the entail that indeed there was no question as to anything. Her Cousin Will was romantic, and that was the end of it. Of course quite as a matter of course, this romance would lead to nothing; and she had only mentioned the subject now to show that her cousin's mind might possibly be disturbed when the question of his future residence was raised. 'I quite feel with you,' she said, 'that it will be much nicer that he should live at the old family place; but just at present I do not speak about it.'

'If he is thinking of not claiming Belton, it is quite another thing,' said Aylmer.

'It is his without any claiming,' said Clara.

'Ah, well; it will all be settled before long,' said Aylmer.

'It is settled already,' said Clara.

At seven the three met again, and when the dinner was on the table there was some little trouble as to the helping of the fish. Which of the two men should take the lead on the occasion? But Clara decided the question by asking her cousin to make himself useful. There can be little doubt but that Captain Aylmer would have distributed the mutton chops with much more grace, and have carved the roast fowl with much more skill; but it suited Clara that Will should have the employment, and Will did the work. Captain Aylmer, throughout the dinner, endeavoured to be complaisant, and Clara exerted herself to talk as though all matters around them were easy. Will, too, made his effort, every now and then speaking a word, and restraining himself from snapping at his rival; but the restraint was in itself evident, and there were symptoms throughout the dinner that the untamed man was longing to fly at the throat of the man that was tamed.

'Is it supposed that I ought to go away for a little while?' said Clara, as soon as she had drunk her own glass of wine.

'Oh dear, no,' said the captain. 'We'll have a cup of coffee that is, if Mr Belton likes it.'

'It's all the same to me,' said Will.

‘But won’t you have some more wine?’ Clara asked.

‘No more for me,’ said Captain Aylmer. ‘Perhaps Mr Belton’

‘Who; I? No; I don’t want any more wine,’ said Will; and then they were all silent.

Page 206

It was very hard upon Clara. After a while the coffee came, and even that was felt to be a comfort. Though there was no pouring out to be done, no actual employment enacted, still the manoeuvring of the cups created a diversion. 'If either of you like to smoke,' she said, 'I shan't mind it in the least.' But neither of them would smoke. 'At what hour shall we get to Aylmer Park tomorrow?' Clara asked.

'At half-past four,' said the captain.

'Oh, indeed so early as that.' What was she to say next? Will, who had not touched his coffee, and who was sitting stiffly at the table as though he were bound in duty not to move, was becoming more and more grim every moment. She almost repented that she had asked him to remain with them. Certainly there was no comfort in his company, either to them or to himself. 'How long shall you remain in town, Will, before you go down to Plaistow?' she asked.

'One day,' he replied.

'Give my kind love my very kindest love to Mary. I wish I knew her. I wish I could think that I might soon know her.'

'You'll never know her,' said Belton. The tone of his voice was actually savage as he spoke so much so that Aylmer turned in his chair to look at him, and Clara did not dare to answer him. But now that he had been made to speak, it seemed that he was determined to persevere. 'How should you ever know her? Nothing will ever bring you into Norfolk, and nothing will ever take her out of it.'

'I don't quite see why either of those assertions should be made.'

'Nevertheless they're both true. Had you ever meant to come to Norfolk you would have come now.' He had not even asked her to come, having arranged with his sister that in their existing circumstances any such asking would not be a kindness; and yet he rebuked her now for not coming!

'My mother is very anxious that Miss Amedroz should pay her a visit at Aylmer Park,' said the captain.

'And she's going to Aylmer Park, so your mother's anxiety need not disturb her any longer.'

'Come, Will, don't be out of temper with us,' said Clara. 'It is our last night together. We, who are so dear to each other, ought not to quarrel.'

'I'm not quarrelling with you, said he.

'I can hardly suppose that Mr Belton wants to quarrel with me,' said Captain Aylmer, smiling.

'I'm sure he does not,' said Clara. Belton sat silent, with his eyes fixed upon the table, and with a dark frown upon his brow. He did long to quarrel with Captain Aylmer; but was still anxious, if it might be possible, to save himself from what he knew would be a transgression.

'To use a phrase common with us down in Yorkshire,' said Aylmer, 'I should say that Mr Belton had got out of bed the wrong side this morning.'

'What the d does it matter to you, sir, what side I got out of bed?' said Will, clenching both his fists. Oh if he might have only been allowed to have a round of five minutes with Aylmer, he would have been restored to good temper for that night, let the subsequent results have been what they might. He moved his feet impatiently on the floor, as though he were longing to kick something; and then he pushed his coffee-cup away from him, upsetting half the contents upon the table, and knocking down a wineglass, which was broken.

Page 207

'Will Will!' said Clara, looking at him with imploring eyes.

'Then he shouldn't talk to me about getting out of bed on the wrong side; I didn't say anything to him.'

'It is unkind of you, Will, to quarrel with Captain Aylmer because he is my friend.'

'I don't want to quarrel with him; or, rather, as I won't quarrel with him because you don't wish it, I'll go away. I can't do more than that. I didn't want to dine with him here. There's my cousin Clara, Captain Aylmer; I love her better than all the world besides. Love her! It seems to me that there's nothing else in the world for me to love. I'd give my heart for her this minute. All that I have in the world is hers. Oh love her! I don't believe that it's in you to know what I mean when I say that I love her! She tells me that he's going to be your wife. You can't suppose that I can be very comfortable under those circumstances or that I can be very fond of you. I'm not very fond of you. Now I'll go away, and then I shan't trouble you any more. But look here if ever you should ill-treat her, whether you marry her or whether you don't, I'll crush every bone in your skin.' Having so spoken he went to the door, but stopped himself before he left the room. 'Good-bye, Clara. I've got a word or two more to say to you, but I'll write you a line down-stairs. You can show it to him if you please. It'll only be about business. Good-night.'

She had got up and followed him to the door, and he had taken her by the hand. 'You shouldn't let your passion get the better of you in this way,' she said; but the tone of her voice was very soft, and her eyes were full of love.

'I suppose not,' said he.

'I can forgive him,' said Captain Aylmer.

'D your forgiveness,' said Will Belton. Then Clara dropped the hand and started back, and the door was shut, and Will Belton was gone.

'Your cousin seems to be a nice sort of young man,' said Aylmer.

'Cannot you understand it all, Frederic, and pardon him?'

'I can pardon him easily enough; but one doesn't like men who are given to threatening. He's not the sort of man that I took him to be.'

'Upon my word I think he's as nearly perfect as a man can be.'

'Then you like men to swear at you, and to swagger like Bobadils and to misbehave themselves, so that one has to blush for them if a servant chances to hear them. Do you really think that he has conducted himself today like a gentleman?'



'I know that he is a gentleman,' said Clara.

'I must confess I have no reason for supposing him to be so but your assurance.'

'And I hope that is sufficient, Frederic.'

Captain Aylmer did not answer her at once, but sat for awhile silent, considering what he would say. Clara, who understood his moods, knew that he did not mean to drop the subject, and resolved that she would defend her cousin, let Captain Aylmer attack him as he would.

Page 208

'Upon my word, I hardly know what to say about it,' said Aylmer.

'Suppose then, that we say nothing more. Will not that be best?'

'No, Clara. I cannot now let the matter pass by in that way. You have asked me whether I do not think Mr Belton to be a gentleman, and I must say that I doubt it. Pray hear me out before you answer me. I do not want to be harder upon him than I can help; and I would have borne, and I did bear from him, a great deal in silence. But he said that to me which I cannot allow to pass without notice. He had the bad taste to speak to me of his regard for you.'

'I cannot see what harm he did by that except to himself.'

'I believe that it is understood among gentlemen that one man never speaks to another man about the lady the other man means to marry, unless they are very intimate friends indeed. What I mean is, that if Mr Belton had understood how gentlemen live together he would never have said anything to me about his affection for you. He should at any rate have supposed me to be ignorant of it. There is something in the very idea of his doing so that is in the highest degree in-delicate. I wonder, Clara, that you do not see this yourself.'

'I think he was indiscreet.'

'Indiscreet! Indiscreet is not the word for such conduct. I must say, that as far as my opinion goes, it was ungentlemanlike.'

'I don't believe that there is a nobler-minded gentleman in all London than my Cousin Will.'

'Perhaps it gratified you to hear from him the assurance of his love?' said Captain Aylmer.

'If it is your wish to insult me, Frederic, I will leave you'.

'It is my wish to make you understand that your judgment has been wrong.'

'That is simply a matter of opinion, and as I do not wish to argue with you about it, I had better go. At any rate I am very tired. Goodnight, Frederic.' He then told her what arrangements he had made for the morrow, and what hour she would be called, and when she would have her breakfast. After that he let her go without making any further allusion to Will Belton.

It must be admitted that the meeting between the lovers had not been auspicious; and it must be acknowledged, also, that Will Belton had behaved very badly. I am not aware of the existence of that special understanding among gentlemen in respect to the ladies



they are going to marry which Captain Aylmer so eloquently described; but, nevertheless, I must confess that Belton would have done better had he kept his feelings to himself. And when he talked of crushing his rival's bones, he laid himself justly open to severe censure. But, for all that, he was no Bobadil. He was angry, sore, and miserable; and in his anger, soreness, and misery, he had allowed himself to be carried away. He felt very keenly his own folly, even as he was leaving the room, and as he made his way out of the hotel he hated himself for his own braggadocio. 'I wish some one would crush my bones,' he said to himself almost audibly. 'No one ever deserved to be crushed better than I do.'

Page 209

Clara, when she got to her own room, was very serious and very sad. What was to be the end of it all? This had been her first meeting after her father's death with the man whom she had promised to marry; indeed, it was the first meeting after her promise had been given; and they had only met to quarrel. There had been no word of love spoken between them. She had parted from him now almost in anger, without the slightest expression of confidence between them almost as those part who are constrained by circumstances to be together, but who yet hate each other and know that they hate each other. Was there in truth any love between him and her? And if there was none, could there be any advantage, any good either to him or to her, in this journey of hers to Aylmer Park? Would it not be better that she should send for him and tell him that they were not suited for each other, and that thus she should escape from all the terrors of Lady Aylmer? As she thought of this, she could not but think of Will Belton also. Not a gentleman! If Will Belton was not a gentleman, she desired to know nothing further of gentlemen. Women are so good and kind that those whom they love they love almost the more when they commit offences, because of the offences so committed. Will Belton had been guilty of great offences of offences for which Clara was prepared to lecture him in the gravest manner should opportunities for such lectures ever come but I think that they had increased her regard for him rather than diminished it. She could not, however, make up her mind to send for Captain Aylmer, and when she went to bed she had resolved that the visit to Yorkshire must be made.

Before she left the room the following morning, a letter was brought to her from her cousin, which had been written that morning. She asked the maid to inquire for him, and sent down word to him that if he were in the house she specially wished to see him; but the tidings came from the hall porter that he had gone out very early, and had expressly said that he should not breakfast at the inn.

The letter was as follows:

'Dear Clara,

I meant to have handed to you the enclosed in person, but I lost my temper last night like a fool as I am and so I couldn't do it. You need not have any scruple about the money which I send £100 in ten ten-pound notes as it is your own. There is the rent due up to your father's death, which is more than what I now enclose, and there will be a great many other items, as to all of which you shall have a proper account. When you want more, you had better draw on me, till things are settled. It shall all be done as soon as possible. It would not be comfortable for you to go away without money of your own, and I suppose you would not wish that he should pay for your journeys and things before you are married.

Of course I made a fool of myself yesterday. I believe that I usually do. It is not any good my begging your pardon, for I don't suppose I shall ever trouble you any more. Good-bye, and God bless you.

Page 210

Your affectionate Cousin,

William Belton.

It was a bad day for me when I made up my mind to go to Belton Castle last summer.'

Clara, when she had read the letter, sat down and cried, holding the bundle of notes in her hand. What would she do with them? Should she send them back? Oh no she would do nothing to displease him, or to make him think that she was angry with him. Besides, she had none of that dislike to taking his money which she had felt as to receiving money from Captain Aylmer. He had said that she would be his sister, and she would take from him any assistance that a sister might properly take from a brother.

She went down-stairs and met Captain Aylmer in the sitting-room. He stepped up to her as soon as the door was closed, and she could at once see that he had determined to forget the unpleasantness of the previous evening. He stepped up to her, and gracefully taking her by one hand, and passing the other behind her waist, saluted her in a becoming and appropriate manner. She did not like it. She especially disliked it, believing in her heart of hearts that she would never become the wife of this man whom she had professed to love and whom she really had once loved. But she could only bear it. And, to say the truth, there was not much suffering of that kind to be borne.

Their journey down to Yorkshire was very prosperous. He maintained his good humour throughout the day, and never once said a word about Will Belton. Nor did he say a word about Mrs Askerton. 'Do your best to please my mother, Clara,' he said, as they were driving up from the park lodges to the house. This was fair enough, and she therefore promised him that she would do her best.

CHAPTER XXV

MISS AMEDROZ HAS SOME HASHED CHICKEN

Clara felt herself to be a coward as the Aylmer Park carriage, which had been sent to meet her at the station, was drawn up at Sir Anthony Aylmer's door. She had made up her mind that she would not bow down to Lady Aylmer, and yet she was afraid of the woman. As she got out of the carriage, she looked up, expecting to see her in the hall; but Lady Aylmer was too accurately acquainted with the weights and measures of society for any such movement as that. Had her son brought Lady Emily to the house as his future bride, Lady Aylmer would probably have been in the hall when the arrival took place; and had Clara possessed ten thousand pounds of her own, she would probably have been met at the drawing-room door; but as she had neither money nor title as she in fact brought with her no advantages of any sort Lady Aylmer was found stitching a bit of worsted, as though she had expected no one to come to her. And



Belinda Aylmer was stitching also by special order from her mother. The reader will remember that Lady Aylmer was not without strong hope that the engagement might even yet be broken off. Snubbing, she thought, might probably be efficacious to this purpose, and so Clara was to be snubbed.

Page 211

Clara, who had just promised to do her best to gain Lady Aylmer's opinion, and who desired to be in some way true to her promise, though she thoroughly believed that her labour would be in vain, put on her pleasantest smile as she entered the room. Belinda, under the pressure of the circumstances, forgetting somewhat of her mother's injunctions, hurried to the door to welcome the stranger. Lady Aylmer kept her chair, and even maintained her stitch, till Clara was half across the room. Then she got up, and with great mastery over her voice, made her little speech.

'We are delighted to see you, Miss Amedroz,' she said, putting out her hand of which Clara, however, felt no more than the finger.

'Quite delighted,' said Belinda, yielding a fuller grasp. Then there were affectionate greetings between Frederic and his mother and Frederic and his sister, during which Clara stood by, ill at ease. Captain Aylmer said not a word as to the footing on which his future wife had come to his father's house. He did not ask his mother to receive her as another daughter, or his sister to take his Clara to her heart as a sister. There had been no word spoken of recognized intimacy. Clara knew that the Aylmers were cold people. She had learned as much as that from Captain Aylmer's words to herself, and from his own manner. But she had not expected to be so frozen by them as was the case with her now. In ten minutes she was sitting down with her bonnet still on, and Lady Aylmer was again at her stitches.

'Shall I show you your room?' said Belinda.

'Wait a moment, my dear,' said Lady Aylmer. 'Frederic has gone to see if Sir Anthony is in his study.'

Sir Anthony was found in his study, and now made his appearance.

'So this is Clara Amedroz,' he said. 'My dear, you are welcome to Aylmer Park.' This was so much better, that the kindness expressed though there was nothing special in it brought a tear into Clara's eye, and almost made her love Sir Anthony.

'By the by, Sir Anthony, have you seen Darvel? Darvel was wanting to see you especially about Nuggins. Nuggins says that he'll take the bullocks now.' This was said by Lady Aylmer, and was skilfully arranged by her to put a stop to anything like enthusiasm on the part of Sir Anthony. Clara Amedroz had been invited to Aylmer Park, and was to be entertained there, but it would not be expedient that she should be made to think that anybody was particularly glad to see her, or that the family was at all proud of the proposed connexion. Within five minutes after this she was up in her room, and had received from Belinda tenders of assistance as to her lady's maid. Both the mother and daughter had been anxious to learn whether Clara would bring her own maid. Lady Aylmer, thinking that she would do so, had already blamed her for extravagance. 'Of

course Fred will have to pay for the journey and all the rest of it,' she had said. But as soon as

Page 212

she had perceived that Clara had come without a servant, she had perceived that any young woman who travelled in that way must be unfit to be mated with her son. Clara, whose intelligence in such matters was sharp enough, assured Belinda that she wanted no assistance. 'I dare say you think it very odd,' she said, 'but I really can dress myself.' And when the maid did come to unpack the things, Clara would have sent her away at once had she been able. But the maid, who was not a young woman, was obdurate. 'Oh no, miss; my lady wouldn't be pleased. If you please, miss, I'll do it.' And so the things were unpacked.

Clara was told that they dined at half-past seven, and she remained alone in her room till dinner-time, although it had not yet struck five when she had gone upstairs. The maid had brought her up a cup of tea, and she seated herself at her fire, turning over in her mind the different members of the household in which she found herself. It would never do. She told herself over and over again that it would never come to pass that that woman should be her mother-in-law, or that that other woman should be her sister. It was manifest to her that she was distasteful to them; and she had not lost a moment in assuring herself that they were distasteful to her. What purpose could it answer that she should strive not to like them, for no such strife was possible but to appear to like them? The whole place and everything about it was antipathetic to her. Would it not be simply honest to Captain Aylmer that she should tell him so at once, and go away? Then she remembered that Frederic had not spoken to her a single word since she had been under his father's roof. What sort of welcome would have been accorded to her had she chosen to go down to Plaistow Hall?

At half-past seven she made her way by herself downstairs. In this there was some difficulty, as she remembered nothing of the rooms below, and she could not at first find a servant. But a man at last did come to her in the hall, and by him she was shown into the drawing-room. Here she was alone for a few minutes. As she looked about her, she thought that no room she had ever seen had less of the comfort of habitation. It was not here that she had met Lady Aylmer before dinner. There had, at any rate, been in that other room work things, and the look of life which life gives to a room. But here there was no life. The furniture was all in its place, and everything was cold and grand and comfortless. They were making company of her at Aylmer Park!

Clara was intelligent in such matters, and understood it all thoroughly.

Lady Aylmer was the first person to come to her. 'I hope my maid has been with you,' said she to which Clara muttered something intended for thanks. 'You'll find Richards a very clever woman, and quite a proper person.'

'I don't at all doubt that.'

'She has been here a good many years, and has perhaps little ways of her own but she means to be obliging.'

Page 213

'I shall give her very little trouble, Lady Aylmer. I am used to dress myself.' I am afraid this was not exactly true as to Clara's past habits; but she could dress herself, and intended to do so in future, and in this way justified the assertion to herself.

'You had better let Richards come to you, my dear, while you are here,' said Lady Aylmer, with a slight smile on her countenance which outraged Clara more even than the words. 'We like to see young ladies nicely dressed here.' To be told that she was to be nicely dressed because she was at Aylmer Park! Her whole heart was already up in rebellion. Do her best to please Lady Aylmer! It would be utterly impossible to her to make any attempt whatever in that direction. There was something in her ladyship's eye a certain mixture of cunning, and power, and hardness in the slight smile that would gather round her mouth, by which Clara was revolted. She already understood much of Lady Aylmer, but in one thing she was mistaken. She thought that she saw simply the natural woman; but she did, in truth, see the woman specially armed with an intention of being disagreeable, made up to give offence, and prepared to create dislike and enmity. At the present moment nothing further was said, as Captain Aylmer entered the room, and his mother immediately began to talk to him in whispers.

The first two days of Clara's sojourn at Aylmer Park passed by without the occurrence of anything that was remarkable. That which most surprised and annoyed her, as regarded her own position, was the coldness of all the people around her, as connected with the actual fact of her engagement. Sir Anthony was very courteous to her, but had never as yet once alluded to the fact that she was to become one of his family as his daughter-in-law. Lady Aylmer called her Miss Amedroz using the name with a peculiar emphasis, as though determined to show that Miss Amedroz was to be Miss Amedroz as far as any one at Aylmer Park was concerned and treated her almost as though her presence in the house was intrusive. Belinda was as cold as her mother in her mother's presence; but when alone with Clara would thaw a little. She, in her difficulty, studiously avoided calling the new-corner by any name at all. As to Captain Aylmer, it was manifest to Clara that he was suffering almost more than she suffered herself. His position was so painful that she absolutely pitied him for the misery to which he was subjected by his own mother. They still called each other Frederic and Clara, and that was the only sign of special friendship which manifested itself between them. And Clara, though she pitied him, could not but learn to despise him. She had hitherto given him credit at any rate for a will of his own. She had believed him to be a man able to act in accordance with the dictates of his own conscience. But now she perceived him to be so subject to his mother that he did not dare to call his heart his own. What was to be the end of it all? And if there could only be one end, would it not be well that that end should be reached at once, so that she might escape from her purgatory?

Page 214

But on the afternoon of the third day there seemed to have come a change over Lady Aylmer. At lunch she was especially civil civil to the extent of picking out herself for Clara, with her own fork, the breast of a hashed fowl from a dish that was before her. This she did with considerable care I may say, with a show of care; and then, though she did not absolutely call Clara by her Christian name, she did call her 'my dear'. Clara saw it all, and felt that the usual placidity of the afternoon would be broken by some special event. At three o'clock, when the carriage as usual came to the door, Belinda was out of the way, and Clara was made to understand that she and Lady Aylmer were to be driven out without any other companion. 'Belinda is a little busy, my dear. So, if you don't mind, we'll go alone.' Clara of course assented, and got into the carriage with a conviction that now she would hear her fate. She was rather inclined to think that Lady Aylmer was about to tell her that she had failed in obtaining the approbation of Aylmer Park, and that she must be returned as goods of a description inferior to the order given. If such were the case, the breast of the chicken had no doubt been administered as consolation. Clara had endeavoured, since she had been at Aylmer Park, to investigate her own feelings in reference to Captain Aylmer; but had failed, and knew that she had failed. She wished to think that she loved him, as she could not endure the thought of having accepted a man whom she did not love. And she told herself that he had done nothing to forfeit her love. A woman who really loves will hardly allow that her love should be forfeited by any fault. True love breeds forgiveness for all faults. And, after all, of what fault had Captain Aylmer been guilty? He had preached to her out of his mother's mouth. That had been all! She had first accepted him, and then rejected him, and then accepted him again; and now she would fain be firm, if firmness were only possible to her. Nevertheless, if she were told that she was to be returned as inferior, she would hold up her head under such disgrace as best she might, and would not let the tidings break her heart.

'My dear,' said Lady Aylmer, as soon as the trotting horses and rolling wheels made noise enough to prevent her words from reaching the servants on the box. 'I want to say a few words to you and I think that this will be a good opportunity.'

'A very good opportunity,' said Clara.

'Of course, my dear, you are aware that I have heard of something going on between you and my son Frederic.' Now that Lady Aylmer had taught herself to call Clara 'my dear', it seemed that she could hardly call her so often enough.

'Of course I know that Captain Aylmer has told you of our engagement. But for that, I should not be here.'

'I don't know how that might be,' said Lady Aylmer; 'but at any rate, my dear, he has told me that since the day of my sister's death there has been in point of fact, a sort of engagement.'

Page 215

'I don't think Captain Aylmer has spoken of it in that way.'

'In what way? Of course he has not said a word that was not nice and lover-like, and all that sort of thing. I believe he would have done anything in the world that his aunt had told him; and as to his'

'Lady Aylmer!' said Clara, feeling that her voice was almost trembling with anger, 'I am sure you cannot intend to be unkind to me?'

'Certainly not.'

'Or to insult me?'

'Insult you, my dear! You should not use such strong words, my dear; indeed you should not. Nothing of the kind is near my thoughts.'

'If you disapprove of my marrying your son, tell me so at once, and I shall know what to do.'

'It depends, my dear it depends on circumstances, and that is just why I want to speak to you.'

'Then tell me the circumstances though indeed I think it would have been better if they could have been told to me by Captain Aylmer himself.'

'There, my dear, you must allow me to judge. As a mother, of course I am anxious for my son. Now Frederic is a poor man. Considering the kind of society in which he has to live, and the position which he must maintain as a Member of Parliament, he is a very poor man.'

This was an argument which Clara certainly had not expected that any of the Aylmer family would condescend to use. She had always regarded Captain Aylmer as a rich man since he had inherited Mrs Winterfield's property, knowing that previously to that he had been able to live in London as rich men usually do live. 'Is he?' said she. 'It may seem odd to you, Lady Aylmer, but I do not think that a word has ever passed between me and your son as to the amount of his income.'

'Not odd at all, my dear. Young ladies are always thoughtless about those things, and when they are looking to be married think that money will come out of the skies.'

'If you mean that I have been looking to be married'

'Well expecting. I suppose you have been expecting it.' Then she paused; but as Clara said nothing, she went on. 'Of course, Frederic has got my sister's moiety of the Perivale property about eight hundred a year, or something of that sort, when all

deductions are made. He will have the moiety when I die, and if you and he can be satisfied to wait for that event which may not perhaps be very long '. Then there was another pause, indicative of the melancholy natural to such a suggestion, during which Clara looked at Lady Aylmer, and made up her mind that her ladyship would live for the next twenty-five years at least. 'If you can wait for that,' she continued, it may be all very well, and though you will be poor people, in Frederic's rank of life, you will be able to live.'

'That will be so far fortunate,' said Clara.

'But you'll have to wait,' said Lady Aylmer, turning upon her companion almost fiercely. 'That is, you certainly will have to do so if you are to depend upon Frederic's income alone.'

Page 216

'I have nothing of my own as he knows; absolutely nothing.'

'That does not seem to be quite so clear,' said Lady Aylmer, speaking now very cautiously or rather with a purpose of great caution; 'I don't think that that is quite so clear. Frederic has been telling me that there seems to be some sort of a doubt about the settlement of the Belton estate.'

'There is no sort of doubt whatsoever no shadow of a doubt. He is quite mistaken.'

'Don't be in such a hurry, my dear. It is not likely that you yourself should be a very good lawyer.'

'Lady Aylmer, I must be in a hurry lest there should be any mistake about this. There is no question here for lawyers. Frederic must have been misled by a word or two which I said to him with quite another purpose. Everybody concerned knows that the Belton estate goes to my cousin Will. My poor father was quite aware of it.'

'That is all very well; and pray remember, my dear, that you need not attack me in this way. I am endeavouring, if possible, to arrange the accomplishment of your own wishes. It seems that Mr Belton himself does not claim the property.'

'There is no question of claiming. Because he is a man more generous than any other person in the world romantically generous he has offered to give me the property which was my father's for his lifetime; but I do not suppose that you would wish, or that Captain Aylmer would wish, that I should accept such an offer as that.' There was a tone in her voice as she said this, and a glance in her eye as she turned her face full upon her companion, which almost prevailed against Lady Aylmer's force of character.

'I really don't know, my dear,' said Lady Aylmer. 'You are so violent.'

'I certainly am eager about this. No consideration on earth would induce me to take my cousin's property from him.'

'It always seemed to me that that entail was a most unfair proceeding.'

'What would it signify even if it were which it was not? Papa got certain advantages on those conditions. But what can all that matter? It belongs to Will Belton.'

Then there was another pause, and Clara thought that that subject was over between them. But Lady Aylmer had not as yet completed her purpose. Shall I tell you, my dear, what I think you ought to do?

'Certainly, Lady Aylmer; if you wish it.'



'I can at any rate tell you what it would become any young lady to do under such circumstances. I suppose you will give me credit for knowing as much as that. Any young lady placed as you are would be recommended by her friends if she had friends able and fit to give her advice to put the whole matter into the hands of her natural friends and her lawyer together. Hear me out, my dear, if you please. At least you can do that for me, as I am taking a great deal of trouble on your behalf. You should let Frederic see Mr Green. I understand that Mr Green was your father's lawyer. And then Mr Green can see Mr Belton. And so the matter can be arranged. It seems to me, from what I hear, that in this way, and in this way only; something can be done as to the proposed marriage. In no other way can anything be done.'

Page 217

Then Lady Aylmer had finished her argument, and throwing herself back into the carriage, seemed to intimate that she desired no reply. She had believed and did believe that her guest was so intent upon marrying her son, that no struggle would be regarded as too great for the achievement of that object. And such belief was natural on her part. Mothers always so think of girls engaged to their sons, and so think especially when the girls are penniless and the sons are well-to-do in the world. But such belief, though it is natural, is sometimes wrong and it was altogether wrong in this instance. 'Then,' said Clara, speaking very plainly, 'nothing can be done.'

'Very well, my dear.'

After that there was not a word said between them till the carriage was once more within the park. Then Lady Aylmer spoke again. 'I presume you see, my dear, that under these circumstances any thought of marriage between you and my son must be quite out of the question at any rate for a great many years.'

'I will speak to Captain Aylmer about it, Lady Aylmer.'

'Very well, my dear. So do. Of course he is his own master. But he is my son as well, and I cannot see him sacrificed without an effort to save him.'

When Clara came down to dinner on that day she was again Miss Amedroz, and she could perceive from Belinda's manner quite as plainly as from that of her ladyship that she was to have no more tit-bits of hashed chicken specially picked out for her by Lady Aylmer's own fork. That evening and the two next days passed, just as had passed the two first days, and everything was dull, cold, and uncomfortable. Twice she had walked out with Frederic, and on each occasion had thought that he would refer to what his mother had said; but he did not venture to touch upon the subject. Clara more than once thought that she would do so herself; but when the moment came she found that it was impossible. She could not bring herself to say anything that should have had the appearance of a desire on her part to hurry on a marriage. She could not say to him, 'If you are too poor to be married or even if you mean to put forward that pretence say so at once.' He still called her Clara, and still asked her to walk with him, and still talked, when they were alone together, in a distant cold way, of the events of their future combined life. Would they live at Perivale? Would it be necessary to refurnish the house? Should he keep any of the land on his own hands? These are all interesting subjects of discussion between an engaged man and the girl to whom he is engaged; but the man, if he wish to make them thoroughly pleasant to the lady, should throw something of the urgency of a determined and immediate purpose into the discussion. Something should be said as to the actual destination of the rooms. A day should be fixed for choosing the furnishing. Or the gentleman should declare that he will at once buy the cows for the farm. But with Frederic Aylmer all discussions seemed to point to some cold, distant future, to which Clara might look forward as she did to the joys of heaven. Will Belton would have bought the ring long since, and bespoken the priest,

and arranged every detail of the honeymoon, tour and very probably would have stood looking into a cradle shop with longing eyes.

Page 218

At last there came an absolute necessity for some plain speaking. Captain Aylmer declared his intention of returning to London that he might resume his parliamentary duties. He had purposed to remain till after Easter, but it was found to be impossible. 'I find I must go up tomorrow,' he said at breakfast. 'They are going to make a stand about the poor-rates, and I must be in the House in the evening.' Clara felt herself to be very cold and uncomfortable. As things were at present arranged, she was to be left at Aylmer Park without a friend. And how long was she to remain there? No definite ending had been proposed for her visit. Something must be said and something settled before Captain Aylmer went away.

'You will come down for Easter, of course,' said his mother.

'Yes; I shall come down for Easter, I think or at any rate at Whitsuntide.'

'You must come at Easter, Frederic,' said his mother.

'I don't doubt but I shall,' said he.

'Miss Amedroz should lay her commands upon him,' said Sir Anthony gallantly.

'Nonsense, said Lady Aylmer.

'I have commands to lay upon him all the same,' said Clara; 'and if he will give me half an hour this morning he shall have them.' To this Captain Aylmer, of course, assented as how could he escape from such assent and a regular appointment was made, Captain Aylmer and Miss Amedroz were to be closeted together in the little back drawing-room immediately after breakfast. Clara would willingly have avoided any such formality could she have done so compatibly with the exigencies of the occasion. She had been obliged to assert herself when Lady Aylmer had rebuked Sir Anthony, and then Lady Aylmer had determined that an air of business should be assumed. Clara, as she was marched off into the back drawing-room followed by her lover with more sheep-like gait even than her own, felt strongly the absurdity and the wretchedness of her position. But she was determined to go through with her purpose.

'I am very sorry that I have to leave you so soon,' said Captain Aylmer, as soon as the door was shut and they were alone together.

'Perhaps it may be better as it is, Frederic; as in this way we shall all come to understand each other, and something will be settled.'

'Well, yes; perhaps that will be best.'

'Your mother has told me that she disapproves of our marriage.'

'No; not that, I think, I don't think she can have quite said that.'



'She says that you cannot marry while she is alive that is, that you cannot marry me because your income would not be sufficient.'

'I certainly was speaking to her about my income.'

'Of course I have got nothing.' Here she paused. 'Not a penny-piece in the world that I can call my own.'

'Oh yes, you have.'

'Nothing. Nothing!'

'You have your aunt's legacy?'

'No; I have not. She left me no legacy. But as that is between you and me, if we think of marrying each other, that would make no difference.'



Page 219

'None at all, of course.'

'But in truth I have got nothing. Your mother said something to me about the Belton estate; as though there was some idea that possibly it might come to me.'

'Your cousin himself seemed to think so.'

'Frederic, do not let us deceive ourselves. There can be nothing of the kind. I could not accept any portion of the property from my cousin even though our marriage were to depend upon it.'

'Of course it does not.'

'But if your means are not sufficient for your wants I am quite ready to accept that reason as being sufficient for breaking our engagement.'

'There need be nothing of the kind.'

'As for waiting for the death of another person for your mother's death, I should think it very wrong. Of course, if our engagement stands there need be no hurry; but some time should be fixed.' Clara as she said this felt that her face and forehead were suffused with a blush; but she was determined that it should be said, and the words were pronounced.

'I quite think so too,' said he.

'I am glad that we agree. Of course, I will leave it to you to fix the time.'

'You do not mean at this very moment?' said Captain Aylmer, almost aghast.

'No; I did not mean that.'

'I'll tell you what. I'll make a point of coming down at Easter. I wasn't sure about it before, but now I will be. And then it shall be settled.'

Such was the interview; and on the next morning Captain Aylmer started for London. Clara felt, aware that she had not done or said all that should have been done and said; but, nevertheless, a step in the right direction had been taken.

CHAPTER XXVI

THE AYLMEY PARK HASHED CHICKEN COMES TO AN END

Easter in this year fell about the middle of April, and it still wanted three weeks of that time when Captain Aylmer started for London. Clara was quite alive to the fact that the next three weeks would not be a happy time for her. She looked forward, indeed, to so much wretchedness during this period, that the days as they came were not quite so bad as she had expected them to be. At first Lady Aylmer said little or nothing to her. It seemed to be agreed between them that there was to be war, but that there was no necessity for any of the actual operations of war during the absence of Captain Aylmer. Clara had become Miss Amedroz again; and though an offer to be driven out in the carriage was made to her every day, she was in general able to escape the infliction so that at last it came to be understood that Miss Amedroz did not like carriage exercise. 'She has never been used to it,' said Lady Aylmer to her daughter. 'I suppose not,' said Belinda; 'but if she wasn't so very cross she'd enjoy it just for that reason.' Clara sometimes walked about the grounds with Belinda, but on such occasions there was hardly anything that could be called conversation between them, and Frederic Aylmer's name was never mentioned.

Page 220

Captain Aylmer had not been gone many days before she received a letter from her cousin, in which he spoke with absolute certainty of his intention of giving up the estate. He had, he said, consulted Mr Green, and the thing was to be done. 'But it will be better, I think,' he went on to say, 'that I should manage it for you till after your marriage. I simply mean what I say. You are not to suppose that I shall interfere in any way afterwards. Of course there will be a settlement, as to which I hope you will allow me to see Mr Green on your behalf.' In the first draught of his letter he had inserted a sentence in which he expressed a wish that the property should be so settled that it might at last all come to some one bearing the name of Belton. But as he read this over, the condition for coming from him it would be a condition seemed to him to be ungenerous, and he expunged it. 'What does it matter who has it,' he said to himself bitterly, 'or what he is called? I will never set eyes upon his children, nor yet upon the place when he has become the master of it.' Clara wrote both to her cousin and to the lawyer, repeating her assurance with great violence, as Lady Aylmer would have said that she would have nothing to with the Belton estate. She told Mr Green that it would be useless for him to draw up any deeds. 'It can't be made mine unless I choose to have it,' she said, 'and I don't choose to have it.' Then there came upon her a terrible fear. What if she should marry Captain Aylmer after all; and what if he, when he should be her husband, should take the property on her behalf! Something must be done before her marriage to prevent the possibility of such results something as to the efficacy of which for such prevention she could feel altogether certain.

But could she marry Captain Aylmer at all in her present mood? During these three weeks she was unconsciously teaching herself to hope that she might be relieved from her engagement. She did not love him. She was becoming aware that she did not love him. She was beginning to doubt whether, in truth, she had ever loved him. But yet she felt that she could not, escape from her engagement if he should show himself to be really actuated by any fixed purpose to carry it out; nor could she bring herself to be so weak before Lady Aylmer as to seem to yield. The necessity of not striking her colours was forced upon her by the warfare to which she was subjected. She was unhappy, feeling that her present position in life was bad, and unworthy of her. She could have brought herself almost to run away from Aylmer Park, as a boy runs away from school, were it not that she had no place to which to run. She could not very well make her appearance at Plaistow Hall, and say that she had come there for shelter and succour. She could, indeed, go to Mrs Askerton's cottage for awhile; and the more she thought of the state of her affairs, the more did she feel sure that that would, before long, be her destiny. It must be her destiny unless Captain Aylmer should return at Easter with purposes so firmly fixed that even his mother should not be able to prevail against them.

Page 221

And now, in these days, circumstances gave her a new friend or perhaps, rather, a new acquaintance, where she certainly had looked neither for the one or for the other. Lady Aylmer and Belinda and the carriage and the horses used, as I have said, to go off without her. This would take place soon after luncheon. Most of us know how the events of the day drag themselves on tediously in such a country house as Aylmer Park -a country house in which people neither read, nor flirt, nor gamble, nor smoke, nor have resort to the excitement of any special amusement. Lunch was on the table at half-past one, and the carriage was at the door at three. Eating and drinking and the putting on of bonnets occupied the hour and a half. From breakfast to lunch Lady Aylmer, with her old 'front', would occupy herself with her household accounts. For some days after Clara's arrival she put on her new 'front' before lunch; but of late since the long conversation in the carriage the new 'front' did not appear till she came down for the carriage. According to the theory of her life, she was never to be seen by any but her own family in her old 'front'. At breakfast she would appear with head so mysteriously enveloped with such a bewilderment of morning caps that old 'front' or new 'front' was all the same. When Sir Anthony perceived this change when he saw that Clara was treated as though she belonged to Aylmer Park then he told himself that his son's marriage with Miss Amedroz was to be; and, as Miss Amedroz seemed to him to be a very pleasant young woman, he would creep out of his own quarters when the carriage was gone and have a little chat with her being careful to creep away again before her ladyship's return. This was Clara's new friend.

'Have you heard from Fred since he has been gone?' the old man asked one day, when he had come upon Clara still seated in the parlour in which they had lunched. He had been out, at the front of the house, scolding the under-gardener; but the man had taken away his barrow and left him, and Sir Anthony had found himself without employment.

'Only a line to say that he is to be here on the sixteenth.'

'I don't think people write so many love-letters as they did when I was young,' said Sir Anthony.

'To judge from the novels, I should think not. The old novels used to be full of love-letters.'

'Fred was never good at writing, I think.'

'Members of Parliament have too much to do, I suppose,' said Clara.

'But he always writes when there is any business. He's a capital man of business. I wish I could say as much for his brother or for myself.'

'Lady Aylmer seems to like work of that sort.'



'So she does. She's fond of it I am not. I sometimes think that Fred takes after her. Where was it you first knew him?'

'At Perivale. We used, both of us, to be staying with Mrs Winterfield.'

'Yes, yes; of course. The most natural thing in life. Well, my dear, I can assure you that I am quite satisfied.'

Page 222

'Thank you, Sir Anthony. I'm glad to hear you say even as much as that.'

'Of course money is very desirable for a man situated like Fred; but he'll have enough, and if he is pleased, I am. Personally, as regards yourself, I am more than pleased. I am indeed.'

'It's very good of you to say so.'

Sir Anthony looked at Clara, and his heart was softened towards her as he saw that there was a tear in her eye. A man's heart must be very hard when it does not become softened by the trouble of a woman with whom he finds himself alone. 'I don't know how you and Lady Aylmer get on together,' he said; 'but it will not be my fault if we are not friends.'

'I am afraid that Lady Aylmer does not like me,' said Clara.

'Indeed. I was afraid there was something of that. But you must remember she is hard to please. You'll find she'll come round in time.'

'She thinks that Captain Aylmer should not marry a woman without money.'

'That's all very well; but I don't see why Fred shouldn't please himself, He's old enough to know what he wants.'

'Is he, Sir Anthony? That's just the question. I'm not quite sure that he does know what he wants.'

'Fred doesn't know, do you mean?'

'I don't quite think he does, sir. And the worst of it is, I am in doubt as well as he.'

'In doubt about marrying him?'

'In doubt whether it will be good for him or for any of us. I don't like to come into a family that does not desire to have me.'

'You shouldn't think so much of Lady Aylmer as all that, my dear.'

'But I do think a great deal of her.'

'I shall be very glad to have you as a daughter-in-law. And as for Lady Aylmer between you and me, my dear, you shouldn't take every word she says so much to heart. She's the best woman in the world, and I'm sure I'm bound to say so. But she has her temper, you know; and I don't think you ought to give way to her altogether. There's the carriage. It won't do you any good if we're found together talking over it all; will it?' Then

the baronet hobbled off, and Lady Aylmer, when she entered the room, found Clara sitting alone.

Whether it was that the wife was clever enough to extract from her husband something of the conversation that had passed between him and Clara, or whether she had some other source of information or whether her conduct might proceed from other grounds, we need not inquire; but from that afternoon Lady Aylmer's manner and words to Clara became much less courteous than they had been before. She would always speak as though some great iniquity was being committed, and went about the house with a portentous frown, as though some terrible measure must soon be taken with the object of putting an end to the present extremely improper state of things. All this was so manifest to Clara, that she said to Sir Anthony one day that she could no longer bear the look of Lady Aylmer's

Page 223

displeasure and that she would be forced to leave Aylmer Park before Frederic's return, unless the evil were mitigated. She had by this time told Sir Anthony that she much doubted whether the marriage would be possible, and that she really believed that it would be best for all parties that the idea should be abandoned. Sir Anthony, when he heard this, could only shake his head and hobble away. The trouble was too deep for him to cure.

But Clara still held on; and now there wanted but two days to Captain Aylmer's return, when, all suddenly, there arose a terrible storm at Aylmer Park, and then came a direct and positive quarrel between Lady Aylmer and Clara a quarrel direct and positive and, on the part of both ladies, very violent.

Nothing had hitherto been said at Aylmer Park about Mrs Askerton nothing, that is, since Clara's arrival. And Clara had been thankful for this silence. The letter which Captain Aylmer had written to her about Mrs Askerton will perhaps be remembered, and Clara's answer to that letter. The Aylmer Park opinion as to this poor woman, and as to Clara's future conduct towards the poor woman, had been expressed very strongly; and Clara had as strongly resolved that she would not be guided by Aylmer Park opinions in that matter. She had anticipated much that was disagreeable on this subject, and had therefore congratulated herself not a little on the absence of all allusion to it. But Lady Aylmer had, in truth, kept Mrs Askerton in reserve, as a battery to be used against Miss Amedroz if all other modes of attack should fail as a weapon which would be powerful when other weapons had been powerless. For a while she had thought it possible that Clara might be the owner of the Belton estate, and then it had been worth the careful mother's while to be prepared to accept a daughter-in-law so dowered. We have seen how the question of such ownership had enabled her to put forward the plea of poverty which she had used on her son's behalf. But since that, Frederic had declared his intention of marrying the young woman in spite of his poverty, and Clara seemed to be equally determined. 'He has been fool enough to speak the word, and she is determined to keep him to it,' said Lady Aylmer to her daughter. Therefore the Askerton battery was brought to bear not altogether unsuccessfully.

The three ladies were sitting together in the drawing-room, and had been as mute as fishes for half an hour. In these sittings they were generally very silent, speaking only in short little sentences. 'Will you drive with us today, Miss Amedroz?' 'Not today, I think, Lady Aylmer.' 'As you are reading, perhaps you won't mind our leaving you?' 'Pray do not put yourself to inconvenience for me, Miss Aylmer,' Such and such like was their conversation; but on a sudden, after a full half- hour's positive silence, Lady Aylmer asked a question altogether of another kind. 'I think, Miss Amedroz, my son wrote to you about a certain Mrs Askerton?'

Page 224

Clara put down her work and sat for a moment almost astonished. It was not only that Lady Aylmer had asked so very disagreeable a question, but that she had asked it with so peculiar a voice a voice as it were a command, in a manner that was evidently intended to be taken as serious, and with a look of authority in her eye, as though she were resolved that this battery of hers should knock the enemy absolutely in the dust! Belinda gave a little spring in her chair, looked intently at her work, and went on stitching faster than before. 'Yes, he did,' said Clara, finding that an answer was imperatively demanded from her.

'It was quite necessary that he should write. I believe it to be an undoubted fact that Mrs Askerton is is is not at all what she ought to be.'

'Which of us is what we ought to be?' said Clara.

'Miss Amedroz, on this subject I am not at all inclined to joke. Is it not true that Mrs Askerton'

'You must excuse me, Lady Aylmer, but what I know of Mrs Askerton, I know altogether in confidence; so that I cannot speak to you of her past life.'

'But, Miss Amedroz, pray excuse me if I say that I must speak of it. When I remember the position in which you do us the honour of being our visitor here, how can I help speaking of it?' Belinda was stitching very hard, and would not even raise her eyes. Clara, who still held her needle in her hand, resumed her work, and for a moment or two made no further answer. But Lady Aylmer had by no means completed her task. 'Miss Amedroz,' she said, 'you must allow me to judge for myself in this matter. The subject is one on which I feel myself obliged to speak to you.'

'But I have got nothing to say about it.'

'You have, I believe, admitted the truth of the allegations made by us as to this woman.' Clara was becoming very angry. A red spot showed itself on each cheek, and a frown settled upon her brow. She did not as yet know what she would say or how she would conduct herself. She was striving to consider how best she might assert her own independence. But she was fully determined that in this matter she would not bend an inch to Lady Aylmer. 'I believe we may take that as admitted?', said her ladyship.

'I am not aware that I have admitted anything to you, Lady Aylmer, or said anything that can justify you in questioning me on the subject.'

'Justify me in questioning a young woman who tells me that she is to be my future daughter-in-law!'

'I have not told you so. I have never told you anything of the kind.'



'Then on what footing, Miss Amedroz, do you do us the honour of being with us here at Aylmer Park?'

'On a very foolish footing.'

'On a foolish footing! What does that mean?'

'It means that I have been foolish in coming to a house in which I am subjected to such questioning.'

'Belinda, did you ever hear anything like this? Miss Amedroz, I must persevere, however much you may dislike it. The story of this woman's life whether she be Mrs Askerton or not, I don't know'

Page 225

'She is Mrs Askerton,' said Clara.

'As to that I do not profess to know, and I dare say that you are no wiser than myself. But what she has been we do know.' Here Lady Aylmer raised her voice and continued to speak with all the eloquence which assumed indignation could give her. 'What she has been we do know, and I ask you, as a duty which I own to my son, whether you have put an end to your acquaintance with so very disreputable a person a person whom even to have known is a disgrace?'

'I know her, and'

'Stop one minute, if you please. My questions are these Have you put an end to that acquaintance? Are you ready to give a promise that it shall never be resumed?

'I have not put an end to that acquaintance or rather that affectionate friendship as I should call it, and I am ready to promise that it shall be maintained with all my heart.'

'Belinda, do you hear her?'

'Yes, mamma.' And Belinda slowly shook her head, which was now bowed lower than ever over her lap.

'And that is your resolution?'

'Yes, Lady Aylmer; that is my resolution.'

'And you think that becoming to you, as a young woman?'

'Just so; I think that becoming to me as a young woman.'

'Then let me tell you, Miss Amedroz, that I differ from you altogether altogether.' Lady Aylmer, as she repeated the last word, raised her folded hands as though she were calling upon heaven to witness how thoroughly she differed from the young woman!

'I don't see how I am to help that, Lady Aylmer. I dare say we may differ on many subjects.'

'I dare say we do. I dare say we do. And I need not point out to you how very little that would be a matter of regret to me but for the hold you have upon my unfortunate son.'

'Hold upon him, Lady Aylmer! How dare you insult me by such language?' Hereupon Belinda again jumped in her chair; but Lady Aylmer looked as though she enjoyed the storm.

'You undoubtedly have a hold upon him, Miss Amedroz, and I think that it is a great misfortune. Of course, when he hears what your conduct is with reference to this person, he will release himself from his entanglement.'

'He can release himself from his entanglement whenever he chooses,' said Clara, rising from her chair. 'Indeed, he is released. I shall let Captain Aylmer know that our engagement must be at an end, unless he will promise that I shall never in future be subjected to the unwarrantable insolence of his mother.' Then she walked off to the door, not regarding, and indeed not hearing, the parting shot that was fired at her.

Page 226

And now what was to be done! Clara went up to her own room, making herself strong and even comfortable, with an inward assurance that nothing should ever induce her even to sit down to table again with Lady Aylmer. She would not willingly enter the same room with Lady Aylmer, or have any speech with her. But what should she at once do? She could not very well leave Aylmer Park without settling whither she would go; nor could she in any way manage to leave the house on that afternoon. She almost resolved that she would go to Mrs Askerton. Everything was of course over between her and Captain Aylmer, and therefore there was no longer any hindrance to her doing so on that score. But what would be her Cousin Will's wish? He, now, was the only friend to whom she could trust for good counsel. What would be his advice? Should she write and ask him? No she could not do that. She could not bring herself to write to him, telling him that the Aylmer 'entanglement' was at an end. Were she to do so, he, with his temperament, would take such letter as meaning much more than it was intended to mean. But she would write a letter to Captain Aylmer. This she thought that she would do at once, and she began it.

She got as far as 'My dear Captain Aylmer,' and then she found that the letter was one which could not be written very easily. And she remembered, as the greatness of the difficulty of writing the letter became plain to her, that it could not now be sent so as to reach Captain Aylmer before he would leave London. If written at all, it must be addressed to him at Aylmer Park, and the task might be done tomorrow as well as today. So that task was given up for the present.

But she did write a letter to Mrs Askerton a letter which she would send or not on the morrow, according to the state of her mind as it might then be. In this she declared her purpose of leaving Aylmer Park on the day after Captain Aylmer's arrival, and asked to be taken in at the cottage. An answer was to be sent to her, addressed to the Great Northern Railway Hotel.

Richards, the maid, came up to her before dinner, with offers of assistance for dressing offers made in a tone which left no doubt on Clara's mind that Richards knew all about the quarrel. But Clara declined to be dressed, and sent down a message saying that she would remain in her room, and begging to be supplied with tea. She would not even condescend to say that she was troubled with a headache. Then Belinda came up to her, just before dinner was announced, and with a fluttered gravity advised Miss Amedroz to come down-stairs. 'Mamma thinks it will be much better that you should show yourself, let the final result be what it may.'

'But I have not the slightest desire to show myself.'

'There are the servants, you know.'

'But, Miss Aylmer, I don't care a straw for the servants really not a straw.'

‘And papa will feel it so.’

Page 227

'I shall be sorry if Sir Anthony is annoyed but I cannot help it. It has not been my doing.'

'And mamma says that my brother would of course wish it.'

'After what your mother has done, I don't see what his wishes would have to do with it even if she knew them which I don't think she does.'

'But if you will think of it, I'm sure you'll find it is the proper thing to do. There is nothing to be avoided so much as an open quarrel, that all the servants can see.'

'I must say, Miss Aylmer, that I disregard the servants. After what passed downstairs, of course I have had to consider what I should do. Will you tell your mother that I will stay here, if she will permit it?'

'Of course. She will be delighted.'

'I will remain, if she will permit it, till the morning after Captain Aylmer's arrival. Then I shall go.'

'Where to, Miss Amedroz?'

'I have already written to a friend, asking her to receive me.'

Miss Aylmer paused a moment before she asked her next question but she did ask it, showing by her tone and manner that she had been driven to summon up all her courage to enable her to do so. 'To what friend, Miss Amedroz? Mamma will be glad to know.'

'That is a question which Lady Aylmer can have no right to ask,' said Clara.

'Oh very well. Of course, if you don't like to tell, there's no more to be said.'

'I do not like to tell, Miss Aylmer.'

Clara had her tea in her room that evening, and lived there the whole of the next day. The family downstairs was not comfortable. Sir Anthony could not be made to understand why his guest kept her room which was not odd, as Lady Aylmer was very sparing in the information she gave him; and Belinda found it to be impossible to sit at table, or to say a few words to her father and mother, without showing at every moment her consciousness that a crisis had occurred. By the next day's post the letter to Mrs Askerton was sent, and at the appointed time Captain Aylmer arrived. About an hour after he entered the house, Belinda went upstairs with a message from him would Miss Amedroz see him? Miss Amedroz would see him, but made it a condition of doing so that she should not be required to meet Lady Aylmer. 'She need not be afraid,' said Lady Aylmer. 'Unless she sends me a full apology, with a promise that she will have no

further intercourse whatever with that woman, I will never willingly see her again.' A meeting was therefore arranged between Captain Aylmer and Miss Amedroz in a sitting-room upstairs.

'What is all this, Clara?' said Captain Aylmer, at once.

'Simply this that your mother has insulted me most wantonly.'

'She says that it is you who have been uncourteous to her.'

'Be it so you can of course believe whichever you please, and it is desirable, no doubt, that you should prefer to believe your mother.'

Page 228

'But I do not wish there to be any quarrel.'

'But there is a quarrel, Captain Aylmer, and I must leave your father's house. I cannot stay here after what has taken place. Your mother told me I cannot tell you what she told me, but she made against me just those accusations which she knew it would be the hardest for me to bear.'

'I'm sure you have mistaken her.'

'No; I have not mistaken her.'

'And where do you propose to go?'

'To Mrs Askerton.'

'Oh, Clara!'

'I have written to Mrs Askerton to ask her to receive me for awhile. Indeed, I may almost say that I had no other choice.'

'If you go there, Clara, there will be an end to everything.'

'And there must be an end of what you call everything, Captain Aylmer,' said she, smiling. 'It cannot be for your good to bring into your family a wife of whom your mother would think so badly as she thinks of me.'

There was a great deal said, and Captain Aylmer walked very often up and down the room, endeavouring to make some arrangement which might seem in some sort to appease his mother. Would Clara only allow a telegram to be sent to Mrs Askerton, to explain that she had changed her mind? But Clara would allow no such telegram to be sent, and on that evening she packed up all her things. Captain Aylmer saw her again and again, sending Belinda backwards and forwards, and making different appointments up to midnight; but it was all to no purpose, and on the next morning she took her departure alone in the Aylmer Park carriage for the railway station. Captain Aylmer had proposed to go with her; but she had so stoutly declined his company that he was obliged to abandon his intention. She saw neither of the ladies on that morning, but Sir Anthony came out to say a word of farewell to her in the hall. 'I am very sorry for all this,' said he. 'It is a pity,' said Clara, 'but it cannot be helped. Good-bye, Sir Anthony.' 'I hope we may meet again under pleasanter circumstances,' said the baronet. To this Clara made no reply, and was then handed into the carriage by Captain Aylmer.

'I am so bewildered,' said he, 'that I cannot now say anything definite, but I shall write to you, and probably follow you.'

'Do not follow me, pray, Captain Aylmer,' said she, Then she was driven to the station; and as she passed through the lodges of the park entrance she took what she intended to be a final farewell of Aylmer Park.

CHAPTER XXVII

ONCE MORE BACK TO BELTON

When the carriage was driven away, Sir Anthony and Captain Aylmer were left standing alone at the ball door of the house. The servants had slunk off, and the father and son, looking at each other, felt that they also must slink away, or else have some words together on the subject of their guest's departure. The younger gentleman would have preferred that there should be no words, but Sir Anthony was curious to know something of what had passed in the house during the last few days. 'I'm afraid things are not going quite comfortable,' he said.

Page 229

'It seems to me, sir,' said his son, 'that things very seldom do go quite comfortable.'

'But, Fred what is it all about? Your mother says that Miss Amedroz is behaving very badly.'

'And Miss Amedroz says that my mother is behaving very badly.'

'Of course that's only natural. And what do you say?'

'I say nothing, sir. The less said the soonest mended.'

'That's all very well; but it seems to me that you, in your position, must say something. The long and the short of it is this. Is she to be your wife?'

'Upon my word, sir, I don't know.'

They were still standing out under the portico, and as Sir Anthony did not for a minute or two ask any further questions, Captain Aylmer turned as though he were going into the house. But his father had still a word or two to say. Stop a moment, Fred. I don't often trouble you with advice.'

'I'm sure I'm always glad to hear it when you offer any.'

'I know very well that in most things your opinion is better than mine. You've had advantages which I never had. But I've had more experience than you, my dear boy. It stands to reason that in some things I must have had more experience than you.' There was a tone of melancholy in the father's voice as he said this which quite touched his son, and which brought the two closer together out in the porch. 'Take my word for it,' continued Sir Anthony, 'that you are much better off as you are than you could be with a wife.'

'Do you mean to say that no man should marry?'

'No I don't mean to say that. An eldest son ought to marry, so that the property may have an heir. And poor men should marry, I suppose, as they want wives to do for them. And sometimes, no doubt, a man must marry when he has got to be very fond of a girl, and has compromised himself, and all that kind of thing. I would never advise any man to sully his honour.' As Sir Anthony said this he raised himself a little with his two sticks and spoke out in a bolder voice. The voice however, sank again as he descended from the realms of honour to those of prudence. 'But none of these cases are yours, Fred. To be sure you'll have the Perivale property; but that is not a family estate, and you'll be much better off by turning it into money. And in the way of comfort, you can be a great deal more comfortable without a wife than you can with one. What do you want a wife for? And then, as to Miss Amedroz for myself I must say that I like her uncommonly. She has been very pleasant in her ways with me. But somehow or



another, I don't think you are so much in love with her but what you can do without her.' Hereupon he paused and looked his son full in the face. Fred had also been thinking of the matter in his own way, and asking himself the same question whether he was in truth so much in love with Clara that he could not live without her. 'Of course I don't know,' continued Sir Anthony, '

Page 230

what has taken place just now between you and her, or what between her and your mother; but I suppose the whole thing might fall through without any further trouble to you or without anything unhandsome on your part?' But Captain Aylmer still said nothing. The whole thing might, no doubt, fall through, but he wished to be neither unjust nor ungenerous and he specially wished to avoid anything unhandsome. After a further pause of a few minutes, Sir Anthony went on again, pouring forth the words of experience. 'Of course marriage is all very well. I married rather early in life, and have always found your mother to be a most excellent woman. A better woman doesn't breathe. I'm as sure of that as I am of anything. But God bless me of course you can see. I can't call anything my own. I'm tied down here and I can't move. I've never got a shilling to spend, while all these lazy hounds about the place are eating me up. There isn't a clerk with a hundred a year in London that isn't better off than I am as regards ready money. And what comfort have I in a big house, and no end of gardens, and a place like this? What pleasures do I get out of it? That comes of marrying and keeping up one's name in the county respectably! What do I care for the county? D the county! I often wish that I'd been a younger son as you are.'

Captain Aylmer had no answer to make to all this. It was, no doubt, the fact that age and good living had made Sir Anthony altogether incapable of enjoying the kind of life which he desiderated, and that he would probably have eaten and drunk himself into his grave long since had that kind of life been within his reach. This, however, the son could not explain to the father. But in fitting, as he endeavoured to do, his father's words to his own case, Captain Aylmer did perceive that a bachelor's life might perhaps be the most suitable to his own peculiar case. Only he would do nothing unhandsome. As to that he was quite resolved. Of course Clara must show herself to be in some degree amenable to reason and to the ordinary rules of the world; but he was aware that his mother was hot. tempered, and he generously made up his mind that he would give Miss Amedroz even yet another chance.

At the hotel in London Clara found a short note from Mrs Askerton, in which she was warmly assured that everything should be done to make her comfortable at the cottage as long as she should wish to stay there. But the very warmth of affection thus expressed made her almost shrink from what she was about to do. Mrs Askerton was no doubt anxious for her coming; but would her Cousin Will Belton approve of the visit; and what would her Cousin Mary say about it? If she was being driven into this step against her own approval, by the insolence of Lady Aylmer if she was doing this thing simply because Lady Aylmer had desired her not to do it, and was doing it in opposition to the wishes of the man she had promised to marry

Page 231

as well as to her own judgment, there could not but be cause for shrinking. And yet she believed that she was right. If she could only have had some one to tell her some one in whom she could trust implicitly to direct her! She had hitherto been very much prone to rebel against authority. Against her aunt she had rebelled, and against her father, and against her lover. But now she wished with all her heart that there might be some one to whom she could submit with perfect faith. If she could only know what her Cousin Will would think. In him she thought she could have trusted with that perfect faith if only he would have been a brother to her.

But it was too late now for doubting, and on the next day she found herself getting out of the old Redicote fly, at Colonel Askerton's door. He came out to meet her, and his greeting was very friendly. Hitherto there had been no great intimacy between him and her, owing rather to the manner of life adopted by him than to any cause of mutual dislike between them. Mrs Askerton had shown herself desirous of some social intercourse since she had been at Belton, but with Colonel Askerton there had been nothing of this. He had come there intending to live alone, and had been satisfied to carry out his purpose. But now Clara had come to his house as a guest, and he assumed towards her altogether a new manner. 'We are so glad to have you,' he said, taking both her hands. Then she passed on into the cottage, and in a minute was in her friend's arms.

'Dear Clara dearest Clara, I am so glad to have you here.'

'It is very good of you.'

'No, dear; the goodness is with you to come. But we won't quarrel about that. We will both be ever so good. And he is so happy that you should be here. You'll get to know him now. But come upstairs. There's a fire in your room, and I'll be your maid for the occasion because then we can talk.' Clara did as she was bid and went upstairs; and as she sat over the fire while her friend knelt beside her for Mrs Askerton was given to such kneelings she could not but tell herself that Belton Cottage was much more comfortable than Aylmer Park. During the whole time of her sojourn at Aylmer Park no word of real friendship had once greeted her ears. Everything there had been cold and formal, till coldness and formality had given way to violent insolence.

'And so you have quarrelled with her ladyship,' said Mrs Askerton. 'I knew you would.'

'I have not said anything about quarrelling with her.'

'But of course you have. Come, now; don't make yourself disagreeable. You have had a downright battle have you not?'



'Something very like it, I'm afraid.'

'I am so glad,' said Mrs Askerton, rubbing her hands.

'That is ill-natured.'

'Very well. Let it be ill-natured. One isn't to be good-natured all round, or what would be the use of it? And what sort of a woman is she?'



Page 232

'Oh dear; I couldn't describe her. She is very large, and wears a great wig, and manages everything herself, and I've no doubt she's a very good woman in her own way.'

'I can see her at once and a very pillar of virtue as regards morality and going to church. Poor me! Does she know that you have come here?'

'I have no doubt she does. I did not tell her, nor would I tell her daughter; but I told Captain Aylmer.'

'That was right. That was very right. I'm so glad of that. But who would doubt that you would show a proper spirit? And what did he say?'

'Not much, indeed.'

'I won't trouble you about him. I don't in the least doubt but all that will come right. And what sort of man is Sir Anthony?'

'A common-place sort of a man; very gouty, and with none of his wife's strength. I liked him the best of them all.'

'Because you saw the least of him, I suppose.'

'He was kind in his manner to me.'

'And they were like she-dragons. I understand it all, and can see them just as though I had been there. I felt that I knew what would come of it when you first told me that you were going to Aylmer Park, I did, indeed. I could have prophesied it all.'

'What a pity you did not.'

'It would have done no good and your going there has done good. It has opened your eyes to more than one thing, I don't doubt. But tell me have you told them in Norfolk that you were coming here?'

'No I have not written to my cousin.'

'Don't be angry with me if I tell you something. I have.'

'Have what?'

'I have told Mr Belton that you were coming here. It was in this way. I had to write to him about our continuing in the cottage. Colonel Askerton always makes me write if it's possible, and of course we were obliged to settle something as to the place.'

'I'm sorry you said anything about me.'

'How could I help it? What would you have thought of me, or what would he have thought, if, when writing to him, I had not mentioned such a thing as your visit? Besides, it's much better that he should know.'

'I am sorry that you said anything about it.'

'You are ashamed that he should know that you are here,' said Mrs Askerton, in a tone of reproach.

'Ashamed! No; I am not ashamed. But I would sooner that he had not been told as yet. Of course he would have been told before long.'

'But you are not angry with me?'

'Angry! How can I be angry with any one who is so kind to me?'

That evening passed by very pleasantly, and when she went again to her own room, Clara was almost surprised to find how completely she was at home. On the next day she and Mrs Askerton together went up to the house, and roamed through all the rooms, and Clara seated herself in all the accustomed chairs. On the sofa, just in the spot to which Belton had thrown it, she found the key of the cellar. She took it up in her band, thinking that she would give it to the servant; but again she put it back upon the sofa. It was his key, and he had left it there, and if ever there came an occasion she would remind him where he had put it. Then they went out to the cow, who was at her ease in a little home paddock.

Page 233

'Dear Bessy,' said Clara, 'see how well she knows me.' But I think the tame little beast would have known any one else as well who had gone up to her as Clara did, with food in her hand. 'She is quite as sacred as any cow that ever was worshipped among the cow-worshippers,' said Mrs Askerton. I suppose they milk her and sell the butter, but otherwise she is not regarded as an ordinary cow at all.' 'Poor Bessy,' said Clara. 'I wish she had never come here. What is to be done with her?' 'Done with her! She'll stay here till she dies a natural death, and then a romantic pair of mourners will follow her to her grave, mixing their sympathetic tears comfortably as they talk of the old days; and in future years, Bessy will grow to be a divinity of the past, never to be mentioned without tenderest reminiscences. I have not the slightest difficulty in prophesying as to Bessy's future life and posthumous honours.' They roamed about the place the whole morning, through the garden and round the farm buildings, and in and out of the house; and at every turn something was said about Will Belton. But Clara would not go up to the rocks, although Mrs Askerton more than once attempted to turn in that direction. He had said that he never would go there again except under certain circumstances. She knew that those circumstances would never come to pass; but yet neither would she go there. She would never go there till her cousin was married. Then, if in those days she should ever be present at Belton Castle, she would creep up to the spot all alone, and allow herself to think of the old days.

On the following morning there came to her a letter bearing the Downham post-mark but at the first glance she knew that it was not from her Cousin Will. Will wrote with a bold round hand, that was extremely plain and caligraphic when he allowed him. self time for the work in hand, as he did with the commencement of his epistles, but which would become confused and altogether anti- caligraphic when he fell into a hurry towards the end of his performance as was his wont. But the address of this letter was written in a pretty, small, female hand very careful in the perfection of every letter, and very neat in every stroke. It was from Mary Briton, between whom and Clara there had never hitherto been occasion for correspondence. The letter was as follows:

'Plaistow Hall, April, 186 .

My Dear Cousin Clara,

William has heard from your friends at Belton, who are tenants on the estate, and as to whom there seems to be some question whether they are to remain. He has written, saying, I believe, that there need be no difficulty if they wish to stay there. But we learn, also, from Mrs Askerton's letter, that you are expected at the cottage, and therefore I will address this to Belton, supposing that it may find you there.

Page 234

You and I have never yet known each other which has been a grief to me; but this grief, I hope, may be cured some day before long. I myself, as you know, am such a poor creature that I cannot go about the world to see my friends as other people do at least, not very well; and therefore I write to you with the object of asking you to come and see me here. This is an interesting old house in its way; and though I must not conceal from you that life here is very, very quiet, I would do my best to make the days pass pleasantly with you. I had heard that you were gone to Aylmer Park. Indeed, William told me of his taking you up to London. Now it seems you have left Yorkshire, and I suppose you will not return there very soon. If it be so, will it not be well that you should come to me for a short time?

Both William and I feel that just for the present for a little time you would perhaps prefer to be alone with me. He must go to London for awhile, and then on to Belton, to settle your affairs and his. He intends to be absent for six weeks. If you would not be afraid of the dullness of this house for so long a time, pray come to us. The pleasure to me would be very great, and I hope that you have some of that feeling, which with me is so strong, that we ought not to be any longer personally strangers to each other. You could then make up your mind as to what you would choose to do afterwards. I think that by the end of that time that is, when William returns my uncle and aunt from Sleaford will be with us. He is a clergyman, you know; and if you then like to remain, they will be delighted to make your acquaintance.

It seems to be a long journey for a young lady to make alone, from Belton to Plaistow; but travelling is so easy now-a-days, and young ladies seem to be so independent, that you may be able to manage it. Hoping to see you soon, I remain

Your affectionate Cousin,

Mary Belton.'

This letter she received before breakfast, and was therefore able to read it in solitude, and to keep its receipt from the knowledge of Mrs Askerton, if she should be so minded. She understood at once all that it intended to convey a hint that Plaistow Hall would be a better resting place for her than Mrs Askerton's cottage; and an assurance that if she would go to Plaistow Hall for her convenience, no advantage should be taken of her presence there by the owner of the house for his convenience. As she sat thinking of the offer which had been made to her she fancied that she could see and hear her Cousin Will as he discussed the matter with his sister, and with a half assumption of surliness declared his own intention of going away. Captain Aylmer, after that interview in London, had spoken of Belton's conduct as being unpardonable; but Clara had not only pardoned him, but had, in her own mind, pronounced his virtues to be so much greater than his vices as to make him almost perfect. 'But I will not drive him out of his own house,' she said. 'What does it matter where I go?'

Page 235

'Colonel Askerton has had a letter from your cousin,' said Mrs Askerton as soon as the two ladies were alone together.

'And what does he say?'

'Not a word about you.'

'So much the better. I have given him trouble enough, and am glad to think that he should be free of me for awhile. Is Colonel Askerton to stay at the cottage?'

'Now, Clara, you are a hypocrite. You know that you are a hypocrite.'

'Very likely but I don't know why you should accuse me just now.'

'Yes, you do. Have not you heard from Norfolk also?' 'Yes I have.'

'I was sure of it. I knew he would never have written in that way, in answer to my letter, ignoring your visit here altogether, unless he had written to you also.'

'But he has not written to me. My letter is from his sister. There it is.' Whereupon she handed the letter to Mrs Askerton, and waited patiently while it was being read. Her friend returned it to her without a word, and Clara was the first to speak again. 'It is a nice letter, is it not? I never saw her, you know.'

'So she says.'

'But is it not a kind letter?'

'I suppose it is meant for kindness. It is not very complimentary to me. It presumes that such a one as I may be treated without the slightest consideration. And so I may. It is only fit that I should be so treated. If you ask my advice, I advise you to go at once at once.'

'But I have not asked your advice, dear; nor do I intend to ask it.'

'You would not have shown it me if you had not intended to go.'

'How unreasonable you are! You told me just now that I was a hypocrite for not telling you of my letter, and now you are angry with me because I have shown it you.'

'I am not angry. I think you have been quite right to show it me. I don't know how else you could have acted upon it.'

'But I do not mean to act upon it. I shall not go to Plaistow. There are two reasons against it, each sufficient. I shall not leave you just yet unless you send me away; and I shall not cause my cousin to be turned out of his own house.'

'Why should he be turned out? Why should you not go to him? You love him and as for him, he is more in love than any man I ever knew. Go to Plaistow Hall, and everything will run smooth.'

'No, dear; I shall not do that.'

'Then you are foolish. I am bound to tell you so, as I have inveigled you here.'

'I thought I had invited myself.'

'No; I asked you to come, and when I asked you I knew that I was wrong. Though I meant to be kind, I knew that I was unkind. I saw that my husband disapproved it, though he had not the heart to tell me so. I wish he had. I wish he had.'

'Mrs Askerton, I cannot tell you how much you wrong yourself, and how you wrong me also. I am more than contented to be here.'

Page 236

'But you should not be contented to be here. It is just that. In learning to love me or rather, perhaps, to pity me, you lower yourself. Do you think that I do not see it all, and know it all? Of course it is bad to be alone, but I have no right not to be alone.' There was nothing for Clara to do but to draw herself once again close to the poor woman, and to embrace her with protestations of fair, honest, equal regard and friendship. 'Do you think I do not understand that letter?' continued Mrs Askerton. 'If it had come from Lady Aylmer I could have laughed at it, because I believe Lady Aylmer to be an overbearing virago, whom it is good to put down in every way possible. But this comes from a pure-minded woman, one whom I believe to be little given to harsh judgments on her fellow-sinners; and she tells you, in her calm wise way, that it is bad for you to be here with me.'

'She says nothing of the kind.'

'But does she not mean it? Tell me honestly do you not know that she means it?'

'I am not to be guided by what she means.'

'But you are to be guided by what her brother means. It is to come to that, and you may as well bend your neck at once. It is to come to that, and the sooner the better for you. it is easy to see that you are badly off for guidance when you take up me as your friend.' When she had so spoken Mrs Askerton got up and went to the door. 'No, Clara, do not come with me; not now,' she said, turning to her companion, who had risen as though to follow her. 'I will come to you soon, but I would rather be alone now. And, look here, dear; you must answer your cousin's letter. Do so at once, and say that you will go to Plaistow. In any event it will be better for you.'

Clara, when she was alone, did answer her cousin's letter, but she did not accept the invitation that had been given her. She assured Miss Belton that she was most anxious to know her, and hoped that she might do so before long, either at Plaistow or at Belton; but that at present she was under an engagement to stay with her friend Mrs Askerton. In an hour or two Mrs Askerton returned, and Clara handed to her the note to read. 'Then all I can say is you are very silly, and don't know on which side your bread is buttered.' It was evident from Mrs Askerton's voice that she had recovered her mood and tone of mind. 'I don't suppose it will much signify, as it will all come right at last,' she said afterwards. And then, after luncheon, when she had been for a few minutes with her husband in his own room, she told Clara that the colonel wanted to speak to her. 'You'll find him as grave as a judge, for he has got something to say to you in earnest. Nobody can be so stern as he is when he chooses to put on his wig and gown.' So Clara went into the colonel's study, and seated herself in a chair which he had prepared for her.

Page 237

She remained there for over an hour, and during the hour the conversation became very animated. Colonel Askerton's assumed gravity had given way to ordinary eagerness, during which he walked about the room in the vehemence of his argument; and Clara, in answering him, had also put forth all her strength. She had expected that he also was going to speak to her on the propriety of her going to Norfolk; but he made no allusion to that subject, although all that he did say was founded on Will Belton's letter to himself. Belton, in speaking of the cottage, had told Colonel Askerton that Miss Amedroz would be his future landlord, and had then gone on to explain that it was his, Belton's, intention to destroy the entail, and allow the property to descend from the father to the daughter. 'As Miss Amedroz is with you now,' he said, 'may I beg you to take the trouble to explain the matter to her at length, and to make her understand that the estate is now, at this moment, in fact her own. Her possession of it does not depend on any act of hers or, indeed, upon her own will or wish in the matter.' On this subject Colonel Askerton had argued, using all his skill to make Clara in truth perceive that she was her father's heiress through the generosity undoubtedly of her cousin and that she had no alternative but to assume the possession which was thus thrust upon her.

And so eloquent was the colonel that Clara was staggered, though she was not convinced. 'It is quite impossible,' she said. 'Though he may be able to make it over to me, I can give it back again.'

'I think not. In such a matter as this a lady in your position can only be guided by her natural advisers her father's lawyer and other family friends.'

'I don't know why a young lady should be in any way different from an old gentleman.'

'But an old gentleman would not hesitate under such circumstances. The entail in itself was a cruelty, and the operation of it on your poor brother's death was additionally cruel.'

'It is cruel that any one should be poor,' argued Clara; 'but that does not take away the right of a rich man to his property.'

There was much more of this sort said between them, till Clara was at any rate convinced that Colonel Askerton believed that she ought to be the owner of the property. And then at last he ventured upon another argument which soon drove Clara out of the room. 'There is, I believe, one way in which it can all be made right,' said he.

'What way?' said Clara, forgetting in her eagerness the obviousness of the mode which her companion was about to point out.

'Of course, I know nothing of this myself,' he said smiling; 'but Mary thinks that you and your cousin might arrange it between you if you were together.'

‘You must not listen to what she says about that, Colonel Askerton.’ ‘Must I not? Well; I will not listen to more than I can help; but Mary, as you know, is a persistent talker. I, at any rate, have done my commission.’ Then Clara left him and was alone for what remained of the afternoon.



Page 238

It could not be, she said to herself, that the property ought to be hers. It would make her miserable, were she once to feel that she had accepted it. Some small allowance out of it, coming to her from the brotherly love of her cousin some moderate stipend sufficient for her livelihood, she thought she could accept from him. It seemed to her that it was her destiny to be dependent on charity to eat bread given to her from the benevolence of a friend; and she thought that she could endure his benevolence better than that of any other. Benevolence from Aylmer Park or from Perivale would be altogether unendurable.

But why should it not be as Colonel Askerton had proposed? That this cousin of hers loved her with all his heart with a constancy for which she had at first given him no credit she was well aware. And, as regarded herself, she loved him better than all the world beside. She had at last become conscious that she could not now marry Captain Aylmer without sin without false vows, and fatal injury to herself and him. To the prospect of that marriage, as her future fate, an end must be put at any rate an end, if that which had already taken place was not to be regarded as end enough. But yet she had been engaged to Captain Aylmer was engaged to him even now. When last her cousin had mentioned to her Captain Aylmer's name she had declared that she loved him still. How then could she turn round now, and so soon accept the love of another man? How could she bring herself to let her cousin assume to himself the place of a lover, when it was but the other day that she had rebuked him for expressing the faintest hope in that direction?

But yet yet ! As for going to Plaistow, that was quite out of the question.

'So you are to be the heiress after all,' said Mrs Askerton to her that night in her bedroom.

'No; I am not to be the heiress after all,' said Clara, rising against her friend impetuously.

'You'll have to be lady of Belton in one way or the other at any rate,' said Mrs Askerton.

CHAPTER XXVIII

MISS AMEDROZ IS PURSUED

'I suppose now, my dear, it may be considered that everything is settled about that young lady,' said Lady Aylmer to her son, on the same day that Miss Amedroz left Aylmer Park.

'Nothing is settled, ma'am,' said the captain.

'You don't mean to tell me that after what has passed you intend to follow her up any farther.'

'I shall certainly endeavour to see her again.'

'Then, Frederic, I must tell you that you are very wrong indeed almost worse than wrong. I would say wicked, only I feel sure that you will think better of it. You cannot mean to tell me that you would marry her after what has taken place?'

'The question is whether she would marry me.'

'That is nonsense, Frederic. I wonder that you, who are so generally so clear-sighted, cannot see more plainly than that. She is a scheming, artful young woman, who is playing a regular game to catch a husband.'

Page 239

'If that were so, she would have been more humble to you, ma'am.'

'Not a bit, Fred. That's just it. That has been her cleverness. She tried that on at first, and found that she could not get round me. Don't allow yourself to be deceived by that, I pray. And then there is no knowing how she may be bound up with those horrid people, so that she cannot throw them over, even if she would.'

'I don't think you understand her, ma'am.'

'Oh very well. But I understand this, and you had better understand it too that she will never again enter a house of which I am the mistress; nor can I ever enter a house in which she is received. If you choose to make her your wife after that, I have done.' Lady Aylmer had not done, or nearly done; but we need hear no more of her threats or entreaties. Her son left Aylmer Park immediately after Easter Sunday, and as he went, the mother, nodding her head, declared to her daughter that that marriage would never come off, let Clara Amedroz be ever so sly, or ever so clever.

'Think of what I have said to you, Fred,' said Sir Anthony, as he took his leave of his son.

'Yes, sir, I will.'

'You can't be better off than you are you can't, indeed.' With these words in his ears Captain Aylmer started for London, intending to follow Clara down to Belton. He hardly knew his own mind on this matter of his purposed marriage. He was almost inclined to agree with his father that he was very well off as he was. He was almost inclined to agree with his mother in her condemnation of Clara's conduct. He was almost inclined to think that he had done enough towards keeping the promise made to his aunt on her death. But still he was not quite contented with himself. He desired to be honest and true, as far as his ideas went of honesty and truth, and his conscience told him that Clara had been treated with cruelty by his mother. He was inclined to think that Lady Aylmer, in spite of her high experience and character for wisdom, had not fought her battle altogether well. No man likes to be talked out of his marriage by his mother, and especially not so when the talking takes the shape of threats. When she told him that under no circumstances would she again know Clara Amedroz, he was driven by his spirit of manhood to declare to himself that that menace from her should not have the slightest influence on him. The word or two which his father said was more effective. After all it might be better for him in his peculiar position to have no wife at all. He did begin to believe that he had no need for a wife. He had never before thought so much of his father's example as he did now. Clara was manifestly a hot-tempered woman a very hot-tempered woman indeed! Now his mother was also a hot-tempered woman, and he could see the result in the present condition of his father's life. He resolved that he would follow Clara to Belton, so that some final settlement might be made between them; but in coming to this resolution he acknowledged to himself that should she

decide against him he would not break his heart. She, however, should have her chance. Undoubtedly it was only right that she should have her chance.

Page 240

But the difficulty of the circumstances in which he was placed was so great, that it was almost impossible for him to make up his mind fixedly to any purpose in reference to Clara. As he passed through London on his way to Belton he called at Mr Green's chambers with reference to that sum of fifteen hundred pounds, which it was now absolutely necessary that he should make over to Miss Amedroz, and from Mr Green he learned that William Belton had given positive instructions as to the destination of the Belton estate. He would not inherit it, or have anything to do with it under the entail from the effects of which he desired to be made entirely free. Mr Green, who knew that Captain Aylmer was engaged to marry his client, and who knew nothing of any interruption to that agreement, felt no hesitation in explaining all this to Captain Aylmer. 'I suppose you had heard of it before,' said Mr Green. Captain Aylmer certainly had heard of it, and had been very much struck by the idea; but up to this moment he had not quite believed in it. Coming simply from William Belton to Clara Amedroz, such an offer might be no more than a strong argument used in love-making. 'Take back the property, but take me with it, of course.' That Captain Aylmer thought might have been the correct translation of Mr William Belton's romance. But he was forced to look at the matter differently when he found that it had been put into a lawyer's hands. 'Yes,' said he, 'I have heard of it. Mr Belton mentioned it to me himself.' This was not strictly true. Clara had mentioned it to him; but Belton had come into the room immediately afterwards, and Captain Aylmer might probably have been mistaken.

'He's quite in earnest,' said Mr Green.

'Of course, I can say nothing, Mr Green, as I am myself so nearly interested in the matter. It is a great question, no doubt, how far such an entail as that should be allowed to operate.'

'I think it should stand, as a matter of course. I think Belton is wrong,' said Mr Green.

'Of course I can give no opinion,' said the other.

'I'll tell you what you can do, Captain Aylmer. You can suggest to Miss Amedroz that there should be a compromise. Let them divide it. They are both clients of mine, and in that way I shall do my duty to each. Let them divide it. Belton has money enough to buy up the other moiety, and in that way would still be Belton of Belton.'

Captain Aylmer had not the slightest objection to such a plan. Indeed, he regarded it as in all respects a wise and salutary arrangement. The moiety of the Belton estate might probably be worth twenty-five thousand pounds, and the addition of such a sum as that to his existing means would make all the difference in the world as to the expediency of his marriage. His father's arguments would all fall to the ground if twenty-five thousand pounds were to be obtained in this way; and he had but little doubt that such a change in affairs would go far to

Page 241

mitigate his mother's wrath. But he was by no means mercenary in his views so, at least, he assured himself. Clara should have her chance with or without the Belton estate or with or without the half of it. He was by no means mercenary. Had he not made his offer to her and repeated it almost with obstinacy, when she had no prospect of any fortune? He could always remember that of himself at least; and remembering that now, he could take a delight in these bright money prospects without having to accuse himself in the slightest degree of mercenary motives. This fortune was a godsend which he could take with clean hands if only he should ultimately be able to take the lady who possessed the fortune!

>From London he wrote to Clara, telling her that he proposed to visit her at Belton. His letter was written before he had seen Mr Green, and was not very fervent in its expressions; but, nevertheless, it was a fair letter, written with the intention of giving her a fair chance. He had seen with great sorrow 'with heartfelt grief,' that quarrel between his mother and his own Clara. Thinking, as he felt himself obliged to think, about Mrs Askerton, he could not but feel that his mother bad cause for her anger. But he himself was unprejudiced, and was ready, and anxious also the word anxious was underscored to carry out his engagement. A few words between them might probably set everything right, and therefore be proposed to meet her at the Belton Castle house, at such an hour, on such a day. He should run down to Perivale on his journey, and perhaps Clara would let him have a line addressed to him there. Such was his letter.

'What do you think of that?' said Clara, showing it to Mrs Askerton on the afternoon of the day on which she had received it.

'What do you think of it?' said Mrs Askerton. 'I can only hope, that he will not come within reach of my hands.'

'You are not angry with me for showing it to you?'

'No why should I be angry with you? Of course I knew it all without any showing. Do not tell Colonel Askerton, or they will be killing each other.'

'Of course I shall not tell Colonel Askerton; but I could not help showing this to you.'

'And you will meet him?'

'Yes; I shall meet him. What else can I do?'

'Unless, indeed, you were to write and tell him that it would do no good.'

'It will be better that he should come.'

'If you allow him to talk you over you will be a wretched woman all your life.'

'It will be better that he should come,' said Clara again. And then she wrote to Captain Aylmer at Perivale, telling him that she would be at the house at the hour he had named, on the day he had named.

Page 242

When that day came she walked across the park a little before the time fixed, not wishing to meet Captain Aylmer before she had reached the house. It was now nearly the middle of April, and the weather was soft and pleasant. It was almost summer again, and as she felt this, she thought of all the events which had occurred since the last summer of their agony of grief at the catastrophe which had closed her brother's life, of her aunt's death first, and then of her father's following so close upon the other, and of the two offers of marriage made to her as to which she was now aware that she had accepted the wrong man and rejected the wrong man. She was steadily minded, now, at this moment, that before she parted from Captain Aylmer, her engagement with him should be brought to a close. Now, at this coming interview, so much at any rate should be done. She had tried to make herself believe that she felt for him that sort of affection which a woman should have for the man she is to marry, but she had failed. She hardly knew whether she had in truth ever loved him; but she was quite sure that she did not love him now. No she had done with Aylmer Park, and she could feel thankful, amidst all her troubles, that that difficulty should vex her no more. In showing Captain Aylmer's letter to Mrs Askerton she had made no such promise as this, but her mind had been quite made up. 'He certainly shall not talk me over,' she said to herself as she walked across the park.

But she could not see her way so clearly out of that further difficulty with regard to her cousin. It might be that she would be able to rid herself of the one lover with comparative ease; but she could not bring herself to entertain the idea of accepting the other. It was true that this man longed for her desired to call her his own, with a wearing, anxious, painful desire which made his heart grievously heavy heavy as though with lead hanging to its strings; and it was true that Clara knew that it was so. It was true also that his spirit had mastered her spirit, and that his persistence had conquered her resistance the resistance, that is, of her feelings. But there remained with her a feminine shame, which made it seem to her to be impossible that she should now reject Captain Aylmer, and as a consequence of that rejection, accept Will Belton's hand. As she thought of this, she could not see her way out of her trouble in that direction with any of that clearness which belonged to her in reference to Captain Aylmer.

She had been an hour in the house before he came, and never did an hour go so heavily with her. There was no employment for her about the place, and Mrs Bunce, the old woman who now lived there, could not understand why her late mistress chose to remain seated among the unused furniture. Clara had of course told her that a gentleman was coming. 'Not Mr Will?' said the woman. 'No; it is not Mr Will,' said Clara; 'his name is Captain Aylmer.' 'Oh, indeed.' And then Mrs Bunce looked at her with a mystified look. Why on earth should not the gentleman call on Miss Amedroz at Mrs Askerton's cottage? 'I'll be sure to show 'un up, when a comes, at any rate,' said the old woman solemnly and Clara felt that it was all very uncomfortable.

Page 243

At last the gentleman did come, and was shown up with all the ceremony of which Mrs Bunce was capable. 'Here he be, mum.' Then Mrs Bunce paused a moment before she retreated, anxious to learn whether the new corner was a friend or a foe. She concluded from the captain's manner that he was a very dear friend, and then she departed.

'I hope you are not surprised at my coming,' said Captain Aylmer, still holding Clara by the hand.

'A little surprised,' she said, smiling.

'But not annoyed?'

'No not annoyed.'

'As soon as you had left Aylmer Park I felt that it was the right thing to do the only thing to do as I told my mother.'

'I hope you have not come in opposition to her wishes,' said Clara, unable to control a slight tone of banter as she spoke.

'In this matter I found myself compelled to act in accordance with my own judgment,' said he, untouched by her sarcasm.

'Then I suppose that Lady Aylmer is vexed with you for coming here. I shall be so sorry for that so very sorry, as no good can come of it.'

'Well I am not so sure of that. My mother is a most excellent woman, one for whose opinions on all matters I have the highest possible value a value so high, that that that'

'That you never ought to act in opposition to it. That is what you really mean, Captain Aylmer; and upon my word I think that you are right.'

'No, Clara; that is not what I mean not exactly that. Indeed, just at present I mean the reverse of that. There are some things on which a man must act on his own judgment, irrespectively of the opinions of any one else.'

'Not of a mother, Captain Aylmer?'

'Yes of a mother. That is to say, a man must do so. With a lady of course it is different. I was very, very sorry that there should have been any unpleasantness at Aylmer Park.'

'It was not pleasant to me, certainly.'

'Nor to any of us, Clara.'

'At any rate, it need not be repeated.'

'I hope not.'

'No it certainly need not be repeated. I know now that I was wrong to go to Aylmer Park. I felt sure beforehand that there were many things as to which I could not possibly agree with Lady Aylmer, and I ought not to have gone.'

'I don't see that at all, Clara.'

'I do see it now.'

'I can't understand you. What things? Why should you be determined to disagree with my mother? Surely you ought at any rate to endeavour to think as she thinks.'

'I cannot do that, Captain Aylmer.'

'I am sorry to hear you speak in this way. I have come here all the way from Yorkshire to try to put things straight between us; but you receive me as though you would remember nothing but that unpleasant quarrel.'

Page 244

'It was so unpleasant so very unpleasant! I had better speak out the truth at once. I think that Lady Aylmer ill-used me cruelly. I do. No one can talk me out of that conviction. Of course I am sorry to be driven to say as much to you and I should never have said it, had you not come here. But when you speak of me and your mother together, I must say what I feel. Your mother and I, Captain Aylmer, are so opposed to each other, not only in feeling, but in opinions also, that it is impossible that we should be friends impossible that we should not be enemies if we are brought together.'

This she said with great energy, looking intently into his face as she spoke. He was seated near her, on a chair from which he was leaning over towards her, holding his hat in both hands between his legs. Now, as he listened to her, he drew his chair still nearer, ridding himself of his hat, which he left upon the carpet, and keeping his eyes upon hers as though he were fascinated. 'I am sorry to hear you speak like this,' he said.

'It is best to say the truth.'

'But, Clara, if you intend to be my wife'

'Oh, no that is impossible now.' 'What is impossible?'

'Impossible that I should become your wife. Indeed I have convinced myself that you do not wish it.'

'But I do wish it.'

'No no. If you will question your heart about it quietly, you will find that you do not wish it.'

'You wrong me, Clara.'

'At any rate it cannot be so.'

'I will not take that answer from you,' he said, getting up from his chair, and walking once up and down the room. Then he returned to it, and repeated his words. 'I will not take that answer from you. An engagement such as ours cannot be put aside like an old glove. You do not mean to tell me that all that has been between us is to mean nothing.' There was something now like feeling in his tone, something like passion in his gesture, and Clara, though she had no thought of changing her purpose, was becoming unhappy at the idea of his unhappiness.

'It has meant nothing,' she said. 'We have been like children together, playing at being in love. It is a game from which you will come out scatheless, but I have been scalded.'

'Scalded!'



'Well never mind. I do not mean to complain, and certainly not of you.'

'I have come here all the way from Yorkshire in order that things may be put right between us.'

'You have been very good very good to come, and I will not say that I regret your trouble. It is best, I think, that we should meet each other once more face to face, so that we may understand each other. There was no understanding anything during those terrible days at Aylmer Park.' Then she paused, but as he did not speak at once she went on. 'I do not blame you for anything that has taken place, but I am quite sure of this that you and I could never be happy together as man and wife.'



Page 245

'I do not know why you say so; I do not indeed.'

'You would disapprove of everything that I should do. You do disapprove of what I am doing now.'

'Disapprove of what?'

'I am staying with my friend, Mrs Askerton.'

He felt that this was hard upon him. As she had shown herself inclined to withdraw herself from him, he had become more resolute in his desire to follow her up, and to hold by his engagement. He was not employed now in giving her another chance as he had proposed to himself to do but was using what eloquence he had to obtain another chance for himself. Lady Aylmer had almost made him believe that Clara would be the suppliant, but now he was the suppliant himself. In his anxiety to keep her he was willing even to pass over her terrible iniquity in regard to Mrs Askerton that great sin which had led to all these troubles. He had once written to her about Mrs Askerton, using very strong language, and threatening her with his mother's full displeasure. At that time Mrs Askerton had simply been her friend. There had been no question then of her taking refuge under that woman's roof. Now she had repelled Lady Aylmer's counsels with scorn, was living as a guest in Mrs Askerton's house; and yet he was willing to pass over the Askerton difficulty without a word. He was willing not only to condone past offences, but to wink at existing iniquity! But she she who was the sinner, would not permit of this. She herself dragged up Mrs Askerton's name, and seemed to glory in her own shame.

'I had not intended,' said he, 'to speak of your friend.'

'I only mention her to show how impossible it is that we should ever agree upon some subjects as to which a husband and wife should always be of one mind. I knew this from the moment in which I got your letter and only that I was a coward I should have said so then.'

'And you mean to quarrel with me altogether?'

'No why should we quarrel?'

'Why, indeed?' said he.

'But I wish it to be settled quite settled, as from the nature of things it must be, that there shall be no attempt at renewal of our engagement. After what has passed, how could I enter your mother's house?'

'But you need not enter it.' Now, in his emergency he was willing to give up anything everything. He had been prepared to talk her over into a reconciliation with his mother,



to admit that there had been faults on both sides, to come down from his high pedestal and discuss the matter as though Clara and his mother stood upon the same footing. Having recognized the spirit of his lady-love, he had told himself that so much indignity as that must be endured. But now, he had been carried so far beyond this, that he was willing, in the sudden vehemence of his love, to throw his mother over altogether, and to accede to any terms which Clara might propose to him. 'Of course, I would wish you to be friends,' he said, using now all the tones of a suppliant; 'but if you found that it could not be so'

Page 246

'Do you think that I would divide you from your mother?'

'There need be no question as to that.'

'Ah there you are wrong. There must be such questions. I should have thought of it sooner.'

'Clara, you are more to me than my mother. Ten times more.' As he said this he came up and knelt down beside her. 'You are everything to me. You will not throw me over.' He was a suppliant indeed, and such supplications are very potent with women. Men succeed often by the simple earnestness of their prayers. Women cannot refuse to give that which is asked for with so much of the vehemence of true desire. 'Clara, you have promised to be my wife. You have twice promised; and can have no right to go back because you are displeased with what my mother may have said. I am not responsible for my mother. Clara, say that you will be my wife.' As he spoke he strove to take her hand, and his voice sounded as though there were in truth something of passion in his heart.

CHAPTER XXIX

THERE IS NOTHING TO TELL

Captain Aylmer had never before this knelt to Clara Amedroz. Such kneeling on the part of lovers used to be the fashion because lovers in those days held in higher value than they do now that which they asked their ladies to give or because they pretended to do so. The forms at least of supplication were used; whereas in these wiser days Augustus simply suggests to Caroline that they two might as well make fools of themselves together and so the thing is settled without the need of much prayer. Captain Aylmer's engagement had been originally made somewhat after this fashion. He had not, indeed, spoken of the thing contemplated as a folly, not being a man given to little waggeries of that nature; but he had been calm, unenthusiastic, and reasonable. He had not attempted to evince any passion, and would have been quite content that Clara should believe that he married as much from obedience to his aunt as from love for herself, had he not found that Clara would not take him at all under such a conviction. But though she had declined to come to him after that fashion though something more than that had been needed still she had been won easily, and, therefore, lightly prized. I fear that it is so with everything that we value with our horses, our houses, our wines, and, above all, with our women. Where is the man who has heart and soul big enough to love a woman with increased force of passion because she has at once recognized in him all that she has herself desired? Captain Aylmer having won his spurs easily, had taken no care in buckling them, and now found, to his surprise, that he was like to lose them. He had told himself that he would only be too glad to shuffle his feet free of their bondage; but now that they were going from him, he

began to find that they were very necessary for the road that he was to travel. 'Clara,' he said, kneeling by her side,' you are more to me than my mother; ten times more!'

Page 247

This was all new to her. Hitherto, though she had never desired that he should assume such attitude as this, she had constantly been unconsciously wounded by his coldness by his cold propriety and unbending self-possession. His cold propriety and unbending self-possession were gone now, and he was there at her feet. Such an argument, used at Aylmer Park, would have conquered her would have won her at once, in spite of herself; but now she was minded to be resolute. She had sworn to herself that she would not peril herself, or him, by joining herself to a man with whom she had so little sympathy, and who apparently had none with her. But in what way was she to answer such a prayer as that which was now made to her? The man who addressed her was entitled to use all the warmth of an accepted lover. He only asked for that which had already been given to him.

'Captain Aylmer ' she began.

'Why is it to be Captain Aylmer? What have I done that you should use me in this way? It was not I who made you unhappy at Aylmer Park.'

'I will not go back to that. It is of no use. Pray get up. It shocks me to see you in this way.'

'Tell me, then, that it is once more all right between us. Say that, and I shall be happier than I ever was before yes, than I ever was before. I know how much I love you now, how sore it would be to lose you. I have been wrong. I had not thought enough of that, but I will think of it now.'

She found that the task before her was very difficult so difficult that she almost broke down in performing it. It would have been so easy and, for the moment, so pleasant to have yielded. He had his hand upon her arm, having attempted to take her hand. In preventing that she had succeeded, but she could not altogether make herself free from him without rising. For a moment she had paused paused as though she were about to yield. For a moment, as he looked into her eyes, he had thought that he would again be victorious. Perhaps there was something in his glance, some too visible return of triumph to his eyes, which warned her of her danger. 'No!' she said, getting up and walking away from him; 'no!'

'And what does "no" mean, Clara?' Then he also rose, and stood leaning on the table. 'Does it mean that you will be forsworn?'

'It means this that I will not come between you and your mother; that I will not be taken into a family in which I am scorned; that I will not go to Aylmer Park myself or be the means of preventing you from going there.'

'There need be no question of Aylmer Park.'



'There shall be none!'

'But, so much being allowed, you will be my wife?'

'No, Captain Aylmer no. I cannot be your wife. Do not press it further; you must know that on such a subject I would think much before I answered you. I have thought much, and I know that I am right.'

'And your promised word is to go for nothing?'

Page 248

'If it will comfort you to say so, you may say it. If you do not perceive that the mistake made between us has been as much your mistake as mine, and has injured me more than it has injured you, I will not remind you of it will never remind you of it after this.'

'But there has been no mistake and there shall be no injury.'

'Ah, Captain Aylmer you do not understand; you cannot understand. I would not for worlds reproach you; but do you think I suffered nothing from your mother?'

'And must I pay for her sins?'

'There shall be no paying, no punishment, and no reproaches. There shall be none at least from me. But do not think that I speak in anger or in pride I will not marry into Lady Aylmer's family.'

'This is too bad too bad! After all that is past, it is too bad!'

'What can I say? Would you advise me to do that which would make us both wretched?'

'It would not make me wretched. It would make me happy. It would satisfy me altogether.'

'It cannot be, Captain Aylmer. It cannot be. When I speak to you in that way, will you not let it be final?'

He paused a moment before he spoke again, and then he turned sharp upon her. 'Tell me this, Clara; do you love me? Have you ever loved me?' She did not answer him, but stood there, listening quietly to his accusations. 'You have never loved me, and yet you have allowed yourself to say that you did. Is not that true?' Still she did not answer. 'I ask you whether that is not true?' But though he asked her, and paused for an answer, looking the while full into her face, yet she did not speak. And now I suppose you will become your cousin's wife?' he said. 'It will suit you to change, and to say that you love him.'

Then at last she spoke. 'I did not think that you would have treated me in this way, Captain Aylmer! I did not expect that you would insult me!'

'I have not insulted you.'

'But your manner to me makes my task easier than I could have hoped it to be. You asked me whether I ever loved you? I once thought that I did so; and so thinking, told you, without reserve, all my feeling. When I came to find that I had been mistaken, I conceived myself bound by my engagement to rectify my own error as best I could; and I resolved, wrongly as I now think, very wrongly that I could learn as your wife to love



you. Then came circumstances which showed me that a release would be good for both of us, and which justified me in accepting it. No girl could be bound by any engagement to a man who looked on and saw her treated in his own home, by his own mother, as you saw me treated at Aylmer Park. I claim to be released myself, and I know that this release is as good for you as it is for me.'

'I am the best judge of that.'

'For myself at any rate I will judge. For myself I have decided. Now I have answered the questions which you asked me as to my love for yourself. To that other question which you have thought fit to put to me about my cousin, I refuse to give any answer whatsoever.' Then, having said so much, she walked out of the room, closing the door behind her, and left him standing there alone.

Page 249

We need not follow her as she went up, almost mechanically, into her own room the room that used to be her own and then shut herself in, waiting till she should be assured, first by sounds in the house, and then by silence, that he was gone. That she fell away greatly from the majesty of her demeanour when she was thus alone, and descended to the ordinary ways of troubled females, we may be quite sure. But to her there was no further difficulty. Her work for the day was done. In due time she would take herself to the cottage, and all would be well, or, at any rate, comfortable with her. But what was he to do? How was he to get himself out of the house, and take himself back to London? While he had been in pursuit of her, and when he was leaving his vehicle at the public-house in the village of Belton, he like some other invading generals had failed to provide adequately for his retreat. When he was alone he took a turn or two about the room, half thinking that Clara would return to him. She could hardly leave him alone in a strange house him, who, as he had twice told her, had come all the way from Yorkshire to see her. But she did not return, and gradually he came to understand that he must provide for his own retreat without assistance. He was hardly aware, even now, how greatly he had transcended his usual modes of speech and action, both in the energy of his supplication and in the violence of his rebuke. He had been lifted for awhile out of himself by the excitement of his position, and now that he was subsiding into quiescence, he was unconscious that he had almost mounted into passion that he had spoken of love very nearly with eloquence. But he did recognize this as a fact that Clara was not to be his wife, and that he had better get back from Belton to London as quickly as possible. It would be well for him to teach himself to look back on the result of his aunt's dying request as an episode in his life satisfactorily concluded. His mother had undoubtedly been right. Clara, he could see now, would have led him a devil of a life; and even had she come to him possessed of a moiety of the property a supposition as to which he had very strong doubts still she might have been dear at the money. 'No real feeling,' he said to himself, as he walked about the room 'none whatever; and then so deficient in delicacy!' But still he was discontented because he had been rejected, and therefore tried to make him. self believe that he could still have her if he chose to persevere. 'But no,' he said, as he continued to pace the room, 'I have done everything more than every. thing that honour demands. I shall not ask her again. it is her own fault. She is an imperious woman, and my mother read her character aright.' It did not occur to him, as he thus consoled himself for what he had lost, that his mother's accusation against Clara had been altogether of a different nature. When we console ourselves by our own arguments, we are not apt to examine their accuracy with much strictness.

Page 250

But whether he were consoled or not, it was necessary that he should go, and in his going he felt himself to be ill-treated. He left the room, and as he went downstairs was disturbed and tormented by the creaking of his own boots. He tried to be dignified as he walked through the hall, and was troubled at his failure, though he was not conscious of any one looking at him. Then it was grievous that he should have to let himself out of the front door without attendance. At ordinary times he thought as little of such things as most men, and would not be aware whether he opened a door for himself or had it opened for him by another but now there was a distressing awkwardness in the necessity for self-exertion. He did not know the turn of the handle, and was unfamiliar with the manner of exit. He was being treated with indignity, and before he had escaped from the house had come to think that the Amedroz and Belton people were somewhat below him. He endeavoured to go out without a noise, but there was a slam of the door, without which he could not get the lock to work; and Clara, up in her own room, knew all about it.

‘Carriage yes; of course I want the carriage,’ he said to the unfortunate boy at the public-house. ‘Didn’t you hear me say that I wanted it?’ He had come down with a pair of horses, and as he saw them being put to the vehicle he wished he had been contented with one. As he was standing there, waiting, a gentleman rode by, and the boy, in answer to his question, told him that the horseman was Colonel Askerton. Before the day was over Colonel Askerton would probably know all that had happened to him. ‘Do move a little quicker; will you?’ he said to the boy and the old man who was to drive him. Then he got into the carriage, and was driven out of Belton, devoutly purposing that he never would return; and as he made his way back to Perivale he thought of a certain Lady Emily, who would, as he assured himself, have behaved much better than Clara Amedroz had done in any such scene as that which had just taken place.

When Clara was quite sure that Captain Aylmer was off the premises, she, too, descended, but she did not immediately leave the house. She walked through the room, and rang for the old woman, and gave certain directions as to the performance of which she certainly was not very anxious, and was careful to make Mrs Bunce understand that nothing had occurred between her and the gentleman that was either exalting or depressing in its nature. ‘I suppose Captain Aylmer went out, Mrs Bunce?’ ‘Oh yes, miss, a went out. I stood and see’d un from the top of the kitchen stairs.’ ‘You might have opened the door for him, Mrs Bunce.’ ‘Indeed then I never thought of it, miss, seeing the house so empty and the like.’ Clara said that it did not signify; and then, after an hour of composure, she walked back across the park to the cottage.

‘Well?’ said Mrs Askerton as soon as Clara was inside the drawing-room.

Page 251

'Well,' replied Clara.

'What have you got to tell? Do tell me what you have to tell.'

'I have nothing to tell.'

'Clara, that is impossible. Have you seen him? I know you have seen him, because he went by from the house about an hour since.'

'Oh yes; I have seen him.'

'And what have you said to him?'

'Pray do not ask me these questions just now. I have got to think of it all to think what he did say and what I said.'

'But you will tell me.'

'Yes; I suppose so.' Then Mrs Askerton was silent on the subject for the remainder of the day, allowing Clara even to go to bed without another question. And nothing was asked on the following morning nothing till the usual time for the writing of letters.

'Shall you have anything for the post?' said Mrs Askerton.

'There is plenty of time yet.'

'Not too much if you mean to go out at all. Come, Clara, you had better write to him at once.'

'Write to whom? I don't know that I have any letter to write at all.' Then there was a pause. 'As far as I can see,' she said, 'I may give up writing altogether for the future, unless some day you may care to hear from me.'

'But you are not going away.'

'Not just yet if you will keep me. To tell you the truth, Mrs Askerton, I do not yet know where on earth to take myself.'

'Wait here till we turn you out.'

'I have got to put my house in order. You know what I mean. The job ought not to be a troublesome one, for it is a very small house.'

'I suppose I know what you mean.'



'It will not be a very smart establishment. But I must look it all in the face; must I not? Though it were to be no house at all, I cannot stay here all my life.'

'Yes, you may. You have lost Aylmer Park because you were too noble not to come to us.'

'No,' said Clara, speaking aloud, with bright eyes almost with her hands clenched. 'No I deny that.'

'I shall choose to think so for my own purposes. Clara, you are savage to me almost always savage; but next to him I love you better than all the world beside. And so does he. "It's her courage," he said to me the other day. "That she should dare to do as she pleases here, is nothing; but to have dared to persevere in the fangs of that old dragon," it was just what he said "that was wonderful!"'

'There is an end of the old dragon now, so far as I am concerned.'

'Of course there is and of the young dragon too. You wouldn't have had the heart to keep me in suspense if you had accepted him again. You couldn't have been so pleasant last night if that had been so.'

'I did not know I was very pleasant.'

'Yes, you were. You were soft and gracious gracious for you, at least. And now, dear, do tell me about it. Of course I am dying to know.'

'There is nothing to tell.'

Page 252

'That is nonsense. There must be a thousand things to tell. At any rate it is quite decided?'

'Yes; it is quite decided.'

'All the dragons, old and young, are banished into outer darkness.'

'Either that, or else they are to have all the light to themselves.'

'Such light as glimmers through the gloom of Aylmer Park. And was he contented? I hope not. I hope you had him on his knees before he left you.'

'Why should you hope that? How can you talk such nonsense?'

'Because I wish that he should recognize what he has lost that he should know that he has been a fool a mean fool.'

'Mrs Askerton, I will not have him spoken of like that. He is a man very estimable of estimable qualities.'

'Fiddle-de-dee. He is an ape a monkey to be carried on his mother's organ. His only good quality was that you could have carried him on yours. I can tell you one thing there is not a woman breathing that will ever carry William Belton on hers. Whoever his wife may be, she will have to dance to his piping.'

'With all my heart and I hope the tunes will be good.'

'But I wish I could have been present to have heard what passed hidden, you know, behind a curtain. You won't tell me?'

'I will tell you not a word more.'

'Then I will get it out from Mrs Bunce. I'll be bound she was listening.'

'Mrs Bunce will have nothing to tell you; I do not know why you should be so curious.'

'Answer me one question at least when it came to the last, did he want to go on with it? Was the final triumph with him or with you?'

'There was no final triumph. Such things, when they have to end, do not end triumphantly.'

'And is that to be all?' 'Yes that is to be all.'

'And you say that you have no letter to write.'



'None no letter; none at present; none about this affair. Captain Aylmer, no doubt, will write to his mother, and then all those who are concerned will have been told.'

Clara Amedroz held her purpose and wrote no letter, but Mrs Askerton was not so discreet, or so indiscreet as the case might be. She did write not on that day or on the next, but before a week had passed by. She wrote to Norfolk, telling Clara not a word of her letter, and by return of post the answer came. But the answer was for Clara, not for Mrs Askerton, and was as follows:

'Plaistow Hall, April, 186

My dear Clara,

I don't know whether I ought to tell you but I suppose I may as well tell you, that Mary has had a letter from Mrs Askerton. It was a kind, obliging letter, and I am very grateful to her. She has told us that you have separated yourself altogether from the Aylmer Park people. I don't suppose you'll think I ought to pretend to be very sorry. I can't be sorry, even though I know how much you have lost in a worldly point of view. I could not bring myself to like Captain Aylmer, though I tried hard.' Oh Mr Belton, Mr Belton! 'He and I never could have been friends, and it is no use my pretending regret that you have quarrelled with them. But that, I suppose, is all over, and I will not say a word more about the Aylmers.

Page 253

I am writing now chiefly at Mary's advice, and because she says that something should be settled about the estate. Of course it is necessary that you should feel yourself to be the mistress of your own income, and understand exactly your own position. Mary says that this should be arranged at once, so that you may be able to decide how and where you will live. I therefore write to say that I will have nothing to do with your father's estate at Belton nothing, that is, for myself. I have written to Mr Green to tell him that you are to be considered as the heir. If you will allow me to undertake the management of the property as your agent, I shall be delighted. I think I could do it as well as any one else: and, as we agreed that we would always be dear and close friends, I think that you will not refuse me the pleasure of serving you in this way.

And now Mary has a proposition to make, as to which she will write herself tomorrow, but she has permitted me to speak of it first. If you will accept her as a visitor, she will go to you at Belton. She thinks, and I think too, that you ought to know each other. I suppose nothing would make you come here, at present, and therefore she must go to you. She thinks that all about the estate would be settled more comfortably if you two were together. At any rate, it would be very nice for her and I think you would like my sister Mary. She proposes to start about the 10th of May. I should take her as far as London and see her off, and she would bring her own maid with her. In this way she thinks that she would get as far as Taunton very well. She had, perhaps, better stay there for one night, but that can all be settled if you will say that you will receive her at the house.

I cannot finish my letter without saying one word for myself. You know what my feelings have been, and I think you know that they still are, and always must be, the same. From almost the first moment that I saw you I have loved you. When you refused me I was very unhappy; but I thought I might still have a chance, and therefore I resolved to try again. Then, when I heard that you were engaged to Captain Aylmer, I was indeed broken-hearted. Of course I could not be angry with you. I was not angry, but I was simply broken-hearted. I found that I loved you so much that I could not make myself happy without you. It was all of no use, for I knew that you were to be married to Captain Aylmer. I knew it, or thought that I knew it. There was nothing to be done only I knew that I was wretched. I suppose it is selfishness, but I felt, and still feel, that unless I can have you for my wife, I cannot be happy or care for anything. Now you are free again free, I mean, from Captain Aylmer and how is it possible that I should not again have a hope? Nothing but your marriage or death could keep me from hoping.

Page 254

I don't know much about the Aylmers. I know nothing of what has made you quarrel with the people at Aylmer Park nor do I want to know. To me you are once more that Clara Amedroz with whom I used to walk in Belton Park, with your hand free to be given wherever your heart can go with it. While it is free I shall always ask for it. I know that it is in many ways above my reach. I quite understand that in education and habits of thinking you are my superior. But nobody can love you better than I do. I sometimes fancy that nobody could ever love you so well. Mary thinks that I ought to allow a time to go by before I say all this again but what is the use of keeping it back? It seems to me to be more honest to tell you at once that the only thing in the world for which I care one straw is that you should be my wife.

Your most affectionate Cousin,

'William Belton.'

'Miss Belton is coming here, to the castle, in a fortnight,' said Clara that morning at breakfast. Both Colonel Askerton and his wife were in the room, and she was addressing herself chiefly to the former.

'Indeed, Miss Belton! And is he coming?' said Colonel Askerton.

'So you have heard from Plaistow?' said Mrs Askerton.

'Yes in answer to your letter. No, Colonel Askerton, my Cousin William is not coming. But his sister purposes to be here, and I must go up to the house and get it ready.'

'That will do when the time comes,' said Mrs Askerton.

'I did not mean quite immediately.'

'And are you to be her guest, or is she to be yours? said Colonel Askerton.

'It's her brother's home, and therefore I suppose I must be hers. Indeed it must be so, as I have no means of entertaining any one,'

'Something, no doubt, will be settled,' said the colonel.

'Oh, what a weary word that is,' said Clara; 'weary, at least, for a woman's ears! It sounds of poverty and dependence, and endless trouble given to others, and all the miseries of female dependence. If I were a young man I should be allowed to settle for myself.'

'There would be no question about the property in that case,' said the colonel.

'And there need be no question now,' said Mrs Askerton.

When the two women were alone together, Clara, of course, scolded her friend for having written to Norfolk without letting it be known that she was doing so scolded her, and declared how vain it was for her to make useless efforts for an unattainable end; but Mrs Askerton always managed to slip out of these reproaches, neither asserting herself to be right, nor owning herself to be wrong. 'But you must answer his letter,' she said.

'Of course I shall do that.'

'I wish I knew what he said.'

'I shan't show it you, if you mean that.'

'All the same I wish I knew what he said.'

Page 255

Clara, of course, did answer the letter; but she wrote her answer to Mary, sending, however, one little scrap to Mary's brother. She wrote to Mary at great length, striving to explain, with long and laborious arguments, that it was quite impossible that she should accept the Belton estate from her cousin. That subject, however, and the manner of her future life, she would discuss with her dear Cousin Mary, when Mary should have arrived. And then Clara said how she would go to Taunton to meet her cousin, and how she would prepare William's house for the reception of William's sister; and how she would love her cousin when she should come to know her. All of which was exceedingly proper and pretty. Then there was a little postscript, 'Give the enclosed to William.' And this was the note to William:

'Dear William,

Did you not say that you would be my brother? Be my brother always. I will accept from your hands all that a brother could do; and when that arrangement is quite fixed, I will love you as much as Mary loves you, and trust you as completely; and I will be obedient, as a younger sister should be.

Your loving Sister, C. A.'

'It's all no good,' said William Belton, as he crunched the note in his hand. 'I might as well shoot myself. Get out of the way there, will you?' And the injured groom scudded across the farm-yard, knowing that there was something wrong with his master.

CHAPTER XXX

MARY BELTON

It was about the middle of the pleasant month of May when Clara Amedroz again made that often repeated journey to Taunton, with the object of meeting Mary Belton. She had transferred herself and her own peculiar belongings back from the cottage to the house, and had again established herself there so that she might welcome her new friend. But she was not satisfied with simply receiving her guest at Belton, and therefore she made the journey to Taunton, and settled herself for the night at the inn. She was careful to get a bedroom for an 'invalid lady', close to the sitting-room, and before she went down to the station she saw that the cloth was laid for tea, and that the tea parlour had been made to look as pleasant as was possible with an inn parlour.

She was very nervous as she stood upon the platform waiting for the new comer to show herself. She knew that Mary was a cripple, but did not know how far her cousin was disfigured by her infirmity; and when she saw a pale-faced little woman, somewhat melancholy, but yet pretty withal, with soft, clear eyes, and only so much appearance of a stoop as to soften the hearts of those who saw her, Clara was agreeably surprised,

and felt herself to be suddenly relieved of an unpleasant weight. She could talk to the woman she saw there, as to any other woman, without the painful necessity of treating her always as an invalid. 'I think you are Miss Belton?' she said, holding out her hand. The likeness between Mary and her brother was too great to allow of Clara being mistaken.

Page 256

'And you are Clara Amedroz? It is so good of you to come to meet me!'

'I thought you would be dull in a strange town by yourself.'

'It will be much nicer to have you with me.'

Then they went together up to the inn; and when they had taken their bonnets off, Mary Belton kissed her cousin. 'You are very nearly what I fancied you,' said Mary.

'Am I? I hope you fancied me to be something that you could like.'

'Something that I could love very dearly. You are a little taller than what Will said; but then a gentleman is never a judge of a lady's height. And he said you were thin.'

'I am not very fat.'

'No; not very fat; but neither are you thin. Of course, you know, I have thought a great deal about you. It seems as though you had come to be so very near to us; and blood is thicker than water, is it not? If cousins are not friends, who can be?'

In the course of that evening they became very confidential together, and Clara thought that she could love Mary Belton better than any woman that she had ever known. Of course they were talking about William, and Clara was at first in constant fear lest some word should be said on her lover's behalf some word which would drive her to declare that she would not admit him as a lover; but Mary abstained from the subject with marvellous care and tact. Though she was talking through the whole evening of her brother, she so spoke of him as almost to make Clara believe that she could not have heard of that episode in his life. Mrs Askerton would have dashed at the subject at once; but then, as Clara told herself, Mary Bolton was better than Mrs Askerton.

A few words were said about the estate, and they originated in Clara's declaration that Mary would have to be regarded as the mistress of the house to which they were going.

'I cannot agree to that,' said Mary.

'But the house is William's, you know,' said Clara.

'He says not.'

'But of course that must be nonsense, Mary.'

'It is very evident that you know nothing of Plaistow ways, or you would not say that anything coming from William was nonsense. We are accustomed to regard all his words as law, and when he says that a thing is to be so, it always is so.'

'Then he is a tyrant at home.'

‘A beneficent despot. Some despots, you know, always were beneficent.’

‘He won’t have his way in this thing.’

‘I’ll leave you and him to fight about that, my dear. I am so completely under his thumb that I always obey him in everything. You must not, therefore, expect to range me on your side.’

Page 257

The next day they were at Belton Castle, and in a very few hours Clara felt that she was quite at home with her cousin. On the second day Mrs Askerton came up and called according to an arrangement to that effect made between her and Clara. 'I'll stay away if you like it,' Mrs Askerton had said. But Clara had urged her to come, arguing with her that she was foolish to be thinking always of her own misfortune. 'Of course I am always thinking of it,' she had replied, and always thinking that other people are thinking of it. Your cousin, Miss Belton, knows all my history, of course, But what matters? I believe it would be better that everybody should know it. I suppose she's very straight-laced and prim.' 'She is not prim at all,' said Clara. 'Well, I'll come,' said Mrs Askerton, 'but I shall not be a bit surprised if I hear that she goes back to Norfolk the next day.'

So Mrs Askerton came, and Miss Belton did not go back to Norfolk. Indeed, at the end of the visit, Mrs Askerton had almost taught herself to believe that William Belton had kept his secret, even from his sister. 'She's a dear little woman,' Mrs Askerton afterwards said to Clara.

'Is she not?'

'And so thoroughly like a lady.'

'Yes; I think she is a lady.'

'A princess among ladies! What a pretty little conscious way she has of asserting herself when she has an opinion and means to stick to it! I never saw a woman who got more strength out of her weakness. Who would dare to contradict her?'

'But then she knows everything so well,' said Clara.

'And how like her brother she is!'

'Yes there is a great family likeness.'

'And in character, too. I'm sure you'd find, if you were to try her, that she has all his personal firmness, though she can't show it as he does by kicking out his feet and clenching his fist.'

'I'm glad you like her,' said Clara.

'I do like her very much.'

'It is so odd the way you have changed. You used to speak of him as though he was merely a clod of a farmer, and of her as a stupid old maid. Now, nothing is too good to say of them.'

'Exactly, my dear and if you do not understand why, you are not so clever as I take you to be.'

Life went on very pleasantly with them at Belton for two or three weeks but with this drawback as regarded Clara, that she had no means of knowing what was to be the course of her future life. During these weeks she twice received letters from her Cousin Will, and answered both of them. But these letters referred to matters of business which entailed no contradiction to certain details of money due to the estate before the old squire's death, and to that vexed question of Aunt Winterfield's legacy, which had by this time drifted into Belton's hands, and as to which he was inclined to act in accordance with his cousin's wishes, though he was assured by Mr Green that the legacy was as good a legacy as

Page 258

had ever been left by an old woman. 'I think,' he said in his last letter,' that we shall be able to throw him over in spite of Mr Green.' Clara, as she read this, could not but remember that the man to be thrown over was the man to whom she had been engaged, and she could not but remember also all the circumstances of the intended legacy of her aunt's death, and of the scenes which had immediately followed her death. It was so odd that William Belton should now be discussing with her the means of evading all her aunt's intentions and that he should be doing so, not as her accepted lover. He had, indeed, called himself her brother, but he was in truth her rejected lover.

>From time to time during these weeks Mrs Askerton would ask her whether Mr Belton was coming to Belton, and Clara would answer her with perfect truth that she did not believe that he had any such intention. 'But he must come soon,' Mrs Askerton would say. And when Clara would answer that she knew nothing about it, Mrs Askerton would ask further questions about Mary Belton. 'Your cousin must know whether her brother is coming to look after the property?' But Miss Belton, though she heard constantly from her brother, gave no such intimation. If he had any intention of coming, she did not speak of it. During all these days she had not as yet said a word of her brother's love. Though his name was daily in her mouth and latterly, was frequently mentioned by Clara there had been no allusion to that still enduring hope of which Will Belton himself could not but speak when he had any opportunity of speaking at all. And this continued till at last Clara was driven to suppose that Mary Belton knew nothing of her brother's hopes.

But at last there came a change a change which to Clara was as great as that which had affected her when she first found that her delightful cousin was not sale against love-making. She had made up her mind that the sister did not intend to plead for her brother that the sister probably knew nothing of the brother's necessity for pleading that the brother probably had no further need for pleading When she remembered his last passionate words, she could not but accuse herself of hypocrisy when she allowed place in her thoughts to this latter supposition. He had been so intently earnest! The nature of the man was so eager and true! But yet, in spite of all that had been said, of all the fire in his eyes, and life in his words, and energy in his actions, he had at last seen that his aspirations were foolish, and his desires vain. It could not otherwise be that she and Mary should pass these hours in such calm repose without an allusion to the disturbing subject! After this fashion, and with such meditations as these, had passed by the last weeks and then at last there came the change.

'I have had a letter from William this morning,' said Mary.

'And so have not I,' said Clara, and yet I expect to hear from him.'



Page 259

'He means to be here soon,' said Mary.

'Oh, indeed!

'He speaks of being here next week.'

For a moment or two Clara had yielded to the agitation caused by her cousin's tidings; but with a little gush she recovered her presence of mind, and was able to speak with all the hypocritical propriety of a female. 'I am glad to hear it,' she said. 'It is only right that he should come.'

'He has asked me to say a word to you as to the purport of his journey.'

Then again Clara's courage and hypocrisy were so far subdued that they were not able to maintain her in a position adequate to the occasion. 'Well,' she said laughing, 'what is the word? I hope it is not that I am to pack up, bag and baggage, and take myself elsewhere. Cousin William is one of those persons who are willing to do everything except what they are wanted to do. He will go on talking about the Belton estate, when I want to know whether I may really look for as much as twelve shillings a week to live upon.'

'He wants me to speak to you about about the earnest love he bears for you.'

'Oh dear! Mary could you not suppose it all to be said? It is an old trouble, and need not be repeated.'

'No,' said Mary, 'I cannot suppose it to be all said.' Clara looking up as she heard the voice, was astonished both by the fire in the woman's eye and by the force of her tone. 'I will not think so meanly of you as to believe that such words from such a man can be passed by as meaning nothing. I will not say that you ought to be able to love him; in that you cannot control your heart; but if you cannot love him, the want of such love ought to make you suffer to suffer much and be very sad.'

'I cannot agree to that, Mary.'

'Is all his life nothing, then? Do you know what love means with him this love which he bears to you? Do you understand that it is everything to him? that from the first moment in which he acknowledged to himself that his heart was set upon you, he could not bring himself to set it upon any other thing for a moment? Perhaps you have never understood this; have never perceived that he is so much in earnest, that to him it is more than money, or land, or health more than life itself that he so loves that he would willingly give everything that he has for his love? Have you known this?'

Clara would not answer these questions for a while. What if she had known it all, was she therefore bound to sacrifice herself? Could it be the duty of any woman to give

herself to a man simply because a man wanted her? That was the argument as it was put forward now by Mary Belton.

'Dear, dearest Clara,' said Mary Belton, stretching herself forward from her chair, and putting out her thin, almost transparent, hand, 'I do not think that you have thought enough of this; or, perhaps, you have not known it. But his love for you is as I say. To him it is everything. It pervades every hour of every day, every corner in his life! He knows nothing of anything else while he is in his present state.'

Page 260

'He is very good more than good.'

'He is very good.'

'But I do not see that that Of course I know how disinterested he is.'

'Disinterested is a poor word. It insinuates that in such a matter there could be a question of what people call interest.'

'And I know, too, how much he honours me.'

'Honour is a cold word. It is not honour, but love downright true, honest love. I hope he does honour you. I believe you to be an honest, true woman; and, as he knows you well, he probably does honour you but I am speaking of love.' Again Clara was silent. She knew what should be her argument if she were determined to oppose her cousin's pleadings; and she knew also she thought she knew that she did intend to oppose them; but there was a coldness in the argument to which she was averse. 'You cannot be insensible to such love as that!' said Mary, going on with the cause which she had in hand.

'You say that he is fond of me.'

'Fond of you! I have not used such trifling expressions as that.'

'That he loves me.'

'You know he loves you. Have you ever doubted a word that he has spoken to you on any subject?'

'I believe he speaks truly.'

'You know he speaks truly. He is the very soul of truth.'

'But, Mary'

'Well, Clara! But remember; do not answer me lightly. Do not play with a man's heart because you have it in your power.'

'You wrong me. I could never do like that. You tell me that he loves me but what if I do not love him? Love will not be constrained. Am I to say that I love him because I believe that he loves me?'

This was the argument, and Clara found herself driven to use it not so much from its special applicability to herself, as on account of its general fitness. Whether it did or did not apply to herself she had no time to ask herself at that moment; but she felt that no

man could have a right to claim a woman's hand on the strength of his own love unless he had been able to win her love. She was arguing on behalf of women in general rather than on her own behalf.

'If you mean to tell me that you cannot love him, of course I must give over,' said Mary, not caring at all for men and women in general, but full of anxiety for her brother. 'Do you mean to say that that you can never love him?' It almost seemed, from her face, that she was determined utterly to quarrel with her new-found cousin to quarrel and to go at once away if she got an answer that would not please her.

'Dear Mary, do not press me so hard.'

'But I want to press you hard. It is not right that he should lose his life in longing and hoping.'

'He will not lose his life, Mary.'

'I hope not not not if I can help it. I trust that he will be strong enough to get rid of his trouble to put it down and trample it under his feet.' Clara, as she heard this, began to ask herself what it was that was to be trampled under Will's feet. 'I think he will be man enough to overcome his passion; and then, perhaps you may regret what you have lost.'



Page 261

'Now you are unkind to me.'

'Well; what would you have me say? Do I not know that he is offering you the best gift that he can give? Did I not begin by swearing to you that he loved you with a passion of love that cannot but be flattering to you? If it is to be love in vain, this to him is a great misfortune. And, yet, when I say that I hope that he will recover, you tell me that I am unkind.'

'No not for that.'

'May I tell him to come and plead for himself?'

Again Clara was silent, not knowing how to answer that last question. And when she did answer it, she answered it thoughtlessly. 'Of course he knows that he can do that.'

'He says that he has been forbidden.'

'Oh, Mary, what am I to say to you? You know it all, and I wonder that you can continue to question me in this way.'

'Know all what?'

'That I have been engaged to Captain Aylmer.'

'But you are not engaged to him now.'

'No I am not.'

'And there can be no renewal there, I suppose?'

'Oh, no!'

'Not even for my brother would I say a word if I thought'

'No there is nothing of that; but if you cannot understand, I do not think that I can explain it.' It seemed to Clara that her cousin, in her anxiety for her brother, did not conceive that a woman, even if she could suddenly transfer her affections from one man to another, could not bring herself to say that she had done so.

'I must write to him today,' said Mary, 'and I must give him some answer. Shall I tell him that he had better not come here till you are gone?'

'That will perhaps be best,' said Clara.

'Then he will never come at all.'



'I can go can go at once. I will go at once. You shall never have to say that my presence prevented his coming to his own house. I ought not to be here. I know it now. I will go away, and you may tell him that I am gone.'

'No, dear; you will not go.'

'Yes I must go. I fancied things might be otherwise, because he once told me that he would be a brother to me. And I said I would hold him to that not only because I want a brother so badly, but because I love him so dearly. But it cannot be like that.'

'You do not think that he will ever desert you?'

'But I will go away, so that he may come to his own house. I ought not to be here. Of course I ought not to be at Belton either in this house or in any other. Tell him that I will be gone before he can come, and tell him also that I will not be too proud to accept from him what it may be fit that he should give me. I have no one but him no one but him no one but him.' Then she burst into tears, and throwing back her head, covered her face with her hands.

Miss Belton, upon this, rose slowly from the chair on which she was sitting, and making her way painfully across to Clara, stood leaning on the weeping girl's chair. 'You shall not go while I am here,' she said.

Page 262

'Yes; I must go. He cannot come till I am gone.'

'Think of it all once again, Clara. May I not tell him to come, and that while he is coming you will see if you cannot soften your heart towards him?'

'Soften my heart! Oh, if I could only harden it!'

'He would wait. If you would only hid him wait, he would be so happy in waiting.'

'Yes till tomorrow morning. I know him. Hold out your little finger to him, and he has your whole hand and arm in a moment.'

'I want you to say that you will try to love him.'

But Clara was in truth trying not to love him. She was ashamed of herself because she did love the one man, when, but a few weeks since, she had confessed that she loved another. She had mistaken herself and her own feelings, not in reference to her cousin, but in supposing that she could really have sympathized with such a man as Captain Aylmer. It was necessary to her self-respect that she should be punished because of that mistake. She could not save herself from this condemnation she would not grant herself a respite because, by doing so, she would make another person happy. Had Captain Aylmer never crossed her path, she would have given her whole heart to her cousin. Nay; she had so given it had done so, although Captain Aylmer had crossed her path and come in her way. But it was matter of shame to her to find that this had been possible, and she could not bring herself to confess her shame.

The conversation at last ended, as such conversations always do end, without any positive decision. Mary wrote of course to her brother, but Clara was not told of the contents of the letter. We, however, may know them, and may understand their nature, without learning above two lines of the letter. 'If you can be content to wait awhile, you will succeed,' said Mary; 'but when were you ever content to wait for anything?' 'If there is anything I hate, it is waiting,' said Will, when he received the letter; nevertheless the letter made him happy, and he went about his farm with a sanguine heart, as he arranged matters for another absence. 'Away long?' he said, in answer to a question asked him by his head man; 'how on earth can I say how long I shall be away? You can go on well enough without me by this time, I should think. You will have to learn, for there is no knowing how often I may be away, or for how long.'

When Mary said that the letter had been written, Clara again spoke about going. 'And where will you go?' said Mary.

'I will take a lodging in Taunton.'

'He would only follow you there, and there would be more trouble. That would be all. He must act as your guardian, and in that capacity, at any rate, you must submit to

him.' Clara, therefore, consented to remain at Belton; but, before Will arrived, she returned from the house to the cottage.

'Of course I understand all about it,' said Mrs Askerton; 'and let me tell you this that if it is not all settled within a week from his coming here, I shall think that you are without a heart. He is to be knocked about, and cuffed, and kept from his work, and made to run up and down between here and Norfolk, because you cannot bring yourself to confess that you have been a fool.'

Page 263

'I have never said that I have not been a fool,' said Clara.

'You have made a mistake as young women will do sometimes, even when they are as prudent and circumspect as you are and now you don't quite like the task of putting it right.'

It was all true, and Clara knew that it was true. The putting right of mistakes is never pleasant; and in this case it was so unpleasant that she could not bring herself to acknowledge that it must be done. And yet, I think that, by this time, she was aware of the necessity.

CHAPTER XXXI

TAKING POSSESSION

'I want her to have it all,' said William Belton to Mr Green, the lawyer, when they came to discuss the necessary arrangements for the property.

'But that would be absurd.'

'Never mind. It is what I wish. I suppose a man may do what he likes with his own.'

'She won't take it,' said the lawyer.

'She must take it, if you manage the matter properly,' said Will.

'I don't suppose it will make much difference,' said the lawyer 'now that Captain Aylmer is out of the running.'

'I know nothing about that. Of course I am very glad that he should be out of the running, as you call it. He is a bad sort of fellow, and I didn't want him to have the property. But all that has had nothing to do with it. I'm not doing it because I think she is ever to be my wife.'

>From this the reader will understand that Belton was still fidgeting himself and the lawyer about the estate when he passed through London. The matter in dispute, however, was so important that he was induced to seek the advice of others besides Mr Green, and at last was brought to the conclusion that it was his paramount duty to become Belton of Belton. There seemed in the minds of all these councillors to be some imperative and almost imperious requirement that the acres should go back to a man of his name. Now, as there was no one else of the family who could stand in his way, he had no alternative but to become Belton of Belton. He would, however, sell his estate in Norfolk, and raise money for endowing Clara with commensurate riches. Such was his own plan but having fallen among counsellors he would not exactly follow his

own plan, and at last submitted to an arrangement in accordance with which an annuity of eight hundred pounds a year was to be settled upon Clara, and this was to lie as a charge upon the estate in Norfolk.

'It seems to me to be very shabby,' said William Belton.

'It seems to me to be very extravagant,' said the leader among the counsellors. 'She is not entitled to sixpence.'

But at last the arrangement as above described was the one to which they all assented.

When Belton reached the house which was now his own he found no one there but his sister. Clara was at the cottage. As he had been told that she was to return there, he had no reason to be annoyed. But, nevertheless, he was annoyed, or rather discontented, and had not been a quarter of an hour about the place before he declared his intention to go and seek her.

Page 264

'Do no such thing, Will; pray do not,' said his sister.

'And why not?'

'Because it will be better that you should wait. You will only injure yourself and her by being impetuous.'

'But it is absolutely necessary that she should know her own position. It would be cruelty to keep her in ignorance though for the matter of that I shall be ashamed to tell her. Yes I shall be ashamed to look her in the face. What will she think of it after I had assured her that she should have the whole?'

'But she would not have taken it, Will. And had she done so, she would have been very wrong. Now she will be comfortable.'

'I wish I could be comfortable,' said he.

'If you will only wait'

'I hate waiting. I do not see what good it will do. Besides, I don't mean to say anything about that not today, at least. I don't indeed. As for being here and not seeing her, that is out of the question. Of course she would think that I had quarrelled with her, and that I meant to take everything to myself, now that I have the power.'

'She won't suspect you of wishing to quarrel with her, Will'

'I should in her place. It is out of the question that I should be here, and not go to her. It would be monstrous. I will wait till they have done lunch, and then I will go up.'

It was at last decided that he should walk up to the cottage, call upon Colonel Askerton, and ask to see Clara in the colonel's presence. It was thought that he could make his statement about the money better before a third person who could be regarded as Clara's friend, than could possibly be done between themselves. He did, therefore, walk across to the cottage, and was shown into Colonel Askerton's study.

'There he is,' Mrs Askerton said, as soon as she heard the sound of the bell. 'I knew that he would come at once.'

During the whole morning Mrs Askerton had been insisting that Belton would make his appearance on that very day the day of his arrival at Belton, and Clara had been asserting that he would not do so.

'Why should he come?' Clara had said.

'Simply to take you to his own house, like any other of his goods and chattels.'

'I am not his goods or his chattels.'

'But you soon will be; and why shouldn't you accept your lot quietly? He is Belton of Belton, and everything here belongs to him.'

'I do not belong to him.'

'What nonsense! When a man has the command of the situation, as he has, he can do just what he pleases. If he were to come and carry you off by violence, I have no doubt the Beltonians would assist him, and say that he was right. And you of course would forgive him. Belton of Belton may do anything.'

'That is nonsense, if you please.'

'Indeed if you had any of that decent feeling of feminine inferiority which ought to belong to all women, he would have found you sitting on the doorstep of his house waiting for him.'

Page 265

That had been said early in the morning, when they first knew that he had arrived; but they had been talking about him ever since talking about him under pressure from Mrs Askerton, till Clara had been driven to long that she might be spared. 'If he chooses to come, he will come,' she said. 'Of course he will come,' Mrs Askerton had answered, and then they heard the ring of the bell. 'There he is. I could swear to the sound of his foot. Doesn't he step as though he were Belton of Belton, and conscious that everything belonged to him?' Then there was a pause. 'He has been shown in to Colonel Askerton. What on earth could he want with him?'

'He has called to tell him something about the cottage,' said Clara, endeavouring to speak as though she were calm through it all.

'Cottage! Fiddlestick! The idea of a man coming to look after his trumpery cottage on the first day of his showing himself as lord of his own property! Perhaps he is demanding that you shall be delivered up to him. If he does I shall vote for obeying.'

'And I for disobeying and shall vote very strongly too.'

Their suspense was yet prolonged for another ten minutes, and at the end of that time the servant came in and asked if Miss Amedroz would be good enough to go into the master's room. 'Mr Belton is there, Fanny?' asked Mrs Askerton. The girl confessed that Mr Belton was there, and then Clara, without another word, got up and left the room. She had much to do in assuming a look of composure before she opened the door; but she made the effort, and was not unsuccessful. In another second she found her hand in her cousin's, and his bright eye was fixed upon her with that eager friendly glance which made his face so pleasant to those whom he loved.

'Your cousin has been telling me of the arrangements he has been making for you with the lawyers,' said Colonel Askerton. 'I can only say that I wish all the ladies had cousins so liberal, and so able to be liberal.'

'I thought I would see Colonel Askerton first, as you are staying at his house. And as for liberality there is nothing of the kind. You must understand, Clara, that a fellow can't do what he likes with his own in this country. I have found myself so bullied by lawyers and that sort of people, that I have been obliged to yield to them. I wanted that you should have the old place, to do just what you pleased with it.'

'That was out of the question, Will.'

'Of course it was,' said Colonel Askerton. Then, as Belton himself did not proceed to the telling of his own story, the colonel told it for him, and explained what was the income which Clara was to receive.

'But that is as much out of the question,' said she, 'as the other. I cannot rob you in that way. I cannot and I shall not. And why should I? What do I want with an income? Something I ought to have, if only for the credit of the family, and that I am willing to take from your kindness; but'

Page 266

'It's all settled now, Clara.'

'I don't think that you can lessen the weight of your obligation, Miss Amedroz, after what has been done up in London,' said the colonel.

'If you had said a hundred a year'

'I have been allowed to say nothing,' said Belton; 'those people have said eight and so it is settled. When are you coming over to see Mary?'

To this question he got no definite answer, and as he went away immediately afterwards he hardly seemed to expect one. He did not even ask for Mrs Askerton, and as that lady remarked, behaved altogether like a bear. 'But what a munificent bear!' she said. 'Fancy eight hundred a year of your own. One begins to doubt whether it is worth one's while to marry at all with such an income as that to do what one likes with! However, it all means nothing. It will all be his own again before you have even touched it.'

'You must not say anything more about that,' said Clara gravely.

'And why must I not?'

'Because I shall hear nothing more of it. There is an end of all that as there ought to be.'

'Why an end? I don't see an end. There will be no end till Belton of Belton has got you and your eight hundred a year as well as everything else.'

'You will find that he does not mean anything more,' said Clara.

'You think not?'

'I am sure of it.' Then there was a little sound in her throat as though she were in some danger of being choked; but she soon recovered herself, and was able to express herself clearly. 'I have only one favour to ask you now, Mrs Askerton, and that is that you will never say anything more about him. He has changed his mind. Of course he has, or he would not come here like that and have gone away without saying a word.'

'Not a word! A man gives you eight hundred a year and that is not saying a word!'

'Not a word except about money! But of course he is right. I know that he is right. Alter what has passed he would be very wrong to think about it any more. You joke about his being Belton of Belton. But it does make a difference.'

'It does does it?'

'It has made a difference. I see and feel it now. I shall never hear him ask me that question any more.'

'And if you did hear him, what answer would you make him?'

'I don't know.'

'That is just it. Women are so cross-grained that it is a wonder to me that men should ever have any. thing to do with them. They have about them some madness of a phantasy which they dignify with the name of feminine pride, and under the cloak of this they believe themselves to be justified in tormenting their lovers' lives out. The only consolation is that they torment themselves as much. Can anything be more cross-grained than you are at this moment? You were resolved just now that it would be the most unbecoming thing in the world if he spoke a word more about his love for the next twelve months'

Page 267

'Mrs Askerton, I said nothing about twelve months.'

'And now you are broken-hearted because he did not blurt it all out before Colonel Askerton in a business interview, which was very properly had at once, and in which he has had the exceeding good taste to confine himself altogether to the one subject.'

'I am not complaining.'

'It was good taste; though if he had not been a bear he might have asked after me, who am fighting his battles for him night and day.'

'But what will he do next?'

'Eat his dinner, I should think, as it is now nearly five o'clock. Your father used always to dine at five.'

'I can't go to see Mary,' she said, 'till he comes here again.'

'He will be here fast enough. I shouldn't wonder if he was to come here tonight.' And he did come again that night.

When Belton's interview was over in the colonel's study, he left the house without even asking after the mistress, as that mistress had taken care to find out and went off, rambling about the estate which was now his own. It was a beautiful place, and he was not insensible to the gratification of being its owner. There is much in the glory of ownership of the ownership of land and houses, of beeves and woolly flocks, of wide fields and thick-growing woods, even when that ownership is of late date, when it conveys to the owner nothing but the realization of a property on the soil; but there is much more in it when it contains the memories of old years; when the glory is the glory of race as well as the glory of power and property. There had been Beltons of Belton living there for many centuries, and now he was the Belton of the day, standing on his own ground the descendant and representative of the Beltons of old Belton of Belton without a flaw in his pedigree! He felt himself to be proud of his position prouder than he could have been of any other that might have been vouchsafed to him. And yet amidst it all he was somewhat ashamed of his pride. 'The man who can do it for himself is the real man after all,' he said. 'But I have got it by a fluke and by such a sad chance too!' Then he wandered on, thinking of the circumstances under which the property had fallen into his hands, and remembering how and when and where the first idea had occurred to him of making Clara Amedroz his wife. He had then felt that if he could only do that he could reconcile himself to the heirship. And the idea had grown upon him instantly, and had become a passion by the eagerness with which he had welcomed it. From that day to this he had continued to tell himself that he could not enjoy his good fortune unless he could enjoy it with her. There had come to be a horrid impediment in his way a barrier which had seemed to have been placed there by his evil fortune, to



compensate the gifts given to him by his good fortune, and that barrier had been Captain Aylmer. He had not, in fact, seen much of his rival, but he had seen enough to make it matter of wonder to him that Clara could be attached to such a man. He had thoroughly despised Captain Aylmer, and had longed to show his contempt of the man by kicking him out of the hotel at the London railway station. At that moment all the world had seemed to him to be wrong and wretched.

Page 268

But now it seemed that all the world might so easily be made right again! The impediment had got itself removed. Belton did not even yet altogether comprehend by what means Clara had escaped from the meshes of the Aylmer Park people, but he did know that she had escaped. Her eyes had been opened before it was too late, and she was a free woman to be compassed if only a man might compass her. While she had been engaged to Captain Aylmer, Will had felt that she was not assailable. Though he had not been quite able to restrain himself as on that fatal occasion when he had taken her in his arms and kissed her still he had known that as she was an engaged woman, he could not, without insulting her, press his own suit upon her. But now all that was over. Let him say what he liked on that head, she would have no proper plea for anger. She was assailable and, as this was so, why the mischief should he not set about the work at once? His sister bade him wait. Why should he wait when one fortunate word might do it? Wait! He could not wait. How are you to bid a starving man to wait when you put him down at a well-covered board? Here was he, walking about Belton Park just where she used to walk with him and there was she at Belton Cottage, within half an hour of him at this moment, if he were to go quickly; and yet Mary was telling him to wait! No; he would not wait. There could be no reason for waiting. Wait, indeed, till some other Captain Aylmer should come in the way and give him more trouble!

So he wandered on, resolving that he would see his cousin again that very day. Such an interview as that which had just taken place between two such dear friends was not natural was not to be endured. What might not Clara think of it! To meet her for the first time after her escape from Aylmer Park, and to speak to her only on matters concerning money! He would certainly go to her again on that afternoon. In his walking he came to the bottom of the rising ground on the top of which stood the rock on which he and Clara had twice sat. But he turned away, and would not go up to it. He hoped that he might go up to it very soon but, except under certain dream. stances, he would never go up to it again.

'I am going across to the cottage immediately after dinner,' he said to his sister.

'Have you an appointment?'

'No; I have no appointment. I suppose a man doesn't want an appointment to go and see his own cousin down in the country.'

'I don't know what their habits are.'

'I shan't ask to go in; but I want to see her.'



Page 269

Mary looked at him with loving, sorrowing eyes, but she said no more. She loved him so well that she would have given her right hand to get for him what he wanted but she sorrowed to think that he should want such a thing so sorely. Immediately after his dinner, he took his hat and went out without saying a word further, and made his way once more across to the gate of the cottage. It was a lovely summer evening, at that period of the year in which our summer evenings just begin, when the air is sweeter and the flowers more fragrant, and the forms of the foliage more lovely than at any other time. It was now eight o'clock, but it was hardly as yet evening; none at least of the gloom of evening had come, though the sun was low in the heavens. At the cottage they were all sitting out on the lawn; and as Belton came near he was seen by them, and he saw them.

'I told you so,' said Mrs Askerton, to Clara, in a whisper.

'He is not coming in,' Clara answered. 'He is going on.'

But when he had come nearer, Colonel Askerton called to him over the garden paling, and asked him to join them. He was now standing within ten or fifteen yards of them, though the fence divided them. 'I have come to ask my Cousin Clara to take a walk with me,' he said. 'She can be back by your tea time.' He made his request very placidly, and did not in any way look like a lover.

'I am sure she will be glad to go,' said Mrs Askerton. But Clara said nothing.

'Do take a turn with me, if you are not tired,' said he.

'She has not been out all day, and cannot be tired,' said Mrs Askerton, who had now walked up to the paling. 'Clara, get your hat. But, Mr Belton, what have I done that I am to be treated in this way? Perhaps you don't remember that you have not spoken to me since your arrival.'

'Upon my word, I beg your pardon,' said he, endeavouring to stretch his hand across the bushes.

'I forgot I didn't see you this morning.'

'I suppose I musn't be angry, as this is your day of taking possession; but it is exactly on such days as this that one likes to be remembered.'

'I didn't mean to forget you, Mrs Askerton; I didn't, indeed. And as for the special day, that's all bosh, you know. I haven't taken particular possession of anything that I know of.'

'I hope you will, Mr Belton, before the day is over,' said she. Clara had at length arisen, and had gone into the house to fetch her hat. She had not spoken a word, and even yet



her cousin did not know whether she was coming. 'I hope you will take possession of a great deal that is very valuable. Clara has gone to get her hat.'

'Do you think she means to walk?'

'I think she does, Mr Belton. And there she is at the door. Mind you bring her back to tea.'

Page 270

Clara, as she came forth, felt herself quite unable to speak, or walk, or look after her usual manner. She knew herself to be a victim to be so far a victim that she could no longer control her own fate. To Captain Aylmer, at any rate, she had never succumbed. In all her dealings with him she had fought upon an equal footing. She had never been compelled to own herself mastered. But now she was being led out that she might confess her own submission, and acknowledge that hitherto she had not known what was good for her. She knew that she would have to yield. She must have known how happy she was to have an opportunity of yielding; but yet yet, had there been any room for choice, she thought she would have refrained from walking with her cousin that evening. She had wept that afternoon because she had thought that he would not come again; and now that he had come at the first moment that was possible for him, she was almost tempted to wish him once more away.

'I suppose you understand that when I came up this morning I came merely to talk about business,' said Belton, as soon as they were off together.

'It was very good of you to come at all so soon after your arrival.'

'I told those people in London that I would have it all settled at once, and so I wanted to have it off my mind.'

'I don't know what I ought to say to you. Of course I shall not want so much money as that.'

'We won't talk about the money any more today. I hate talking about money.'

'It is not the pleasantest subject in the world.'

'No,' said he; 'no indeed. I hate it particularly between friends. So you have come to grief with your friends, the Aylmers?'

'I hope I haven't come to grief and the Aylmers, as a family, never were my friends. I'm obliged to contradict you, point by point you see.'

'I don't like Captain Aylmer at all,' said Will, after a pause.

'So I saw, Will; and I dare say he was not very fond of you.' 'Fond of me! I didn't want him to be fond of me. I don't suppose he ever thought much about me. I could not help thinking of him.' She had nothing to say to this, and therefore walked on silently by his side. 'I suppose he has not any idea of coming back here again?'

'What; to Belton? No, I do not think he will come to Belton any more.'

'Nor will you go to Aylmer Park?'



'No; certainly not. Of all the places on earth. Will, to which you could send me, Aylmer Park is the one to which I should go most unwillingly.'

'I don't want to send you there.'

'You never could be made to understand what a woman she is; how disagreeable, how cruel, how imperious, how insolent.'

'Was she so bad as all that?'

'Indeed she was, Will. I can't but tell the truth to you.'

'And he was nearly as bad as she.'

'No, Will; no; do not say that of him.'

Page 271

'He was such a quarrelsome fellow. He flew at me just because I said we had good hunting down in Norfolk.'

'We need not talk about all that, Will.'

'No of course not. It's all passed and gone, I suppose.'

'Yes it is all passed and gone. You did not know my Aunt Winterfield, or you would understand my first reason for liking him.'

'No,' said Will; 'I never saw her.'

Then they walked on together for a while without speaking, and Clara was beginning to feel some relief some relief at first; but as the relief came, there came back to her the dead, dull, feeling of heaviness at her heart which had oppressed her after his visit in the morning. She had been right, and Mrs Askerton had been wrong. He had returned to her simply as her cousin, and now he was walking with her and talking to her in this strain, to teach her that it was so. But of a sudden they came to a place where two paths diverged, and he turned upon her and asked her quickly which path they should take. 'Look, Clara,' he said, 'will you go up there with me?' It did not need that she should look, as she knew that the way indicated by him led up among the rocks.

'I don't much care which way,' she said, faintly.

'Do you not? But I do. I care very much. Don't you remember where that path goes?' She had no answer to give to this. She remembered well, and remembered how he had protested that he would never go to the place again unless he could go there as her accepted lover. And she had asked herself sundry questions as to that protestation. Could it be that for her sake he would abstain from visiting the prettiest spot on his estate that he would continue to regard the ground as hallowed because of his memories of her? 'Which way shall we go?' he asked.

'I suppose it does not much signify,' said she, trembling.

'But it does signify. It signifies very much to me. Will you go up to the rocks?'

'I am afraid we shall be late, if we stay out long.'

'What matters how late? Will you come?'

'I suppose so if you wish it, Will.'

She had anticipated that the high rock was to be the altar at which the victim was to be sacrificed; but now he would not wait till he had taken her to the sacred spot. He had of course intended that he would there renew his offer; but he had perceived that his offer

had been renewed, and had, in fact, been accepted, during this little parley as to the pathway. There was hardly any necessity for further words. So he must have thought; for, as quick as lightning, he flung his arms around her, and kissed her again, as he had kissed her on that other terrible occasion that occasion on which he had felt that he might hardly hope for pardon.

‘William, William,’ she said; ‘how can you serve me like that?’ But he had a full understanding as to his own privileges, and was well aware that he was in the right now, as he had been before that he was trespassing egregiously. ‘Why are you so rough with me?’ she said.

Page 272

'Clara, say that you love me.'

'I will say nothing to you because you are so rough.' They were now walking up slowly towards the rocks.

And as he had his arm round her waist, he was contented for awhile to allow her to walk without speaking. But when they were on the summit it was necessary for him that he should have a word from her of positive assurance. 'Clara, say that you love me.'

'Have I not always loved you, Will, since almost the first moment that I saw you?'

'But that won't do. You know that is not fair. Come, Clara; I've had a deal of trouble and grief too; haven't I? You should say a word to make up for it that is, if you can say it.'

'What can a word like that signify to you today? You have got everything.'

'Have I got you?' Still she paused. 'I will have an answer. Have I got you? Are you now my own?'

'I suppose so, Will. Don't now. I will not have it again. Does not that satisfy you?'

'Tell me that you love me.'

'You know that I love you.'

'Better than anybody in the world?'

'Yes better than anybody in the world.'

'And after all you will be my wife?'

'Oh, Will how you question one!'

'You shall say it, and then it will all be fair and honest.'

'Say what? I'm sure I thought I had said everything.'

'Say that you mean to be my wife.'

'I suppose so if you wish it.'

'Wish it!' said he, getting up from his seat, and throwing his hat into the bushes on one side; 'wish it! I don't think you have ever understood how I have wished it. Look here, Clara; I found when I got down to Norfolk that I couldn't live without you. Upon my word it is true. I don't suppose you'll believe me.'



'I didn't think it could be so bad with you as that.'

'No I don't suppose women ever do believe. And I wouldn't have believed it of myself. I hated myself for it. By George, I did. That is when I began to think it was all up with me.'

'All up with you! Oh, Will!'

'I had quite made up my mind to go to New Zealand. I had, indeed. I couldn't have kept my hands off that man if we had been living in the same country. I should have wrung his neck.'

'Will, how can you talk so wickedly?'

'There's no understanding it till you have felt it. But never mind. It's all right now; isn't it, Clara?'

'If you think so.'

'Think so! Oh, Clara, I am such a happy fellow. Do give me a kiss. You have never given me one kiss yet.'

'What nonsense! I didn't think you were such a baby.'

'By George, but you shall or you shall never get home to tea to-night. My own, own, own darling. Upon my word, Clara, when I begin to think about it I shall be half mad.'

'I think you are quite that already.'

Page 273

'No, I'm not but I shall be when I'm alone. What can I say to you, Clara, to make you under. stand how much I love you? You remember the song, "For Bonnie Annie Laurie I'd lay me down and dee". Of course it is all nonsense talking of dying for a woman. What a man has to do is to live for her. But that is my feeling. I'm ready to give you my life. If there was anything to do for you, I'd do it if I could, whatever it was. Do you understand me?'

'Dear Will! Dearest Will!'

'Am I dearest?'

'Are you not sure of it?'

'But I like you to tell me so. I like to feel that you are not ashamed to own it. You ought to say it a few times to me, as I have said it so very often to you.'

'You'll hear enough of it before you've done with me.'

'I shall never have heard enough of it. Oh, Heavens, only think, when I was coming down in the train last night I was in such a bad way.'

'And are you in a good way now?'

'Yes; in a very good way. I shall crow over Mary so when I get home.'

'And what has poor Mary done?'

'Never mind.'

'I dare say she knows what is good for you better than you know yourself. I suppose she has told you that you might do a great deal better than trouble yourself with a wife?'

'Never mind what she has told me. It is settled now is it not?'

'I hope so, Will.'

'But not quite settled as yet. When shall it be? That is the next question.'

But to that question Clara positively refused to make any reply that her lover would consider to be satisfactory. He continued to press her till she was at last driven to remind him how very short a time it was since her father had been among them; and then he was very angry with himself, and declared himself to be a brute. 'Anything but that,' she said. 'You are the kindest and the best of men but at the same time the most impatient.'

'That's what Mary says; but what's the good of waiting? She wanted me to wait today.'

'And as you would not, you have fallen into a trap out of which you can never escape. But pray let us go. What will they think of us?'

'I shouldn't wonder if they didn't think something near the truth.'

'Whatever they think, we will go back. It is ever so much past nine.'

'Before you stir, Clara, tell me one thing. Are you really happy?'

'Very happy.'

'And are you glad that this has been done?'

'Very glad. Will that satisfy you?'

'And you do love me?'

'I do I do I do. Can I say more than that?'

'More than anybody else in the world?'

'Better than all the world put together.'

'Then,' said he, holding her tight in his arms, 'show me that you love me.' And as he made his request he was quick to explain to her what, according to his ideas, was the becoming mode by which lovers might show their love. I wonder whether it ever occurred to Clara, as she thought of it all before she went to bed that night, that Captain Aylmer and William Belton were very different in their manners. And if so, I must wonder further whether she most approved the manners of the patient man or the man who was impatient.

Page 274

CHAPTER XXXII

CONCLUSION

About two months after the scene described in the last chapter, when the full summer had arrived, Clara received two letters from the two lovers the history of whose loves have just been told, and these shall be submitted to the reader, as they will serve to explain the manner in which the two men proposed to arrange their affairs. We will first have Captain Aylmer's letter, which was the first read; Clara kept the latter for the last, as children always keep their sweetest morsels.

'Aylmer Park, August 188

My dear Miss Amedroz,

I heard before leaving London that you are engaged to marry your cousin Mr William Belton, and I think that perhaps you may be satisfied to have a line from me to let you know that I quite approve of the marriage.' 'I do not care very much for his approval or disapproval,' said Clara as she read this. 'No doubt it will be the best thing you can do, especially as it will heal all the sores arising from the entail.' 'There never was any sore,' said Clara. 'Pray give my compliments to Mr Belton, and offer him my congratulations, and tell him that I wish him all happiness in the married state.' 'Married fiddlestick!' said Clara. In this she was unreasonable; but the euphonious platitudes of Captain Aylmer were so unlike the vehement protestations of Mr Belton that she must be excused if by this time she had come to entertain something of an unreasonable aversion for the former.

I hope you will not receive my news with perfect indifference when I tell you that I also am going to be married. The lady is one whom I have known for a long time, and have always esteemed very highly. She is Lady Emily Tagmaggert, the youngest daughter of the Earl of Mull.' Why Clara should immediately have conceived a feeling of supreme contempt for Lady Emily Tagmaggert, and assured herself that her ladyship was a thin, dry, cross old maid with a red nose, I cannot explain; but I do know that such were her thoughts, almost instantaneously, in reference to Captain Aylmer's future bride. 'Lady Emily is a very intimate friend of my sister's; and you, who know how our family cling together, will feel how thankful I must be when I tell you that my mother quite approves of the engagement. I suppose we shall be married early in the spring. We shall probably spend some months every year at Perivale, and I hope that we may look forward to the pleasure of seeing you sometimes as a guest beneath our roof.' On reading this Clara shuddered, and made some inward protestation which seemed to imply that she had no wish whatever to revisit the dull streets of the little town with which she had been so well acquainted. 'I hope she'll be good to poor Mr Possit,' said Clara, 'and give him port wine on Sundays.'

Page 275

I have one more thing that I ought to say. You will remember that I intended to pay my aunt's legacy immediately after her death, but that I was prevented by circumstances which I could not control. I have paid it now into Mr Green's hands on your account, together with the sum of £59 18s 3d., which is due upon it as interest at the rate of 5 per cent. I hope that this may be satisfactory.' 'It is not satisfactory at all,' said Clara, putting down the letter, and resolving that Will Belton should be instructed to repay the money instantly. It may, however, be explained here that in this matter Clara was doomed to be disappointed; and that she was forced, by Mr Green's arguments, to receive the money. 'Then it shall go to the hospital at Perivale,' she declared when those arguments were used. As to that, Mr Green was quite indifferent, but I do not think that the legacy which troubled poor Aunt Winterfield so much on her dying bed was ultimately applied to so worthy a purpose.

And now, my dear Miss Amedroz,' continued the letter, 'I will say farewell, with many assurances of my unaltered esteem, and with heartfelt wishes for your future happiness. Believe me to be always,

Most faithfully and sincerely yours,

Frederic F. Aylmer.

'Esteem!' said Clara, as she finished the letter. 'I wonder which he esteems the most, me or Lady Emily Tagmaggert. He will never get beyond esteem with any one.

The letter which was last read was as follows:

Plaistow, August 186 .

Dearest Clara,

I don't think I shall ever get done, and I am coming to hate farming. It is awful lonely here, too, and I pass all my evenings by myself, wondering why I should be doomed to this kind of thing, while you and Mary are comfortable together at Belton. We have begun with the wheat, and as soon as that is safe I shall cut and run. I shall leave the barley to Bunce. Bunce knows as much about it as I do and as for remaining here all the summer, it's out of the question.

My own dear, darling love, of course I don't intend to urge you to do anything that you don't like; but upon my honour I don't see the force of what you say. You know I have as much respect for your father's memory as anybody, but what harm can it do to him that we should be married at once? Don't you think he would have wished it himself? It can be ever so quiet. So long as it's done, I don't care a straw how it's done. Indeed, for the matter of that, I always think it would be best just to walk to church and to walk home again without saying anything to anybody. I hate fuss and nonsense, and really I

don't think anybody would have a right to say anything if we were to do it at once in that sort of way. I have had a bad time of it for the last twelvemonth. You must allow that, and I think that I ought to be rewarded.

Page 276

As for living, you shall have your choice. Indeed you shall live anywhere you please at Timbuctoo if you like it. I don't want to give up Plaistow, because my father and grandfather farmed the land themselves; but I am quite prepared not to live here. I don't think it would suit you, because it has so much of the farm-house about it. Only I should like you sometimes to come and look at the old place. What I should like would be to pull down the house at Belton and build another. But you mustn't propose to put it off till that's done, as I should never have the heart to do it. If you think that would suit you, I'll make up my mind to live at Belton for a constancy; and then I'd go in for a lot of cattle, and don't doubt I'd make a fortune. I'm almost sick of looking at the straight ridges in the big square fields every day of my life.

Give my love to Mary. I hope she fights my battle for me. Pray think of all this, and relent if you can. I do so long to have an end of this purgatory. If there was any use, I wouldn't say a word; but there's no good in being tortured, when there is no use. God bless you, dearest love. I do love you so well!

Yours most affectionately,

W. Belton.'

She kissed the letter twice, pressed it to her bosom, and then sat silent for half an hour thinking of it of it, and the man who wrote it, and of the man who had written the other letter. She could not but remember how that other man had thought to treat her, when it was his intention and her intention that they two should join their lots together how cold he had been; how full of caution and counsel; how he had preached to her himself and threatened her with the preaching of his mother; how manifestly he had purposed to make her life a sacrifice to his life; how he had premeditated her incarceration at Perivale, while he should be living a bachelor's life in London! Will Belton's ideas of married life were very different. Only come to me at once now, immediately, and everything else shall be disposed just as you please. This was his offer. What he proposed to give or rather his willingness to be thus generous, was very sweet to her; but it was not half so sweet as his impatience in demanding his reward. How she doted on him because he considered his present state to be a purgatory! How could she refuse anything she could give to one who desired her gifts so strongly?

As for her future residence, it would be a matter of indifference to her where she should live, so long as she might live with him; but for him she felt that but one spot in the world was fit for him. He was Belton of Belton, and it would not be becoming that he should live elsewhere. Of course she would go with him to Plaistow Hall as often as he might wish it; but Belton Castle should be his permanent resting-place. It would be her duty to be proud for him, and therefore, for his sake, she would beg that their home might be in Somersetshire.



Page 277

'Mary,' she said to her cousin soon afterwards, 'Will sends his love to you.'

'And what else does he say?'

'I couldn't tell you everything. You shouldn't expect it.'

'I don't expect it; but perhaps there may be something to be told.'

'Nothing that I need tell specially. You, who know him so well, can imagine what he would say.'

'Dear Will! I am sure he would mean to write what was pleasant.'

Then the matter would have dropped had Clara been so minded but she, in truth, was anxious to be forced to talk about the letter. She wished to be urged by Mary to do that which Will urged her to do or, at least, to learn whether Mary thought that her brother's wish might be gratified without impropriety. 'Don't you think we ought to live here?' she said.

'By all means if you both like it.'

'He is so good so unselfish, that he will only ask me to do what I like best.'

'And which would you like best?'

'I think he ought to live here because it is the old family property. I confess that the name goes for something with me. He says that he would build a new house.'

'Does he think he could have it ready by the time you are married?'

'Ah that is just the difficulty. Perhaps, after all, you had better read his letter. I don't know why I should not show it to you. It will only tell you what you know already that he is the most generous fellow in all the world.' Then Mary read the letter. 'What am I to say to him?' Clara asked. 'It seems so hard to refuse anything to one who is so true, and good, and generous.'

'It is hard.'

'But you see my poor, dear father's death has been so recent.'

'I hardly know,' said Mary, 'how the world feels about such things.'

'I think we ought to wait at least twelve months,' said Clara, very sadly.

'Poor Will! He will be broken-hearted a dozen times before that. But then, when his happiness does come, he will be all the happier.' Clara, when she heard this, almost

hated her cousin Mary not for her own sake, but on Will's account. Will trusted so implicitly to his sister, and yet she could not make a better fight for him than this! It almost seemed that Mary was indifferent to her brother's happiness. Had Will been her brother, Clara thought, and had any girl asked her advice under similar circumstances, she was sure that she would have answered in a different way. She would have told such girl that her first duty was owing to the man who was to be her husband, and would not have said a word to her about the feeling of the world. After all, what did the feeling of the world signify to them, who were going to be all the world to each other?

On that afternoon she went up to Mrs Askerton's; and succeeded in getting advice from her also, though she did not show Will's letter to that lady. 'Of course, I know what he says,' said Mrs Askerton. 'Unless I have mistaken the man, he wants to be married tomorrow.'

Page 278

'He is not so bad as that,' said Clara.

'Then the next day, or the day after. Of course he is impatient, and does not see any earthly reason why his impatience should not be gratified.'

'He is impatient.'

'And I suppose you hesitate because of your father's death?

'It seems but the other day does it not?' said Clara.

'Everything seems but the other day to me. It was but the other day that I myself was married.'

'And, of course, though I would do anything I could that he would ask me to do'

'But would you do anything?'

'Anything that was not wrong I would. Why should I not, when he is so good to me?'

'Then write to him, my dear, and tell him that it shall be as he wishes it. Believe me, the days of Jacob are over. Men don't understand waiting now, and it's always as well to catch your fish when you can.'

'You don't suppose I have any thought of that kind?'

'I am sure you have not and I'm sure that he deserves no such thought but the higher that are his deserts, the greater should be his reward. If I were you, I should think of nothing but him, and I should do exactly as he would have me.' Clara kissed her friend as she parted from her, and again resolved that all that woman's sins should be forgiven her. A woman who could give such excellent advice deserved that every sin should be forgiven her. 'They'll be married yet before the summer is over,' Mrs Askerton said to her husband that afternoon. 'I believe a man may have anything he chooses to ask for, if he'll only ask hard enough.'

And they were married in the autumn, if not actually in the summer. With what precise words Clara answered her lover's letter I will not say; but her answer was of such a nature that he found himself compelled to leave Plaistow, even before the wheat was garnered. Great confidence was placed in Bunce on that occasion, and I have reason to believe that it was not misplaced. They were married in September yes, in September, although that letter of Will's was written in August, and by the beginning of October they had returned from their wedding trip to Plaistow. Clara insisted that she should be taken to Plaistow, and was very anxious when there to learn all the particulars of the farm. She put down in a little book how many acres there were in each field, and what was the average produce of the land. She made inquiry about four-crop rotation,

and endeavoured, with Bunce, to go into the great subject of stall-feeding. But Belton did not give her as much encouragement as he might have done. 'We'll come here for the shooting next year,' he said; 'that is, if there is nothing to prevent us.'

'I hope there'll be nothing to prevent us.'

'There might be, perhaps; but we'll always come if there is not. For the rest of it, I'll leave it to Bunce, and just run over once or twice in the year. It would not be a nice place for you to live at long.'

Page 279

'I like it of all things. I am quite interested about the farm.'

'You'd get very sick of it if you were here in the winter. The truth is that if you farm well, you must farm ugly. The picturesque nooks and corners have all to be turned inside out, and the hedgerows must be abolished, because we want the sunshine. Now, down at Belton, just above the house, we won't mind farming well, but will stick to the picturesque.'

The new house was immediately commenced at Belton, and was made to proceed with all imaginable alacrity. It was supposed at one time at least Belton himself said that he so supposed that the building would be ready for occupation at the end of the first summer; but this was not found to be possible. 'We must put it off till May, after all,' said Belton, as he was walking round the unfinished building with Colonel Askerton. 'It's an awful bore, but there's no getting people really to pull out in this country.'

'I think they've pulled out pretty well. Of course you couldn't have gone into a damp house for the winter.'

'Other people can get a house built within twelve months. Look what they do in London.'

'And other people with their wives and children die in consequence of colds and sore throats and other evils of that nature. I wouldn't go into a new house, I know, till I was quite sure it was dry.'

As Will at this time was hardly ten months married, he was not as yet justified in thinking about his own wife and children; but he had already found it expedient to make arrangements for the autumn, which would prevent that annual visit to Plaistow which Clara had contemplated, and which he had regarded with his characteristic prudence as being subject to possible impediments. He was to be absent himself for the first week in September, but was to return immediately after that. This he did; and before the end of that month he was justified in talking of his wife and family. 'I suppose it wouldn't have done to have been moving now under all the circumstances,' he said to his friend, Mrs Askerton, as he still grumbled about the unfinished house.

'I don't think it would have done at all, under all the circumstances,' said Mrs Askerton.

But in the following spring or early summer they did get into the new house and a very nice house it was, as will, I think, be believed by those who have known Mr William Belton. And when they were well settled, at which time little Will Belton was some seven or eight months old little Will, for whom great bonfires had been lit, as though his birth in those parts was a matter not to be regarded lightly; for was he not the first Belton of Belton who had been born there for more than a century? when that time came visitors appeared at the new Belton Castle, visitors of importance, who were

entitled to, and who received, great consideration. These were no less than Captain Aylmer, Member for Perivale, and his newly-married bride, Lady Emily Aylmer,

Page 280

ne Tagmaggert. They were then just married, and had come down to Belton Castle immediately after their honeymoon trip. How it had come to pass that such friendship had sprung up or rather how it had been revived it would be bootless here to say. But old affiances, such as that which had existed between the Aylmer and the Amedroz families, do not allow themselves to die out easily, and it is well for us all that they should be long-lived. So Captain Aylmer brought his bride to Belton Park, and a small fatted calf was killed, and the Askertons came to dinner on which occasion Captain Aylmer behaved very well, though we may imagine that he must have had some misgivings on the score of his young wife. The Askertons came to dinner, and the old rector, and the squire from a neighbouring parish, and everything was very handsome and very dull. Captain Aylmer was much pleased with his visit, and declared to Lady Emily that marriage had greatly improved Mi. William Belton. Now Will had been very dull the whole evening, and very unlike the fiery, violent, unreasonable man whom Captain Aylmer remembered to have met at the station hotel of the Great Northern Railway.

'I was as sure of it as possible,' Clara said to her husband that night.

'Sure of what, my dear?'

'That she would have a red nose.'

'Who has got a red nose?'

'Don't be stupid, Will. Who should have it but Lady Emily?'

'Upon my word I didn't observe it.'

'You never observe anything, Will; do you? But don't you think she is very plain?'

'Upon my word I don't know. She isn't as handsome as some people.'

'Don't be a fool, Will. How old do you suppose her to be?' 'How old? Let me see. Thirty, perhaps.'

'If she's not over forty, I'll consent to change noses with her.'

'No we won't do that; not if I know it.'

'I cannot conceive why any man should marry such a woman as that. Not but what she's a very good woman, I dare say; only what can a man get by it? To be sure there's the title, if that's worth anything.' But Will Belton was never good for much conversation at this hour, and was too fast asleep to make any rejoinder to the last remark.

*** *End of the project gutenber EBOOK, the Belton estate* ***

This file should be named beles10.txt or beles10.zip Corrected *editions* of our eBooks get a new *number*, beles11.txt *versions* based on separate sources get new *letter*, beles10a.txt

Project Gutenberg eBooks are often created from several printed editions, all of which are confirmed as Public Domain in the *us* unless a copyright notice is included. Thus, we usually do not keep eBooks in compliance with any particular paper edition.

We are now trying to release all our eBooks one year in advance of the official release dates, leaving time for better editing. Please be encouraged to tell us about any error or corrections, even years after the official publication date.

Page 281

Please note neither this listing nor its contents are final til midnight of the last day of the month of any such announcement. The official release date of all Project Gutenberg eBooks is at Midnight, Central Time, of the last day of the stated month. A preliminary version may often be posted for suggestion, comment and editing by those who wish to do so.

Most people start at our Web sites at: <http://gutenberg.net> or <http://promo.net/pg>

These Web sites include award-winning information about Project Gutenberg, including how to donate, how to help produce our new eBooks, and how to subscribe to our email newsletter (free!).

Those of you who want to download any eBook before announcement can get to them as follows, and just download by date. This is also a good way to get them instantly upon announcement, as the indexes our cataloguers produce obviously take a while after an announcement goes out in the Project Gutenberg Newsletter.

<http://www.ibiblio.org/gutenberg/etext03> or <ftp://ftp.ibiblio.org/pub/docs/books/gutenberg/etext03>

Or *etext02, 01, 00, 99, 98, 97, 96, 95, 94, 93, 92, 91 or 90*

Just search by the first five letters of the filename you want, as it appears in our Newsletters.

Information about Project Gutenberg (one page)

We produce about two million dollars for each hour we work. The time it takes us, a rather conservative estimate, is fifty hours to get any eBook selected, entered, proofread, edited, copyright searched and analyzed, the copyright letters written, *etc.* Our projected audience is one hundred million readers. If the value per text is nominally estimated at one dollar then we produce \$2 million dollars per hour in 2002 as we release over 100 new text files per month: 1240 more eBooks in 2001 for a total of 4000+ We are already on our way to trying for 2000 more eBooks in 2002 If they reach just 1-2% of the world's population then the total will reach over half a trillion eBooks given away by year's end.

The Goal of Project Gutenberg is to Give Away 1 Trillion eBooks! This is ten thousand titles each to one hundred million readers, which is only about 4% of the present number of computer users.

Here is the briefest record of our progress (* means estimated):

eBooks Year Month

1 1971 July
10 1991 January
100 1994 January
1000 1997 August
1500 1998 October
2000 1999 December
2500 2000 December
3000 2001 November
4000 2001 October/November
6000 2002 December*
9000 2003 November*
10000 2004 January*

The Project Gutenberg Literary Archive Foundation has been created to secure a future for Project Gutenberg into the next millennium.

We need your donations more than ever!

Page 282

As of February, 2002, contributions are being solicited from people and organizations in: Alabama, Alaska, Arkansas, Connecticut, Delaware, District of Columbia, Florida, Georgia, Hawaii, Illinois, Indiana, Iowa, Kansas, Kentucky, Louisiana, Maine, Massachusetts, Michigan, Mississippi, Missouri, Montana, Nebraska, Nevada, New Hampshire, New Jersey, New Mexico, New York, North Carolina, Ohio, Oklahoma, Oregon, Pennsylvania, Rhode Island, South Carolina, South Dakota, Tennessee, Texas, Utah, Vermont, Virginia, Washington, West Virginia, Wisconsin, and Wyoming.

We have filed in all 50 states now, but these are the only ones that have responded.

As the requirements for other states are met, additions to this list will be made and fund raising will begin in the additional states. Please feel free to ask to check the status of your state.

In answer to various questions we have received on this:

We are constantly working on finishing the paperwork to legally request donations in all 50 states. If your state is not listed and you would like to know if we have added it since the list you have, just ask.

While we cannot solicit donations from people in states where we are not yet registered, we know of no prohibition against accepting donations from donors in these states who approach us with an offer to donate.

International donations are accepted, but we don't know *anything* about how to make them tax-deductible, or even if they *can* be made deductible, and don't have the staff to handle it even if there are ways.

Donations by check or money order may be sent to:

Project Gutenberg Literary Archive Foundation
PMB 113
1739 University Ave.
Oxford, Ms 38655-4109

Contact us if you want to arrange for a wire transfer or payment method other than by check or money order.

The Project Gutenberg Literary Archive Foundation has been approved by the *us* Internal Revenue Service as a 501(c)(3) organization with *ein* [Employee Identification Number] 64-622154. Donations are tax-deductible to the maximum extent permitted by law. As fund-raising requirements for other states are met, additions to this list will be made and fund-raising will begin in the additional states.

We need your donations more than ever!

You can get up to date donation information online at:

<http://www.gutenberg.net/donation.html>

If you can't reach Project Gutenberg,
you can always email directly to:

Michael S. Hart *hart@pobox.com*

Prof. Hart will answer or forward your message.

We would prefer to send you information by email.

****The Legal Small Print****

(Three Pages)

Page 283

****Start****the small print!***For public domain EBOOKS***start*** Why is this “Small Print!” statement here? You know: lawyers. They tell us you might sue us if there is something wrong with your copy of this eBook, even if you got it for free from someone other than us, and even if what’s wrong is not our fault. So, among other things, this “Small Print!” statement disclaims most of our liability to you. It also tells you how you may distribute copies of this eBook if you want to.

BEFORE! You use or read this EBOOK By using or reading any part of this *project gutenberg-tm* eBook, you indicate that you understand, agree to and accept this “Small Print!” statement. If you do not, you can receive a refund of the money (if any) you paid for this eBook by sending a request within 30 days of receiving it to the person you got it from. If you received this eBook on a physical medium (such as a disk), you must return it with your request.

About project gutenberg-tm EBOOKS This *project gutenberg-tm* eBook, like most *project gutenberg-tm* eBooks, is a “public domain” work distributed by Professor Michael S. Hart through the Project Gutenberg Association (the “Project”). Among other things, this means that no one owns a United States copyright on or for this work, so the Project (and you!) can copy and distribute it in the United States without permission and without paying copyright royalties. Special rules, set forth below, apply if you wish to copy and distribute this eBook under the “*Project gutenberg*” trademark.

Please do not use the “*Project gutenberg*” trademark to market any commercial products without permission.

To create these eBooks, the Project expends considerable efforts to identify, transcribe and proofread public domain works. Despite these efforts, the Project’s eBooks and any medium they may be on may contain “Defects”. Among other things, Defects may take the form of incomplete, inaccurate or corrupt data, transcription errors, a copyright or other intellectual property infringement, a defective or damaged disk or other eBook medium, a computer virus, or computer codes that damage or cannot be read by your equipment.

Limited warranty; disclaimer of damages But for the “Right of Replacement or Refund” described below, [1] Michael Hart and the Foundation (and any other party you may receive this eBook from as a *project gutenberg-tm* eBook) disclaims all liability to you for damages, costs and expenses, including legal fees, and [2] *you have no Remedies for negligence or under strict liability, or for breach of warranty or contract, including but not limited to indirect, consequential, punitive or incidental damages, even if you give notice of the possibility of such damages.*

Page 284

If you discover a Defect in this eBook within 90 days of receiving it, you can receive a refund of the money (if any) you paid for it by sending an explanatory note within that time to the person you received it from. If you received it on a physical medium, you must return it with your note, and such person may choose to alternatively give you a replacement copy. If you received it electronically, such person may choose to alternatively give you a second opportunity to receive it electronically.

This EBOOK is otherwise provided to you "As-is". No other warranties of any kind, express or implied, are made to you as to the EBOOK or any medium it may be on, including but not limited to warranties of merchantability or fitness for A particular purpose.

Some states do not allow disclaimers of implied warranties or the exclusion or limitation of consequential damages, so the above disclaimers and exclusions may not apply to you, and you may have other legal rights.

Indemnity You will indemnify and hold Michael Hart, the Foundation, and its trustees and agents, and any volunteers associated with the production and distribution of Project Gutenberg-tm texts harmless, from all liability, cost and expense, including legal fees, that arise directly or indirectly from any of the following that you do or cause: [1] distribution of this eBook, [2] alteration, modification, or addition to the eBook, or [3] any Defect.

Distribution under "Project gutenberg-tm" You may distribute copies of this eBook electronically, or by disk, book or any other medium if you either delete this "Small Print!" and all other references to Project Gutenberg, or:

[1] Only give exact copies of it. Among other things, this requires that you do not remove, alter or modify the eBook or this "small print!" statement. You may however, if you wish, distribute this eBook in machine readable binary, compressed, mark-up, or proprietary form, including any form resulting from conversion by word processing or hypertext software, but only so long as *EITHER*:

[*] The eBook, when displayed, is clearly readable, and does *not* contain characters other than those intended by the author of the work, although tilde (~), asterisk (*) and underline () characters may be used to convey punctuation intended by the author, and additional characters may be used to indicate hypertext links; or

Page 285

[*] The eBook may be readily converted by the reader at no expense into plain ASCII, EBCDIC or equivalent form by the program that displays the eBook (as is the case, for instance, with most word processors);
or

[*] You provide, or agree to also provide on request at no additional cost, fee or expense, a copy of the eBook in its original plain ASCII form (or in EBCDIC or other equivalent proprietary form).

[2] Honor the eBook refund and replacement provisions of this "Small Print!" statement.

[3] Pay a trademark license fee to the Foundation of 20% of the gross profits you derive calculated using the method you already use to calculate your applicable taxes. If you don't derive profits, no royalty is due. Royalties are payable to "Project Gutenberg Literary Archive Foundation" the 60 days following each date you prepare (or were legally required to prepare) your annual (or equivalent periodic) tax return. Please contact us beforehand to let us know your plans and to work out the details.

What if you WANT to send money even if you don't have to? Project Gutenberg is dedicated to increasing the number of public domain and licensed works that can be freely distributed in machine readable form.

The Project gratefully accepts contributions of money, time, public domain materials, or royalty free copyright licenses. Money should be paid to the:
"Project Gutenberg Literary Archive Foundation."

If you are interested in contributing scanning equipment or software or other items, please contact Michael Hart at: hart@pobox.com

[Portions of this eBook's header and trailer may be reprinted only when distributed free of all fees. Copyright (C) 2001, 2002 by Michael S. Hart. Project Gutenberg is a TradeMark and may not be used in any sales of Project Gutenberg eBooks or other materials be they hardware or software or any other related product without express permission.]

*END THE SMALL PRINT! FOR PUBLIC DOMAIN EBOOKS*Ver.02/11/02*End*